रजिस्ट्री सं. डीएल—(एन) 04/0007/2003--18 REGISTERED No. DL—(N) 04/0007/2003—18

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 51] नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 22—दिसम्बर 28, 2018 (पौष 1, 1940)

No. 51] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 22—DECEMBER 28, 2018 (PAUSA 1, 1940)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.	807
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1017
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	15
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	2959
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	12499
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.	2113
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.	2403
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	807
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1017
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	15
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	2959
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	12499
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2113
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	2403
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 5 दिसम्बर 2018

सं. 116-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. तबू राम पेगु
   अपर पुलिस अधीक्षक
2. रमन कलिता
   कांस्टेबल
3. हेमंत राजबोंगशी
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 28-08-2015 को अपराह्न लगभग 9.45 बजे पुलिस अधीक्षक, चिरांग द्वारा अमगुरी पुलिस स्टेशन के तहत ऑक्सीगुड़ी गांव, जिला चिरांग में एनडीएफबी (एस) काडरों के एक कट्टरपंथी समूह की उपस्थिति के संबंध में उपलब्ध कराई गई विशिष्ट जानकारी के आधार पर, श्री तबू राम पेगु, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), चिरांग पीएसओ और असम पुलिस कमांडो के साथ तेजी से अमगुरी पुलिस स्टेशन पहुंचे और तुरंत ओसी, अमगुरी पुलिस स्टेशन और भारतीय सेना की 7वीं सिख एलआई रेजिमेंट के अधिकारियों के साथ आतंकवादियों को पकड़ने की एक योजना तैयार की।

इसके बाद, श्री पेगु पूरे अभियान दल के साथ लक्षित गांव की ओर आगे बढ़े। अचरज में डालने की स्थिति को बनाए रखने के लिए, श्री पेगु ने भीगी रात में लक्षित गांव के लिए कठिन और घूमकर जाने वाले रास्ते को लेने का फैसला किया। भारी बारिश के बीच लगभग 3 (तीन) घंटे चलने के बाद अभियान दल अगले दिन अर्थात 29-08-2015 को सुबह लगभग 1.30 बजे ऑक्सीगुड़ी गांव पहुंचा। लक्षित गांव पहुंचने पर श्री पेगु ने आतंकवादियों के बचकर भागने के सभी संभावित मार्गों को अवरुद्ध करने के लिए एक प्रभावी घेराबंदी की। सुबह की पहली किरण के समय ही, श्री पेगु ने एक तलाशी दल के साथ गांव के आस-पास के जंगल क्षेत्र में तलाशी अभियान का नेतृत्व किया। सुबह लगभग 5.15 बजे श्री पेगु के नेतृत्व में तलाशी दल ने संदिग्ध एनडीएफबी (एस) काडरों के एक समूह को देखा जिसने बांस के एक झुरमुट (ग्रोव) में शरण ले रखी थी तथा चुनौती दिए जाने पर, आतंकवादियों ने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री पेगु और उनके दल ने तुरंत कवर ले लिया और आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। दोनों पक्षों के बीच परस्पर भारी गोलीबारी हुई। इस बीच, आतंकवादियों ने पास में एक धान के खेत की ओर भागना शुरू कर दिया। श्री पेगु ने 02 (दो) कमांडो, नामतः कांस्टेबल-369 रमन कलिता और कांस्टेबल- 494 हेमंत राजबोंगशी के साथ निर्भयतापूर्वक आतंकवादियों का पीछा किया और आतंकवादियों को धान के एक खेत में एक करीबी गोलीबारी में उलझा दिया जिसमें एनडीएफबी (एस) के दो आतंकवादी गंभीर रूप से घायल हो गए तथा उनके कब्जे से अत्याधुनिक हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया। गंभीर रूप से घायल दोनों आतंकवादियों को तुरंत वहां से निकाला गया और अस्पताल ले जाया गया, परन्तु चोटों के कारण अस्पताल ले जाते समय रास्ते में उनकी मौत हो गई। व्यापक तलाशी की गई और घटना स्थल से निम्नलिखित हथियार/गोला-बारूद, खाली खोखे और अन्य सामान बरामद किए गए:

बरामद सामानः—

1) 01 (एक) एम -16 राइफल, यूबीजीएल के साथ लैस।

2) 04 (चार) एम - 16 मैगजीन।

3) 100 (एक सौ) राउंड एम -16 के जिंदा (लाइव) गोला-बारूद।

4) 02 (दो) मैगजीन पाउच।

5) 01 (एक) एके सीरीज राइफल ।

6) 03 (तीन) एके सीरीज राइफल मैगजीन।

7) 36 (छत्तीस) राउंड एके सीरीज के जिंदा (लाइव) गोला-बारूद।

8) 01 (एक) 7.65 एमएम पिस्तौल।

9) 84 (चौरासी) खाली खोखे।

10) 02 (दो) पॉलीथीन शीट (काले रंग की)।

11) 02 (दो) बैकपैक बैग (काले रंग के)।

तत्काल मुठभेड़ में, श्री तबू राम पेगु, अपर पुलिस अधीक्षक ने कांस्टेबल रमन कलिता तथा कांस्टेबल हेमंत राजबोंगशी के साथ बांस के झुरमुट (ग्रोव) से होकर उग्रवादियों का पीछा करने में असाधारण साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया, जबकि उग्रवादी उन पर गोलियों की बौछार कर रहे थे। श्री पेगु और कमांडो लगातार अपनी पोजिशन को बदलते रहे और इस बात को भलीभांति जानते हुए कि उनकी जान जोखिम में है, वे नजदीक से आतंकवादियों के खिलाफ बहादुरी से लड़े। भारी गोलीबारी के बावजूद श्री पेगु ने अपना संयम बनाए रखा, अपने अभियान दल के साथ समन्वय बनाए रखा और अपने सहयोगियों के हताहत होने से बचने के लिए अपनी चतुराई का सहारा लिया।

इस अभियान में सर्व/श्री तबू राम पेगु, अपर पुलिस अधीक्षक, रमन कलिता, कांस्टेबल और हेमंत राजबोंगशी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29/08/2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 117-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री विनय कुमार शर्मा
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.04.2000 को सुबह श्री नीरज सिन्हा, पुलिस अधीक्षक, बक्सर, जो कि पहले से मंजूर छुट्टी पर जाने वाले थे, को एक संदेश मिला कि राजपुर पुलिस स्टेशन के तहत गांव जैतपुर में पुलिस और अपराधियों के बीच एक मुठभेड़ चल रही है। उन्होंने अपनी छुट्टी स्थगित कर दी और उपलब्ध सशस्त्र बल के साथ जैतपुर की ओर चल पड़े। वहां पहुंचने पर उन्हें यह बताया गया कि काशी राजभर के घर में कुछ भारी सशस्त्र अपराधी टिपन सिंह नामक एक अपहृत व्यक्ति की रखवाली कर रहे हैं। इस जानकारी के प्राप्त होने पर, ओसी राजपुर पुलिस स्टेशन ने अपने बल के साथ संदिग्ध घर को घेर लिया और तलाशी के लिए उसका दरवाजा खोलने की कोशिश की। घर में छिपे हुए अपराधियों ने पुलिस पर गोलीबारी की। पुलिस को आत्मरक्षा में रूक-रूक कर नियंत्रित गोलीबारी का सहारा लेना पड़ा।

जब श्री सिन्हा घटना स्थल पर पहुंचे, तब अपराधियों और पुलिस के बीच रूक-रूक कर गोलीबारी चल रही थी। गोलीबारी केवल काशी राजभर के ही घर से नहीं हो रही थी, बल्कि कभी-कभी आस-पास के कुछ घरों से भी हो रही थी, जिससे यह आभास हुआ कि अपराधी समय-समय पर इन घरों के बीच आ-जा रहे हैं। गोलीबारी के बावजूद, श्री सिन्हा घटना स्थल के चारों ओर घूमे और पुलिस दल को निर्देश देते रहे कि उन्हें कहां और किस तरह से पोजिशन लेनी चाहिए और कार्रवाई करनी चाहिए। काशी राजभर के घर का दरवाजा खुलवाने की कोशिश करने के लिए श्री सिन्हा ने एक टीम गठित की, जिसमें श्री अनवर हुसैन, निरीक्षक संजय कुमार, उप निरीक्षक अजय कुमार मिश्रा और उप निरीक्षक श्री कांत राम शामिल थे और उन्होने टीम के सदस्यों को अभियान की रणनीति तथा सावधानियों के बारे में अवगत कराया। टीम सतर्कता से आगे बढ़ी, जबकि श्री सिन्हा ने कवरिंग गोलीबारी प्रदान की। गांव के भाग रहे कुछ डरे ग्रामीणों ने गुप्त रूप से श्री सिन्हा को सूचित किया कि गांव में छिपे हुए अपराधी सुरेश राजभर के कुख्यात गिरोह से संबंधित थे जिसने कई गंभीर अपराध किए थे। उन्होंने यह भी बताया कि जैतपुर और पड़ोसी गांवों में मुख्य रूप से सुरेश राजभर की जाति के लोगों की आबादी है जिनके इन गांवों में कई समर्थक हैं। इसलिए श्री सिन्हा ने पुलिस दलों को अतिरिक्त सतर्कता बरतने की चेतावनी दी। अंधेरा होने के तुरंत बाद, पुलिस दलों पर कई दिशाओं से अचानक भारी गोलीबारी होने लगी। श्री सिन्हा ने तुरंत पुलिस दलों को पोजिशन लेने और जवाबी गोलीबरी करने का निदेश दिया। पुलिस दलों ने तुरंत जवाबी गोलीबारी की। श्री सिन्हा ने देखा घिरे हुए अपराधियों के सशस्त्र समर्थक जैतपुर गांव के बाहर खेतों में बड़ी संख्या में इक्कट्ठे हो गए हैं, और पुलिस पर भारी गोलीबारी कर रहे हैं। यह वास्तव में पुलिस के लिए अग्नि परीक्षा थी। अंधेरे में और विभिन्न दिशाओं से भारी गोलीबारी की भयावाह आवाजों के बीच, कई पुलिस दलों के सदस्य ऐसे स्थानों की सही पहचान नहीं कर पाए, जहां से उन पर गोलीबारी की जा रही थी। वहां मौजूद अधिकांश पुलिस कर्मी रात की गोलीबारी के अभ्यस्त नहीं थे। श्री सिन्हा ने पुलिस कर्मियों को जवाबी गोलीबारी करने का निदेश दिया। गांव के भीतर अपराधियों द्वारा रूक-रूक कर गोलीबारी निरंतर जारी रही। श्री सिन्हा ने आकलन किया कि गांव में छिपे हुए अपराधियों ने बहुत सुरक्षित और मजबूत पोजिशन ली हुई है। इसलिए गोलीबारी से उन्हें उनकी पोजिशन से हिलाने में सफलता की संभावना नहीं थी। उन्हें अपनी पोजिशन छोड़ने के लिए मजबूर करने के लिए ग्रेनेड आवश्यक प्रतीत हुए, लेकिन वह उपलब्ध नहीं थे। अतः उन्होंने वायरलेस पर ग्रेनेडों के लिए अनुरोध किया। मध्यरात्रि के बाद एसपी रोहतस श्री एस. के. सिंघल ग्रेनेड से सुसज्जित एक पुलिस दल के साथ पहुंचे। अंधेरे में अपराधियों द्वारा रूक-रूक कर गोलीबारी के बावजूद, श्री सिन्हा और श्री सिंघल ने घटना स्थल के निकट और उसके दक्षिण में पोजिशन ले ली। अपराधियों और पुलिस के बीच रात भर रूक-रूक कर गोलीबारी जारी रही। दिनांक 14.4.2000 को सुबह होने के बाद श्री सिन्हा के नेतृत्व में एक पुलिस दल ने संदिग्ध घरों की तलाशी शुरू कर दी। काशी राजभर के घर से, टिपन सिंह को बरामद किया गया, जिनका सशस्त्र अपराधियों द्वारा फिरौती के लिए अपहरण किया गया था। उक्त घर से एक देसी राइफल, जिसके चैंबर में जिंदा (लाइव) गोली थी, कई खाली कारतूस, कई पुलिस वर्दियां, आईपीएस बैज के साथ एक पीक कैप, सीआरपीएफ बैज के साथ एक टोपी और एक राइफल साफ करने की रॉड भी बरामद हुई। श्री तपन सिंह ने बताया कि 5 सशस्त्र अपराधियों ने उन्हें उक्त घर में रखा हुआ था तथा दिनांक 13.4.2000 को जब पुलिस पहुंची थी तब 2 अपराधी बच कर भाग निकले थे और शेष 3 अपराधी एक सीढ़ी का उपयोग करके सटे हुए घर में भाग गए थे। जब पुलिस एक संकीर्ण गली के माध्यम से विश्वनाथ राजभर के घर की तरफ आगे बढ़ रही थी, तब अचानक घर के अंदर से पुलिस पर कई राउंड गोलियों की बौछार की गई। जब तक पुलिस कवर ले पाती, तब तक कांस्टेबल ललन सिंह को उनकी बाईं कोहनी के पास एक गोली लग गई तथा हवलदार हीरा प्रसाद को उनके बाएं घुटने के नीचे गोली की चोटें लग गईं। अपराधियों ने उक्त घर से पुलिस पर भारी गोलीबारी जारी रखी। श्री सिन्हा ने अपराधियों को उनकी पोजिशन से हटाने के लिए ग्रेनेड का उपयोग करने का फैसला किया। लेकिन इन ग्रेनेडों का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। तब श्री सिन्हा ने उस कमरे, जिसमें अपराधी छिपे हुए थे की दीवार में छिद्र बनाने और इन छिद्रों के माध्यम से ग्रेनेड डालने का निर्णय लिया। जब अपराधियों को कवरिंग गोलीबारी से उलझाए रखा गया था, तब निरीक्षक कुमार, एसआई ए के मिश्रा, वी के शर्मा और एस के राम सहित कुछ अधिकारी रेंगकर विश्वनाथ राजभर के घर तक गए और उन्होने दीवारों में छिद्र बना दिए। फिर श्री सिन्हा, श्री सिंघल और कांस्टेबल सुधीर कुमार सिंह, अशोक कुमार सिंह, रवीन्द्र राय और राधे श्याम प्रसाद ग्रेनेड से लैस होकर रेंगते हुए कवरिंग गोलीबारी का फायदा उठाते हुए उक्त घर तक पहुंच गए। अपराधी दीवारों में बनाए गए छिद्रों के माध्यम से भी गोलीबारी कर रहे थे। जान को गंभीर खतरे का सामना करते हुए, श्री सिन्हा और श्री सिंघल तथा ग्रेनेड टीम के सदस्यों ने दीवारों में बनाए गए छिद्रों के माध्यम से चार हथगोले फेंक दिए। लेकिन घर के अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसके बाद, विश्वनाथ राजभर के घर और सटे हुए घरों की तलाशी ली गई। विश्वनाथ राजभर के घर के आंगन में एक अज्ञात अपराधी का शव पाया गया, जिसके पास से एक नियमित डीबीबीएल बंदूक, 12 जिन्दा (लाइव) और कई खाली कारतूस मिले। इसी घर के दक्षिण-पूर्वी कमरे में एक और अज्ञात अपराधी का शव मिला जिसके पास से एक माउजर राइफल, 170 जिन्दा (लाइव) कारतूस, 5 अन्य जिन्दा कारतूस, एक ग्रेनेड, इसका फ्यूज, और तीन विस्फोटक जिलेटिन स्टिक मिलीं। घर के दक्षिण-पश्चिमी कमरे में एक तीसरे अज्ञात अपराधी का शव मिला, जिसके पास से दो नियमित राइफल, 107 लाइव राइफल कारतूस तथा कई खाली राइफल कारतूस मिले।

इस अभियान में, श्री विनय कुमार शर्मा, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13/04/2000 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 118-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अमोल कुमार खाल्खो,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कांकेर जिले के केशकोरी गांव में सीपीआई (माओवादी) कॉडरों की मौजूदगी के संबंध में विश्वसनीय आसूचना संबंधी जानकारी के आधार पर, दिनांक 02-02-2016 को निरीक्षक अमोल खाल्खो की समग्र कमान में डीईएफ, एसटीएफ और बीएसएफ की 140वीं बटालियन का एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया। श्री अमोल कुमार खाल्खो ने गांव की क्रमशः दाईं और बाईं ओर से घेराबंदी करने के लिए अभियान दल को दो समूहों में अर्थात डीईएफ/एसटीएफ और बीएसएफ में बांट दिया।

जैसे दल केशकोरी गांव की ओर आगे बढ़े, लगभग 16.30 बजे पुलिस कार्मिकों को गंभीर रुप से हताहत करने के इरादे से भारी सशस्त्र नक्सलियों ने अचानक पुलिस पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्यदल के कमांडर ने तुरंत अपने कार्मिकों को सतर्क कर दिया और उन्हें पोजिशन लेने तथा चतुराई से नक्सलियों के स्थान की तरफ आगे बढ़ने का आदेश दिया। सैन्यदल के कमांडर ने सैन्यदल की पहचान की घोषणा की और नक्सलियों को अंधाधुंध गोलीबारी रोकने के लिए चेतावनी दी। बार-बार चेतावनी के बावजूद, नक्सली पुलिस दल पर भारी गोलीबारी कर रहे थे। सुरक्षा बलों ने खुद को फिर से छोटी यूनिटों में गठित किया और चतुराई से उस स्थान की ओर आगे बढ़े जहां से नक्सली गोलीबारी कर रहे थे। आत्मरक्षा में, सैन्यदल के कमांडर ने अपने कार्मिकों के साथ गोलीबारी शुरू कर दी।

इस महत्वपूर्ण अभियान में, उन्होंने व्यवस्थित योजना का प्रर्दशन किया तथा श्री अमोल कुमार खाल्खो, निरीक्षक ने साहस, बहादुरी, नेतृत्व गुणों, कर्तव्यपरायणता का दुर्लभ और असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने संयुक्त दल के सभी बलों का व्यवस्थित योजना और कुशल नेतृत्व के साथ मार्गदर्शन दिया। श्री अमोल कुमार खाल्खो ने बहुत सारे नक्सली अभियानों में योगदान किया है और उन्हें सफलता भी मिली है। फिर उनकी प्रतिभा और कर्तव्य को पूरा करने के लिए अपने को न्यौछावर कर देने वाले चरित्रपूर्ण नेतृत्व से भी नक्सली अभियानों में लाभ मिला है तथा खाल्खो के नेतृत्व में पुलिस को नक्सली अभियानों में कॉफी सफलता मिली है।

इस अभियान में, श्री अमोल कुमार खाल्खो ने साहस, बहादुरी, नेतृत्व गुण, भारत माता के प्रति कर्तव्यपरायणता का एक दुर्लभ और असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस अभियान में श्री अमोल कुमार खाल्खो, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02/02/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 119-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजेश देवदास,
निरीक्षक

02. अनंत प्रधान,
उप निरीक्षक

03. मंगल माझी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04-08-2016 को पुलिस अधीक्षक, दांतेवाड़ा को भैरमगढ़ एरिया कमांडर संजय की अपने सदस्यों के साथ उपस्थिति के बारे में जानकारी मिली। यह जानकारी विशेष आसूचना शाखा के कांस्टेबल, मंगल सिंह माझी द्वारा जुटाई गई थी। मंगल सिंह माझी ने एसपी दांतेवाड़ा को बताया कि कुंडर गांव के जंगल में 15-20 सशस्त्र माओवादी मौजूद हैं और वे अलनार और कुंडेनर के रास्ते इंद्रवती नदी को पार करने की योजना बना रहे हैं। श्री राजेश देवदास, निरीक्षक, पुलिस स्टेशन दांतेवाड़ा के एसएचओ, श्री विनोद एक्का, उप निरीक्षक, संग्राम सिंह, एएसआई, श्री भिश्नसेन भारती तथा पुलिस स्टेशन फरसपल के दो हेड कांस्टेबलों, 12 कांस्टेबलों, 04 सहायक कांस्टेबलों और दांतेवाड़ा के डीआरजी के एक संयुक्त दल को प्रभावी घेराबंदी करने और माओवादियों के इरादे को नाकाम करने के लिए तैनात किया गया। एसपी दांतेवाड़ा ने पुलिस दल को जानकारी से अवगत कराया और पुलिस दल को विस्तृत हिदायत दी गई।

पुलिस दल लक्षित क्षेत्र की ओर चल पड़ा और उन्होंने कच्चा वैली में कुंडर के पास घात लगाई। दिनांक 05.08.2016 को लगभग 05.45 बजे, कुछ ग्रामवासियों ने पुलिस दल को देखा और माओवादियों को सतर्क कर दिया। माओवादियों ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल ने भी अभूतपूर्व वीरता और बहादुरी से जवाबी गोलीबारी की। निरीक्षक श्री राजेश देवदास और उप निरीक्षक अनंत प्रधान ने सामने से पुलिस दल का नेतृत्व किया और विभिन्न पुलिस सैन्यदलों के साथ बड़े पैमाने पर समन्वय स्थापित किया। पुलिस दल के पलड़े को भारी देखकर माओवादी पीछे हट गए और घने जंगल का फायदा उठाकर पहाड़ की ओर भाग गए। मुठभेड़ में दो पुरूष और एक महिला माओवादियों को निष्क्रिय कर दिया गया। इन माओवादियों की पहचान फागू तेलम उर्फ निशांत निवासी पुरमेल, पुलिस स्टेशन मिर्तुर के रूप में हुई तथा एक मजल भरी हुई बंदूक बरामद की गई। दूसरे माओवादी की पहचान अजीत मुरिया निवासी जगरगुंडा (जगरगुंडा एलओएस के सदस्य) के रूप में हुई तथा एक 0.315 बोर देसी राइफल बरामद की गई। महिला माओवादी की पहचान मनीला उर्फ मनकी उर्फ गीता निवासी पुसलंका, पुलिस स्टेशन कुत्रू (एनआईबी कंपनी की सदस्या) के रूप में हुई।

निरीक्षक राजेश देवदास और उप निरीक्षक अनंत प्रधान ने माओवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी में निडर साहस और असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन किया। माओवादियों की घेराबंदी में उनका नेतृत्व महत्वपूर्ण था। उनकी योजना और त्वरित निर्णय लेने के कारण माओवादी को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा, और माओवादियों के भारी संख्या में होने के बावजूद पुलिस दल को कोई नुकसान नहीं हुआ।

यह केवल विशेष आसूचना शाखा के कॉन्स्टेबल मंगल माझी की इस विशिष्ट जानकारी के कारण था, जिससे पुलिस दल माओवादियों को भारी नुकसान पहुंचा पाया और सशस्त्र माओवादियों को मार गिराया गया।

इस कार्रवाई में श्री राजेश देवदास, निरीक्षक और श्री अनंत प्रधान, उप निरीक्षक ने संकट के समय अपने सैन्यदलों को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया। जब उनके दल पर माओवादियों ने हमला किया, तो उन्होंने अत्यधिक सूझबूझ तथा उत्कृष्ट अभियान बोध का प्रदर्शन किया। श्री राजेश देवदास, निरीक्षक और श्री अनंत प्रधान, उप निरीक्षक अपने जीवन की परवाह किए बिना लड़े, उन्होंने अपने साथियों को एक-दूसरे की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया, उनके कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व के तहत पुलिस कार्मिक भलीभांति यह जानते हुए कि हर कदम घातक हो सकता है, नक्सली हमले का सामना करने के लिए आगे बढ़ते रहे।

इस अभियान में सर्व/श्री राजेश देवदास, निरीक्षक, अनंत प्रधान, उप निरीक्षक और मंगल माझी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05/08/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 120-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रमन उसेन्डी,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री रमन उसेन्डी, निरीक्षक वर्ष 2004 में कांस्टेबल के रूप में पुलिस बल में शामिल हुए थे और उन्हें वन टाइम प्रमोशन स्कीम के तहत वर्ष 2012 में उप-निरीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया था। दिसम्बर, 2015 में उन्हें अत्यधिक नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात किया गया था।

दिनांक 01.01.2016 को, 10:30 बजे डीआरजी दल कुतुल की निकटतम पहाड़ी तक पहुंचा और कुतुल की ओर बढ़ रहा था। रास्ते में उन्होंने पहाड़ी की दूसरी तरफ सशस्त्र नक्सलियों को देखा। डीआरजी बल ने तुरंत एक से अधिक फॉरमेशन बनाकर नक्सलियों की घेराबंदी करने का फैसला किया। पुलिस दल को अपनी ओर आते देखकर, नक्सलियों ने पुलिस दल को हताहत करने के इरादे से गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल ने आत्मरक्षा के उद्देश्य से जवाबी गोलीबारी की। पुलिस दल को हावी होता देखकर, नक्सली सभी दिशाओं में भागने लगे। डीआरजी दल ने नक्सलियों का पीछा किया और उन्हें सभी दिशाओं से घेर लिया। यह देखकर नक्सलियों ने घायल नक्सलियों को अपने साथ लेकर पहाड़ी की ओर भागना शुरू कर दिया परन्तु पुलिस दल ने उनका पीछा किया और वे पहाड़ी पर चढ़ गए। यह देखकर नक्सलियों ने फिर से गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका जवाब पुलिस पक्ष ने गोलीबारी से दिया। श्री रमन उसेन्डी, उप निरीक्षक ने अपनी पुलिस फॉरमेशन के साथ नक्सलियों का पीछा किया, परस्पर भारी गोलीबारी हुई तथा उपर्युक्त कार्मिकों ने कठिन परिस्थिति में अदम्य वीरता और बहादुरी का प्रदर्शन किया। पुलिस पार्टी के प्रभुत्व को देखकर, नक्सली जंगल में भाग गए। पुलिस दल के प्रभारी श्री रमन उसेन्डी ने क्षेत्र की तलाशी कराई तथा लख्खू क्वाशी और कमालु दंडामिआंड नाम के दो नक्सलियों के शव मिले तथा तीन नक्सली चैतू वर्दा, विकास उसेन्डी और नरका वर्दा गिरफ्तार किए गए। पुलिस दल ने घटनास्थल से एक 303 राइफल, तीन 315 राइफल, तीन 12 बोर राइफल, एक देसी राइफल (भरमार), 315 राइफल के 35 राउंड, एसएलआर राइफल के 6 राउंड तथा अन्य विध्वंसक सामग्री, दो काली वर्दियां आदि बरामद कीं।

इस अभियान में, श्री रमन उसेन्डी, उप निरीक्षक, ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01/01/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 121-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रोशन कौशिक,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

निरीक्षक रोशन कौशिक ने दिनांक 05-10-2016 को नारायणपुर जिले के जंगलों में नक्सलियों के साथ पारस्परिक गोलीबारी के दौरान असाधारण साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन किया। आसूचना संबंधी जानकारी मिलने पर, श्री कौशिक ने तुरंत अपने दल को अवगत कराया तथा बिना कोई विलंब किए वे दिनांक 04-10-2016 को लक्षित क्षेत्र के लिए चल पड़े। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि दल पूरी तरह से नक्सल रोधी तथा तलाशी अभियान के लिए आवश्यक हथियार-गोला बारूद और विशेष उपकरणों से लैस है।

दिनांक 05-10-2016 को, जैसे ही श्री कौशिक अपने दल के साथ कुंडुल-गुमचुर क्षेत्र में पहाड़ी के समीप पहुंचे, पहाड़ी के पास छिपे हुए नक्सलियों ने एके -47, एलएमजी, आईएनएसएएस, एसएलआर आदि जैसे अपने स्वचालित हथियारों से पुलिस दल पर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री कौशिक ने तुरंत अपने सैनिकों को उचित कवर लेने और आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी करने का निर्देश दिया। इसके परिणामस्वरूप, नक्सलियों और पुलिस दल के बीच भारी पारस्परिक गोलीबारी हुई। इस बीच, नक्सली अपनी जान के डर से, पहाड़ी की तरफ भाग गए ताकि वे पहाड़ी बनावट का लाभ उठा सकें।

यह भांपकर, निरीक्षक कौशिक ने 4-5 पुलिसकर्मियों के साथ रेंगते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया, जबकि गोलियां उनके ऊपर से निकल रहीं थी। पारस्परिक गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही और फिर आखिरकार नक्सली जंगलों में भाग निकले। क्षेत्र की तलाशी करने पर, पुलिस दल ने आईएनएसएएस राइफल-01, भरमार - 01, 315 राइफल-01 के साथ एक वर्दीधारी नक्सली का शव बरामद किया। आईएनएसएएस आईएमजी मेक-02, आईएनएसएएस राइफल मेक-02, आईएनएसएएस राउंड-46, चाकू-01, टॉर्च-01, ब्लैक बैल्ट-01, कॉम्फ्लॉज कैप-02, फ्लैश कैमरा-02, पॉउच-01 तथा अन्य दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुएं भी बरामद की गई। पुलिस दल में कोई हताहत नहीं हुआ। बाद में यह पता चला कि पारस्परिक गोलीबारी नक्सलियों की कंपनी नंबर 5 के साथ हुई थी, जो कि भारी सशस्त्र थी। मृत नक्सली की पहचान उसके प्लाटून कमांडर सैंटू पिनेम निवासी भैरमगढ़ (बीजापुर) के रूप में हुई। इस प्रकार, निरीक्षक रोशन कौशिक ने न केवल मोर्चे की अगुवाई करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया बल्कि अपनी जान की परवाह किए बिना तुरंत कार्रवाई की।

इस अभियान में श्री रोशन कौशिक, निरीक्षक, ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05/10/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 122-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का 7वां बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/ वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	संजीव कुमार यादव, उप पुलिस आयुक्त	(वीरता के लिए पुलिस पदक का 7वां बार)
02.	ललित मोहन नेगी, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
03.	हृदय भूषण, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
04.	रमेश चन्द्र लांबा, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
05.	सुखबीर सिंह, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिल्ली और हरियाणा के सबसे बेखौफ अपराधी नामतः सुरेंद्र मलिक उर्फ नीतू दाबोधा और संदीप चितानिया (जिसकी दिनांक 17 मई 2012 को सोनीपत, हरियाणा में हरियाणा पुलिस के साथ मुठभेड़ में मृत्यु हो गई थी) दिनांक 2 अप्रैल, 2012 को उस समय द्वारका क्षेत्र में हरियाणा पुलिस की हिरासत से भाग निकले थे, जब उन्हें साकेत कोर्ट में पेशी के बाद भोंडसी जेल वापस ले जाया जा रहा था।

जब विशेष सेल ने अभियुक्त सुरेंद्र मलिक उर्फ नीतू को गिरफ्तार करने के अपने प्रयासों को बढ़ा दिया, तब यह पता चला कि उन्होंने अपने सहयोगियों नामतः आलोक गुप्ता और किसी काले के साथ मिलकर दिनांक 25/26.11.2012 के बीच की रात के दौरान पुलिस स्टेशन कंझावाला, दिल्ली में तैनात दिल्ली पुलिस के हेड कांस्टेबल राम किशन की हत्या कर दी थी, जिसने कंझावाला, दिल्ली में जोंटी पुलिस पिकेट पर उन्हें पिकेट जांच के दौरान रोका था। दिनांक 18.02.2013 को, विशेष सेल और पंजाब पुलिस की संयुक्त टीमों तथा अभियुक्त सुरेंद्र मलिक उर्फ नीतू दाबोधा उर्फ मोहित और उसके सहयोगियों के बीच सरदूलगढ़, जिला मनसा, पंजाब में एक मुठभेड़ हुई, जिसमें अभियुक्त नीतू दाबोधा गोली लगने से घायल हो गया, लेकिन वह भागने में सफल हो गया, परंतु उसके सहयोगी दयानंद निवासी हरियाणा और तीन अन्य स्थानीय सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया और उस मुठभेड़ में अभियुक्त दयानंद भी गोली लगने से घायल हो गया था।

दिनांक 24.10.2013 को एक विशिष्ट जानकारी मिली कि अभियुक्त सुरेंद्र मलिक उर्फ नीतू दाबोधा और उसके सहयोगी, जिनकी संख्या का कोई पता नहीं था, के शाम के समय देर से होटल ग्रैंड, वसंत कुंज से सटी हुई सर्विस रोड़ पर स्थित पेट्रोल पंप के पास कहीं एक सफेद हुंडई आई-20 कार में आने की संभावना है जिसमें दिल्ली की नंबर प्लेट 3716 है। यह भी जानकरी मिली कि नीतू की यह यात्रा फिरौती के लिए किसी अज्ञात व्यक्ति के सनसनीखेज अपहरण की योजना बनाने के लिए अपने किसी मध्यस्थ से मिलने के लिए है। तदनुसार, अपराधियों की संदिग्ध कार का पता लगाने और उन्हें पकड़ने के लिए एक छापे (रेड) का आयोजन किया गया।

रात्रि के लगभग 10.30 बजे संदिग्ध कार को तीन सवारियों के साथ पेट्रोल पंप के समीप देखा गया। तथापि, पुलिस की मौजूदगी को भांपकर कार में सवार लोग अपनी कार से होटल ग्रैंड से सी-5 ब्लॉक, वसंत कुंज की ओर जाने वाली लिंक रोड पर भाग गए। विशेष सेल की टीमों द्वारा विभिन्न वाहनों में उनका पीछा किया गया।

एक छोटे से पीछे के बाद, एसीपी मनीषी चन्द्र द्वारा तेजी से बांई ओर मुड़कर स्वयं उनके द्वारा चलाई जा रही स्कार्पियो कार से अपराधियों की आई-20 कार को रोक लिया गया। अपराधियों ने ब्रेक लगाने के बजाय अपनी आई -20 कार को स्कार्पियो कार में भिड़ा दिया। इसके तुरंत बाद सभी तीन अपराधी अपनी कार से उतर गए और अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे। आगे की ओर बाईं तरफ बैठे अपराधी ने मनीषी चन्द्र, एसीपी द्वारा चलाई जा रही स्कार्पियो कार पर गोली दागी और वह आगे की ओर भागा जबकि चालक और पीछे की सीट पर बैठा तीसरा सवार अंधाधुंध गोली चलाते हुए पीछे की ओर होटल ग्रैंड की तरफ भागे। इस बीच निरीक्षक हृदय भूषण, उप निरीक्षक रविंदर जोशी के नेतृत्व वाली टीम ने संदिग्ध अपराधियों की दुर्घटनाग्रस्त आई-20 कार और स्कार्पियो कार को ओवरटेक कर लिया और दुर्घटनाग्रस्त कारों के सामने पोजिशन ले ली तथा टीम के सदस्यों ने उतरकर उपयुक्त पोजिशन ले ली।

अपराधी, जिसकी पहचान बाद में अभियुक्त सुरेंद्र मलिक उर्फ नीतू दाबोधा के रूप में हुई, जो स्कार्पियो कार पर गोली चलाने के बाद दुर्घटनाग्रस्त वाहनों के सामने की तरफ भाग गया था, को डीसीपी संजीव कुमार यादव और निरीक्षक हृदय भूषण और दल के अन्य सदस्यों द्वारा अपनी पहचान का खुलासा करके चुनौती दी गई तथा उसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन इसके बजाय, उसने पुलिस दल के सदस्यों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू की। उसके द्वारा दागी गईं बंदूक की दो गोलियां उप निरीक्षक रवीन्द्र जोशी को उनके द्वारा पहनी गई बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगीं। आत्मरक्षा में और अपनी जान बचाने के लिए, पुलिस दल के सदस्यों द्वारा भी अपराधी पर गोलियां चलाई गईं, जो घायल हो गया और सड़क के किनारे गिर गया। उसके बगल में एक 'वेबले' रिवाल्वर पड़ी हुई पाई गई। एक छोटी सी दौड़ के बाद, उनमें से एक बाईं तरफ सड़क पार कर गया और उसे निरीक्षक ललित मोहन नेगी के दल, जिसमें उप निरीक्षक सुखबीर सिंह और अन्य कार्मिक शामिल थे द्वारा रोका गया। ललित मोहन नेगी ने अपनी पहचान का खुलासा किया और अपराधी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन इसके बजाय उसने पुलिस दल के सदस्यों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा उसके द्वारा दागी गई एक गोली उप निरीक्षक सुखबीर सिंह द्वारा पहनी गई बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी। आत्मरक्षा में और अपनी जान बचाने के लिए, पुलिस दल के सदस्यों द्वारा भी अपराधी पर गोलियां चलाई गईं, जो घायल हो गया और सड़क के किनारे गिर गया। उसकी पहचान बाद में अभियुक्त आलोक गुप्ता निवासी कन्नौज (यूपी), अभियुक्त नीतू दाबोधा के करीबी सहयोगी के रूप में हुई। एक स्टील रंग की पिस्तौल उसके बगल में पड़ी पाई गई।

तीसरा अपराधी, जो सड़क के दाहिने तरफ होटल ग्रैंड की तरफ जाने वाली सड़क पर दौड़ रहा था तथा अपने हाथ में हथियार पकड़े हुए था, को निरीक्षक रमेश चन्द्र लांबा के दल द्वारा रोक दिया गया था। रमेश चन्द्र लांबा ने संदिग्ध अपराधी के समक्ष अपनी पहचान का खुलासा किया और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन इसके बजाय उसने पुलिस दल के सदस्यों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा उसके द्वारा दागी गई एक गोली निरीक्षक रमेश चन्द्र लांबा द्वारा पहनी गई बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी। आत्मरक्षा में और अपनी जान बचाने के लिए, पुलिस दल के सदस्यों द्वारा भी अपराधी पर गोलियां चलाई गईं, जो घायल हो गया और सड़क के किनारे गिर गया। उसकी पहचान बाद में अभियुक्त दीपक गुप्ता निवासी उत्तम नगर, दिल्ली, अभियुक्त नीतू दाबोधा के सहयोगी के रूप में हुई। उसके बगल में एक रिवाल्वर पड़ी मिली, जिस पर "मेक इन यूएसए'' उकेरा हुआ था। सभी तीन घायल अपराधियों को एम्स ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, जहां सभी तीन को मृत लाया घोषित कर दिया गया।

इस अभियान में सर्व/श्री संजीव कुमार यादव, उप पुलिस आयुक्त, ललित मोहन नेगी, निरीक्षक, हृदय भूषण, निरीक्षक, रमेश चंद्र लांबा, निरीक्षक और सुखबीर सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24/10/2013 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 123-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. नीवा जैन, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

02. नासिर अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

03. कुलजीत सिंह, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. संजीव सिंह स्लाथिया, निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20/03/2015 को प्रातः 6:15 बजे पुलिस नियंत्रण कक्ष कठुआ में एक जानकारी प्राप्त हुई कि युद्धक वर्दी पहने दो भारी सशस्त्र फिदायीन राजबाग पुलिस स्टेशन में घुस गए हैं और उन्होंने भारी गोलीबारी की है जिससे एक संतरी और एक नागरिक की मौके पर ही मौत हो गई है। जानकारी प्राप्त होने पर एसपी कठुआ अधिकारियों के एक दल, जिसमें श्री नासिर अहमद, अपर एसपी, कठुआ, श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय, कठुआ, श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी, डीएआर और निरीक्षक संजीव स्लाथिया, एसएचओ कठुआ शामिल थे, के साथ हमले का जवाब देने तथा और क्षति को रोकने के लिए न्यूनतम संभव समय में राजबाग पुलिस स्टेशन की ओर रवाना हो गए। मौके पर पहुंचने पर श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल द्वारा एसपी कठुआ को फिदायीनों की उपस्थिति के बारे में स्थिति की जानकारी दी गई, जो पुलिस स्टेशन की इमारत के अंदर छिपे हुए थे। पुलिस स्टेशन भवन की घेराबंदी करने के लिए अलग-अलग टीमें गठित की गईं ताकि फिदायीन भवन से न भाग पाएं और भागने के सभी रास्तों को तुरंत सील कर दिया गया। श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल, और निरीक्षक संजीव स्लाथिया, एसएचओ कठुआ पुलिस स्टेशन, ने अपने पीएसओ और अन्य पुलिस कर्मियों के साथ पुलिस स्टेशन के सामने के भाग को कवर किया जबकि श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय, कठुआ और श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी डीएआर कठुआ ने पर्याप्त कर्मियों के साथ पुलिस स्टेशन भवन के दाहिने हिस्से को कवर किया, जहां पर भागने के एक रास्ते का पता चला था और इस तरह फिदायीनों के भागने की किसी भी संभावना को समाप्त कर दिया गया। इस बीच पुलिस स्टेशन भवन की चाहरदीवारी के बाहर बाईं ओर तथा पीछे की ओर दो दलों को तैनात कर दिया गया। एसपी कठुआ स्थिति का जायजा लेने के लिए श्री नासिर अहमद, अपर एसपी कठुआ के साथ सटे हुए भवन (फैमिली क्वार्टर) की छत पर गए क्योंकि सीआरपीएफ के जवान जो कि पुलिस स्टेशन भवन की पहली मंजिला पर फंसे हुए थे, सबसे पहले उन्हें बिना किसी नुकसान के बाहर निकाला जाना था। इस बीच फिदायीनों के द्वारा भीतर से भारी गोलीबारी जारी रही, जिसका सामने से श्री दिवाकर सिंह तथा निरीक्षक संजीव स्लाथिया, एसएचओ कठुआ पुलिस स्टेशन के नेतृत्व वाले तथा दाईं ओर को कवर कर रहे डीएसपी मुख्यालय कठुआ श्री मुशीम अहमद और डीएसपी डीएआर, श्री कुलजीत सिंह के नेतृत्व वाले दलों द्वारा प्रभावी रूप से जवाब दिया गया। श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा, चडवाल और निरीक्षक संजीव स्लाथिया के नेतृत्व वाले दलों ने सामने की तरफ से और श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय, कठुआ तथा श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी डीएआर कठुआ के नेतृत्व वाले दलों ने दाईं तरफ से कवर फायर प्रदान करके फिदायीनों को उलझा दिया और पुलिस स्टेशन भवन के प्रथम तल पर फंसे हुए सीआरपीएफ के जवानों को सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया गया। बाहर निकाले गए सीआरपीएफ के जवानों से पूछताछ करने पर यह साफ हो गया कि एक फिदायीन पहले तल पर छिपा हुआ है जबकि दूसरा भूतल पर छिपा है। एसपी कठुआ तथा

अपर एसपी, कठुआ नासिर अहमद द्वारा सीआरपीएफ के जवानों को निकाले जाने के बाद, अन्य दो दलों के प्रमुखों श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल, श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय कठुआ, श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी डीएआर कठुआ और निरीक्षक संजीव स्लाथिया के साथ एक रणनीति बनाई गई। जबकि एसपी कठुआ और उनके दल ने कवर गोलीबारी देने के लिए पोजिशन संभाली, चाहरदीवारी को दो तरफ (सामने और दाएं तरफ) से 6 अलग-अलग स्थानों से पंक्चर किया गया। परन्तु पुलिस स्टेशन भवन के अंदर से भारी गोलीबारी जारी रही, जिसका पंक्चर की गई जगहों से प्रभावी रूप से जवाब दिया गया। फिदायीनों और पुलिस दलों के बीच पारस्परिक गोलीबारी लगभग डेढ़ घंटे तक जारी रही, लेकिन फिदायीनों को भागने का कोई भी अवसर नहीं दिया गया। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने निरंतर गोलीबारी करते हुए प्रस्ताव को ठुकरा दिया। फिदायीन भारी मात्रा में हथियारों से लैस थे, जिन्होंने पुलिस दल को मारने की मंशा से हथगोले फेंके और गोलीयां दागीं। पुलिस दलों ने भी आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की जिसके दौरान श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल, निरीक्षक संजीव स्लाथिया, एसएचओ कठुआ पुलिस स्टेशन, श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय कठुआ, श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी डीएआर कठुआ द्वारा आंसू गैस के गोले और ग्रेनेड भी फेंके गए। कुछ समय बाद भवन के अंदर से गोलीबारी रूक गई और अवसर का लाभ उठाकर साहसिक कार्रवाई करते हुए एसपी कठुआ, अपर एसपी कठुआ, डीएसपी मुख्यालय कठुआ और डीएसपी डीएआर कठुआ एक बीपी बंकर में पुलिस स्टेशन के गेट के भीतर घुस गए, जबकि श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल और निरीक्षक संजीव स्लाथिया एसएचओ कार्यालय की ओर भागे और अपनी जान की परवाह किया बिना एक खिड़की से अंदर घुस गए। अत्यधिक साहस का प्रदर्शन करते हुए, श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल और निरीक्षक संजीव स्लाथिया ने एसएचओ कार्यालय से फिदायीनों पर गोलीबारी की और फिदायीनों को घायल कर दिया, जो अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए भवन से बाहर भागे, परन्तु फिदायीन दोनों तरफ से अर्थात एक तरफ से एसपी कठुआ सुश्री नीवा जैन, आईपीएस, श्री नासिर अहमद, एसपी कठुआ, श्री मुशीम अहमद, डीएसपी, मुख्यालय कठुआ, श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी, डीएआर कठुआ, चडवाल और दूसरी तरफ से श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल और निरीक्षक संजीव स्लाथिया द्वारा भारी जवाबी गोलीबारी के बीच आ गए। इसके परिणामस्वरूप, फिदायीन को निष्क्रिय कर दिया गया। बंदूक की लड़ाई के दौरान, श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा को एक गोली लगी, तथापि निरीक्षक संजीव स्लाथिया, एसएचओ पुलिस स्टेशन कठुआ ने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना श्री दिवाकर सिंह, एसडीपीओ सीमा चडवाल को मुठभेड़ स्थल से बाहर निकाला। चतुराई से आगे बढ़ते हुए सुश्री नीवा जैन, आईपीएस, एसपी कठुआ, श्री नासिर अहमद, अपर एसपी कठुआ, श्री मुशीम अहमद, डीएसपी मुख्यालय कठुआ और श्री कुलजीत सिंह, डीएसपी डीएआर डीपीएल कठुआ पुलिस स्टेशन के प्रथम तल की ओर बढ़े जहां पर दूसरा फिदायीन छिपा हुआ था और उन्होंने कई गोलियां दागीं और ग्रेनेड फेंके। पुलिस दलों ने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और साहसी तरीके से न केवल सीआरपीएफ के 7 जवानों को पुलिस स्टेशन से सुरक्षित बाहर निकाला, बल्कि अपनी जान गंभीर खतरे में होने के बावजूद दो फिदायीनों को भी निष्क्रिय किया।

इस अभियान में, सर्व/श्री नीवा जैन, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, नासिर अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक, कुलजीत सिंह, उप पुलिस अधीक्षक और संजीव सिंह स्लाथिया, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20/03/2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 124-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आशीष कुमार मिश्रा, आईपीएस
अपर पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16/17-06-2016 के बीच की रात को लगभग 01:00 बजे सोपोर पुलिस ने हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के दो आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में एक विशिष्ट जानकारी के आधार पर 22-आरआर, सीआरपीएफ की 92 और 179 बटालियनों के

सैन्य दल के समन्वय से चान मोहल्ला बोमाई सोपोर की पूरी बस्ती की घेराबंदी कर ली। भागने के सभी संभावित मार्गों को बंद कर दिया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छिपे हुए आतंकवादियों को घेराबंदी को तोड़ने का कोई मौका न मिले।

अगले दिन सुबह होते ही, घर-घर जाकर तालाशी शुरू की गई जिसके दौरान तलाशी दल द्वारा लक्षित घर पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस बीच, यह देखा गया था कि कुछ नागरिक लक्षित क्षेत्र में फंस गए हैं, जिन्हें सावधानीपूर्वक निकालकर सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। तथापि, लक्षित घर से निवासियों को बाहर निकालने के लिए एक सुनियोजित रणनीति तैयार की गई और परिवार के सभी सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। समुचित विचार-विमर्श के बाद अभियान को आगे बढ़ाया गया और 22-आरआर के एक दल के साथ श्री जावेद इकबाल, एसपी पीसी, श्रीनगर और श्री आशीष कुमार मिश्रा-आईपीएस एसडीपीओ सोपोर के नेतृत्व में दो अग्रिम (एडवांस) दलों का गठन किया गया जिनमें क्रमशः शौकत अहमद डार, केपीएस-116067 और श्री गुलाम हसन, केपीएस-116210 और अन्य लोग शामिल थे तथा उन्होंने लक्षित घर को सील कर दिया।

इस बीच, श्री जावेद इकबाल, एसपी पीसी श्रीनगर की अगुवाई वाले पुलिस दल ने लक्षित घर के सामने की ओर सटे हुए घरों को अपने कब्जे में ले लिया तथा श्री आशीष कुमार मिश्रा-आईपीएस के नेतृत्व वाले दूसरे दल ने लक्षित घर के पीछे की ओर वाले घरों को अपने कब्जे में ले लिया। दोनों दलों ने सभी दिशाओं से लक्षित घर को घेरना शुरू कर दिया। अपनी गर्दन के चारों ओर फंदा कसते देख छिपे हुए आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने और मौके से भागने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी करना शुरू कर दिया। तथापि, श्री जावेद इकबाल, एसपी पीसी, श्रीनगर और श्री आशीष कुमार मिश्रा-आईपीएस एसडीपीओ सोपोर के नेतृत्व वाले अग्रिम, दल जिसमें शौकत अहमद डार और श्री गुलाम हसन और अन्य लोग शामिल थे, ने असाधारण साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया और प्रभावी ढंग से गोलीबारी का जवाब दिया, जिससे आमने-सामने से बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई। बंदूक की लड़ाई कुछ समय तक चली और यह छिपे हुए दो आतंकवादियों के खात्मे के साथ समाप्त हुई, जिनकी पहचान बाद में अल्ताफ अहमद मीर पुत्र अब्दुल रशीद मीर निवासी ब्राथ कलान, सोपोर और इम्तियाज अहमद लोन पुत्र अब्दुल खालिक लोन निवासी वासन खुई पट्टन बारामुला के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियारों और गोला बारूद का बड़ा जखीरा बरामद हुआ तथा इस संबंध में सोपोर पुलिस स्टेशन में धारा 307 आरपीसी तथा 7/27 आई ए. अधिनियम के तहत एफआईआर संख्या 62/2016 दर्ज है।

हमला दल के श्री जावेद इकबाल, एसपी पीसी, श्रीनगर और श्री आशीष कुमार मिश्रा-आईपीएस द्वारा चुनौतीपूर्ण स्थिति में सूझबूझ को बनाए रखने, आक्रामक स्थिति में लक्ष्य तक साथ-साथ पहुंचने में प्रदर्शित पेशेवरता तथा उत्कृष्ट साहस वास्तव में हर दृष्टि से वीरतापूर्ण था। यह अभियान अत्यंत सर्जिकल था जिसमें नागरिकों को कोई नुकसान नहीं हुआ, यद्यपि शरारती तत्वों ने बाहरी घेराबंदी पर तैनात सुरक्षा बलों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया था और दोनों मोर्चों पर अर्थात, आतंकवादियों का खात्मा करने और पत्थरबाजों से निपटने के मामले में स्थिति अत्यंत प्रतिकूल थी।

इस अभियान में, श्री आशीष कुमार मिश्रा, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक, ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17/06/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 125-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. फयाज हुसैन शाह,
   उप पुलिस अधीक्षक

2. अब्दुल रहमान,
   हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23-06-2016 की भोर में कुपवाड़ा जिले के वाटरखानी ड्रगमुला क्षेत्र में आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में एक जानकारी प्राप्त हुई। जिला पुलिस, कुपवाड़ा और 47 आरआर के पुलिस घटक द्वारा संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई और इसे शुरू किया गया। पुलिस घटक का नेतृत्व श्री एजाज अहमद, एसएसपी कुपवाड़ा, श्री फयाज हुसैन एएसपी, कुपवाड़ा, श्री फयाज हुसैन, डीएसपी (मुख्यालय) कुपवाड़ा, एसएचओ कुपवाड़ा और आई/सी पीपी, ड्रगमुला कर रहे थे। तलाशी तेज कर दी गई और घेराबंदी और तलाशी अभियान में अतिरिक्त बलों और पुलिस कर्मियों को शामिल किया गया। वाटरखानी में पत्थर की एक खदान में छिपे हुए आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने और मौके से भागने के लिए तलाशी दल पर अंधाधुध गोलीबारी शुरू कर दी। तलाशी दल काफी सर्तक था और हमले में किसी को चोट नहीं आई। उन्होंने प्रभावी ढंग से गोलीबारी का जवाब दिया और इस तरह आतंकवादियों को उलझा दिया, जो कि घने पेड़ वाले जंगलों से घिरी पत्थर की खदान में जमे हुए थे।

इस बीच, पर्यवेक्षण अधिकारी द्वारा जमीनी वास्तविकता के आधार पर एक सामरिक योजना तैयार की गई। श्री फयाज हुसैन, डीएसपी (मुख्यालय), कुपवाड़ा और एचसी अब्दुल रहमान संख्या 136/केपी और कुछ अन्य अधिकारी हमला टीम का हिस्सा बनने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। डीएसपी फयाज हुसैन ने गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व का प्रदर्शन किया और टीम को लक्ष्य के करीब ले गए, जिसके दौरान उन्हें छिपे हुए आतंकवादियों से कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, परन्तु टीम ने फौलादी इरादे को बनाए रखा और गोलीबारी का कुशलता से जवाब दिया और आतंकवादियों को घेरने में सफल रहे। बाद में, श्री फयाज हुसैन, डीएसपी (मुख्याकलय), कुपवाड़ा और एचसी अब्दुल रहमान 136/केपी के नेतृत्व वाली हमला टीम लक्ष्य के करीब पहुंच गई और इसने एक-एक करके तीन आतंकवादियों का खात्मा कर दिया। अभियान बिना किसी संपार्श्विक क्षति के पूरा हुआ, जो डीएसपी श्री फयाज हुसैन के गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व तथा टीम के सभी सदस्यों विशेष रूप से एचसी अब्दुल रहमान की निःस्वार्थ निष्ठा और समर्पण को दर्शाता है। कराई गई जांच से पता चला कि सभी तीन आतंकवादी लश्कर-ए-तैयबा संगठन के थे और हाल ही में इस तरफ घुसपैठ की थी। ये आतंकवादी सुरक्षा बलों और पुलिस प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की योजना बना रहे थे।

अभियान के दौरान, श्री फयाज हुसैन डीएसपी (मुख्याईलय), कुपवाड़ा और एचसी अब्दुल रहमान की भूमिका साहसी, निःस्वार्थ और सराहनीय रही। दोनों अपने जीवन की परवाह किए बिना लड़े। उनके गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व, निःस्वार्थ निष्ठा, साहस तथा सच्चे सहयोगी के जज्बे ने इन तीन कट्टर आतंकवादियों के खात्मे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अभियान में, सर्व/श्री फयाज हुसैन शाह, उप पुलिस अधीक्षक और अब्दुल रहमान, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23/06/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 126-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मोहम्मद हुसैन वानी,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

हंदवाड़ा पुलिस द्वारा आतंकवादी की उपस्थिति के बारे में जुटाई गई एक विशिष्ट जानकारी के आधार पर, हंदवाड़ा पुलिस द्वारा 21-आरआर की सहायता से दिनांक 23-06-2016 को वुडर बाला गांव और आसपास के वन क्षेत्रों में एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई/कार्यान्वित की गई। छिपे हुए आतंकवादी की उपस्थिति की पुष्टि करने के बाद, उसके पलायन को रोकने के लिए लक्षित क्षेत्र को और घेर लिया गया। अभियान कर्मियों की मौजूदगी को भांपकर, छिपे हुए आतंकवादी ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिससे क्षेत्र में मौजूद नागरिकों के बीच अफरातफरी फैल गई। तथापि, निरीक्षक तारिक अहमद संख्या 4483/एनजीओ और एचसी मोहम्मद हुसैन संख्या 182/एच ने फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए खुद को आगे किया। प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद, उन्होंने असाधारण साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया तथा गोलियों की बौछार के बीच फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने में सफल रहे।

इस बीच, परिणाम उन्मुख अभियान के लिए, मौके पर ही हमला टीमों का गठन किया गया जिसका नेतृत्व निरीक्षक तारिक अहमद कर रहे थे और इसमें एचसी मोहम्मद हुसैन भी शामिल थे, जो स्वेच्छा से इस कार्य के लिए आगे आए तथा हमला टीमों को विभिन्न दिशाओं से छिपे हुए आतंकवादी की ओर बढ़ने का निर्देश दिया गया और इस प्रकार घेराबंदी को और कस दिया गया और आतंकवादी के हमले का तुरंत जवाब दिया गया। चूंकि आतंकवादी भारी मात्रा में शस्त्रों से लैस और अत्यधिक प्रशिक्षित था, इसलिए उसने हमला टीमों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और ग्रेनेड फैंके और इस तरह हमला टीमों के लिए आगे बढ़ने का कार्य और दुश्कर हो गया। तथापि, निरीक्षक तारिक अहमद और एचसी मोहम्मद हुसैन अपनी जान की परवाह किए बिना, फौलादी इरादों का प्रदर्शन करते हुए जवाबी गोलीबारी करते हुए खतरनाक आतंकवादी की ओर आगे बढ़े और छिपे हुए आतंकवादी के करीब पहुंच गए। छिपे हुए आतंकवादी पर निर्णायक हमले के दौरान हमला टीमों ने उन्हें कवर गोलीबारी प्रदान की तथा इसका समापन छिपे हुए आतंकवादी के खात्मे के साथ हुआ जिसकी पहचान बाद में पाकिस्तान निवासी जुबैर के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोला बारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद हुआ तथा इस संबंध में हंदवाड़ा पुलिस स्टेशन में धारा 307, 7/27 आयुध अधिनियम के तहत एफआईआर संख्या 233/2016 दर्ज है।

पूरे अभियान में, निरीक्षक तारिक अहमद और एचसी मोहम्मद हुसैन ने अतुलनीय साहस और कर्तव्य के प्रति सर्वोच्च स्तर के निःस्वार्थ समर्पण का प्रदर्शन किया और नागरिकों की सुरक्षित निकासी सुनिश्चित की। उनके द्वारा प्रदर्शित अनुकरणीय पहलों के कारण यह अभियान बिना किसी संपार्श्विक क्षति के सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अभियान में श्री मोहम्मद हुसैन वानी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23/06/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 127-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. दाऊद अयूब,
   अपर पुलिस अधीक्षक

2. रईस अहमद भट,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.09.2016 को, चक मोहल्ला चापरण अरागम के शेर अहमद चीची पुत्र शाह जमान के घर में फिदायीन आतंकवादी की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट जानकारी के आधार पर, लगभग 2300 बजे एसएसपी बांदीपुरा की निगरानी में बांदीपुरा पुलिस द्वारा 13 आरआर और सीआरपीएफ की तीसरी बटालियन के सैन्यदल के साथ संयुक्त घेराबंदी/तलाशी अभियान शुरू किया गया।

परिणाम उन्मुख अभियान के लिए, दो एडवांस टीमों का गठन किया गया जिनमें से एक का नेतृत्व श्री दाऊद अयूब, एएसपी बांदीपुरा और 13 आरआर के मेजर एच.एन. सौनलिअन कर रहे थे और दूसरी टीम का नेतृत्व मीर मुर्तजा हुसैन डीएसपी पीसी, बांदीपुरा और 13 आरआर के मेजर सुनील सिंह कर रहे थे तथा लक्षित घर को प्रभावी ढंग से घेर लिया गया। जबकि, सीआरपीएफ की तीसरी बटालियन को लक्षित क्षेत्र में शरारती तत्वों के घुसने को रोकने के लिए पुलिस के घटकों के साथ कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सबसे बाहरी घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया।

इस बीच, अभियान कर्मियों की गतिविधि को भांपकर, छिपे हुए आतंकवादी ने घेराबंदी को तोड़ने और मौके से भागने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी करना शुरू कर दिया। तथापि, लक्षित और सटे हुए घरों से फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालना प्राथमिकता थी। इन नागरिकों को बाहर निकालने के लिए, श्री दाऊद अयूब एएसपी बांदीपुरा के नेतृत्व वाली टीमों, जिसमें सहयोगी कांस्टेबल रईस अहमद

संख्या 353/बीपीआर थे और मीर मुर्तजा हुसैन डीएसपी पीसी बांदीपुरा शामिल थे, ने उन्हें बाहर निकालने का कार्य शुरू कर दिया और अन्य अभियान सहयोगियों द्वारा प्रदान की गई कवर गोलीबारी का सहारा लेकर वे सभी फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने में सफल रहे। यह बेहद कठिन काम था, जिसे अनुशंसित अधिकारियों ने प्रतिकूल परिस्थितियों, छिपे हुए आतंकवादी के द्वारा गोलियों की बौछार के बावजूद, अपने जीवन की परवाह किए बिना पूरा किया।

अब महत्वपूर्ण चरण छिपे हुए आतंकवादी को निष्क्रिय करना था। निर्णायक हमला शुरू करने से पहले, छिपे हुए आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उसने मना कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, श्री दाऊद अयूब, एएसपी बांदीपुरा ने कांस्टेबल रईस अहमद के साथ, 13 आरआर के मेजर एच.एन. सौनलिअन ने अपनी टीम के साथ, मीर मुर्तजा हुसैन डीएसपी पी.सी. बांदीपुरा ने उप निरीक्षक गुरदीप सिंह के साथ और 13 आरआर के मेजर सुनील सिंह ने अपनी टीम के साथ अलग अलग दिशाओं से लक्षित घर पर धावा बोलना शुरू कर दिया। जैसे ही सभी दिशाओं से एडवांस टीमें लक्षित घर के पास पहुंची, छिपे हुए आतंकवादी ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप आमने-सामने की बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई। बंदूक की लड़ाई कुछ समय तक चली और इसकी समाप्ति छिपे हुए आतंकवादी के खात्मे के साथ हुई, जिसकी पहचान बाद में पाकिस्तान निवासी उर्फ हाफिज के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोला बारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद किया गया और इस संबंध में धारा 307 आरपीसी, 13 यूएलए अधिनियम, 7/27 आईए अधिनियम के तहत एक मामला एफआईआर संख्या 36/2016 दर्ज है।

इस अभियान में सर्व/श्री दाऊद अयूब, अपर पुलिस अधीक्षक और रईस अहमद भट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21/09/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 128-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गौहर अहमद खान,
उप पुलिस अधीक्षक

02. इरशाद अहमद वानी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 17-09-2013 को पट्टन पुलिस द्वारा गौशबुग में आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में एक विशिष्ट जानकारी के आधार पर, एसपी बारामुला/डीएसपी (ऑपरेशंस) पट्टन द्वारा 29 आरआर के साथ एक अभियान की योजना बनाई गई। अभियान की योजना बनाने के बाद, पुलिस/सेना की संयुक्त टीमें गौशबुग की ओर निकल पड़ीं और वहां जाकर क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। गौहर अहमद, डीएसपी (ऑपरेशंस) पट्टन, जो संदिग्ध क्षेत्र के एक हिस्सा में तलाशी कर रहे थे, ने महसूस किया कि आतंकवादी हायर सेकेंडरी स्कूल गौशबुग में छिपे हुए हैं और किसी भी नागरिक/सुरक्षा बल के हताहत होने से बचने के लिए उन्होंने तुरंत अपनी पार्टी को भवन में न जाने का निर्देश दिया। डीएसपी गौहर अहमद ने कुछ पुलिस कर्मियों की बचाव टीम बनाई, जिसमें कांस्टेबल इरशाद अहमद 840/आईआर-7वीं बटालियन शामिल थे और उन्होंने इसकी अगुवाई की। पुलिस/सेना के दो अलग-अलग संयुक्त बचाव दल भी बनाए गए, जो लक्षित भवने से सटे हुए घरों से नागरिकों को बचाने में लग गए। जैसे ही डीएसपी गौहर अहमद और उनके साथी लक्षित स्थल की ओर बढ़े, आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी कर दी। तथापि, नागरिकों के हताहत होने से बचने के लिए कोई जवाबी गोलीबारी नहीं की गई और उस कमरे के करीब आने का प्रयास किया गया जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे। जैसे ही निकासी कार्रवाई पूरी हुई, एक संयुक्त हमला दल तैयार किया गया और ऐसे ही एक दल, जिसमें डीएसपी गौहर अहमद/कांस्टेबल इरशाद अहमद 7वीं बटालियन तथा अन्य कार्मिक शामिल थे, को कमरे के भीतर जाकर कार्रवाई करने की भूमिका सौंपी गई। दोनों हमला दल संयुक्त अभियान दलों के

बाहरी कवर सहयोग से, भवन के बहुत करीब चले गए, जिससे बंदूक की भीषण लड़ाई शुरू हो गई। सर्वप्रथम, आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके और गोलियों की बौछार शुरू कर दी तथा घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया। तथापि, डीएसपी गौहर अहमद और उनके साथी अडिग रहे और उन्होंने आतंकवादियों को भवन से बाहर आकर घेराबंदी को नहीं तोड़ने दिया। हमला दलों और आतंकवादियों के बीच भीषण गोलीबारी घंटों तक जारी रही जिसके दौरान डीएसपी गौहर अहमद और उनकी टीम ने उच्च स्तर के सच्चे सहयोगी के जज्बे का प्रदर्शन किया और बहुत की कम दूरी से गोलीबारी का जवाब दिया। अधिकारी ने कांस्टेबल इरशाद अहमद 7वीं बटालियन और अन्य कार्मिकों के साथ मिलकर जवाबी गोलीबारी को और तेज कर दिया जिसके परिणास्वरूप वे भवन में घुस सके और उस कमरे की तरफ और आगे बढ़ सके जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे। अपनी जान की परवाह किए बिना अधिकारी ने उस कमरे की ओर गोलियों की बौछार शुरू कर दी जहां पर आतंकवादी छिपे हुए थे और आतंकवादियों की ओर से तुरंत ही जवाबी गोलीबारी की गई। डीएसपी गौहर अहमद, कांस्टेबल इरशाद अहमद 7वीं बटालियन और आतंकवादियों के बीच पास से बंदूक की लड़ाई 15 मिनट से अधिक समय तक जारी रही जिसका अंत हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के दो स्थानीय आतंकवादियों के खात्मे के साथ हुआ जिनकी पहचान बाद में हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के "सी" श्रेणी के आतंकवादी आकिब रशीद सोफी उर्फ याकूब निवासी सोफी मोहल्ला पलहल्लन पट्टन तथा हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के बिलाल अहमद भट निवासी न्यू कॉलोनी पलहल्लन पट्टन के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादियों से हथियार/गोला बारूद बरामद किया गया है। इस घटना के लिए, सुम्बल पुलिस स्टेशन में धारा 307, आरपीसी, 7/27 आईए अधिनियम के तहत मामला एफआईआर संख्या 174/2013 दर्ज है। यह उल्लेखनीय है कि मारे गए दोनों आतंकवादी काफी समय से बारामुला जिले के पट्टन और सोपोर क्षेत्र में सक्रिय थे और उन्होंने उक्त क्षेत्र के लोगों/मुख्य धारा के राजनीतिक कार्यकर्ताओं/सरपंचों में आंतक का राज बना लिया था। ये आतंकवादी अति विशिष्ट व्यक्तियों, सुरक्षा बलों और पुलिस एजेंसियों के लिए बड़ा खतरा थे और युवाओं को आतंकवादियों के रैंक में शामिल होने के लिए भी प्रेरित कर रहे थे।

इस अभियान में, सर्व/श्री गौहर अहमद खान, उप पुलिस अधीक्षक और इरशाद अहमद वानी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17/09/2013 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 129-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीबर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एजाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. बिलाल अहमद पर्रे, एसजीसीटी (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. जावेद अहमद खान, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10-10-2016 को, पर्यवेक्षक जम्मू-कश्मीर ईडीआई पम्पोर ने पम्पोर पुलिस स्टेशन को सूचित किया कि जम्मू-कश्मीर ईडीआई के छात्रावास की इमारत की अटारी में आग लग गई है। तदनुसार, अग्निशमन और आपातकालीन सेवा विभाग को सूचित करने के बाद, पम्पोर पुलिस स्टेशन से पुलिस टीम मौके की ओर रवाना हो गई। इस बीच, जब अग्निशमन और आपातकालीन सेवा के कर्मी आग से जूझ रहे थे, तो उक्त परिसर में छिपे हुए फिदायीन दल के आतंकवादियों ने उन पर गोली चलाई। जैसे ही उच्च स्तर पर जानकारी को साझा किया गया, पुलिस ने 50-आरआर और सीआपीएफ की 110वीं बटालियन की सहायता से पूरे परिसर की घेराबंदी कर दी।

मजबूत घेराबंदी सुनिश्चित करने के बाद, छिपे हुए आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया। परिणामोन्मुख अभियान के लिए तथा संपार्श्विक क्षति से बचने के लिए, श्री मोहम्मद जैद, एसएसपी अवंतीपोरा की निगरानी में एक व्यापक योजना तैयार की गई और फंसे हुए आतंकवादियों को निष्क्रिय करने के अलावा यह सुनिश्चित करने के लिए कि लक्षित क्षेत्र में कोई नागरिक न फंसा हो, श्री मोहम्मद जैद केपीएस, एसएसपी अवंतीपोरा, श्री एजाज अहमद-केपीएस, डीएसपी (पीसी) पम्पोर, श्री मंज़ूर अहमद, (निरीक्षक) एसएचओ, पम्पोर पुलिस स्टेशन तथा उप निरीक्षक मदसर नसीर संख्या 438/पीएयू ने एक पुलिस दल, जिसमें एसजीसीटी मोहम्मद यासीन संख्या 527/एडब्ल्यूटी, एसजीसीटी हंस राज संख्या 366/आईआर 12वीं बटालियन, एसजीसीटी निसार हुसैन संख्या 499/एपी 9वीं, एसजीसीटी फैजान उल्लाह संख्या 529/एडब्ल्यूटी, एसजीसीटी बिलाल अहमद संख्या 263/एडब्ल्यूटी, एसजीसीटी करनैल सिंह संख्या 776/आईआर पांचवीं बटालियन, कांस्टेबल तनवीर अहमद संख्या 670/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल जाहिद अहमद संख्या 582/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल शमीम अहमद संख्या 455/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल मंजूर अहमद संख्या 445/एडब्ल्यूटी शामिल थे, ने 12 एसपीओ के साथ सभी दिशाओं से लक्ष्य को घेरना शुरू कर दिया। जब वे परिसर में घुसे, तो छिपे हुए आतंकवादियों ने उन्हें हताहत करने और घेराबंदी को तोड़ने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, एडवांस टीम, जिसमें अनुशंसित पदाधिकारी शामिल थे, ने असाधारण साहस/दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया और प्रभावी ढंग से गोलीबारी का जवाब दिया। एक आमने-सामने की लड़ाई शुरू हो गई, जो तीन दिन तक चली और इसका अंत छिपे हुए आतंकवादियों के खात्मे के साथ हुआ। मुठभेड़ के दौरान 9 पैरा का सेना का एक जवान घायल हो गया। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोला बारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद हुआ और इस संबंध में धारा 436, 307, 7/27 आयुध अधिनियम, यूएलए (पी) अधिनियम की धारा 16, 18, और 20 के तहत एक मामला एफआईआर संख्या 177/2016 पम्पोर पुलिस स्टेशन में दर्ज है।

इस अभियान में, सर्व/श्री एजाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, बिलाल अहमद पर्रे, एसजीसीटी और जावेद अहमद खान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10/10/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 130-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. असहाक हुसैन पारा,
   निरीक्षक

2. मोहम्मद इकबाल,
   उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12/02/2016 को, चौकीबल क्षेत्र के मरसारी गांव में आतंकवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट जानकारी प्राप्त हुई। तदनुसार, कुपवाड़ा पुलिस द्वारा 41 आरआर और 16 ग्रेनेडियर के सहयोग से श्री एजाज अहमद, एसएसपी कुपवाड़ा की निगरानी में एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई/इसे शुरू किया गया। पूरे गांव की घेराबंदी करने के बाद, तलाशी अभियान शुरू किया गया और यह पता लगाया गया कि आतंकवादी मोहम्मद कासिम वानी के परित्यक्त घर में छिपे हुए हैं। जब लक्षित घर के चारों ओर घेराबंदी की जा रही थी, तब छिपे हुए आतंकवादियों ने अभियान दल के सदस्यों की उपस्थिति को देखकर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और फिर ग्रेनेड फेंका जिसके परिणास्वरूप सेना के 6 जवान घायल हो गए। तथापि, एडवांस पार्टी, जिसमें श्री असहाक हुसैन, ईएक्सके-001757, एसएचओ क्रालपोरा तथा उप निरीक्षक मोहम्मद इकबाल, एआरपी-109315 शामिल, थे ने गोलीबारी का जवाब दिया और छिपे हुए आतंकवादियों को घेराबंदी को तोड़ने और मौके से भागने का कोई अवसर नहीं दिया।

उस समय सबसे बड़ी प्राथमिकता सेना के घायल जवानों को निकालना थी और एडवांस टीम, जिसमें अनुशंसित व्यक्ति शामिल थे, दल के अन्य सहयोगियों द्वारा प्रदान की गई कवर गोलीबारी की सहायता से सेना के घायल जवानों को निकालने में सफल हुई। परन्तु दुर्भाग्य से 41 आरआर के सिपाही शहादन मारूति मोरे, संख्या 15228018-एच और एनके सिकंदर शेनकर चंद्र भान संख्या 2799285डब्ल्यू की चोटों के कारण मृत्यु हो गई।

चूंकि अंधेरा हो रहा था, इसलिए घेराबंदी को कसने और लक्षित क्षेत्रों में रोशनी करने सहित सभी उपायों को सुनिश्चित करने के बाद अभियान को अगले दिन तक के लिए स्थगित कर दिया गया। रात के दौरान, छिपे हुए आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने के कई प्रयास किए, परन्तु उन्हें सफल होने का कोई भी मौका नहीं दिया गया। अगले दिन, निर्णायक हमले के लिए, अभियान कर्मियों द्वारा छिपे हुए आतंकवादियों को सामने की ओर से उलझा दिया गया तथा उस, टीम जिसमें श्री असहाक हुसैन, निरीक्षक, एसएचओ क्रालपोरा पुलिस स्टेशन तथा उप निरीक्षक मोहम्मद इकबाल संख्या 109/पीएयू शामिल थे, ने पीछे की तरफ से हमला किया जिससे आमने-सामने की बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई, जिसका अंत 05 कट्टर आतंकवादियों के खात्मे के साथ हुआ जिनकी पहचान बाद में फहद, माज़, हाफिज तथा छोटा दुजाना और उकाशा के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोलाबारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद हुआ तथा इस संबंध में धारा 307 आरपीसी, 7/27 आयुध अधिनियमके तहत एक मामला एफआईआर संख्या 0/2016 क्रालपोरा पुलिस स्टेशन में दर्ज है। यह उल्लेखनीय है कि मारे गए आतंकवादी कुपवाड़ा जिले में वर्ष 2013 से सक्रिय थे और कई आतंकवादी हमलों में शामिल थे।

इस अभियान में, सर्व/श्री असहाक हुसैन पारा, निरीक्षक और मोहम्मद इकबाल, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12/02/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 131-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सैयद सज़ाद हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. संदीप भट, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. कुलदीप कुमार कौल, उप-निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
4. लखबीर सिंह, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.12.2014 को ईएसयू राजबाग को भारत के माननीय प्रधानमंत्री के दौरे से पहले श्रीनगर शहर में लश्कर-ए-तैयबा द्वारा संभावित फिदायीन हमले के बारे में जानकारी मिली। तदनुसार, उप निरीक्षक मोहम्मद अल्ताफ 3642/एस, आई/सी ईएसयू राजबाग ने अपनी टीम के साथ स्रोतों को सक्रिय किया और टीमों, जिनमें एसपी सिटी दक्षिण श्रीनगर, आई/सी ईएसयू दक्षिण श्रीनगर अपने जवानों के साथ, पीसी श्रीनगर तथा एसपी हजरतबल श्रीनगर के पुलिस दल शामिल थे, ने एसएसपी श्रीनगर की समग्र निगरानी में अवंतीभवन में 90 फीट रोड़ पर नाका लगा दिया।

लगभग 1300 बजे, नाका कर्मियों द्वारा एक सैंट्रो को रोका गया, नाका दलों की उपस्थिति को देखकर, दो सशस्त्र आतंकवादी नीचे उतरे और उन्होंने नाका दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और बाद में वे अवंतीभवन आवासीय क्षेत्र की तरफ भागे। तदनुसार,

एसएसपी श्रीनगर ने अतिरिक्त बलों को बुलाया और 1325 बजे अभियान शुरू किया गया। अभियान को शुरू करने से पहले, क्षेत्र की घेराबंदी करने के लिए टीमों का गठन किया गया। सभी अभियान नफरियों को तीन दलों में बांटा गया, पहला दल जिसमें हजरतबल जोन की नफरी और सीआरपीएफ की 144 बटालियन की एफ-कम्पनी की नफरी शामिल थी, ने बाहरी घेराबंदी की, दूसरे दल का नेतृत्व डीएसपी फुरकान कादिर कर रहे थे जिसमें श्रीनगर पुलिस के कर्मी शामिल थे तथा इसने मोहल्ले के कुछ घरों की घेराबंदी की, जबकि श्रीधर पाटिल, एसपी, सिटी दक्षिण श्रीनगर के नेतृत्व वाले तीसरे दल, जिसमें डीएसपी अभियान सैयद सजाद हुसैन, डीएसपी (अभियान) संदीप भट, उप निरीक्षक कुलदीप कौल एआरपी-046125, उप निरीक्षक मोहम्मद इरफान ईएक्सके-109318, हेड कांस्टेबल फारूक अहमद 309/एपी7वीं, कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) लखबीर सिंह 1446/एस, एसजीसीटी तारिक अहमद 142/एस और अन्य लोग शामिल थे, ने उन घरों की अंदरूनी घेराबंदी की, जहां पर आतंकवादी छिपे हुए थे।

उस अवस्था में, डीआईजी सीकेआर श्रीनगर, श्री अफहदुल मुजतबा-आईपीएस, जो कि अभियान दलों के प्रभारी भी थे, ने आगे दो और छोटे दल गठित किए, एक का नेतृत्व डीएसपी सैयद सज़ाद हुसैन कर रहे थे तथा उसमें डीएसपी अभियान संदीप भट, एएसआई अथर परवेज 2084/पीडब्ल्यू, सार्जेंट तारिक अहमद 142/एस और अन्य लोग उनकी सहायता कर रहे थे, दूसरे दल का नेतृत्व श्रीधर पाटिल-आईपीएस, एसपी सिटी दक्षिण कर रहे थे तथा उसमें उप निरीक्षक कुलदीप कौल एआरपी-046125, उप निरीक्षक मोहम्मद इरफान ईएक्सके-109318, हेड कांस्टेबल फारूक अहमद 309/एपी7वीं, कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) लखबीर सिंह 1444/एस तथा अन्य लोग शामिल थे। जैसे ही दूसरे दल ने मोहल्ले में प्रवेश करने का प्रयास किया, आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके, जो बिना कोई नुकसान पहुंचाए फट गए। तथापि, श्रीधर पाटिल-आईपीएस, एसपी दक्षिण के नेतृत्व वाली टीम ने चतुराई से तथा अपनी जान की परवाह किए बिना आस-पास के घरों से लोगों को निकाल लिया। परन्तु यहां आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने और भागने के प्रयास में फिर से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, श्रीधर पाटिल और डीएसपी सैयद सज़ाद हुसैन के नेतृत्व वाले दोनों दल लक्ष्य स्थल तक पहुंच गए और सर्वोच्च स्तर की वीरता का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने गोलीबारी का प्रभावी रूप से जवाब दिया और इन दोनों आतंकवादियों का सफलतापूर्वक खात्मा कर दिया, जिनकी पहचान बाद में पाकिस्तान निवासी कारी असरार तथा शाहिद उल इस्लाम मलिक उर्फ हसन पुत्र मोहम्मद शफी मलिक निवासी ईदगाह मोहल्ला अरवानी, बिजबेहरा के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से 2 एके-47 राइफल, 06 एके मैजगीन, 01 ग्रेनेड, 02 पाउच, तथा एके 47 के 27 राउंड बरामद हुए। इस संबंध में धारा 307 आरपीसी, 7/27 आईए अधिनियम के तहत एक मामला एफआईआर संख्या 133/2014 सौरा पुलिस स्टेशन श्रीनगर में दर्ज है।

इस अभियान में, श्रीधर पाटिल-आईपीएस, एसपी दक्षिण श्रीनगर, डीएसपी सैयद सजाद हुसैन, डीएसपी संदीप भट, उप निरीक्षक कुलदीप कौल एआरपी-046125, तथा कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) लखबीर सिंह 1446/एस ने सूचना के जुटाए जाने से लेकर अभियान के पूरे हो जाने तक असाधारण प्रदर्शन किया। पूरे अभियान के दौरान ये कार्मिक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अडिग रहे।

इस अभियान में, सर्व/श्री सैयद सज़ाद हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक, संदीप भट, उप पुलिस अधीक्षक, कुलदीप कुमार कौल, उप-निरीक्षक और लखबीर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05/12/2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 132-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मीर मुर्तजा हुसैन सोहिल, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. रशीद अकबर मकायी, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
3. एजाज अहमद भट, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

4. अल्ताफ नाजिर शाह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.11.2016 को, बोनखान मोहल्ला हाजिन में फिदायीन दस्ते के विदेशी आंतकवदियों की उपस्थिति, जो क्षेत्र में आतंकवादी हमले की योजना बना रहे थे, के बारे में विशिष्ट जानकारी के आधार पर 13 आरआर तथा सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन के सहयोग से एसपी, बांदीपोरा की समग्र निगरानी में घेराबंदी की गई। तलाशी अभियान के दौरान, लक्षित क्षेत्र को चिन्हित किया गया और पुलिस तथा सेना के जवानों वाली टीम द्वारा उन्हें घेर लिया गया जिसमें श्री दाऊद अयूब, एएसपी बांदीपोरा, मीर मुर्तजा हुसैन, डीएसपी पीसी बानीपोरा, रशीद अकबर एसडीपीओ सुंबल शामिल थे और जिसका नेतृत्व श्री जुल्फिकार आज़ाद, एसपी बांदीपोरा कर रहे थे।

लक्ष्य को सभी तरफ से घेरने के बाद, श्री शेख जुल्फिकार आज़ाद, एसपी बांदीपोरा और 13 आरआर के कर्नल व्रिकम जीत सिंह सीओ की समग्र निगरानी में एडवांस पार्टी को दो टीमों में बांटा गया, एक का नेतृत्व श्री दाऊद अयूब, एएसपी बांदीपोरा, रशीद अकबर एसडीपीओ सुंबल, 13 आरआर के मेजर पीके पाठक कर रहे थे जिसमें कांस्टेबल अल्ताफ नाजिर, ईएक्सके-111724, कांस्टेबल मोहम्मद अशरफ, एआरपी -078304 और अन्य कार्मिक शामिल थे तथा इस टीम को लक्ष्य की उत्तरी से दक्षिणी ओर की घेराबंदी करने का दायित्व सौंपा गया, जबकि मीर मुर्तजा हुसैन डीएसपी, पी.सी. बांदीपोरा 13 आरआर के मेजर मलय बैद्य के नेतृत्व वाली दूसरी टीम, जिसमें कांस्टेबल एजाज अहमद, एआरपी-078317, कांस्टेबल तवसीफ अहमद, ईएक्सके-116732 और अन्य कार्मिक शामिल थे, को लक्ष्य की पूर्वी से पश्चिमी ओर की घेराबंदी करने का दायित्व सौंपा गया। सीआरपीएफ की 45 वीं बटालियन के जवानों को पुलिस के सहयोग से घेराबंदी तथा कानून और व्यवस्था संबंधी कार्य सौंपा गया।

इस बीच, छिपे हुए आतंकवादियों ने अपनी गर्दन के चारों ओर शिंकजा कसते देखकर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हालांकि, यह देखा गया कि कुछ नागरिक लक्षित क्षेत्र में फंस गए हैं। फंसे हुए नागरिकों को निकालने का काम श्री जुल्फिकार आज़ाद, एसपी बांदीपोरा की निगरानी में गठित उपर्युक्त टीमों को सौंपा गया। टीमें अन्य अभियान कर्मियों के द्वारा प्रदान किए गए सुरक्षा कवर के अंतर्गत, कई प्रयासों में फंसे हुए नागरिकों को निकालने में सफल हईं। निकासी प्रक्रिया के बाद, छिपे हुए आतंकवादियों को निष्क्रिय करना महत्वपूर्ण चरण था। अंतिम हमला शुरू करने से पहले, छिपे हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया और इसकी बजाय अंधाधुंध गोलीबारी और ग्रेनेड फेंकना शुरू कर दिया। उन्हे निष्क्रिय करने के लिए श्री दाऊद अयूब, एएसपी बांदीपोरा, रशीद अकबर एसडीपीओ सुंबल और उनके साथियों की टीम, जिसमें कांस्टेबल अल्ताफ नाजिर, संख्या 836/बीपीआर, कांस्टेबल तवसीफ अहमद, संख्या 446/बीपीआर शामिल थे तथा 13 आर आर के मेजर पी.के. पाठक और उनके साथियों की टीम जिसमें मीर मुर्तजा हुसैन डीएसपी, पी.सी. बांदीपोरा, कांस्टेबल एजाज अहमद संख्या 560/आईआरपी 8वीं बटालियन और कांस्टेबल मोहम्मद अशरफ संख्या 569/आईआरपी 8वीं बटालियन तथा 13 आर आर के मेजर मलय बैद्य शामिल थे, ने श्री शेख जुल्फिकार आज़ाद, एसपी बांदीपोरा और 13 आर आर के कर्नल व्रिकम जीत सिंह सीओ के नेतृत्व में सभी तरफ से लक्ष्य को घेरना शुरू कर दिया जिससे आमने-सामने की बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई जिसका अंत छिपे हुए आतंकवादियों के खात्मे के साथ हुआ, जिनकी पहचान बाद में लश्कर-ए-तैयबा संगठन के उर्फ अली तथा उर्फ बाबर के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियारों/गोला बारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद हुआ तथा इस संबंध में धारा हाजिन पुलिस स्टेशन में 307 आरपीसी, 7/27 आईए अधिनियम के तहत एक मामला एफआईआर संख्या 72/2016 दर्ज है।

पूरे अभियान के दौरान, श्री शेख जुल्फिकार आज़ाद, (एसपी बांदीपोरा), श्री दाऊद अयूब (एएसपी बांदीपोरा), श्री मीर मुर्तजा हुसैन (डीएसपी पी.सी. बांदीपोरा), श्री रशीद अकबर (एसडीपीओ सुंबल), कांस्टेबल एजाज अहमद संख्या 560/आईआरपी 8वीं बटालियन, कांस्टेबल मोहम्मद अशरफ संख्या 569/आईआरपी 8वीं बटालियन, कांस्टेबल तवसीफ अहमद संख्या 446/बीपीआर और कांस्टेबल अल्ताफ नाजिर संख्या 836/बीपीआर ने फंसे हुए नागरिकों को निकालने और छिपे हुए आतंकवादियों को निष्क्रिय करने में असाधारण साहस, दृढ़ संकल्प, वीरता के कृत्य का प्रदर्शन किया।

यहां यह उल्लेख करना संगत है कि मीर मुर्तजा हुसैन सोहिल, डीएसपी पी.सी. बांदीपोरा ने दिनांक 10.01.2017 को पारेर्रे मोहल्ला हाजिन बांदीपोरा में चलाए गए अभियान में भी अनुकरणीय भूमिका निभाई थी, जिसमें लश्कर-ए-तैयबा संगठन का "ए" श्रेणी का पाकिस्तान निवासी आतंकवादी नामतः अबू माविया मारा गया था तथा श्री रशीद अकबर मकायी, डीएसपी एसडीपीओ सुंबल ने भी दिनांक 19.01.2017 को खोस मोहल्ला हाजिन बांदीपोरा में चलाए गए अभियान में हिस्सा लिया था, जिसमें "ए+" श्रेणी का लश्कर-ए-तैयबा का डिवीजनल कमांडर नामतः अबू मुसैब उर्फ मूसा उर्फ माज मारा गया था।

इस अभियान में सर्व/श्री मीर मुर्तजा हुसैन सोहिल, उप पुलिस अधीक्षक, रशीद अकबर मकायी, उप पुलिस अधीक्षक, एजाज अहमद भट, कांस्टेबल और अल्ताफ नाजिर शाह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22/11/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 133-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)

02. ज़िया-उर-रहमान, उप-निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. सज्जाद अहमद खान, एसजीसीटी — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. दाऊद अहमद भट, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13/14.12.2016 की मध्यवर्ती रात को लगभग 01 बजे पूर्वाह्न एलईटी संगठन के एक पाक आतंकवादी कमांडर की मौजूदगी के बारे में सूचना पर कार्रवाई करते हुए, सोपोर पुलिस ने सीआरपीएफ की 92/177 एवं 179 बटालियनों के सहयोग से गांव दोनी मुहल्ला एडीपुरा, बोमई की पूरी बस्ती को घेर लिया। 22 आरआर की टुकड़ियां भी बाद में अभियान में शामिल हो गईं। पूरी तरह घेराबंदी सुनिश्चित करने के पश्चात, लक्ष्य क्षेत्र से नागरिकों को बाहर निकालना पहली प्राथमिकता थी और इस उद्देश्य के लिए एसआई ज़िया-उर-रहमान, संख्या. एआरपी-109257, एसआई प्रवीण कुमार, संख्या एआरपी-085601, कांस्टेबल मुहम्मद युनूस, संख्या 743/एसपीआर, ईएक्सके-118709 एवं कांस्टेबल अब.रशीद, संख्या 548/एसपीआर, ईएक्सके-107833, एसजीसीटी सज्जाद अहमद संख्या 366/पीडब्लयू एवं कांस्टेबल दाउद अहमद संख्या 09/एसपीआर को शामिल करते हुए श्री हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, सौपोर के समग्र पर्यवेक्षण में पुलिस और सेना की टुकड़ियों के एक संयुक्त एडवांसड दल का गठन किया गया। दल ने लक्ष्य क्षेत्र से भोर होने से पूर्व फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने में उच्च कोटि के पेशेवर गुणों और साहस का प्रदर्शन किया।

भोर के समय तलाशी अभियान के दौरान छिपे हुए आतंकवादियों के स्थान को चिह्नित किया गया, जिन्होंने अभियान दल के कार्मिकों की मौजूदगी की भनक पाते ही अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, एडवांसड दल जिसमें सिफारिश किए गए लोग शामिल थे, ने प्रभावशाली रूप से जवाबी गोलीबारी की जिससे बंदूक की घमासान लड़ाई शुरू हो गई। फंसा हुआ आतंकवादी बचकर निकलने में सफल होने के लिए अभियान को शाम होने तक खींचने के लिए बेहतर स्थिति में था। तथापि, एडवांसड दल, जिसमें श्री हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, सोपोर के नेतृत्व में एसआई ज़िया-उर-रहमान, एसआई प्रवीण कुमार, कांस्टेबल मुहम्मद युनूस एवं कांस्टेबल अब.रशीद, एसजीसीटी सज्जा द अहमद, कांस्टेबल दाऊद अहमद शामिल थे, लक्ष्य की तरफ और आगे बढ़ने लगा ताकि लक्षित मकान पर धावा बोल सकें। जब एडवांसड दल, जिसमें सिफारिश किए गए व्यक्ति शामिल थे, लक्षित मकान पर धावा बोल सके, के आहतें तक पहुंचने में सफल हुआ तभी छिपे हुए आतंकवादियों ने फिर से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और लक्षित मकान की पहली मंजिल पर आ गए। तथापि, सिफारिश किए गए व्यक्तियों सहित एडवांसड दल चट्टान की तरह डटे रहे और प्रभावी रूप से जवाबी गोलीबारी की। आमने-सामने की गोलीबारी छिपे हुए आतंकवादी की मौत के बाद खत्म हुई, जिसकी पहचान बाद में अबु बकर, निवासी-पाकिस्तान, एलईटी के डिविजनल कमांडर, उत्तर-कश्मीर के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से हथियार/गोला बारूद का बड़ा भंडार बरामद हुआ था और इस संबंध में बोमई पुलिस स्टेशन में 307/आरपीसी,7/27 आयुध अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकी संख्या 151/2016 दर्ज है। यहां यह उल्लेखनीय है कि मृतक आतंकवादी उत्तर कश्मीर में एलईटी के डिविजनल के कमांडर के रूप में कार्य कर रहा था और घुसपैठियों की मदद करने और

उन्हें उनके अभियान स्थल तक पहुंचने में सहयोग प्रदान करने के साथ-साथ नई घुसपैठ कराने का व्यवस्था करता था। पूरे अभियान के दौरान श्री हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, सोपोर, एसआई ज़िया-उर-रहमान, एसआई प्रवीण कुमार, कांस्टेबल मुहम्मद युनूस एवं कांस्टेबल अब. रशीद, एसजीसीटी सज्जाअद अहमद और कांस्टेबल दाऊद अहमद ने वीरता एवं मैत्रीभाव का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, सोपोर ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में उच्च कोटि के नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में सर्व/श्री हरमीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, ज़िया-उर-रहमान, उप-निरीक्षक, सज्जा द अहमद खान, एसजीसीटी और दाऊद अहमद भट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.12.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 134-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शाहनवाज अहमद पडे, सहायक उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. फारूख अहमद डार, हेड कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. निसार अहमद, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06/07.05.2016 की मध्यवर्ती रात के दौरान अवन्तीपुरा पुलिस को गांव पंजगाम के गुलाम हसन शेरगोजरी के घर के आतंकवादियों के मौजूद होने के बारे में विशिष्ट जानकारी प्राप्त हुई। तदनुसार, पुलवामा एवं श्रीनगर पुलिस द्वारा 55 आरआर/130 बटालियन सीआरपीएफ की सहायता से लक्षित मकान की घेराबंदी कर दी गई। दो हमला दलों का गठन किया गया जिसमें एक का गठन श्री श्रीधर पाटिल-आईपीएस, पुलिस अधीक्षक अवन्तीपुरा एवं दूसरे दल का गठन श्री संदीप चौधरी, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक (पीसी) श्रीनगर के नेतृत्व में किया गया। लक्षित मकान की पहचान करने के बाद, परिवार के सदस्यों को बाहर आने के लिए कहा गया। तथापि, छिपे हुए आतंकवादियों ने अंधाधुध गोलीबारी शुरू कर दी और परिवार के सदस्य लक्षित मकान के भूतल में फंस गए। जवाबी कार्रवाई करने से पूर्व छिपे हुए आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने और परिवार के सदस्यों को बाहर आने देने के लिए कहा गया। तथापि, उन्होंने मना कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। परिवार के सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए, श्री श्रीधर पाटिल-आईपीएस, पुलिस अधीक्षक अवन्तीपुरा के नेतृत्व वाले एडवांस दल ने मकान में प्रवेश किया, जिसके बाद छिपे हुए आतंकवादियों की ओर से भारी मात्रा में गोलीबारी की गई। श्री संदीप चौधरी-आईपीएस, पुलिस अधीक्षक (पीसी), श्रीनगर के नेतृत्व में एएसआई शाहनवाज अहमद संख्या 3656/एस, एच सी फारूख अहमद, संख्या 309/एपी, सातवें एसजीसीटी ज़हूर अहमद, संख्या 1070/एस, एसजीसीटी शबीर अहमद संख्या 1506/एस, कांस्टेबल मुख्तार अहमद, संख्या 4546/एस, कांस्टेबल मेहराज़ उद्दीन, संख्या 3172/एस, कांस्टेबल शोकत अहमद, संख्या 1070/एस, कांस्टेबल मोहम्मद अल्ताफ संख्या 4529/एस, कांस्टेबल मो. शफी, संख्या 4535/एस, फॉलो.फयाज़ अहमद, संख्या 89/एफ-आईआर सेकेंड ने पांच एसपी के साथ एसपीओ ने आतंकवादियों को अपनी नोक पर रखा और उन्हें गोलीबारी में उलझाए रखा जबकि श्री श्रीधर पाटिल, आईपीएस, एसपी अवन्तीपुरा, एएसआई मंजूर अहमद संख्या 223/अवन्तीपपुरा, एएसआई इरशाद अहमद

संख्या 346/अवन्तीपपुरा, एसजीसीटी मोहम्मद असलम संख्या 811-आईआर 11वीं, एसजीसीटी अल्ताफ अहमद संख्या 804/पीएल, कांस्टेबल सरताज अहमद संख्या 629/अवन्तीपुरा, कांस्टेबल शबीर अहमद संख्या 597-आईआर 11वीं बटालियन, कांस्टेबल निसार अहमद संख्या 805/एपी 12वीं बटालियन के साथ आठ एसपीओ सहित कमरे में प्रवेश के लिए तेजी से आगे बढ़े। पुलिस पार्टी को

आगे बढ़ते देख, एक आतंकवादी फियादीन के रूप में मकान के पीछे की खिड़की से चुपके से बाहर आया और मकान की दीवार से सटकर पोजिशन ले ली ताकि वह वहां से आगे बढ़ रही पुलिस पार्टी, जो कि मकान में प्रवेश करने वाली थी, को आसानी से निशाना बना सके। पुलिस अधीक्षक 'पुलिस कम्पोनेंट' श्रीनगर ने आतंकवादी को देख लिया और पलभर में पांच एसपीओ के साथ उसका सामना किया और एक संक्षिप्त गोलीबारी में उसे मार गिराया। एसपी अवन्ती पुरा के नेतृत्व में पार्टी सावधानीपूर्वक मकान में दाखिल हुई, तथापि, कोरीडोर में मौजूद दूसरे आतंकवादी द्वारा उन्हें चुनौती दी गई। पुलिस पार्टी ने सीढ़ियों के पीछे आड़ ले ली और जवाबी गोलीबारी की। कांस्टेबल निसार अहमद संख्या 805/एपी 12वीं बटालियन को प्रारंभिक हमले में छाती के निकट गोली लगी लेकिन सौभाग्य से उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने बुलेटप्रूफ गजैट पहन रखा था। संक्षिप्त गोलीबारी में, आतंकवादी को कोरीडोर में मार गिराया गया। बाद में, परिवार के सभी सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। नागरिकों को बाहर निकालने के पश्चात, एसपी अवन्ती पुरा के नेतृत्व में आठ एसपीओ के साथ एएसआई इरशाद अहमद, एसजीसीटी मोहम्मद असलम, एसजीसीटी अलताफ अहमद, कांस्टेबल सरताज अहमद, कांस्टेबल शबीर अहमद, कांस्टेबल निसार अहमद को शामिल करते हुए रूम इंटरवेंशन पार्टी गोलीबारी का कवर लेते हुए मकान में दाखिल हुई। मकान के अंदर मौजूद आतंकवादी ने अचानक पार्टी पर गोलीबारी कर दी और प्रभावी जवाबी कार्रवाई में उस आतंकवादी को भी मार गिराया गया। सभी तीन मृतक आतंकवादियों की पहचान इश्फाक हमीद डार पुत्र अब.हमीद डार, निवासी- डोगरीपुरा (ए श्रेणी), हसीब अहमद पाल पुत्र गुल पाल, निवासी- ब्राव बंडिना (ए श्रेणी) एवं इश्फाक बाबा पुत्र गुलाम कादिर बाबा, निवासी- तहाब पुलवामा (बी श्रेणी) के रूप में की गई। इस संबंध में अवन्तीपुरा पुलिस स्टेशन में 307 आरपीसी, 7/27 आयुध अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकी संख्या 60/2016 दर्ज है।

इस अभियान में सर्व/श्री शाहनवाज अहमद पडे, सहायक उप-निरीक्षक, फारूख अहमद डार, हेड कांस्टेबल एवं निसार अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 07.05.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 135-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/ वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व श्री/

01. दाऊद अयूब, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. गुरदीप सिंह, निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

03. निसार अहमद डार, हेड कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.01.2017 को, खोस मोहल्ला, हाजिन में निकट की पुलिस/सेना स्थापना में फिदायीन हमला करने के इरादे से कुछ विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर, इस सूचना को सेना, 13 आरआर एवं सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन के साथ साझा किया गया और तदनुसार, पुलिस अधीक्षक, बांदीपोरा की समग्र निगरानी में एसओजी बांदीपुरा, हाजिन पुलिस स्टेशन के पुलिस दल, सेना, 13 आरआर एवं सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन द्वारा लगभग 0700 बजे संयुक्त घेराबंदी/तलाशी अभियान शुरू किया गया। पुलिस दलों का नेतृत्व श्री शेख जुल्फिकार आज़ाद, पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा, श्री दाऊद अयूब, अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा, मीर मुर्तजा हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक पी.सी. बांदीपोरा एवं राशिद अकबर, एसडीपीओ सुम्बल कर रहे थे। अभियान दलों ने प्रत्यक्ष रूप से सामने आए बिना लक्ष्य क्षेत्र तक पहुंचने के लिए अपनी रणनीतिक दक्षता का उपयोग किया। प्रारंभ में संदिग्ध क्षेत्र की गहन/मजबूत घेराबंदी करने के लिए सेना/पुलिस के दो संयुक्त दल गठित किए गए। पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा एवं 13 आरआर के सीओ

कर्नल विक्रमजीत सिंह की समग्र कमान एवं निगरानी में श्री दाऊद अयूब, अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा, राशिद अकबर, एसडीपीओ, सुम्बल एवं मेजर विशाल सिंह थापा, 13 आरआर की कमान में एक अभियान दल को लक्ष्य क्षेत्र के उत्तर से दक्षिण की ओर पश्चिमी छोर को कवर करते हुए घेराबंदी करने की जिम्मेदारी सौंपी गई, जबकि मीर मुर्तजा हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक, पी.सी., बांदीपोरा एवं 31 आरआर के मेजर अमित गौड़ के नेतृत्व में दूसरे अभियान दल को संदिग्ध क्षेत्र के उत्तर से दक्षिण की ओर पूर्व की दिशा को कवर करते हुए घेराबंदी का कार्य सौंपा गया। घेराबंदी के दौरान, संयुक्त बल घटकों अर्थात् पुलिस/सेना ने बेहतर समन्वय स्थापित किया और इसके फलस्वरूप अत्यंत समन्वित एवं पेशेवर तरीके से कार्रवाई की। इस बीच, सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन दल एवं अन्य पुलिस पार्टी को कानून एवं व्यवस्था के संबंध में बाहरी घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया। घेराबंदी के उपरांत, पास के क्षेत्र में छिपे आतंकवादियों ने अभियान दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इसलिए फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालना अभियान दलों के लिए कठिन चुनौती थी। अत:, इस उद्देश्य के लिए दो दलों का गठन किया गया। अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा और एसडीपीओ सुम्बल की कमान एवं नियंत्रण में एक दल एवं उप पुलिस अधीक्षक पी.सी. बांदीपोरा की कमान में दूसरे दल का गठन किया गया। इन पार्टियों के लिए फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालना एक कठिन कार्य था जिसके अपर पर पुलिस अधीक्षक और एसडीपीओ सुम्बल तथा उनके सहयोगियों उप पुलिस अधीक्षक पीसी बांदीपोरा, उप पुलिस अधीक्षक परिवीक्षाधीन साकिब गनी, उप निरीक्षक गुरदीप सिंह, एआरपी-046132 के साथ उनके सहयोगी हेड कांस्टेबल निसार अहमद एवं कांस्टेबल विकास शर्मा/आईआरपी 8वीं बटालियन लक्ष्य क्षेत्र निकट के क्षेत्र, जहां से छिपे हुए आतंकवादी लगातार गोलीबारी कर रहे थे, के एकदम नजदीक पहुंच गए। नागरिकों को सफलतापूर्वक बाहर निकालने के बाद, तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण चरण छिपे हुए आतंकवादियों को मार गिराना था। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने इसका प्रत्युत्तर गोलीबारी करके और ग्रेनेड फेंककर दिया। श्री शेख जुल्फिकार आज़ाद, पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा एवं 13 आरआर के सीओ कर्नल विक्रमजीत सिंह की समग्र कमान एवं निगरानी में अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा एवं एसडीपीओ सुम्बल, एसआई गुरदीप सिंह के साथ हेड कांस्टेबल निसार अहमद एवं 13 आरआर के मेजर विशाल सिंह थापा के साथ उनके सहयोगियों तथा उप पुलिस अधीक्षक पीसी, बांदीपोरा के साथ उनके सहयोगियों और 31 आरआर के मेजर अमित गौड़ के साथ उनके सहयोगियों को शामिल करते हुए फिदायीन रोधी (आत्महत्या-रोधी) दस्तों दल का गठन किया गया। इन दोनों अभियान दलों ने लक्ष्य क्षेत्र पर धावा बोल दिया। आतंकवादियों ने बचकर भागने के लिए प्रदर्शनकारियों की ओर भागने की कोशिश की। घेराबंदी को और मजबूत कर दिया गया और उसकी चाल को विफल करने के लिए सड़क पर बुलेटप्रुफ वाहन तैनात कर दिए गए। उक्त आतंकवादी ने स्वयं को फंसा हुआ पाकर गली में मोर्चा संभाल लिया और बलों पर भारी गोलीबारी करने लगा जिसके कारण एक एसओजी जवान कांस्टेबल विकास शर्मा गोली लगने से घायल हो गए और मिनी फोर्स वाहन को नुकसान पहुंचा। संयुक्त बलों द्वारा गोलीबारी का प्रत्युत्तर प्रभावी रूप से दिया गया और वहां पर हुई गोलीबारी में लश्कर-ए-तैयबा का एक विदेशी आतंकवादी मारा गया। मारा गया आतंकवादी लश्कर-ए-तैयबा का डिवीजनल कमांडर अबू मुसैब उर्फ माज ए+ श्रेणी का आतंकवादी था। मारे गए आतंकवादी के कब्जे से हथियार/गोलाबारूद बरामद किया गया। इस संबंध में हाजिन पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307, 148, 149, 336, 353 और आई.ए. अधिनियम की धारा 7/27 के तहत प्राथमिकी सं. 04/2017 दर्ज है। अभियान के दौरान बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में एक एके-56 राइफल, एके-56 की 03 मैगजीनें (02 क्षतिग्रस्त), 66 एके-56 के जिंदा कारतूस, 03 चाइनीज ग्रेनेड एवं 01 पाउच शामिल हैं।

इस अभियान में, सर्व/श्री दाऊद अयूब, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, गुरदीप सिंह, निरीक्षक और निसार अहमद डार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.01.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 136-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्वश्री/

1. फारूख अहमद मंट्टू,
हेड कांस्टेबल

2. रियाज अहमद,
एसजीसीटी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दूसू रफियाबाद के सामान्य क्षेत्र में विदेशी आतंकवादी के मौजूद होने के बारे में विशिष्ट आसूचना के आधार पर, सोपोर पुलिस ने 22 आरआर, सीआरपीएफ की 179, 177 एवं 92 बटालियन की टुकड़ियों, के सहयोग से दिनांक 09.11.2016 को लगभग 1500 बजे गांव दूसू जागीर, रफियाबाद में घेराबंदी एवं तलाशी अभियान शुरू किया। तलाशी अभियान के दौरान यह सुनिश्चित हुआ कि आतंकवादी सखी सरवर की श्राइन में छिपे हुए हैं और विदेशी आतंकवादी हैं तथा अत्याधुनिक हथियारों से लैस हैं। नागरिकों के लक्ष्य क्षेत्र के पास अपने खेतों में व्यस्त होने के कारण, सम्पार्श्विक क्षति/नागरिकों के हताहत होने की आशंका थी।

परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, श्री शौकत अहमद-केपीएस, सं. 116067-केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) सोपोर के नेतृत्व में हेड कांस्टेबल फारूख अहमद सं.24/सोपोर पीआईडी सं.012574 एवं एसजीसीटी रियाज अहमद सं.2923/एस, पीआईडी सं. ईएक्सके-971496 को शामिल करते हुए पुलिस/सेना का एक संयुक्त दल गठित किया गया था और लक्ष्य क्षेत्र से नागरिकों को बाहर निकालने की प्रक्रिया शुरू की गई। कुछ प्रयासों के बाद दल को नागरिकों से पूरी तरह बाहर निकालने में सफलता मिली। नागरिकों को बाहर निकालने की प्रक्रिया के पश्चात, लक्ष्य क्षेत्र पर पुनः ध्यान केंद्रित किया गया और छिपे हुए आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, संस्तुत व्यक्तियों सहित अग्रवर्ती अभियान दल ने गोलीबारी का प्रभावशाली रूप से प्रत्युत्तर दिया, जिससे आमने-सामने की गोलीबारी की लड़ाई शुरू हो गई। हेड कांस्टेबल फारूख अहमद एवं एसजीसीटी रियाज अहमद सहित श्री शौकत अहमद-केपीएस, उप-पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), सोपोर के नेतृत्व में पुलिस/सेना के संयुक्त दल छिपे हुए आतंकवादी के साथ लड़ते हुए आगे बना रहा। इस बीच, अग्रवर्ती दल, जिसमें संस्तुत व्यक्ति शामिल थे, ने सभी दिशाओं से लक्ष्य की तरफ आगे बढ़कर लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया। जान आफत में पड़ता महसूस करते हुए, छिपे हुए आतंकवादी गोलियों की बौछार करते हुए श्राइन से बाहर आ गए। तथापि, हेड कांस्टेबल फारूख अहमद एवं एसजीसीटी रियाज अहमद सहित श्री शौकत अहमद, उप-पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) सोपोर असाधारण साहस एवं पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए डटे रहे और आमने-सामने की गोलीबारी छिपे हुए आतंकवादी को मार गिराने के बाद समाप्त हुई, जिसकी बाद में मुस्तफा एवं अली, निवासी पाकिस्तान, लश्कर-ए-तैयबा संगठन के रूप में पहचान हुई। मुठभेड़ स्थल में भारी मात्रा में हथियार/गोला-बारूद बरामद किया गया और इस संबंध में डांगीवाचा पुलिस स्टेशन में आयुध अधिनियम की धारा 7/25 के अधीन प्राथमिकी सं.115/2016 पंजीकृत है।

यहां उल्लेखनीय है कि मारे गए आतंकवादी लम्बे समय से इस क्षेत्र में सक्रिय थे और आतंकवादी संबंधी कई घटनाओं में संलिप्त थे। वे युवाओं को आतंकवाद में शामिल होने के लिए आकर्षित करने में भी संलिप्त थे।

पूरे अभियान के दौरान, श्री शौकत अहमद, उप-पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), सोपोर, हेड कांस्टेबल फारूख अहमद एवं एसजीसीटी रियाज अहमद ने अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुए बेकसूर नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालना सुनिश्चित किया। अधिकारी ने नाजुक परिस्थिति में उच्च स्तर के नेतृत्व का प्रदर्शन किया और किसी प्रकार की सम्पार्श्विक क्षति न होना सुनिश्चित किया। अभियान का नेतृत्व करने के अतिरिक्त, अपने पेशेवर रवैये, कर्तव्यपरायणता एवं नेतृत्व गुणों के कारण उन्होंने ऐसी नाजुक स्थिति में असाधारण पराक्रम का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में सर्व/श्री फारूख अहमद मंटू, हेड कांस्टेबल और रियाज अहमद, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09/11/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 137-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शीतलकुमार अनिलकुमार दोइजड,
पुलिस उप निरीक्षक

02. हर्षद बबन काले,
पुलिस उप निरीक्षक

03. प्रभाकर रंगाजी मादावी,
नाइक पुलिस कांस्टेबल

04. महेश दत्तू जाकेवर,
पुलिस कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10.01.2016 को, बीजापुर के अपर पुलिस अधीक्षक श्री आई.के. एलेसेला 79 पुलिस कार्मिकों के साथ हेलीकॉप्टर से एसपीएस दमरनचा पहुंचे। योजना के अनुसार, दिनांक 11.01.2016 को श्री एलेसेला के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्य और स्पेशल ऑपरेशन स्क्वाड (सी-60) के कमांडो ने एस.पी.एस. दमरनचा से प्रस्थान किया। इस दल ने इंद्रावती नदी को पार किया और सांद्रा, गर्तुल और कोकेरा गांव के वन क्षेत्र से गुजरने लगे। एक अन्य दल पी.एस.आई. काले और एसपीएस दमरनचा के स्टाफ और स्पेशल ऑपरेशन स्क्वाड के कमांडो छत्तीसगढ़ राज्य के कमांडो की सहायता से पी.एस.आई. दोइजड के नेतृत्व में चिंतारवेली गांव की ओर आगे बढ़े और इंद्रावती नदी को पार किया। इसके बाद यह दल सान्द्रा एवं अरेपल्ली के रास्ते जंगल से होकर छानबीन करते हुए आगे बढ़ा।

जब ये पार्टियां जंगल में गश्त लगा रही थीं, तब लगभग 1000 बजे इन पर नेशनल पार्क एरिया कमेटी के सशस्त्र नक्सलियों द्वारा घात लगाकर हमला किया गया। नक्सलियों ने पुलिस को मारने और उसके बाद उनके हथियार और गोलाबारूद छीनने के उद्देश्य से उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। आत्म-रक्षा में पुलिस ने नक्सलियों की ओर गोलीबारी करके प्रत्युत्तर दिया। पी.एस.आई. दोइजड ने कुछ नक्सलियों को ऑलिव ग्रीन वर्दी पहने अपनी पीठ पर पिट्ठू लादे देखा। तदनुसार, उन्होंने पीएसआई काले को सतर्क कर दिया और उसी समय इन नक्सलियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस वीरतापूर्ण कार्य ने उसके साथ चले रहे अन्य पुलिसकर्मियों के मनोबल को बढ़ा दिया और उन्होंनें भी बहादुरी से जवाब दिया। अपर पुलिस अधीक्षक श्री एलेसेला एवं पी.सी. माल्या पेंडम ने भी नक्सलियों को देखा और तुरंत जंगल में अपनी पोजिशन ले ली और फिर आगे बढ़ने लगे। लेकिन नक्सलियों ने उन पर गोलियों की बौछार कर दी और उन्हें अपने स्थानों पर रूके रहने पर मजबूर कर दिया।

चूंकि अपर पुलिस अधीक्षक श्री एलेसेला एवं माल्या पेंडम नक्सलियों के प्रचंड हमले में फंस गए थे, इसलिए पी.एस.आई. दोइजड, पी.एस.आई. काले, एनपीसी/939 प्रभाकर मादावी, पीसी/5413 महेश जाकेवर ने अपनी जान जोखिम में डालकर नक्सलियों पर जवाबी हमला करके श्री एलेसेला की सहायता के लिए आगे बढ़े। पी.एस.आई. दोइजड ने पीएसआई काले को कवर फायर प्रदान किया जिसके परिणामस्वरूप पीएसआई काले अपर पुलिस अधीक्षक के पास पहुंच सके। नक्सलियों को अपने कामरेडों को दिलीप, रायनू, रोशन, मंगू नाम से जोर से पुकारते हुए और उन्हें पुलिस को घेर कर मार डालने के लिए कहते हुए सुना गया। पुलिस कार्मिकों ने नक्सलियों को आत्म-समर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और नक्सलियों ने पुलिस पार्टी की ओर गोलीबारी जारी रखी।

पी.एस.आई. दोइजड, पी.एस.आई. काले, प्रभाकर मादावी, महेश जाकेवर सभी ने युद्धभूमि में अभूतपूर्व वीरता का परिचय दिया। गोलीबारी के बीच उनकी वीरता एवं सूझबूझ के कारण, नक्सलियों की घात को तोड़ दिया गया और अन्य पुलिस कर्मियों के बहुमूल्य जीवन की रक्षा हो सकी। नक्सलियों को झटका लगा और वे पीछे हटने लगे। पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ दो घंटे तक चली और नक्सली घने जंगल का लाभ उठाकर भाग गए। इस मुठभेड़ में छत्तीसगढ़ पुलिस ने 230 राउंड गोली चलाई और गढ़चिरौली पुलिस ने 625 राउंड गोली चलाई।

नक्सलियों की ओर से गोली की आवाज बंद होने के बाद पुलिस ने उपर्युक्त घटनास्थल की तलाशी की। तलाशी के दौरान, पुलिस ने घटनास्थल से निम्नलिखित वस्तुएं बरामद कीं - इंसास राइफल-1, मैगजीन-3, बरमार गन-1, स्टील कंटेनर-1, बैटरी सेट-2, रेडियो सेट-1, पिट्ठू-6, 1 मीटर तार, कलाई घड़ी, नक्सल डंगरी, नक्सल साहित्य, मैगजीन बॉक्स आदि। पुलिस को उपर्युक्त वस्तुओं के पास पड़े हुए दो मृत नक्सलियों (एक महिला नक्सली सहित) का शव भी मिले।

इस अभियान में सर्व/श्री शीतलकुमार अनिलकुमार दोइजड, पुलिस उप निरीक्षक, हर्षद बबन काले, पुलिस उप निरीक्षक, प्रभाकर रंगाजी मादावी, नाइक पुलिस कांस्टेबल और महेश दत्तू जाकेवर, पुलिस कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.01.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 138-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अजीतकुमार भगवान पाटिल,
पुलिस उप निरीक्षक

02. टीकाराम संपतरी कटेंगे,
नाइक पुलिस कांस्टेमबल

03. राजेंद्र श्रीराम टाडामी,
पुलिस कांस्टेबल

04. सोमनाथ श्रीमंत पवार,
पुलिस कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.01.2017 को सायंकाल लगभग 07.00 बजे, पीएसआई अजीतकुमार पाटिल ने पार्टी कमांडर टीकाराम कटेंगे एवं अन्य 23 पुलिस कार्मिकों के साथ कुरखेड़ा सब डिवीजन में वडगांव के जंगल में नक्सल रोधी अभियान चलाने के लिए गढ़चिरौली से प्रस्थान किया। वे सब कोसमी गांव पहुंचे और उसके बाद रात में निकट के जंगल में रूके। दिनांक 03.01.2017 से 04.01.2017 तक, पार्टी ने किसनेली, वडगांव, बोटेजारी, हरकेटोला के जंगल में तलाशी अभियान चलाया और रात में नरकसा के जंगल में रूके।

दिनांक 05.01.2017 को, जब पुलिस पार्टी वडगांव के जंगल में नक्सल रोधी अभियान चला रही थी, तभी लगभग 1500 बजे अचानक उन पर 10 से 12 सशस्त्र नक्सलियों द्वारा हमला किया गया। नक्सलियों ने पार्टी कमांडर कटेंगे के नेतृत्व वाले पुलिस कर्मियों के समूह को घेर लिया था और वे पुलिस कर्मियों को मारने के बाद उनके हथियार और गोलाबारूद छीनने के उद्देश्य से उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसा रहे थे। अत: पीएसआई अजीतकुमार पाटिल और उनके साथियों ने जमीन पर अपनी पोजिशन ले ली और ध्यान से हमले की दिशा की ओर देखा।

इसके बाद वे आश्वस्त हो गए कि हमलावर सीपीआई (माओवादी) नक्सली संगठन से जुड़े हुए हैं जो एक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन है। गोलियां चलने की आवाज सुन कर, पीएसआई पाटिल ने अन्य पुलिस कर्मियों नामत: राजेंद्र टाडामी, सोमनाथ पवार को वॉकी-टॉकी पर हमलावरों की दिशा की तरफ आगे बढ़ने का निर्देश दिया और अन्य पुलिस कर्मियों के साथ वे अपनी जान को जोखिम में डालकर गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़ गए। पीएसआई पाटिल ने जोर से नक्सलियों से पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करने की जोरो से अपील की। नक्सलियों ने अपील पर कोई ध्यान नहीं दिया और पुलिस की दिशा में गोलीबारी जारी रखी। नक्सलियों को आपस में बोलते हुए सुना गया - "पंकज, सोनी और मधु तुम लोग दायीं ओर से कवर करो; सूरज और कमली, तुम दोनों पुलिस को बायीं ओर से कवर करो, पुलिसवालों को जाने मत दो, उन सबको मार डालो।" गोलीबारी के बीच अपनी जान को अत्यंत जोखिम में डालकर पीएसआई पाटिल ने अपने कार्मिकों के साथ दक्षिण दिशा से नक्सलियों को घेरना शुरू कर किया और कमांडर टीकाराम कटेंगे ने उत्तरी दिशा से नक्सलियों को घेरना शुरू कर दिया और इस तरह उन्होंने नक्सलियों की मौत के चंगुल में फंसे हुए पुलिस कर्मियों को सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया। इस भयानक परिस्थिति में, दोनों समूहों के पुलिसकर्मी भय से पीछे नहीं हटे और उन्होंने वीरतापूर्वक नक्सलियों का सामना किया। इसके पश्चात, पुलिस बलों के बढ़ते दबाव को महसूस करते हुए, नक्सली पहाड़ी क्षेत्र और घने जंगल का लाभ उठाते हुए जंगल में भाग खड़े हुए। यह मुठभेड़ एंकाउंटर 15-20 मिनट से अधिक समय तक चली।

नक्सलियों की ओर से गोलीबारी रूक जाने के बाद, पीएसआई पाटिल ने सभी कर्मियों को एक स्थान पर एकत्रित किया और उनसे पूछताछ की। पुलिस कांस्टेबल राजेंद्र टाडामी को मामूली चोट आई थी जबकि अन्य सभी पुलिसकर्मी सुरक्षित और चोटरहित थे। तत्पश्चात समुचित एसओपी (विशेष प्रचालन प्रणाली) का अनुसरण करते हुए पुलिस पार्टी ने घटनास्थल की तलाशी की। तलाशी के दौरान, पुलिस को एक घायल महिला नक्सली अचेत अवस्था में मिली। घटनास्थल से एक मैगजीन एवं सीलिंग के साथ एक .303 राइफल, .303 राइफल के तीन राउंड, एक हरे रंग का पिट्ठू, नक्सली साहित्य आदि बरामद किया गया।

मुठभेड के दौरान, पुलिस पार्टी ने निम्नलिखित मात्रा में गोलाबारूद अर्थात: एके-एम-49 राउंड, एसएलआर-22 राउंड एवं इंसास राइफल-03 राउंड चलाए। घायल एवं अचेत महिला नक्सली के साथ घटनास्थल से जब्त सामग्रियों को एक माइन प्रोटेक्टिव वाहन (एमपीवी) में रखा गया और उपचार के लिए जनरल अस्पताल, गढ़चिरौली लाया गया। चिकित्सा अधिकारी ने महिला नक्सली के शरीर की जांच की और उसे मृत घोषित कर दिया।

इस मुठभेड में, पीएसआई अजीतकुमार भगवान पाटिल, एनपीसी टीकाराम कटेंगे, पीसी सोमनाथ पवार एवं पीसी राजेंद्र टाडामी जो स्पेशल ऑपरेशन स्क्वाड (सी-60), गढ़चिरौली के थे। सभी ने अपनी जान अत्यधिक जोखिम में डालकर सशस्त्र नक्सलियों से लड़ते हुए असाधारण साहस और पराक्रम का प्रदर्शन किया। उपर्युक्त पुलिस कर्मियों द्वारा प्रदर्शित वीरता, युक्ति एवं अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण के कारण पुलिस ने एक खूंखार महिला नक्सली को मार गिराया।

इस अभियान में सर्व/श्री अजीतकुमार भगवान पाटिल, पुलिस उप निरीक्षक, टीकाराम संपतरी कटेंगे, नाइक पुलिस कांस्टेबल, राजेंद्र श्रीराम टाडामी, पुलिस कांस्टेबल और सोमनाथ श्रीमंत पवार, पुलिस कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.01.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 139-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विवेकानंद सिंह, आईपीएस एसडीपीओ — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. गोपीसन आर. मारक, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, दोडेंग्रे को दिनांक 26 जुलाई, 2015 को सुबह एक स्रोत से सूचना मिली कि छह (06) संदिग्ध एएसएके आतंकवादी दारेनचिग्रे/गनारूग्रे के वन क्षेत्र में ठहरे हुए हैं और किसी के अपहरण की योजना बना रहे हैं। उस समय फुलबारी में ठहरे अधिकारी श्री आर.ए. संगमा, सीआई फुलबारी एवं दल के साथ तत्काल टिकरीकिला पुलिस स्टेशन की ओर रवाना हो गए।

अभियान दल ने टिकरीकिला पुलिस स्टेशन से प्रस्थान किया और योजना के अनुसार एसआई बी हाजोंग, ओ/सी टिकरीकिला पुलिस स्टेशन के अधीन घेराबंदी दल ने पूरे क्षेत्र की यथासंभव, घेराबंदी कर दी। इसके साथ-साथ, श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, निरीक्षक आर. ए. संगमा, एबीसी गोपीसन आर. मारक, एबीसी सिमसेंग मारक, एबीसी राकेश प्रसाद, एबीसी डी. राभा के साथ मेजर रोमी सिंह एवं अन्य तीन सेना कार्मिक पूर्णरूपेण दिन का समय होने के कारण युक्तिपूर्वक एवं चुपके से लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ने लगे। यह क्षेत्र घने जंगल वाला पहाड़ी क्षेत्र था और तेज वर्षा हो रही थी। श्री विवेकानंद सिंह हमला दल का नेतृत्व कर रहे थे, जबकि एबीसी/394 गोपीसन आर. मारक दूसरे स्थान पर चल रहे थे। जब हमलादल लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ा, तब लगभग 4:30 बजे श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस

ने भारी हथियारों से लैस लगभग 5-6 आतंकवादियों को देखा और तत्काल दल को कवर लेने के लिए सतर्क कर दिया। तथापि, आतंकवादी समूह के एक संतरी, जो कि स्वचालित हमला राइफल से लैस होकर घने जंगल में छिपा हुआ था, ने उन्हें देख लिया और अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री विवेकानंद सिंह एवं श्री गोपीसन आर. मारक दोनों ही अचानक गोलीबारी से घबराए नहीं, बल्कि जवाबी गोलीबारी की और अपने हमला दल को भी जवाबी गोलीबारी करने का आदेश दिया। भारी गोलीबारी के बावजूद श्री विवेकानंद सिंह एवं गोपीसन आर. मारक युक्तिपूर्वक आतंकवादियों की तरफ बढ़ने लगे और उन्हें गहन गोलीबारी में उलझा दिया, जो 10 मिनट से अधिक समय तक चली। श्री विवेकानंद सिंह एवं गोपीसन आर. मारक आतंकवादियों का सामना करने में झिझके नहीं और व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा सी भी चिंता किए बिना गोलीबारी करते रहे। इसके परिणामस्वरूप, एक खतरनाक आतंकवादी नामत: (एल) सिलसेंग डी. संगमा (27) पुत्र मोनसू संगमा, निवासी नोगोरपाड़ा, पोस्ट होल्लोईडंगा, जिला पश्चिम गारो हिल्स, मेघालय को घटनास्थल पर ही मार गिराया गया। मृतक एएसएके आतंकवादी था और लम्बे समय से क्षेत्र के लिए खतरा बना हुआ था। यह अभियान किसी पुलिस कार्मिक अथवा जनता या घायल या हताहत हुए बिना असाधारण रूप से निष्पादित किया गया। इस अभियान की योजना अत्यंत सावधानीपूर्वक बनाई गई थी और इसे उत्कृष्ट रूप से अंजाम दिया गया। श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, एसडीपीओ एवं गोपीसन आर. मारक ने अभियान के दौरान अपनी जान को जोखिम में डालकर अत्यधिक साहस और रणनीतिक दक्षता का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में सर्व/श्री विवेकानंद सिंह, आईपीएस, एसडीपीओ और गोपीसन आर. मारक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.07.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 140-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	टी.सी. चाको, उप पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
02.	टोनी एम. संगमा, उप-निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
03.	फिल डखर, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.04.2015 को दुरामा रेंज के बहुत भीतर गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी (जीएनएलए) एवं यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (यूएलएफए) के संयुक्त सामान्य शिविर/प्रशिक्षण शिविर के सामान्य ठिकाने के बारे में स्रोत से सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, शिविर का पता लगाने और उसे नष्ट करने की कार्रवाई की योजना तैयार की गई। प्राप्त सूचना के अनुसार, जीएनएलए संगठन के कई नए रंगरूटों के साथ यूएलएफए/जीएनएलए के लगभग 90(नब्बे) कैडर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। अपने कैडरों के प्रशिक्षण की निगरानी करने के लिए इंरियन नामक एक वरिष्ठ यूएलएफए कैडर कथित रूप से शिविर में मौजूद था।

तदनुसार, एक कार्य योजना तैयार की गई जिसमें स्वाट कर्मियों को शामिल करते हुए एक मजबूत दल दुराबंदा से प्रवेश करेगा और शिविर का पता लगाने और उसे नष्ट करने के लिए संदिग्ध स्थल की ओर कूच करेगा।

योजना के अनुसार, श्री टी.सी. चाको, एमपीएस, उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में 43 (तैंतालीस) स्वाट कर्मियों के एक दल को दिनांक 06.04.2015 को 11:30 बजे अपराह्न शामिल किया गया। गोपनीयता एवं विस्मय बनाए रखने के लिए, दुराबंदा गांव, दक्षिण गारो हिल्स जिला में शामिल किए गए दल ने कच्चे रास्ते से नोकरेक चोटी (मेघालय की सबसे ऊंची चोटी) पर खड़ी चढ़ाई करते हुए और

लगभग 15 (पंद्रह) घंटे कच्चे रास्ते पर चलने के बाद संदिग्ध क्षेत्र तक पहुंचे। क्षेत्र में पहुंचने के पश्चात, दल ने लोगों की आवाजें सुनी और उन्हें निकट में शिविर होने के संकेत प्राप्त हुए। तदनुसार, उप-निरीक्षक टोनी एम. संगमा के नेतृत्व में एक दल को अन्य क्षेत्र से अलग-थलग करने/शिविर घेरने के लिए संदिग्ध शिविर के पश्चिम दिशा की ओर भेजा गया और एक अन्य दल पूर्वी दिशा से शिविर की ओर आगे बढ़ा। कुछ दूर तक आगे बढ़ने के पश्चात यह महसूस हुआ कि हमला दल ने लम्बी घेराबंदी कर ली है और शिविर एवं हमला दल के बीच एक खड़ी चट्टान है। दिन की रोशनी होने के कारण दल को वापस बुला कर अलग-अलग रास्ते से आगे बढ़ने और उस दिशा से आतंकवादियों पर हमला करने, जो उन्हें वे अलग-थलग करने वाले स्थान की ओर ले जाएगी, पर उनके उजागर होने की संभावना अधिक थी, इसलिए दल के कमांडर 02 (दो) स्वाट जवानों के साथ अलग दिशा से शिविर की ओर आगे बढ़ने का साहस दिखाया और दो स्वाट कमांडो, जोकि उनके पीछे चल रहे थे, का कवर लेते हुए शिविर की ओर आगे बढ़े। शिविर से लगभग 20 मी. दूर तक पहुंचते ही, जीएनएलए एवं यूएलएफए दोनों के भारी सशस्त्र आतंकवादियों के एक समूह ने वहां पहुचने वाले दल पर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री टी.सी. चाको ने कवर कर रही पार्टी की मदद से बहादुरी से प्रत्युत्तर दिया और एक यूएलएफए आतंकवादी जिसकी पहचान बाद में (स्व.) रामबिलास कोच उर्फ कनतरंग उर्फ पिजाक, पुत्र पंचाट कोच, गांव सरायगांव, पोस्ट रैरनोना, जिला कोकराझाड़ (बरामद पहचान पत्र से) के रूप में हुई, को मार गिराया एवं कई आतंकवादियों को घायल कर दिया। भीषण गोलीबारी के बाद सभी आतंकवादी जिनकी संख्या लगभग 90 (नब्बे) थी, कट-ऑफ पार्टी की दिशा में भागे। वहां भी पुलिस को देखकर, भाग रहे आतंकवादियों ने एसआई रोनाल्ड नॉनग्रम के नेतृत्व वाले पुलिस दल पर गोलीबारी की। एसआई रोनाल्ड नॉनग्रम ने बीएनसी/624 फिल डखर एवं अन्य कर्मियों की सहायता से अपने स्थानों से उन पर पुन: हमला किया और आतंकवादियों की ओर से लगातार हो रही गोलीबारी का दिलेरी से सामना किया एवं कई आतंकवादियों को घायल कर दिया।

मारे गए यूएलएफए आतंकवादी से एक 7.65 एमएम पिस्टल, जिसके चैम्बर में 1(एक) राउंड और मैगजीन में 3(तीन) राउंड बंद स्थिति में थे, बरामद की गई। क्षेत्र की तलाशी करने पर, आईईडी, वायरलेस सेट आदि सहित विभिन्न सामग्रियां बरामद हुईं और जब्त कर ली गईं। जब्त सामग्रियों के अतिरिक्त, 90 (नब्बे) बैक पैक, केमोफ्लॉज ड्रेस, प्रशिक्षण के लिए प्रयुक्त 70 (सत्तर) नकली राइफल, कई बोरियां चावल, कम्बल, मैगजीन पाउच, वस्त्र, निजी वस्तुएं, खाना पकाने के बर्तन, जेनरेटर सेट आदि जैसे कई अन्य वस्तुएं बरामद की गईं एवं लगभग 1 (एक) वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैली 12 (बारह) झोपड़ियों/बैरकों का पता लगाया गया और उन्हें नष्ट कर दिया गया।

बाद में, तकनीकी एवं मानव आसूचना से इस बात की पुष्टि हुई कि 3(तीन) और घायल आतंकवादियों की जंगल में मृत्यु हो गई है और उनमें से कई को गंभीर चोटे आईं हैं।

इस अभियान में, सर्व/श्री टी.सी. चाको, उप पुलिस अधीक्षक, टोनी एम. संगमा, उप-निरीक्षक और फिल डखर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.04.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 141-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

02. उमेश कुमार सिंह, उप-निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. हरिबंधु किरसानी, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. भीष्म करूआन, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
कांस्टेबल

05. सामन्ता माझी, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.04.2017 को माओवाद से अति प्रभावित नारायणपटना कोरापुट जिला के अंतर्गत धायगुरहा जंगल क्षेत्र में कोरापुट डिवीजन के प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) संगठन के सदस्यों के आपराधिक षडयंत्र के संबंध में विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई, जिनका लक्ष्य लक्ष्मीपुर से पार्वतीपुरम को जोड़ने वाले राज्य राजमार्ग को विस्फोट से उड़ाकर नष्ट करना और इस राजमार्ग से गुजरने वाले सुरक्षाबलों की आईईडी विस्फोट द्वारा हत्या करना था।

दिनांक 11-12.04.2017 की मध्यवर्ती रात्रि में, श्री निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन, कोरापुट के नेतृत्व में डीवीएफ एवं एसजीओ के छोटे दल सं. 04 को प्रतिबंधित संगठन को पकड़ने के लिए माओवाद-रोधी अभियान के लिए भेजा गया। जब दल वन क्षेत्र में पहुंचा, तब सशस्त्र माओवादियों ने स्वचालित हथियारों से अचानक अकारण गोलीबारी शुरू कर दी और बगल से तेज हमला कर दिया, जिससे पुलिस दल विभिन्न दिशाओं से भारी गोलीबारी में फंस गया और उनके ग्रेनेड के हमले से दो एसजीओ कमांडो भीष्म करूण एवं सामन्ता माझी घायल हो गए। गोलीबारी से घबराए बिना निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) के नेतृत्व में पुलिस दल ने संख्या बल के कम होने और गंभीर क्षेत्रीय सीमाओं के बावजूद निजी सुरक्षा को दरकिनार करते हुए वीरतापूर्वक प्रत्युत्तर दिया। कमांडो हरिबंधु किरसानी के साथ निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) ने गोलीबारी का सामना करते हुए सामने से एक अत्यंत जोखिमपूर्ण हमला करके माओवादियों पर धावा बोल दिया और माओवादियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। उप निरीक्षक(ए) उमेश कुमार सिंह, भीष्म करूण, सामन्ता माझी के एक अन्य छोटे दल ने दाहिनी ओर से घेराबंदी करके हमला किया और माओवादियों का निर्भीक होकर सामना किया। दल के लीडर निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), कोरापुट एवं चार कमांडो ने अत्यंत विषय परिस्थिति में मौके पर वीरता दिखाई और संख्या में अधिक तथा रणनीतिक रूप से बेहतर स्थिति में खड़े शत्रु के विरूद्ध प्रेरणास्पद युद्ध किया। उनकी इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप एक माओवादी कैडर पद्मा उर्फ कांतामनी हेरेका (एसीएम), नंदापुर एरिया कमिटी, कोरापुट डिवीजन को मार गिराया गया और जिंदा आईईडी-2, एसबीबीएल, बंदुक-1 एसबीएमएल-बंदूक-1, डेटोनेटर-3, वॉकी-टॉकी-1 और अन्य कैम्प सामग्रियां बरामद की गई। दिनांक 12.05.2017 को उसी ईओएल समूह के कोरापुट डिवीजन के एसीएम रैंक के दो खूंखार माओवादियों सोनू एवं दिव्या ने कोरापुट पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। पूछताछ के दौरान, सोनू ने खुलासा किया कि पद्मा उर्फ कांतामनी हेरका (एसीएम) के अलावा एक अन्य महिला माओवादी नामत: टुबरी मंदंगी (एसीएम) कोरापुट डिवीजन, जो कि उसी ईओएफ की थी, भी मारी गई है।

इस बहादुरी एवं हौसलापूर्ण कार्रवाई से शत्रु के खेमे को तहस-नहस करके दो महिला माओवादी कैडरों को मार गिराया गया और माओवादियों के कुटिल इरादों को विफल करके एक बड़ी हिंसक वारदात को अंजाम दिए जाने से रोक दिया गया।

इस अभियान में, सर्व/श्री निरंजन साहू, अपर पुलिस अधीक्षक, उमेश कुमार सिंह, उप-निरीक्षक, हरिबंधु किरसानी, कांस्टेबल, भीष्म करूआन, कांस्टेबल और सामन्ता माझी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.04.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 142-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राकेश कुमार स्वांई,
कांस्टेबल

02. अजय बेहेरा,
कांस्टेबल

03. ज्योति कुमार कीरो,
सार्जेंट

04. सौम्य रंजन दास,
उप सूबेदार

05. धनेश्वर माझी,
कांस्टेबल

06. भक्त प्रिय साहू,
हवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15.09.2016 को श्री धनेश्वर माझी, कांस्टेबल से एक विश्वसनीय एवं वास्तविक आसूचना संबंधी जानकारी मिली, जो पिछली रात अपनी जान जोखिम में डालकर जंगल में और निकट क्षेत्र में आसूचना की पुष्टि के लिए रूके थे और अगली सुबह श्री धनेश्वर माझी ने इस बात की पुष्टि की कि निर्दोष नागरिकों को मारने, सुरक्षा बलों को निशाना बनाने आदि और आतंक फैलाने एवं राष्ट्र के विरूद्ध युद्ध छेड़ने जैसी हिंसक गतिविधियों की सुनिश्चित योजना के साथ प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र काडरों का एक समूह बीजेपुर पुलिस स्टेशन, जिला कालाहांडी के अधीन कटलंग गांव के निकट फुलवारी रिजर्व वन में मौजूद है। प्रतिबंधित माओवादी कॉडरों को पकड़ने के लिए ज्योति कुमार कीरो, पुलिस सार्जेंट एवं सौम्य रंजन दास, उप सूबेदार के नेतृत्व में एसओजी के छोटे दल सं. 02 एवं विशेष ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) एटी-02 के दलों के साथ पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी द्वारा एक नक्सल-रोधी अभियान की योजना बनाई गई और शुरू की गई। क्षेत्र के खतरनाक ढांचे और तैयार की गई योजना को निष्पादित करने की जल्दीबाजी को देखते हुए, श्री धनेश्वर माझी, कांस्टेबल ने एसओजी दलों को निकटतम प्रभुत्वशाली स्थान पर पहुंचाने के लिए स्काउट के रूप में आगे बढ़कर दल का नेतृत्व किया। पुलिस दल द्वारा उन्हें स्पष्ट एवं ऊंची आवाज में आत्मसमर्पण के निर्देश का कोई असर नहीं पड़ा, बल्कि माओवादियों ने अचानक एवं अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें पांच पुलिसकर्मियों को गंभीर चोटें आईं। श्री राकेश कुमार स्वांई, कांस्टेबल एवं अजय बेहेरा, कांस्टेबल अपनी गंभीर चोट और संख्या बल में कम होने के बावजूद माओवादियों की ओर से भारी गोलीबारी से बेपरवाह अपनी जान जोखिम में डालकर रणनीतिक रूप से आगे बढ़कर माओवादियों के अत्यंत निकट पहुंच गए और माओवादियों पर जोरदार तरीके से जवाबी हमला किया, जिससे पुलिस दल को सुरक्षित कवर पोजिशन लेने में मदद मिली। श्री ज्योति कुमार कीरो, श्री सौम्य रंजन दास, श्री धनेश्वर माझी एवं श्री भक्त प्रिय साहू, हवलदार भी अपनी जान जोखिम में डालकर माओवादी समूह की ओर अत्यंत निकट पहुंच गए और उन्हें रोकने के लिए गोलीबारी की। इस प्रकार सभी संस्तुत अधिकारियों ने अत्यंत जोखिम भरे आमने-सामने के हमले में निडर होकर शत्रु पर हमला किया और उन्हें बचकर भागने पर मजबूर कर दिया। उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई के कारण एक वर्दीधारी महिला माओवादी कॉडर, जिसकी पहचान बाद में बंसधारा-घुमसर-नागबली-डिवीजन की संगीता के रूप की गई, को मार गिराने के साथ-साथ एसएलआर -01, इंसास राइफल -01, .303 राइफल-2, 12 बोर की टूटी हुई राइफल-01, एसएलआर के 02 जिंदा राउंड, इंसास के 06 जिंदा राउंड, 06 राउंड .0303 राइफल के 06 राउंड, 10 हैवरसैक, 1 वॉकी-टॉकी, माओवादी साहित्य, दस्तावेज एवं कैंप की अन्य सामग्रियां आदि बरामद की गईं।

इस अभियान में, सर्व/श्री राकेश कुमार स्वांई, कांस्टेबल, अजय बेहेरा, कांस्टेबल, ज्योति कुमार कीरो, सार्जेंट, सौम्य रंजन दास, उप सूबेदार, धनेश्वर माझी, कांस्टेबल और भक्त प्रिय साहू, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.09.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 143-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री कुलदीप सिंह, आईपीएस,
अपर पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री कुलदीप सिंह, आईपीएस (पंजाब-2009) ने वर्ष 2012 में भटिंडा जिले में सहायक पुलिस अधीक्षक, सिटी-।। एवं यातायात के रूप में तैनाती के दौरान एक खूंखार गैंगस्टर के साथ दिन-दहाड़े जीवंत मुठभेड़ में अदम्य वीरता का प्रदर्शन किया, जिसमें एक गैंगस्टर जिस पर 11 आपराधिक मामले दर्ज थे, गोलीबारी में मारा गया।

दिनांक 06.09.2012 की शाम को, एसएचओ, भटिंडा कैंट पुलिस स्टेशन से वायरलेस पर यह सूचना प्राप्त होने पर कि एक सफेद रंग की फार्चूनर कार सं. पीबी-31-के-0045 संदिग्ध परिस्थितियों में शहर में घुम रही है, श्री कुलदीप सिंह अपनी पुलिस पार्टी (गनमैन वरिष्ठ कांस्टेबल जगसीर सिंह सं. 519, कांस्टेबल जसकरण सिंह सं. 1187, हेड कांस्टेबल हरवंश सिंह सं.1115) के साथ अपनी सरकारी कार सं. पीबी-76-पी-4223, जिसे हेड कांस्टेबल राजिन्दर सिंह सं. 165/एलडीएच चला रहा थे, छानबीन के लिए निकले। लगभग 7 बजे अपराह्न, पार्टी ने कमला नेहरू कालोनी पहुंचने पर वाहन को ढूंढ निकाला। ड्राइवर की सीट पर एक युवा आदमी के साथ बायीं ओर सामने की सीट पर एक लड़की साथ में बैठी हुई थी। पुलिस पार्टी को देखकर, वे वाहन में भागने की कोशिश करने लगे लेकिन सामने से उनका रास्ता पुलिस वाहन द्वारा अवरूद्ध कर दिया गया। इस पर लड़की चिल्लाई "गोली चलाओ" और "कार से बाहर निकलो", आदमी ने एएसपी के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी को मारने के उद्देश्य से उन पर गोली चलानी शुरू कर दी। गोली चलाए जाने पर, श्री कुलदीप सिंह अपने वाहन से कूद गए और पुलिस दल के प्रत्युत्तर को संगठित किया। गोलीबारी के दौरान उन्होंने अपनी जान की परवाह नहीं की, जबकि एक गोली उन्हें छू कर निकल गई और वे बाल-बाल बच गए। श्री कुलदीप सिंह ने संदिग्ध अपराधी पर जवाबी गोली चलाई जिससे वह घायल हो गया। संदिग्ध अपराधी की पहचान गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा पुत्र जरनैल सिंह, निवासी खुम्बन बहाव वाला, जिला फाजिल्का, एक खूंखार गैंगस्टर और उसके साथी की पहचान नमदीक कौर, निवासी मॉलआउट सिटी, जिला श्री मुक्तसर साहिब के रूप में हुई। गुरशहीद सिंह को सिविल अस्पताल, भटिंडा ले जाया गया, जहां मुठभेड़ में आई चोटों की वजह से उसकी मृत्यु हो गई। अपराधी को मारने के लिए श्री कुलदीप सिंह, एएसपी ने दो राउंड गोली चलाई और इस प्रक्रिया में वे अपराधी द्वारा की गई गोलियों की बौछार से बाल-बाल बच गए और इस प्रकार उन्होंने अपनी ड्यूटी के प्रति अदम्य वीरता एवं प्रतिबद्धता का कार्य किया।

यह उल्लेखनीय है कि मुठभेड़ के समय, संस्तुत अधिकारी श्री कुलदीप सिंह एएसजी के रैंक के एक युवा आईपीएस अधिकारी थे, जिनके पास महज 02 वर्षों से कुछ अधिक सेवा का अनुभव था और वे अपने एसएचओ के वायरलेस कॉल के जवाब में अपने कुछ निजी सुरक्षा अधिकारियों के साथ तत्काल मौके पर पहुंच गए और बिना झिझके एक खूंखार और बड़े गैंगस्टर का सामना किया जो कर्तव्य के प्रति उनके अत्यधिक समर्पण को दर्शाता है।

गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा 11 एफआईआर में संलिप्त था, जिनमें पुलिस को सूचना प्रदान करने के संदेह में एक बड़े गैंगस्टर हैप्पी देवड़ा की हत्या, जिसके फलस्वरूप पंजाब में प्रतिस्पर्धी गैंगस्टरों के बीच गैंग-वार शुरू हो गई थी; शेरा के विरूद्ध एक न्यायालयी मामले में गवाह सौदागर सिंह की हत्या; चुनाव संबंधी दुश्मनी की वहज से निशान सिंह की हत्या; प्रसिद्ध पंजाबी गायक जैजी बैंस से फार्चूनर गाड़ी छीनना; किसी संदीप सिंह से 30 लाख रूपये की जबरन वसूली और फिरौती की मांग करना; हरदीप सिंह उर्फ जॉली से 10 लाख रूपये की फिरौती के लिए अपहरण; चोट पहुंचाना एवं फिरौती वसूलना; क्रिकेट की सट्टेबाजी में संलिप्तता होना, बंदूक की नोक पर एक व्यक्ति का अपहरण एवं कार छीनना; पजेरो कार एवं इनोवा कार छीनना सहित शामिल है।

गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा और नमदीक कौर के विरूद्ध भटिंडा छावनी पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 307/34, आयुध अधिनियम की धारा 25 के अंतर्गत दिनांक 06.09.2012 का एक प्राथमिकी सं. 83 दर्ज की गई थी; और घटनास्थल से 04 जिंदा कारतूस के साथ एक 09 एमएम पिस्टल (ग्लॉक), 04 खाली कारतूस और एक चोरी की फार्चूनर कार बरामद की गई थी। गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा 11 आपराधिक मामलों में संलिप्त था।

यह मुठभेड़ वैधानिक, मजिस्ट्रेट जांच और न्यायिक जांच पर खरा उतरी। अपर उपायुक्त (जनरल) भटिंडा द्वारा की गई मजिस्ट्रेट जांच में पुलिस की तरफ से कोई भी गलती नहीं पायी गई। माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में दायर वर्ष 2012 की सिविल रिट याचिका सं. 24439 का राज्य के पक्ष में दिनांक 24.12.2015 के आदेश के द्वारा निपटान कर दिया गया है। गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा की साथी और उसकी सह अभियुक्त नमदीक कौर को भटिंडा छावनी पुलिस स्टेशन में दर्ज वर्ष 2012 की प्राथमिकी सं. 83

में दोषसिद्ध किया गया है और उसे चार वर्ष छह माह के सख्त कारावास और 3000/- रूपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी पुलिस पार्टी की कार्रवाई को सही ठहराया है और एनएचआरसी के आदेश का संगत भाग नीचे पुन: प्रस्तुत है:—

"पुलिस दल का नेतृत्व एक आईपीएस अधिकारी कर रहे थे। गुरशहीद सिंह उर्फ शेरा को लगी गोली की सभी चोटें शरीर के निचले हिस्से में हैं। यह दर्शाता है कि पुलिस की मंशा उसे मारने की नहीं थी। विवि विज्ञान रिपोर्ट यह दर्शाती है कि मृतक गुरशहीद सिंह ने 9 एमएम पिस्टल से गोली चलाई और इन तथ्यों पर विचार करते हुए घटना के संबंध में पुलिस के पक्ष पर विश्वास करना पड़ रहा है। यह प्रतीत होता है कि पुलिस को आत्मरक्षा में गुरशहीद सिंह पर गोली चलानी पड़ी थी।"

यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि घटना के समय घटनास्थल पर बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद थे और पुलिस द्वारा की गई त्वरित कार्रवाई से आम जनता को कोई नुकसान नहीं हुआ।

श्री कुलदीप सिंह, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक ने अपना कर्तव्य निभाते हुए अदम्य वीरता एवं नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना और अपराधी की ओर से गोलियों की बौछार के समक्ष आने के बावजूद जवाबी कार्रवाई की और अपराधी को मारकर अनुकरणीय साहस, वीरता एवं कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। गोलीबारी के बीच उनकी त्वरित कार्रवाई ने उनके दल के सदस्यों की जान बचाई और आम जनता के जीवन की क्षति होने से बचाया। उनका चार वर्षों से अधिक का निष्कलंक एवं बेदाग कैरियर रहा है। उनका कार्य पुलिस सेवा की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप और प्रशंसनीय है और अपने निजी जीवन को गंभीर जोखिम में डालते हुए अदम्य वीरता, त्वरित कार्रवाई, कर्तव्य के प्रति समर्पण की उच्च भावना, उच्चतम नेतृत्व क्षमता के प्रदर्शन के कारण वे उच्चतम अलंकरण के हकदार हैं। श्री कुलदीप सिंह, आईपीएस, तत्कालीन सहायक पुलिस अधीक्षक (अब एसएसपी होशियारपुर) को उनके साहसिक एवं वीरतापूर्ण कृत्य के लिए उन्हें "वीरता के लिए पुलिस पदक" से अलंकृत करने की पुरजोर सिफारिश की जाती है।

इस अभियान में, श्री कुलदीप सिंह, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.09.2012 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 144-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लक्ष्मी निवास मिश्र,
उप पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 18.04.2012 को श्री जोगेंद्र कुमार, पुलिस अधीक्षक, मऊ, चिरैयाकोट पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र के भीतर कर्मी मठिया गांव में खूंखार एवं इनामी अपराधी धीरज सिंह के साथ एसओजी की पुलिस मुठभेड के बारे में सूचना मिलते ही तत्काल हरकत में आए और घटना स्थल की तरफ कूच कर गए। अपराधी धीरज और उसके साथी करमी मठिया गांव में रामजी बर्नवाल के घर में जबरस्ती घुस गए थे और उनकी नृशंस हत्या कर दी थी तथा उनके 05 वर्षीय बच्चे को बंधक बना लिया था और पुलिस पार्टी पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे एवं श्री गोविंद सिंह, निरीक्षक/एसएचओ कोतवाली सिटी, मऊ इस बीच वहां पहुंच गए थे और पुलिस दल का नेतृत्व कर रहे थे, ने रणनीतिक रूप से दोनों अपराधियों को चुनौती दी और अपनी जान और शरीर की चिंता किए बिना अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुए तथा नियंत्रित गोलीबारी करते हुए उन्हें जिंदा गिरफ्तार करने के लिए आगे बढ़े, लेकिन अपराधियों द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी में वे गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जिनकी बाद में मृत्यु हो गई।

पुलिस अधीक्षक, मऊ वहां अतिरिक्त बल के साथ पहुंचे और उसके पश्चात श्री विजय सिंह मीना, पुलिस अधीक्षक आजमगढ़ भी वहां पहुंच गए और अपराधियों को आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी, लेकिन अपराधियों ने उन्हें मारने के उद्देश्य से उनकी ओर हिंसक

रूप से लगातार गोलीबारी जारी रखी। पुलिस अधीक्षक मऊ, पुलिस अधीक्षक आजमगढ़, श्री लक्ष्मी निवास मिश्र, सीओ सिटी, मऊ, श्री बिंद कुमार, उप निरीक्षक, श्री शशि भूषण राय, उप निरीक्षक एवं श्री अशोक कुमार सिंह, एचसीएपी, दोनों अपराधियों की खतरनाक रूप से आक्रामक गोलीबारी से बेपरवाह, रणनीतिक रूप से आंसू गैस के साथ उन पर जवाबी हमला किया, जिसके फलस्वरूप एक अपराधी पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध और हिंसक रूप से गोलीबारी करते हुए घर से बाहर निकला और इस 'करो या मरो' की स्थिति में, पुलिस दल ने अदम्य साहस दिखाते हुए एवं अपनी निजी सुरक्षा व संरक्षा को दरकिनार करते हुए एवं अपराधियों को जीवित पकड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उसे आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी और निडर होकर आत्मरक्षा में नियंत्रित गोलीबारी करते हुए उसके सामने आगे बढ़ा और अपराधी घायल होकर गिर पड़ा।

पुलिस दल ने बंधक बच्चे को छुड़ाने और अपराधी, जो कि घर के भीतर से पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहा था, को जिंदा पकड़ने के उद्देश्य से निडर होकर हमले का नेतृत्व किया और पुलिस दल ने अदम्य वीरता का प्रदर्शन और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए, बिना कोई गलती किए हुए अपनी जान और शरीर की चिंता किए बगैर, तत्काल घर के भीतर दाखिल हुए और बंधक बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए नियंत्रित गोलीबारी जारी रखी और अपराधी घायल होकर गिर पड़ा एवं बंधक बच्चे को सफलतापूर्वक छुड़ा लिया गया। दोनों अपराधियों को बाद में मृत घोषित किया गया और उनकी पहचान खूंखार अपराधी धीरज एवं विकास के रूप में हुई।

श्री जोगेंद्र कुमार, पुलिस अधीक्षक, श्री विजय सिंह मीना, पुलिस अधीक्षक, श्री लक्ष्मी निवास मिश्र, सीओ सिटी, श्री गोविंद सिंह, निरीक्षक सीपी, श्री बिन्द कुमार, एसआईसीपी, श्री शशि भूषण राय, एसआईसीपी और श्री अशोक कुमार, एचसीएपी ने इस मुठभेड़ में अतुलनीय हिम्मत, अदम्य वीरता एवं कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में, श्री लक्ष्मी निवास मिश्र, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.04.2012 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 145-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री राज कुमार,
सहायक कमांडेंट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

हमखल सामान्य क्षेत्र के घने वन क्षेत्र में छिपे हुए आतंकवादियों, जो सुरक्षा बलों पर हमला करने और उसी वन क्षेत्र में लौट जाने, क्योंकि छिपने का यह क्षेत्र उनके प्रभुत्व वाला था और छिपने के लिए बेहतर कवर प्रदान कर रहा था, के बारे में स्थानीय सूत्रों से सूचना प्राप्त होने पर, श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट, कंपनी कमांडर 'डी' कंपनी ने यूनिट के कमांडेंट से जानकारी साझा की और दिनांक 26 जून, 2002 को लगभग प्रात: 8:15 बजे अभियान शुरू किया। श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने उस क्षेत्र से परिचित होने के उद्देश्य से उस क्षेत्र में पहले से मौजूद 44 आरआर के एक दस्ते से सहायता ली और आतंकवादियों को हमखल के ढोक की घेराबंदी से भागने के प्रयास को विफल करने के लिए उन्हें विभिन्न मार्गों को कवर करने के लिए कहा। इलाके की छानबीन के दौरान, अभियान दल ने एक ढोक में व्यक्तियों की कुछ संदिग्ध गतिविधियां देखी। श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने तत्काल स्थिति का जायजा लिया और दल को घेराबंदी करने का निर्देश दिया। इसके पश्चात, दो अन्य संदिग्ध आतंकवादी ढोक से बाहर निकले और सभी तीनों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी और गोलीबारी की आड़ में निकट के नाले की ओर भाग निकले। अभियान दल ने जवाबी गोलीबारी की लेकिन आतंकवादी नाले से होकर भागने में कामयाब हो गए।

श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने कांस्टेबल खुदीराम, कांस्टेबल एम.एम. साह एवं कांस्टेबल शिव चरण के साथ आतंकवादियों का पीछा किया और नाला पार कर गए। आतंकवादी घने वन और जंगली घासों के बीच पहुंच गए और पुलिस दल की ओर भारी गोलीबारी करने लगे। श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने अपने दल के साथ पोजिशन ले ली और अपनी जान की परवाह किए बिना प्राकृतिक रूप से जवाबी कार्रवाई की। इसके परिणामस्वरूप, एक आतंकवादी गोली लगने से घायल हो गया। श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने कांस्टेबल खुदीराम एवं कांस्टेबल एम.एम. साह को सहायता के लिए गोलीबारी करने का निर्देश दिया और श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने कांस्टेबल शिव चरण के साथ एक चक्कर लगाया और घायल आतंकवादी, जिसे उसके साथी आतंकवादियों द्वारा अभियान दल को उलझाए रखने और उन्हें पुन: उनका पीछा करने से रोकने के उद्देश्य से ऊंची पोजिशन पर रखा गया था, से भी ऊंची जगह पर जाकर पोजिशन ले ली। घायल आतंकवादी अभियान दल पर लगातार गोलीबारी कर रहा था।

श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट एवं कांस्टेबल शिव चरण ने ऊंचे स्थान पर पोजिशन लेने के बाद पत्थरों और घनी झाड़ियों के बीच होकर नीचे की ओर आने लगे। घायल आतंकवादी ने इस गतिविधि को देख लिया और श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट पर जोरदार गोलीबारी की और वे चमत्कारिक रूप से बच गए। श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने कोई और अवसर गंवाए बिना आतंकवादी पर हमला कर दिया। यदि उन्होंने ऐसा समय पर नहीं किया होता, तो आतंकवादी ने दूसरे दल पर प्रभावी रूप से गोलीबारी कर दी होती और भारी नुकसान पहुंचा दिया होता। अपने प्रशिक्षण के अनुसार, कांस्टेबल शिव चरण ने आतंकवादी को निशाना बनाते हुए उस दिशा में गोली चलाई और श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने अपना हमला जारी रखा और एक अत्यंत निकट की गोलीबारी में आतंकवादी को मार गिराया। अधिकारी की साहसिक एवं वीरतापूर्ण कार्रवाई के फलस्वरूप एक खूंखार आतंकवादी को मार गिराया गया जिसकी बाद में ओमार मुख्तार वानी, निवासी अरवानी, जिला कुलगाम, श्रीनगर के रूप में हुई जो हिजबुल मुजाहिदीन संगठन का एक पाक प्रशिक्षित आतंकवादी था और उस क्षेत्र में आतंक फैला रखा था। उसके पास से निम्नलिखित हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए गए थे:—

क.	एके 47 राइफल	01
ख.	एके मैगजीन	02
ग.	एके गोलाबारूद	50 राउंड
घ.	ईएफसी	05 राउंड
ङ.	वायरलेस सेट	01
च.	एंटिना	01
छ.	ग्रेनेड (चाइनीज)	01
ज.	भारतीय करेंसी	2030/- रूपये
झ.	कलाई घड़ी	01

इस अभियान में, सर्व/श्री राज कुमार, सहायक कमांडेंट ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.06.2002 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 146-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विकास कुंवर,
सेकंड-इन-कमांड

02. नरेंद्र कुमार,
सहायक उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल की 35वीं बटालियन छत्तीसगढ़ के अत्यंत संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात है जहां इकाई के अभियान क्षेत्र का अधिकांश हिस्सा दुरूह क्षेत्र होने के कारण अत्यंत कठिन है और इस क्षेत्र में अभियान चलाना अपने आप में बहुत चुनौतीपूर्ण है। गोम एवं गटकल (पीओओ) गांव के आसपास का आम क्षेत्र अपने भौगोलिक क्षेत्र के कारण माओवादियों की मौजूदगी की वजह से अत्यंत कुख्यात है।

10 नवम्बर, 2016 को गोम एवं गटकल के आम क्षेत्र में श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड के निर्देश में उपलब्ध इनपुट के विस्तृत विश्लेषण के पश्चात एक आक्रामक अभियान शुरू किया गया। घने जंगलों और पहाड़ियों, नक्सलियों को अच्छा कवर और उनके लिए छिपने का बेहतर स्थान उपलब्ध कराने के कारण यह क्षेत्र नक्सलियों की मौजूदगी की वजह से कुख्यात था। अधिकारी ने खतरों का मूल्यांकन किया, अभियान की सावधानीपूर्वक योजना बनाकर सुरक्षा के उपाय किए, प्रत्येक घटक को जिम्मेदारी सौंपी और सीओबी कोयलीबेडा के दल सहित विभिन्न इकाइयों के 08 दलों के साथ आक्रामक अभियान के हिस्से के रूप में प्रभावी तरीके से एक संयुक्त अभियान चलाया। लगभग 1740 बजे, सहायक उप-निरीक्षक नरेंद्र कुमार के साथ श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड के नेतृत्व वाले दल नक्सलियों, जो जंगल में छिपे हुए थे और जिन्होंने आगे बढ़ रहे बीएसएफ दल पर घात लगाकर हमला करने के लिए पोजिशन ले रखी थी, की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। बीएसएफ के दल ने गोलीबारी से दिशा की पहचान करने के बाद एक छोटे से पत्थर के टीले के पीछे और जंगल की ऊबड़-खाबड़ जमीन पर तत्काल पोजिशन ले ली और आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड ने नक्सलियों की पोजिशन की पहचान करने के बाद बीएसएफ टुकड़ी की गोलीबारी को नियंत्रित किया और सहायक उप-निरीक्षक नरेंद्र कुमार के साथ नक्सलियों की ओर से भारी गोलीबारी के बीच अपनी जान की परवाह किए बगैर युक्तिपूर्वक आगे बढ़े। उनके निर्देश के अनुसार उनकी सहायता हेतु गोलीबारी की गई। अन्य टीम सदस्यों द्वारा गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति के अनुसार और अपनी जान पर लगातार मंडराते खतरे के बीच पेशेवर अनुशासन का पालन करते हुए, वे दोनों उन स्थान के एकदम करीब पहुंच गए, जहां से नक्सली बीएसएफ के दल पर गोलीबारी कर रहे थे। वीरतापूर्ण एवं त्वरित कदम उठाकर, गोलीबारी के अनुशासन को बनाए रखते हुए तथा गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े की रणनीति अपनाते हुए श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड एवं सहायक उप-निरीक्षक नरेंद्र कुमार ने नक्सलियों को आश्चर्यचकित कर दिया और उन पर प्रभावी रूप से गोलीबारी की, जिसके परिणामस्वरूप वे अपने हथियार एवं अन्य सामग्री छोड़कर भागने के लिए मजबूर हो गए। बाद में ली गई तलाशी के दौरान एक अज्ञात नक्सली के शव के साथ 03 बंदूक (भरमार) बरामद की गईं। बाद में, छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा मृतक की पहचान वांछित माओवादी सोबी कवाची, पुत्र राम सिंह, गांव गटकल, पुलिस स्टेशन कोयलीबेडा, जिला कांकेर (छत्तीसगढ़) के रूप में की गई।

श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड एवं सहायक उप-निरीक्षक नरेंद्र कुमार ने अभियान के दौरान उत्कृष्ट वीरता, प्रशंसनीय नेतृत्व गुणों, उच्चस्तरीय पहल एवं पेशेवर रवैये का प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप एक खूंखार माओवादी मारा गया, 03 एसएमबीएल (भरमार) बंदूक एवं अन्य सामग्रियां बरामद की गईं और अन्य माओवादी अपने स्थान को छोड़कर अपनी जान बचाकर भागने के लिए मजबूर हो गए। यह सफल एवं परिणामोन्मुख अभियान अतुलनीय वीरतापूर्ण कार्रवाई के साथ-साथ उच्च स्तरीय नेतृत्व एवं समन्वय का उदाहरण है। इससे न केवल बटालियन बल्कि सीमा सुरक्षा बल का नाम भी रोशन हुआ।

इस अभियान में, सर्व/श्री विकास कुंवर, सेकंड-इन-कमांड और नरेंद्र कुमार, सहायक उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.11.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 147-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/ वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व श्री/

01. बलजीत सिंह कसाना, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
उप महानिरीक्षक

02. मुकेश कुमार चौधरी, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. सुरजीत सिंह बिश्नोई, सहायक उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

05. ओम प्रकाश, सहायक उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

06. पारस राम, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

07. बिवस बतबयाल, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 28 नवम्बर, 2016 को लगभग 2330 बजे सीमा चौकी, फटवाल के नाका माउंड सं. 12 की एचएचटीआई ने सीमा चौकी सं. 45 के सामने के सीमावर्ती बाड़ से अपनी तरफ लगभग 40 मीटर की दूरी पर 03 आतंकवादियों की गतिविधि देखी। इस मामले के बारे में तत्काल कंपनी कमांडर श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट को सूचना दी गई, जिन्होंने सूचना प्राप्त होने के तुरंत बाद समग्र स्थिति का जायजा लिया और फारवर्ड और डेप्थव नाका टुकड़ियों तथा सीमा चौकी चमलियाल में उपलब्ध जनशक्ति की सहायता से आतंकवादियों के स्थान के आसपास घेराबंदी कर दी। श्री युद्धवीर यादव ने एचएचटीआई और एनवीडी की सहायता से रातभर आतंकवादियों की गतिविधियों पर नजर रखी। इस संबंध में बटालियन मुख्यालय को भी सूचना दे दी गई और इसके बाद श्री बलजीत सिंह कसाना, डीआईजी एसएचक्यू जम्मू और श्री डी.के. उपाध्याय, आईजी जम्मू फ्रंटियर को भी सूचित कर दिया गया, जो अभियान के पर्यवेक्षण और समन्वय के लिए तत्काल घटनास्थल के लिए निकल पडे। उप महानिरीक्षक के निर्देश पर, कंपनियों को बाहरी घेराबंदी करने/स्टॉप लगाने के लिए अतिरिक्त बल भेजने के लिए कहा गया।

लगभग 0130 बजे, पुख्ता आंतरिक एवं बाहरी घेराबंदी करने/स्टॉप लगाने के बाद श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट ने खेत में छिपे आतंकवादियों पर 51 एमएम मोर पैरा बम छोड़ने का निर्देश दिया जिन्होंने यह महसूस होने के बाद कि उन्हें वह देख लिया गया है और उनकी घेराबंदी की जा चुकी है, आतंरिक घेराबंदी पार्टी पर हथियारों से गोलियों की भारी बौछार की और ग्रेनेड भी फेंके जिसका प्रभावी रूप से जवाब दिया गया। श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट ने एनवीडी के जरिए आतंकवादियों पर नियमित रूप से नजर रखी और उन्हें बचकर भागने नहीं दिया। सीमा चौकी फटवाल पहुंचने के बाद, श्री बी.एस. कसाना, उप महानिरीक्षक ने स्थिति का जायजा लिया विशेष ऑपरेशन का समन्वय करना शुरू कर दिया, पौ फटने तक आतंकवादियों की गतिविधियों पर नजर रखी, जब 03 आतंकवादी एक नलकूप (बाम्बी) में छिप गए। श्री कसाना ने गोलीबारी की योजना को समन्वित करके लक्ष्य को उलझाए रखने की योजना बनाई और लक्ष्य की ओर आगे बढ़े। लगभग 0650 बजे लक्ष्य से ध्यान भटकाने के लिए पाक रेंजर्स द्वारा हमारे सैन्य दल पर भारी यूएमजी फायरिंग एवं मोर्टार दागे जाने के साथ आतंकवादियों ने नाका सं. 8 और श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट की पार्टी पर भारी गोलीबारी करके भागने की अंतिम कोशिश की। माउंड सं. 8 पर तैनात एएसआई ओम प्रकाश सं. 876440403 ने अपनी निजी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में युद्ध कौशल एवं अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए गोलीबारी का तत्काल यथोचित जवाब दिया और एक आतंकवादी को घायल/ढेर कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों को प्रभावी रूप से रोक लिया गया। इस बीच, वहां चल रही गोलीबारी के बीच श्री कसाना जो कि आगे बढ़कर नेतृत्व प्रदान कर रहे थे, ने गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाकर एजीएल, एमएमजी, स्नाइपर, आरएल एवं एएमआर से सुसज्जित होकर आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और आतंकवादियों पर सटीक एवं प्रभावी गोलीबारी करने के लिए हथियारों को आगे की दिशा में तैनात किया। श्री कसाना के निर्देश पर, कांस्टेबल पारस राम ने चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में अनुकरणीय साहस के साथ-साथ पेशेवर दृढ़ता और बहादुरी दिखाते हुए एएमआर से सटीक गोलीबारी की और आतंकवादियों की बंदूक को शांत करा दिया जिसकी वजह से मुख्य पार्टी को पुन: संगठित होने का मौका मिल गया। जिसमें एएसआई सुरजीत सिंह बिश्नोई ने एके 47, कांस्टेबल मुकेश कुमार चौधरी ने एएमआर, कांस्टेबल पारस राम ने 12.7 बैरेल स्नाइपर राइफल और कांस्टेबल बिवस बतबयाल ने आरएल के साथ अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना नलकूप और वृक्ष की झुरमुट के बीच छिपे आतंकवादियों को उलझाए रखा तथा आतंकवादी की सीधी गोलीबारी के समक्ष फौलादी जज्बे और युद्ध कौशल का

प्रदर्शन किया। तथापि, छिपे हुए आतंकवादी बाहर नहीं निकले। इसके पश्चात, श्री कसाना ने एमएमजी मांगी और एमएमजी पार्टी, जिसमें एचसी मुकेश कुमार चौधरी, बिवस बतबयाल, कांस्टेबल पारसराम एवं अन्य कार्मिक शामिल थे, ने सन्निकट स्थिति में गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाकर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में श्रेष्ठ पेशेवरता, दृढ़ता एवं बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए एमएमजी से प्रभावी गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप नलकूप की दीवार का एक हिस्सा टूट गया। इसके बाद वे अपनी पार्टी के साथ गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की युक्ति अपनाते हुए चारा रखने के स्थान की ओर बढ़े और अनुकरणीय वीरता दिखाते हुए छिपे हुए आतंकवादियों के निकट पहुंचे और एमएमजी से भारी मात्रा में गोलीबारी की जिससे नलकूप की अन्य दूसरी दीवार भी अंततः टूट गई। लगभग 1100 बजे श्री कसाना एवं श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट ने एएसआई (जीडी) सुरजीत सिंह बिश्नोई एवं संबंधित पार्टियों के साथ अपने जीवन की परवाह किए बिना कैस्पर वाहन से युक्तिपूर्ण रूप से नलकूप के निकट पहुंचे।

श्री कसाना, एएसआई (जीडी) सुरजीत सिंह बिश्नोई के साथ युद्धकौशल का प्रदर्शन करते हुए कैस्पर वाहन से बाहर निकले और अनुकरणीय वीरता दिखाते हुए लक्ष्य की ओर आगे बढ़े तथा ग्रेनेड फेंके। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आतंकवादी ढेर हो गए हैं, श्री कसाना ने ए.के. राइफल से गोलियों की बौछार की और छिपने के स्थान को ध्वस्त कर दिया और कुछ आतंकवादियों को जमीन पर पड़ा हुआ पाया।

इस संपूर्ण अभियान के दौरान, श्री डी.के. उपाध्याय, आईजी, बीएसएफ, जम्मू अपनी टुकड़ी के बिना किसी नुकसान के सफलता प्राप्त करने के लिए अभियान दल का मार्गदर्शन करते रहे। इसके परिणामस्वरूप, हथियारों से पूरी तरह लैस 03 आतंवादियों के शव बरामद हुए, जिनके डीजी (जी) इन्देश्वर नागर के हालिया इनपुट के अनुसार, एलईटी संगठन के होने का संदेह था। श्री डी.के. उपाध्याय, आईजी, बीएसएफ, जम्मू फ्रंटयिर ने शव और घटनास्थल की सावधानीपूर्वक तलाशी करने का निर्देश दिया। तलाशी के दौरान, भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद/जीपीएस/रेडियो सेट/आईईडी आदि से लैस तीन आतंकवादी मृत पाए गए। जब शव शरीर और घटनास्थल की तलाशी चल रही थी, तब पाकिस्तान ने निकट की चौकी से सीमापार से भारी गोलीबारी और मोर्टार फेंकने शुरू कर दिए जिसमें श्री बी.एम. कसाना, डीआईजी, बीएसएफ, जम्मू, एएसआई ओम प्रकाश, कांस्टेबल मुकेश कुमार चौधरी, कांस्टेबल पारस राम एवं कांस्टेबल बिवस बतबयाल कई गोलियों और स्पिलंटर से घायल हो गए और आगे प्रबंध के लिए तत्काल 166 एमएच सतवारी ले जाया गया।

तलाशी के दौरान, एके 47 राइफल-03, एके 47 राइफल मैगजीन-20, एके 47 गोलाबारूद-517 राउंड, खाली कारतूस केस एके 47 -09, खाली कारतूस केस बड़े आकार वाले -01, पिस्टल -01, पिस्टल मैगजीन-01, पिस्टल का गोलाबारूद-16 राउंड, ग्रेनेड-31, सभी प्रकार की आईईडी-10, फियादीन जैकेट और बेल्ट-02, वायरलेस सेट-02, चाकू-02, वायर कटर-01, टॉर्च-02, दस्ताने-02 जोड़ी, रिचार्जेबल सेल-16, डेयरी मिल्क चॉकलेट-03, फर्स्ट एड किट-03, पावर बैंक-02, चमड़े/प्लास्टिक के जूते -04 जोड़ी, ड्राईफ्रूट-05 पैकेट, भारतीय सेना की वर्दी-02, रकसैक-03, जैकेट-02, भारतीय सेना का नकली ध्वज-02, मोबाइल-01, बोतल में विभिन्न रंग का तरल पदार्थ-03, लाइटर-02, हैंड क्लफ (प्लास्टिक)-10, जीपीएस-01, मोनोक्यूलर-01, घटनास्थल से बरामद किए गए।

सम्पूर्ण अभियान श्री बी.एस. कसाना, डीआईजी जम्मू के प्रत्यक्ष एवं सक्षम नेतृत्व में उच्च स्तरीय पेशेवर रवैये तथा अनुकरणीय रूप से संचालित किया गया, जिनकी सहायता श्री युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट कंपनी कमांडर ने दक्षता के साथ की। संपूर्ण अभियान में, एएसआई सुरजीत बिश्नोई, एएसआई ओम प्रकाश, कांस्टेबल पारस राम, कांस्टेबल बिवस बतबयाल एवं कांस्टेबल मुकेश कुमार चौधरी ने भी लश्कर-ए-तैयबा (एलईटीके) के भारी हथियारबंद आतंकवादी को ढेर करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

इस अभियान में, सर्व/श्री बलजीत सिंह कसाना, उप महानिरीक्षक, मुकेश कुमार चौधरी, कांस्टेबल, युद्धवीर यादव, सहायक कमांडेंट, सुरजीत सिंह बिश्नोई, सहायक उप-निरीक्षक, ओम प्रकाश, सहायक उप-निरीक्षक, पारस राम, कांस्टेबल तथा बिवस बतबयाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.11.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 148-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गुफरान अहमद,
सहायक कमांडेंट

02. अवधेश कुमार सुमन,
उप-निरीक्षक

03. नागेंद्र प्रसाद,
हेड कांस्टेबल

04. चेमेल सिंह,
हेड कांस्टेबल

05. मणिरंजन सिंह,
कांस्टेबल

06. पाटिल प्रवीण दिनकर,
कांस्टेबल

07. रोमेन लम्बल मायूम,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

50-60 माओवादियों के साथ अभिजीत यादव, अरविंद भुइयां, मुराद, बिहारी, संदीप जी सहित शीर्ष माओवादी नेताओं के मौजूद होने के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर, औरंगाबाद/गया जिले के ढिबरा एवं डुमरिया पुलिस स्टेशन के अंतर्गत भलुआही, गोपालडेरा, मोरमा, कचनार, छुचिया एवं दुलारे गांव के वन क्षेत्र में तलाशी एवं ध्वस्त करने के अभियान की योजना बनाई गई। तदनुसार, 205 कोबरा की दो टीमें, श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में कोबरा सी/205 की टीम सं. 8, श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में कोबरा बी/205 की टीम सं. 6 और राज्य पुलिस श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट के समग्र नेतृत्व में दिनांक 07.01.2016 को 1215 बजे उपर्युक्त क्षेत्र में अभियान के लिए निकली। अभियान योजना के अनुसार, टुकड़ियां उसी दिन लगभग 1445 बजे भलुआही में सीआरपीएफ की 153वीं बटालियन के कैंप में एकत्रित हुईं और घनी झाड़ियों का लाभ उठाते हुए मुख्य क्षेत्र की तरफ आगे बढ़ीं और अत्यंत विस्मय और गोपनीयता बनाए रखने के लिए जंगल में प्रवेश करने के लिए कम उपयोग होने वाले मार्ग का प्रयोग किया गया। दल ने दिनांक 07.01.2016 की रात्रि में एक सुरक्षित स्थान पर एलयूपी लिया।

दिनांक 08.01.2016 को, जब टुकड़ियां जंगल में माओवादियों की तलाश में जंगलों से होते हुए आगे बढ़ रही थीं, तभी लगभग 1715 बजे सीटी/जीडी अमरनाथ मिश्र ने लगभग 800-900 मीटर की दूरी पर धुंआ उठते हुए देखा, जिससे खाना बनाते हुए/सर्द मौसम के कारण हाथ सेंकते हुए माओवादियों के मौजूद होने की संभावना व्यक्त हो रही थी। दल के सदस्य ने सावधानीपूर्वक देखा और इस दृश्य के बारे में कमांडरों को तत्काल सूचित किया। दोनों कमांडरों ने आने वाले संभावित खतरों को ध्यान में रखते हुए फील्ड सिग्नल के माध्यम से टुकड़ियों को सतर्क किया। दोनों टीम कमांडरों ने अपने दल के सदस्यों के साथ योजना बनाई और किसी भी समय मुठभेड़ शुरू हो जाने के बारे में सतर्क/सावधान रहने के निर्देश देते हुए मौजूदा स्थिति के बारे में बताया। आवाजाही के दौरान जब टुकड़ियां संदिग्ध क्षेत्र के निकट पहुंचीं, तब उन्होंने कुछ दूरी पर शोर/संदिग्ध गतिविधि और धुंए का गुबार उठते हुए देखा। तत्काल योजना के मुताबिक, किनारे से घेराबंदी करने के लिए दोनों टीमें अलग हो गईं और चुपचाप लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे। जब दल अपने लक्ष्य की ओर तेजी से किंतु देख लिए जाने से बचने के लिए सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहे थे, तब श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट ने अपने साथियों सीटी/जीडी पाटिल प्रवीण डी. एवं अमरनाथ मिश्र को सामने से पहाड़ी पर चढ़ने का निर्देश दिया। आगे बढ़ते समय, माओवादियों के संतरी ने सुरक्षा बलों की मौजूदगी को भांप लिया और तत्काल टुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसके बाद माओवादियों ने अत्याधुनिक स्वचालित हथियारों का उपयोग करते हुए विभिन्न दिशाओं से भारी गोलीबारी की। टुकड़ियों ने तत्काल अपनी पोजिशन ले ली और उनके समक्ष आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी, लेकिन उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि इसके बजाय टुकड़ियों पर गोलीबारी और तेज कर दी।

श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट ने एसआई/जीडी अवधेश कुमार सुमन को माओवादियों को दायीं ओर से घेरने का निर्देश देते हुए स्वयं अपने कमांडो सीटी/जीडी अमरनाथ मिश्र, मणिरंजन सिंह, पाटिल प्रवीण डी, एचसी/जीडी चेमेल सिंह एवं एसआई आदित्य कुमार, एसएचओ (पुलिस स्टेशन ढिबरा) के साथ पत्थरों और ऊबड़-खाबड़ जमीन के बीच उपलब्ध मामूली कवर लेते हुए आगे बढ़ने लगे। इसी बीच, एचसी/जीडी नागेंद्र प्रसाद ने संवैधानिक विधि का पालन करते हुए और इसकी रक्षा करते हुए माओवादियों द्वारा भारी गोलीबारी के बीच पहल करते हुए माओवादियों को फिर से आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी लेकिन वे टुकड़ियों पर और अधिक अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे जिसमें एक गोली उनके दायं कंधे को भेदती हुई निकल गई। कोई और चारा न देखते हुए, टुकड़ियों ने माओवादियों की

गोलीबारी का उत्तर दिया। एचसी/जीडी नागेंद्र प्रसाद ने गोली से जख्मी होने के बावजूद माओवादियों की ओर जवाबी गोलीबारी की और उन्हें भारी चोट पहुंचाई जिससे उनकी गोलीबारी में कमी आई। इस बीच, एचसी/जीडी नागेंद्र प्रसाद को घटनास्थल पर ही प्राथमिक चिकित्सा सहायता प्रदान की गई।

सीटी/जीडी मणिरंजन सिंह, पाटिल प्रवीण डी. एवं एचसी/जीडी चेमेल सिंह ने सच्ची वीरता दिखाई और माओवादियों की गोलीबारी का जवाब देने के लिए कमांडर द्वारा सौंपे गए उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। वे भारी गोलीबारी की अनदेखी करते हुए और अपर्याप्त कवर की उपलबधता के बावजूद रेंगकर आगे बढ़े और माओवादियों को मार गिराने के लिए अपनी जान की परवाह किए बिना गोलीबारी को प्रभावी बनाने के लिए अलग-अलग स्थानों से गोलीबारी की। कंटीली झाड़ियों, पथरीली जमीन और किरचियों (स्प्लिंटर) की वजह से आई चोट एवं घाव भी उनकी हिम्मत और उत्साह को डिगा नहीं सका। सीटी/जीडी मणिरंजन सिंह, पाटिल प्रवीण डी. एवं एचसी/जीडी चेमेल सिंह द्वारा प्रदर्शित दिखाई गई पुरूषार्थ और अभूतपूर्व वीरता ने माओवादियों को चकित कर दिया क्योंकि उनकी गोलीबारी से वे बुरी तरह प्रभावित हुए थे। उनकी कार्यकुशलता ने माओवादियों को छोटे-छोटे समूहों में अलग-अलग दिशाओं में भागने पर मजबूर कर दिया। इसकी वजह से माओवादियों का एक समूह दायीं ओर भागा जहां एसआई/जीडी अवधेश कुमार सुमन ने पोजिशन ले रखी थी। श्री गुफरान, सहायक कमांडेंट जो अपनी टुकड़ी के साथ एसआई/जीडी अवधेश कुमार सुमन के दायीं ओर मौजूद थे, ने एसआई/जीडी अवधेश कुमार सुमन और उसकी टीम को मजबूती देने के लिए दायीं ओर से और नजदीक आए।

श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट और एसआई/जीडी अवधेश कुमार सुमन ने अपनी सटीक गोलीबारी द्वारा माओवादियों पर जबरदस्त हमला किया। इस घबराहट वाली स्थिति में, माओवादियों ने अपने नुकसान का बदला लेने के लिए टुकड़ियों पर भारी मात्रा में गोलीबारी करके जवाबी हमला किया। उन्होंने अत्याधुनिक स्वचालित हथियारों से टुकड़ियों पर गोलियों की बौछार की। इस घातक स्थिति से उबरने के लिए, श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट ने अपनी रणनीतिक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया और सीटी/जीडी रोमेन लम्बल मायूम को माओवादियों के ठिकाने पर यूबीजीएल से गोली चलाने का निर्देश दिया। सीटी/जीडी रोमेन लम्बल मायूम माओवादियों की बंदूक की नली से बरसती गोलियों की लहरों के बीच रेंगते हुए आगे बढ़े और यूबीजीएल से सटीक गोलीबारी करने के लिए दो पत्थरों के बीच जाकर अपनी रणनीतिक पोजिशन ले ली। श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट ने सीटी/जीडी रोमेन लम्बल मायूम को सुरक्षा फायर देकर परस्पर सहयोग किया और अपने कमांडर के आदेशों का अक्षरश: पालन किया। इस प्रक्रिया में न केवल गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट ने माओवादियों पर सटीक गोलीबारी की बल्कि सीटी/जीडी रोमेन लम्बल मायूम द्वारा चलाया गया यूबीजीएल शेल भी सटीक स्थान पर आकर गिरा और इस तरह दोनों ने आगे बढ़ रहे माओवादियों के समूह को गंभीर नुकसान पहुंचाया।

उपलब्ध अपर्याप्त सुरक्षा कवर और माओवादियों की ओर से भारी गोलीबारी के बावजूद, भाग रहे माओवादियों की दायीं ओर से घेराबंदी के लिए प्रभावी रूप से आगे बढ़ती रही। टुकड़ियों के प्रबल जवाबी हमले और निडर कार्रवाई ने माओवादियों को तहस-नहस कर दिया। वे अपनी जान बचाने के लिए अपने जख्मी काडरों को छोड़कर भाग गए। उनको भारी नुकसान पहुंचा, क्योंकि वे अपने मृत काडरों के शव को छोड़कर भाग गए थें, जो कि वे आमतौर पर नहीं करते हैं। मुठभेड़ लगभग 35 से 40 मिनट तक जारी रही।

दिनांक 09.01.2016 की भोर में मुठभेड़ स्थल/क्षेत्र की सघनता से तलाशी की गई। तलाशी के दौरान, माओवादियों के 04 शव, जिनकी पहचान राजीव यादव उर्फ बिहारी (रीजनल कमिटी सदस्य), रामरतन यादव उर्फ जगदीश जी उर्फ जयंत यादव (जोनल कमांडर), देवकी भारती (एरिया कमांडर) एवं बिरेंद्र उर्फ रविन्द्र भोक्ता (फाइटिंग काडर) के रूप में हुई, मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए। इसके अतिरिक्त, मुठभेड़ स्थल से एके-47, असॉल्ट राइफल-01, कारबाइन-01, 303 राइफल-02 एवं अन्य आपराधिक सामग्रियों सहित भारी मात्रा में हथियारों/गोलाबारूद का जखीरा बरामद किया गया।

अभियान के दौरान, टुकड़ियों ने बेहतरीन रणनीतिक कौशल, समन्वय, उत्साह, अभियान संबंधी मूल्यांकन एवं इन सबसे अधिक ऐसी कठिन परिस्थिति में समुचित कार्रवाई का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में, सर्व/श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट, अवधेश कुमार सुमन, उप-निरीक्षक, नागेंद्र प्रसाद, हेड कांस्टेबल, चेमेल सिंह, हेड कांस्टेबल, मणिरंजन सिंह, कांस्टेबल, पाटिल प्रवीण दिनकर, कांस्टेबल एवं रोमेन लम्बल मायूम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.01.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 149-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गौरव कुमार बालियान,
सहायक कमांडेंट

02. पवन कुमार त्रिगुणायत,
सहायक कमांडेंट

03. विक्रम पॉल,
कांस्टेबल

04. ए. बैरावन,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13 दिसम्बर, 2016 को दु दुर्दांत विदेशी आतंकी अबू बकर, डिविजनल कमांडेंट, लश्करे तैयबा की उपस्थिति में विश्वसनीय आसूचना प्राप्त होने पर विशेष ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी), जम्मू व कश्मीर पुलिस तथा सीआरपीएफ ने एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाई। तदनुसार, दो दल जिसमें प्रथम श्री पवन कुमार त्रिगुणायत, सहायक कमांडेंट एवं एसओजी, जम्मू व कश्मीर के कमान में रेंज क्विक एक्शन टीम (क्यूएटी) उत्तर कश्मीर ऑपरेशनल रेंज (एनकेओआर) को मिलाकर बनाई गई तथा दूसरा दल श्री गौरव कुमार बल बालियान, सहायक कमांडेंट, 179 बटालियन एवं एसओजी, जम्मू व कश्मीर पुलिस के कमान में ई/179 को मिलाकर बनायी गई।

13-14 दिसम्बर, 2016 के बीच रात्रिकाल में, लक्षित क्षेत्र में सुयक्त अभियान चलाया गया। आतंकी अबू बकर अपने शातिराना चाल के लिए मशहूर था तथा सुरक्षा बलों से कई बार बच निकला था। सैन्य टुकड़ियों को संभावित स्थान गांव बोमई तक पहुंचने के लिए हाजिन, जलुरा तथा पानीपोरा गांवों की तलाशी लेनी पड़ी। यद्यपि, इस समय तक तापमान शून्य के नीचे चला गया, तथापि, सभी विपरीत परिस्थितियों को धता बताते हुए सैन्य टुकड़ी लक्षित क्षेत्र तक पहुंचे। बोमई गांव पहुंचने पर जिला बारामुला में थाना बोमई के अंतर्गत गांव बोमई के धुनी मोहलला में पांच घरों के परिसर में लगभग 0330 बजे घेरा डाला गया।

घर के मालिक से एक सशस्त्र आतंकी की मौजूदगी की पुष्टि के बाद श्री गौरव कुमार बालियान तथा उनकी टीम ने परिसर के सामने तथा दाहिने तरफ मोर्चा संभाला जबकि श्री पवन कुमार त्रिगुणायत तथा उनकी टीम ने पीछवाड़े तथा बायीं तरफ स्थिति संभाली। जब सैन्य टुकड़ियां लक्षित घर पर धैर्यपूर्वक नजर बनाए हुए थी तो कांस्टेबल ए. बैरावन ने लक्षित घरों में से एक में कुछ गतिविधियां देखी। जब लक्षित घर के अंदर एक बार आतंकियों की मौजूदगी की पुष्टि हो गई तो सैन्य टुकड़ियों को सतर्क कर दिया गया तथा लक्षित/पास के घरों में रहने वालों को सुरक्षित स्थान पर बचा कर ले आए। आतंकियों को पब्लिक एड्रैस सिस्टम पर उद्घोषणा करके सुरक्षा बलों के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया परंतु, सारे प्रयास व्यर्थ रहे।

दूसरा विकल्प नहीं होने पर लगभग 0600 बजे कमरे में दाखिल होकर शिकंजा और अधिक कसने का निर्णय लिया गया। आतंकियों को हतप्रभ करने के लिए दो धावा दस्ता, पहला श्री गौरव कुमार बालियान के कमान में तथा दूसरा श्री वन कुमार त्रिगुणायत के कमान में लक्षित घर को आगे ओर पीछे दोनों तरफ से एक साथ प्रवेश कराने का काम सौंपा गया। जब लक्षित घर में टीम प्रवेश की तो आतंकी ने रणनीतिक स्थान पर मोर्चा संभाला और पहले दस्ते पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी तथा दूसरे दस्ते पर हथगोला फेंका। इस द्यातक हमले में दोनों दल चमत्कारिक ढंग से बच गए। यद्यपि सैन्य टुकड़ियों ने स्थिति पर त्वरित प्रतिक्रिया दी लेकिन उनके आतंकियों पर निशाना साधने से पहले वे दूसरे कमरे में चले गए तथा सैन्य टुकड़ियों का ध्यान बांटने के लिए अलग-अलग स्थानों से गोलीबारी करने लगे। इसी बीच लगभग 0730 बजे 21आईसी, एसएसपी, सौपोर तथा 22 आरआर के श्री धार्या पाल सिंह के कमान में क्यूएटी/179 बटालियन भी घटनास्थल पर कुमुक के तौर पर पहुंची। इस कुमुक की मदद से घेराबंदी और सुदृढ़ की गई। आतंकी समुचित रूप से सुसज्जित थे तथा सुरक्षा बलों की 1300 बजे तक उलझाए रखे। आतंकियों के विरूद्ध सैन्य टुकड़ियों के प्रयासों की व्यर्थ जाता देख; चूंकि वे अनुकूल परिस्थितियों में मोर्चाबंदी किए हुए थे, इसलिए घर को आईईडी का इस्तेमाल करके गिराने का निर्णय लिया गया। चूंकि वह बड़ा घर था, आतंकी स्नानगृह में चले गए तथा विस्फोट से अप्रभावित रहे। अत: आतंकियों ने सामने से हो रही गोलीबारी से बच निकलकर भागने का प्रयास किया लेकिन, सामने तैनात सैन्य टुकडियों के प्रभावकारी जवाबी हमले के कारण वे सफल नहीं हो सके।

इसी बीच, एक गोली आतंकी के पैर को भेदते हुए निकल गई वह गिर गया। सैन्य बल एक सख्त प्रतिद्वंदी के सामने था; वह तुरंत खड़ा हुआ और अपने को छिपाने के लिए दौड़ पड़ा। इस क्षण पहले से मोर्चा संभाले पवन कुमार त्रिगुणायत तथा गौरव कुमार बालियान दोनों ने आतंकी पर एक साथ गोलीबारी शुरू कर दी जिस पर घायल आतंकी की तरफ से और अधिक गोलीबारी से जवाब मिला। दोनों शुरवीर जवानों ने अपने साथियों के साथ न केवल अपने को आतंकियों की गोली से बचाया बल्कि प्रभावकारी ढंग से जवाबी कार्रवाई की जिससे आतंकी दीवार के पीछे शरण लेने के लिए मजबूर हो गए।

संघर्ष लम्बा खींच रहा था तथा विगत रूझानों के आलोक में कानून एवं व्यवस्था की समस्याएं उत्पन्न होने की संभावना अवश्यम्भावी थी। अभियान को समाप्त करने के लिए परिस्थिति एक त्वरित एवं अंतिम हमले की मांग कर रही थी। हालात की गंभीरता को भांपते हुए श्री गोरव कुमार बालियान तथा श्री पवन कुमार ने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए चुनौती को स्वीकार करने का निर्णय लिया तथा अंतिम हमले का नेतृत्व करने के लिए स्वयं को आगे किया। अपने साथी कांस्टेबल श्री ए. बैरावन तथा कांस्टेबल विक्रम पॉल के साथ दोनों ने अभूतपूर्व साहस का प्रदर्शन करते हुए तिथा अपनी सुरक्षा की चिंता किये बिना प्रभावकारी हमला करने के लिए गोलियों की बौछार के बीच आतंकियों की तरफ रेंगते हुए गए। अपने को पूरी तरह घिरता देख सामने से आते सैन्य टुकड़ियों पर आतंकियों ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी थी तथा हथगोला फेंकने के लिए तैयार थे लेकिन इस बार, श्री गौरव कुमार बालियान, श्री पवन कुमार त्रिगुणायत, कांस्टेबल ए. बैरावन तथा कांस्टेबल विक्रम पॉल न केवल अपने को बचाए बल्कि त्वरित प्रतिक्रिया भी दी। सारी सावधानियों को ताक पर रखते हुए, वे आतंकियों पर प्रचंड रूप से हमला कर दिया तथा अपनी सटीक गोलीबारी से उसे घटनास्थल पर ही ढेर कर दिया। बाद में आतंकी की पहचान अबू बकर (निवासी पाकिस्तान), डिविजनल कमांडर, लश्करे तैयबा, ए++ श्रेणी के रूप में की गई जिस पर रू.12.5/लाख का ईनाम था तथा 2009 से कुपवाड़ा जिला के लोलाब घाटी में चंडीगाम क्षेत्र क्रियाशील था। बाद में घटनास्थल की तलाशी में एके-47 राइफल, समरूप गोलाबारूद, युद्ध सामग्री तथा हथगोले भी बरामद हुए।

इस अभियान में सर्वश्री गौरव कुमार बालियान, सहायक कमांडेंट, पवन कुमार त्रिगुणायत, सहायक कमांडेंट, विक्रम पॉल, कांस्टेबल तथा ए. बैरावन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.12.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 150-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जय देव,
उप निरीक्षक-

02 अवतार सिंह,
हेड कांस्टेबल

03 मुकेश कुमार,
कांस्टेबल

04 गवई शेखर दादाराव,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

11 फरवरी, 2017 को लगभग 2340 बजे एसएसपी कुलगाम ने श्री हेंजांग, कमांडेंट-18 बटालियन सीआरपीएफ को सूचित किया कि आतंकवादियों ने पुलिस चौकी-फ्रिसल, थाना यारीपुरा, जिला कुलगाम, जम्मू एवं कश्मीर में कुजुर (नागबल मोहल्ला) में 1 आरआर, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस (जेकेपी) के स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसजीओ) तथा सिविल पुलिस पार्टी वाले घेराबंदी एवं तलाशी दल पर

गोलीबारी की है। उन्होंने तत्काल अतिरिक्त सैन्य दल भेजने का अनुरोध किया। तदनुसार, श्री हेंजांग ऑपरेशंस रेंज अनंतनाग की क्विक एक्शन टीम के साथ लगभग 0040 बजे घटनास्थल पर पहुंच गए। घटनास्थल पर पहुंचने पर, कमांडेंट 18 बटालियन को सूचित किया गया कि चार संदिग्ध आतंकवादी अब्दुल कबीर शेख के दामाद अब्दुगल मजीद रेशी के घर में छिपे हुए हैं तथा आशिक हुसैन पुत्र अब्दुल मजीद रेशी को बंधक बना रखा है। तदनुसार, एक रणनीति तैयार की गई और गांव की उत्तर एवं पूर्व की ओर से 1 आरआर के सैन्य दल, पश्चिम छोर से एसओजी एवं सिविल पुलिस तथा दक्षिण की ओर से सीआरपीएफ की क्यूएटी द्वारा घेराबंदी कर दी गई।

लक्षित घर एक बहुमंजिला इमारत थी। घेराबंदी करने के बाद, सैन्य दल द्वारा इसकी दो बार तलाशी ली गई लेकिन आतंकवादियों का पता नहीं लगाया जा सका। तथापि, घर के मालिक से आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि होने के बाद, आरआर तथा एसओजी के दल द्वारा पुन: घर की तलाशी लेने का निर्णय लिया गया। ज्यों ही तलाशी दल भवन के प्रथम तल पर पहुंचा, आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें सेना के दो जवानों को गंभीर चोर पहुंची। तलाशी तल, गोलीबारी की तीव्रता को देखकर हतप्रभ हो गया तथा आड़ लेने के लिए उन्हें भागना पड़ा। आरआर के घायल जवानों को बचाकर निकालना पड़ा, तलाशी दल बिखर गया था तथा उन्हें बचाकर निकालना पड़ा और आतंकवादियों के वास्तविक ठिकाने का अभी भी पता नहीं था।

ऐसे समय में, कमांडेंड 18 बटालियन से निर्देश प्राप्त होने पर, 18 बटालियन के हेड कांस्टेबल (चालक) अवतार सिंह ने अभूतपूर्व साहस का प्रदर्शन करते हुए बंकर वाहन को बाहरी घेरे से लाकर लक्षित घर के काफी निकट खड़ा कर दिया और तलाशी दल को घर से सुरक्षित बाहर निकालने में सहायता प्रदान की। ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र होने तथा फिसलन/दलदल वाली जगह होने के कारण, वाहन को उचित स्थान पर खड़ा करने में अत्यधिक कठिनाई हो रही थी और यह गंभीर खतरे से भरा हुआ था। तथापि, चालक अवतार सिंह ने सभी विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भारी गोलीबारी के बीच काफी चतुराई से तीन बार अपना वाहन उस क्षेत्र में ले आए तथा कवर फायर की सहायता से फंसे हुए 5-6 जवानों को बचाने में मदद की। जब सैन्य दल को बचाया जा रहा था, तब आतंकवादियों को उलझा कर रखा गया और इस कारण सैन्य दल को घर के पिछले भाग में आई ई डी लगाने का अवसर मिल गया। लक्षित घर से आतंवादियों को बचकर निकल जाने से रोकने के लिए, आतंवादियों के बच निकलने के सभी संभावित रास्तों को बंद कर दिया गया। दोनों तरफ से गोलाबारी रूक-रूक कर रातभर चलती रही।

परिस्थिति को देखते हुए जय देव सिंह, 90 बटालियन, सीआरपीएफ (अनंतनाग ऑपरेशंस रेंज की क्यूएटी के सदस्य), जो बाहरी घेरा में मोर्चा संभाले हुए थे, ने आतंकवादियों का पता लगाने की पहल की और लक्षित घर के सामने दक्षिण की ओर एक घर में घुस गए। कोई अन्य विकल्प नहीं बचा देख, आरआर द्वारा आईईडी विस्फोट किया गया जिससे घर का 80 प्रतिशत हिस्सा गिराया गया। इस विश्वास के साथ कि आतंकवादी मारे गए होंगे, एक तलाशी अभियान शुरू किया गया। मलबा साफ करने के लिए जेसीबी लगाई गई, लेकिन जैसे ही यह आगे बढ़ी, मलबे में से एक आतंकवादी उठा और अपने हथियार में गोली भरने का प्रयास किया। पास के घर में मोर्चा संभाले हुए जय देव सिंह ने त्वरित प्रतिक्रिया, स्पष्ट समझ तथा अभूतपूर्व सुझबूझ का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी पर गोली चला दी और उसे घटनास्थल पर ही ढेर कर दिया।

चूंकि लक्षित घर का एक भाग अभी भी खड़ा था, इसलिए दूसरा आईईडी विस्फोट किया गया जिससे घर पूर्णत: धराशायी हो गया। तथापि, इससे भी बचे हुए तीन आतंकवादी नहीं मारे जा सके क्योंकि वे मलबे से बाहर निकले और बचकर निकलने के लिए सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए दक्षिण-पूर्व की ओर भागे। उस तरफ तैनात आरआर के सैन्य दल ने भाग रहे आतंकवादियों पर सटीक गोली दागी और उनमें से एक को निष्क्रिय कर दिया। शेष बचे दो आतंकवादियों ने बचकर पास के नाले की तरफ भागने का प्रयास किया। कमांडेंट 18 बटालियन ने आतंकवादियों की गतिविधि देखी तथा तत्काल अपने दो साहसी जवानों कांस्टेबल/बगलर मुकेश कुमार तथा कांस्टेबल गवई शेखर दादाराव को भाग रहे आतंकवादियों का पीछा करने का निर्देश दिया। इस बीच, आतंकवादी सैन्य दल पर गोलीबारी करते रहे। चूंकि बलों के कानून एवं व्यवस्था का घटक बचकर भागने के रास्ते पर तैनात था, इसलिए कोई भी कार्रवाई काफी सावधानी एवं सतर्कता से की जानी थी। यह कांस्टेबल/बगलर मुकेश कुमार तथा कांस्टेबल गवई शेखर दादाराव के लिए एक कठिन चुनौती थी, जिनके सामने आतंकवादी थे, लेकिन गोलीबारी की दिशा में सैन्य दल की मौजूदगी उनके प्रयास को बाधित कर रही थी। साथ ही, वे अवसर को गंवाना नहीं चाहते थे। अनुकरणीय साहस, युक्तिपूर्ण कौशल तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए, दोनों जिप्सी से बाहर निकले तथा दनदनाती गोलियों की अनदेखी करते हुए आतंकवादियों की तरफ रेंगते हुए गए। दोनों आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे, अपना मोर्चा संभाल लिया तथा अपने जीवन की परवाह किए बिना काफी नजदीक से सटीक लेकिन नियंत्रित गोलीबारी शुरू कर दी जिससे दोनों आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारे गए।

अभियान 10 घंटे से अधिक समय तक चला तथा इसका समापन हिजबुल मुजाहिदीन के चार आतंकवादियों नामत: फारूक अहमद डार (श्रेणी 'ग') पुत्र मोहम्मिद यूसुफ डार निवासी अर्रह, पुलिस स्टेशन एवं जिला कुलगाम, मुदस्सीर अहमद तांत्रे उर्फ असीम (श्रेणी 'क'), पुत्र मोहम्मद अकबर तांत्रे, निवासी रेडवानी बाला, पुलिस स्टेशन एवं जिला कुलगाम, वकील अहमद ठोकर (श्रेणी 'ग'), पुत्र मोहम्मद

अहसान ठोकर, निवासी हादीगाम, पुलिस स्टेशन एवं जिला कुलगाम तथा मोहम्मद युनूस लोन (श्रेणी 'ख') पुत्र गुलाम कादिर लोन, निवासी हाउड़ा, पुलिस स्टेशन एवं जिला कुलगाम के मारे जाने के साथ हुआ सैन्य दल ने मारे गए आतंकवादियों से एक इंसास राइफल, एक एके 47 राइफल, एक एके 56 राइफल, दो पिस्तौल, दो इंसास मैगजीन, चार एके 47 मैगजीन, दो पिस्तौल मैगजीन तथा कई तरह के गोलाबारूद भी बरामद किए। अभियान के दौरान आरआर के दो जवान शहीद हो गए तथा आतंकवादियों द्वारा एक नागरिक (बंधक) मारा गया।

इस अभियान में, सर्व/श्री जय देव, उप-निरीक्षक, अवतार सिंह, हेड कांस्टेबल, मुकेश कुमार, कांस्टेबल और गवई शेखर दादाराव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.02.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 151-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. दलबीर सिंह,
हेड कांस्टेबल

02. राजेश कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

स्वयं के सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई कि स्वचालित हथियारों से पूर्णत: लैस बड़ी संख्या में माओवादी छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के गांव पलाचलमा में डेरा डाले हुए हैं। सुकमा देश में माओवाद से सर्वाधिक प्रभावित जिलों में से एक है। यह क्षेत्र माओवादियों का घोषित प्रदेश है जहां ऐसा माना जाता है कि उनकी समानांतर सरकार चलती है। यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक स्थिति, जोखिम भरे भू-भाग, दूरी, माओवादियों की कैडर क्षमता तथा माओवादियों को कथित स्थानीय समर्थन के कारण सबसे कठिन ऑपरेशनल क्षेत्र माना जाता है। यह सूचना, हथियारों से सुसज्जित माओवादियों पर उनके ही गढ़ में हमला करने के लिए, सुरक्षा बलों के लिए एक अवसर था, जो इस क्षेत्र तथा इसके समीकरण पर दूरगामी प्रभाव डाल सकता था। यह सुरक्षा बलों के लिए एक कठिन कार्य था तथा इस बात की संभावना थी कि यह अभियान इस क्षेत्र में माओवाद के विरूद्ध एक सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण अभियान होगा।

इस कार्य को निष्पादित करने के लिए, पुलिस महानिरीक्षक, सीआरपीएफ, छत्तीसगढ़ क्षेत्र द्वारा 217 बटालियन, 219 बटालियन तथा 208 कोबरा की सैन्य टुकड़ियों को शामिल करके एक संयुक्त तलाशी अभियान की योजना बनाई गई। योजना के अनुसार, यह अभियान पुलिस महानिरीक्षक (ऑप्स) छत्तीसगढ़ क्षेत्र की समग्र कमान में सुकमा जिले के आधार शिविर भेजी तथा गोरखा से दिनांक 20.10.2014 को 0430 बजे शुरू किया गया। सैन्य टुकड़ियां लक्षित क्षेत्र अर्थात गांव पलाचलमा की ओर बढ़ीं। सैन्य टुकड़ियां लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुए क्षेत्र की युक्तिपूर्वक तलाशी कर रही थीं लेकिन दिन ढलने के समय तक कुछ भी हालिस नहीं हुआ और इस प्रकार, पलाचलमा गांव से लगभग 02 कि.मी. की दूरी पर जंगल क्षेत्र में रात के दौरान एलयूपी ले लिया। उस क्षेत्र में मजबूत पकड़ तथा आसूचना नेटवर्क के कारण इस बात की काफी संभावना थी कि इस क्षेत्र में सुरक्षा बलों की मौजूदगी की भनक माओवादियों को मिल गई होगी। अगले दिन माओवादियों द्वारा घात लगाने/हमला किए जाने की काफी संभावना थी। सैन्य टुकड़ियां भी इससे अवगत थीं तथा ऐसी स्थितियों के लिए वे तैयार थीं।

दिनांक 21.10.2014 को स्थिति की रणनीतिक आवश्यकताओं के मद्देनजर, इस क्षेत्र की और अधिक प्रभावकारी ढंग से तलाशी लेने के लिए सैन्य टुकड़ियों को चार समूहों में बांटा गया। 217 बटालियन की सैन्य टुकड़ी को पलाचलमा गांव तथा इसके आसपास के जंगली क्षेत्र के बायीं ओर से घेराबंदी का काम सौंपा गया। तदनुसार, 217 बटालियन की सैन्य टुकड़ीक लगभग 0930 बजे अपने लक्षित

क्षेत्र की तरफ बढ़ी। जैसा कि प्रत्याशा थी, माओवादी सैन्य टुकड़ी की गतिविधि पर नजर रखे हुए थे तथा 217 बटालियन को तलाशी के लिए दिए गए जंगल क्षेत्र के बायीं ओर सैन्य टुकड़ी पर घात लगाकर बैठे हुए थे। जैसे ही सैन्य टुकड़ी माओवादियों के घात क्षेत्र में पहुंची, उन्होंने उन्हें मारने तथा उनके हथियार छीनने के उद्देश्य से सैन्य टुकड़ी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य टुकड़ी ने भी माओवादियों पर जवाबी गोलीबारी करके तुरंत कार्रवाई की, लेकिन उनके पास गोलियों से बचने की आड़ बहुत कम थी, इसलिए उनके लिए ज्यादा देर तक टिके रहना बहुत कठिन था। स्थिति ज्यादा संकटमय थी तथा निर्भीक एवं साहसिक जवाबी कार्रवाई की मांग कर रही थी।

संकट की इस घड़ी में, 217 बटालियन के एचसी/जीडी दलबीर सिंह तथा सीटी/जीडी राजेश कुमार ने पहल की तथा माओवादियों पर साहसिक जवाबी कार्रवाई करने का निर्णय लिया। वे दोनों भारी गोलीबारी के बीच निर्भीक होकर आगे बढ़े तथा मोर्चाबंदी किए हुए दुश्मनों पर बायीं ओर से जवाबी हमला किया। इन दोनों की औचक लेकिन निर्भीक कार्रवाई से माओवादी हतप्रभ रह गए और कुछ देर के लिए उन्होंने अपनी गोलीबारी बंद कर दी। इसी बीच, इन दोनों की निर्भीक एवं साहसिक कार्रवाई से उत्साहित होकर साथी सैनिक भी उनके साथ हो लिए और इस प्रकार, माओवादियों के विरूद्ध जवाबी कार्रवाई को और अधिक बढ़ा दिया। मुठभेड़ लगभग 30-40 मिनट तक जारी रही। साहसिक एवं संक्रेंदित जवाबी कार्रवाई ने माओवादी की रक्षा पंक्ति को तबाह कर दिया तथा उन्हें अपने सशस्त्र मृत कैडर को वहीं पर छोड़ कर भागने के लिए मजबूर कर दिया। सैन्य टुकड़ियों की साहसिक जवाबी कार्रवाई ने न केवल माओवादियों द्वारा बिछाई गई भयंकर घात को तोड़ा, बल्कि इससे एक खूंखार माओवादी को भी मार गिराया गया। मुठभेड़ के पश्चात तलाशी के दौरान, मुठभेड़ स्थल से 01 देशी बंदूक तथा 02 माओवादी पैम्फलेट के साथ माओवादी का एक शव (जिसकी बाद में "सोधी मासा" पुत्र सोमादा, गांव पलाचलमा, पुलिस स्टेशन किस्ताराम, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के रूप में पहचान की गई) बरामद किया गया। मृत माओवादी पलाचलमा के जन मिलिशिया का एक सदस्य था।

इस अभियान में, सर्व/श्री दलबीर सिंह, हेड कांस्टेबल और राजेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.10.2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 152-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड — (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)

02. नरपत, सहायक कमांडेंट — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. सौरभ वर्मा, उप-निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. बलबिन्दर पठानिया, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

05. झारियास लाकडा, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

मनीला (सचिव पामेद-असूर क्षेत्र समिति) तथा सोमडू (असूर एलओएस कमांडर) के नेतृत्व में जिला बीजापुर (छत्तीसगढ़) के चीना-बोर्कल, कोमातपल्ली तथा भट्टीगुडा के गांव की धुरी पर 40-50 सशस्त्र माओवादियों की मौजूदगी के बारे में विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर, श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी 204, कोबरा बटालियन की समग्र कमान में सिविल पुलिस (छत्तीसगढ़) के एसटीएफ एवं डीआरजी के साथ 204 कोबरा से बनी 04 टीमों के एक संयुक्त सर्च एवं डिस्ट्रॉय ऑपरेशन (एसएडीओ) की योजना बनायी गई और इसे शुरू किया गया। लक्षित क्षेत्र दुष्कर भू-भाग, सुदृढ़ माओवादी कैडर तथा माओवादियों के मजबूत आसूचना तंत्र के कारण माओवाद का गढ़ समझा जाता है। किसी भी अभियान(ऑपरेशन) के आवश्यक तत्व, आकस्मिकता तथा गोपनीयता को बनाए रखना सुरक्षा बलों के समक्ष हमेशा ही एक चुनौती रही है तथा सैन्यटुकड़ियां इससे अवगत थीं।

अभियान (ऑपरेशन) की योजना के अनुसार, सैन्यटुकडियां अभियान के लिए आधार शिविर बासागुडा तथा तारेम से दिनांक 03.01.2017 को लगभग 0430 बजे चल पडी। पूरी गोपनीयता बनाए रखते हुए तथा गुप्त रूप से आगे बढ़ते हुए, सैन्यटुकड़ी लगभग 1610 बजे पेड्डागेलुर के जंगल क्षेत्र में पहुंची तथा अपने लक्षित क्षेत्र की तरफ आगे बढ़ी। अचानक, वे सामने की दिशा से भारी गोलीबारी की जद में आ गई। माओवादियों ने इस क्षेत्र में सुरक्षा बलों की मौजूदगी को भांप लिया था तथा उन पर हमले के लिए तैयार थे। माओवादी सैन्यटुकड़ियों को मारने और उनके हथियार लूटने के उद्देश्य से उन पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। तत्परता से कार्रवाई करते हुए, सैन्य टुकड़ियों ने आत्म-रक्षा में जवाबी कार्रवाई की। दोनों तरफ की गोलीबारी में, डीआरजी का एक जवान सोमारू हेमला गोली लगने से घायल हो गया और उन्हें तत्काल मेडिकल सहायता की जरूरत थी क्योंकि जख्म से खून का अत्यधिक स्राव हो रहा था। ऐसी स्थिति में, श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी एक वास्तविक कमांडर के रूप में अदम्यस साहस और धैर्य का प्रदर्शन करते हुए जख्मी डीआरजी जवान को बचाने के लिए हालात पर खरे उतरे। उन्होंने सीटी/जीडी बलविन्दर पठानिया के साथ एक गंभीर जोखिम उठाया और माओवादी की गोलीबारी के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। इन दोनों ने जख्मी जवान को बचाकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया और घायल जवान के लिए प्राथमिक उपचार की व्यवस्था की। बाद में, घायल को निकाल कर आधार शिविर ले जाया गया तथा सैन्यटुकड़ियों ने और अधिक मजबूत इरादे के साथ अभियान को जारी रखा।

दिनांक 04.01.2017 को जब सैन्यटुकड़ी, एसएडीओ के लिए भट्टीगुडा गांव के जंगल क्षेत्र के निकट पहुंची तो दल के कमांडर श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी ने कार्य को और अधिक प्रभावकारी ढंग से निपटाने के लिए सैन्यटुकड़ियों को 04 दलों क्रमश: दल संख्या 1, 2, 3 एवं 4 में विभाजित कर दिया। जब सैन्यटुकड़िया क्षेत्र की तलाशी ले रही थीं, तो लगभग 1600 बजे घात लगाकर बैठे लगभग 70-80 सशस्त्र माओवादियों ने दल सं. 2 पर भारी गोलाबारी शुरू कर दिया और उन पर हथगोले फेंके। सैन्यटुकड़ियों ने तत्काल मोर्चा संभाल लिया और जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। चूंकि दल सं. 2 से वे तादात में अधिक थे, इसलिए उन्होंने अभियान कमांडर से सहायता मांगी। अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता तथा अद्वितीय रणनीतिक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए, अभियान कमांडर श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी ने तुरंत एक जवाबी कार्य योजना तैयार की तथा सभी दलों के कमांडरों के साथ तालमेल कायम किया। योजना के अनुसार, दल सं. 2 की सहायता करने के लिए, सैन्यटुकड़ियों ने माओवादियों पर ताबडतोड़ जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। तदनुसार, दल सं. 1 को दायीं तरफ से तथा दल संख्या 3 एवं 4 को बायीं तरफ से मार्ग को बाधित करने के लिए कहा गया। जब दल मार्ग को बाधित कर रहे थे, तो वे भी स्वचालित हथियारों की भारी गोलीबारी की जद में आ गए। माओवादी पूर्णत: सुरक्षित ठिकाने से गोलीबारी कर रहे थे तथा इस प्रकार उनके मार्ग को पूर्णत: बंद करने के सुरक्षा बलों के प्रयास को मुश्किल बना रहे थे। माओवादियों की मजबूत रक्षा पंक्ति तथा घात लगाने को तोड़ने के लिए उन पर घातक हमला करना समय की मांग थी। श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी ने और कोई विकल्प नहीं पाते हुए तथा अपनी सैन्यटुकड़ियों को नुकसान से बचाने के लिए, 3-3 व्यक्तियों वाले दो माइक्रो हमला(असॉल्ट) दल बनाए। असॉल्ट-1 का नेतृत्व श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी, निरीक्षक लक्ष्मण केवट तथा सीटी/जीडी बलविन्दर पठानिया के साथ कर रहे थे जबकि असॉल्ट-2 का नेतृत्व श्री नरपत, सहायक कमांडेंट, एसआई/जीडी सौरभ वर्मा तथा जीटी/जीडी जे. लाकड़ा के साथ कर रहे थे।

माइक्रो असॉल्ट दल कवर फायर की आड़ में अत्यधिक ऊंचाई वाले स्थान की तरफ बढ़े, जहां माओवादियों ने प्राकृतिक आड़ ले रखी थी तथा सैन्यटुकड़ियों पर हथियारों से हमला कर रहे थे। श्री अशोक कुमार, 2-आई/सी के नेतृत्व में माइक्रो असॉल्ट दल भारी गोलीबारी के बीच, गोलीबारी करने और आगे बढ़ने की बुद्धिमत्तापूर्ण रणनीति अपनाते हुए तथा अदम्य साइस का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों के ठिकाने तक पहुंचे। उन्हें सही जगह पर पाकर तथा उपयुक्त अवसर का उपयोग करते हुए, दोनों असॉल्ट दलों ने माओवादियों पर धावा बोल दिया जिससे उनका अत्यधिक सुरक्षित स्थान तबाह हो गया। 3-3 सदस्यों वाले 02 माइक्रो असॉल्ट दलों ने प्राकृतिक आड़ में छिपे हुए भारी हथियारों से लैस 15-20 माओवादियों के समूह का वीरतापूर्वक सामना किया। बहादुर सैनिकों के एक छोटे से दल के निर्भीक हमले ने माओवादियों को स्तब्ध कर दिया। इस हमले ने माओवादियों के साहस को डिगा दिया।

इस असाधारण साहस तथा प्रचंड जवाबी कार्रवाई से हतप्रभ होकर माओवादी वहां पर एक माओवादी का शव (आयु लगभग 25 वर्ष, जिसकी बाद में सोदी मुल्ला पुत्र लिंगा, गांव चुतवाही, थाना बासागुडा, जिला बीजापुर(सीपी), के रूप में पहचान की गई) के साथ-साथ

एक 5.56 एमएम इंसास एलएमजी, एक मैगजीन 16 राउंड, 02 एचई ग्रेनेड तथा अन्य सामग्रियों को छोड़कर भाग गए। भुठभेड़ स्थल पर खून के काफी धब्बे पाये गए, जिससे पता चलता था कि माओवादी बुरी तरह से हताहत हुए थे लेकिन वे घायल/मृत माओवादियों के शव को घसीट कर ले जाने में सफल रहे। बाद में, विभिन्न आसूचना एजेंसियों के संपुष्ट आसूचना के अनुसार, इस बात की पुष्टि हुई कि मुठभेड़ के दौरान 02 माओवादी मारे गए थे तथा 04 गंभीर रूप से घालय हो गए थे।

इस अभियान में, सर्व/श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड, नरपत, सहायक कमांडेंट, सौरभ वर्मा, उप-निरीक्षक, बलबिन्दर पठानिया, कांस्टेबल और झारियास लाकड़ा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.01.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 153-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गजानंद यादव,
उप-निरीक्षक

02. मुकेश कुमार पांडेय,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जम्मू एवं कश्मीर के जिला अनंतनाग में श्रीगुफवाड़ा अपने प्रतिकूल भू-भाग, जंगलों से भरे क्षेत्र तथा स्थानीय जनसंख्या के सक्रिय सहयोग के कारण आतंकवादी गतिविधियों का केंद्र रहा है। 14 दिसम्बर, 2016 को लगभग 0700 बजे बेवुरा गांव में कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में एक विशिष्ट आसूचना संबंधी जानकारी के आधार पर, श्री सतीश पांडेय, सहायक कमांडेंट ने अपनी ई/116 बटालियन की सैन्यटुकड़ी तथा स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) के साथ इस गांव में घेराबंदी एवं तलाशी अभियान शुरू किया। अत्यधिक विस्मय एवं गोपनीयता बरकरार रखते हुए सैन्यटुकड़ी लक्षित गांव के नजदीक पहुंच गई। इसी बीच, 3 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) की सैन्यटुकड़ियां भी उस गांव में पहुंच गईं तथा अभियान दलों में शामिल हो गईं। तत्काल संयुक्त सैन्यटुकड़ियों ने गांव की घेराबंदी शुरू कर दी।

जब सैन्यटुकड़ियां गांव की घेराबंदी कर रही थीं, तो एक आतंकवादी घने कोहरे तथा कम दृश्यता का लाभ उठाकर सैन्यटुकड़ियों की दिशा में अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए ऊबड-खाबड़ क्षेत्र से होकर नाले की ओर भागा। संख्या 121160043 उप-निरीक्षक गजानंद यादव तथा उनके साथी सं. 125380536 कांस्टेबल मुकेश कुमार पांडेय, ई/116 बटालियन सीआरपीएफ, जो अग्रणी दल में थे, आतंकवादी की गोलीबारी की दिशा में बिल्कुल सामने आ गए। गोलियां उनके बिलकुल पास से होकर निकल गईं और वे आतंकवादी की इस अप्रत्याशित गोलीबारी में चमत्कारिक ढंग से बच गए। उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए रणनीतिक स्थान पर तत्काल मोर्चा संभाल लिया तथा आतंकवादी का पता लगाने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी पोजिशन से लगभग 50 मीटर की दूरी पर एक सशस्त्र आतंकवादी को देखा जो उनकी ओर गोलीबारी कर रहा था तथा घटनास्थल से भागने के लिए नाले की तरफ दौड़ रहा था। आतंकवादी के इरादे को भांपकर, उप-निरीक्षक गजानंद यादव तथा कांस्टेबल मुकेश कुमार पांडेय ने अपनी जान की परवाह किए बिना तथा सभी सावधानियों को ताक पर रखते हुए आतंकवादी का पीछा किया। उनके साथी सैनिक भी उनके पीछे हो लिये।

घने बागीचों में काफी देर तक पीछा करना जारी रखा। तड़के के कुहासे के कारण दृश्यता बहुत ही कम थी तथा बर्फ का ढेर उनकी आवाजाही को बहुत अधिक बाधित कर रहा था। कम दृश्यता के कारण बागीचों से होकर गुजरना एक जोखिम भरा काम था तथा इस प्रकार भाग रहे आतंकवादी को कुछ कपटपूर्ण रणनीति अपनाने का अवसर प्रदान कर रही थी। वह थोड़ा पहले रूक कर समुचित आड़ लेते हुए दोनों पर नजदीक से गोली चला सकता था। तथापि, दोनों नौजवान एवं ऊर्जावान सैनिक जोश से भरे हुए थे तथा अपने कार्य के

प्रति प्रतिबद्ध थे। उन्होंने भाग रहे आतंकवादी की ओर से रूक-रूक कर हो रही गोलीबारी के बीच सेब के घने पेड़ों में बचते-बचाते निर्भीक होकर उनका पीछा किया। सुरक्षा बलों की गतिविधियों को बाधित करने के लिए आतंकवादी उन पर निरंतर गोलीबारी कर रहा था। तथापि, ये विषम परिस्थिति उन दोनों के साहस को डगमगा नहीं सकीं और वे आतंकवादी का पीछा करते रहे। जब गजानंद यादव तथा मुकेश कुमार पांडेय बागीचे से बाहर निकले, तो उन्होंने भाग रहे आतंकवादी का पता लगा लिया क्योंकि अब वह उन्हें दिखाई दे रहा था। सुरक्षा बलों को अपने काफी नजदीक पाकर आतंकवादी ने अपने भागने का रास्ता बनाने के लिए उन पर गोली चला दी, लेकिन इस बार गजानंद यादव तथा मुकेश कुमार पांडेय सतर्क थे तथा उन्हेंउ चुनौती देने के लिए तैयार थे। उन्होंने न केवल आतंकवादी की गोली से अपने को बचाया, बल्कि उन पर गोली भी चलायी। आतंकवादी को गोली लगी और वह वहीं पर ढेर हो गया।

तथापि, एक दूसरा आतंकवादी भी था, जो कम दृश्यता तथा अनुकूल भू-भाग का फायदा उठाते हुए भागने में सफल रहा। मारे गए आतंकवादी की पहचान बाद में बासित रसूल डार पुत्र गुलाम रसूल डार निवासी मरहमा, हिजबुल मुहाहिदीन आतंकवादी संगठन के रूप में की गई। मारे गए आतंकवादी के पास से एक एके-56 राइफल, एके गोलाबारूद के 11 राउंड, दो एके मैगजीन और एक एचई ग्रेनेड बरामद किया गया।

इस अभियान में, उप-निरीक्षक गजानंद यादव ने स्थिति को समझने में अभूतपूर्व साहस तथा रणनीतिक सूझबूझ का प्रदर्शन किया तथा काफी पेशेवर ढंग से स्थिति का मुकाबला किया। उन्होंने कांस्टेबल मुकेश कुमार पांडेय के साथ लगातार आतंकवादी की गोलीबारी की दिशा में होने के बावजूद सभी खतरों को धता बताते हुए भाग रहे आतंकवादी का पीछा किया। कांस्टेबल मुकेश कुमार ने भी इस अवसर का फायदा उठाया तथा चुनौती पर खरे उतरे। उन्होंने आतंकवादी का पीछा करने तथा उसे निष्क्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उनके अनुकरणीय साहस, कर्तव्य के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता तथा स्पष्ट एवं आसन्न खतरे के समक्ष दृढ़ संकल्प के सम्मान स्वरूप उप-निरीक्षक गजानंद यादव तथा कांस्टेबल मुकेश कुमार पांडेय, 116 बटालियन के नामों की "वीरता का पुलिस पदक" पुरस्कार हेतु संस्तुति की जाती है।

इस अभियान में, सर्व/श्री गजानंद यादव, उप-निरीक्षक तथा मुकेश कुमार पांडेय, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.12.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 154-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संजीव कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बिजबेहरा से पहलगाम तक पुरानी के.पी. (खानबल-पहलगाम) सड़क, विस्तृत घने जंगलों तथा बागीचों वाले ऊबड़-खाबड़ एवं दुष्कर क्षेत्र का एक बड़ा भू-भाग है। इस क्षेत्र में सैन्यटुकड़ियों की आवाजाही कठिन है। यह क्षेत्र पत्थरबाजी के लिए भी कुख्यात है तथा आतंकवादियों की गतिविधियों के लिए पर्याप्त कवर उपलब्ध कराता है। इस क्षेत्र में सफल अभियान के लिए बड़ी संख्या में सैन्यटुकड़ियों को एक विशिष्ट सूचना एवं समुचित तालमेल की जरूरत होती है ताकि भागने के रास्ते को काटा जा सके।

03 अगस्त, 2017 को, लगभग 1845 बजे, कमांडेंट 90 बटालियन को एसडीपीओ बिजबेहरा से सूचना प्राप्त हुई कि कुछ आतंकवादियों ने 90 बटालियन सीआरपीएफ, उड़नहाल के मुख्यालय से लगभग 08 कि.मी. दूर पुलिस स्टेशन बिजबेहरा के अंतर्गत गांव कनेलवां में सेना और पुलिस पार्टी पर गोली चलाई है। श्री अंगोम नरेश सिंह, सेंकेड-इन-कमांड तथा यूनिट क्विक एक्शन टीम (क्यूएटी) के साथ श्री अजय कुमार शर्मा, कमांडेंट-90 बटालियन सीआरपीएफ तत्काल गांव में पहुंचे तथा स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) जेकेपी एवं आरआर के साथ समन्वय करके संदिग्ध क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। चूंकि, शाम का समय था और अंधेरा छाने लगा था, जो सैन्यटुकड़ियों

की निर्बाध आवाजाही में एक अड़चन थी। इसके अतिरिक्त, बागीचों के पेड़ों से आच्छादित खुला क्षेत्र होने के कारण सैन्यटुकड़ियों को संदिग्ध स्थान की ओर बढ़ने के दौरान बहुत कम आड़ (कवर) मिल रही थी। तथापि, जानबूझकर थोड़ा जोखिम लेकर तथा क्षेत्र की सूचना का मूल्यांकन करके सुरक्षा बलों ने कुछ संदिग्ध घरों की संयुक्त तलाशी का अभियान शुरू कर दिया। 90 बटालियन, सीआरपीएफ के कांस्टेबल संजीव कुमार के साथ श्री अंगोम नरेश ने तलाशी अभियान के लिए ऐसे ही दल का गठन किया। तथापि, तीन घरों की तलाशी करने, जिसमें काफी समय लगा, के बावजूद कुछ भी नहीं मिला।

किसी अब्दुल कयूम भट पुत्र गुलाम मोहम्मद भट के संदिग्ध घर की तलाशी के दौरान, हर गतिविधि पर काफी तन्मयता से ध्यान देते हुए कांस्टेबल संजीव कुमार ने संदिग्ध घर के ठीक बाहर स्थित शौचालय के निकट पड़ा हुआ मैगजीन का एक थैला देखा। कुछ गड़बड़ समझ कर उन्होंने तत्काल अपने वरिष्ठ अधिकारी को इस महत्वपूर्ण बरामदगी के बारे में सूचित किया। इसके परिणामस्वरूप, संदिग्ध घर की घेराबंदी सख्त कर दी गई तथा तलाशी में लगी सैन्यटुकड़ियों को अत्यधिक सावधान रहने के लिए सतर्क कर दिया गया। यह पाया गया कि शौचालय को अंदर से बंद कर दिया गया है जिससे इस संदेह की पुष्टि हुई कि आतंकवादी अंदर छिपा हुआ है। आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कई चेतावनी दी गई, लेकिन इसका कोई जवाब नहीं मिला। छिपने के ठिकाने से बाहर आने हेतु आतंकवादी को उकसाने के लिए सिविल पुलिस द्वारा शौचालय की तरफ अश्रु गैस के गोले भी छोड़े गए। तथापि, इसका भी अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ा। क्षेत्र तक पहुंचना एक कठिन कार्य था, क्योंकि यह एक खुला क्षेत्र था तथा आतंकवादी की ओर से गोलीबारी की स्थिति में यहां बहुत कम आड़ उपलब्ध थी। स्पष्ट खतरे के कारण, किसी ने भी आगे बढ़ने की पहल नहीं की। इस नाजुक स्थिति में, अनुकरणीय साहस तथा पेशेवर बुद्धिमत्ता सुझाव का प्रदर्शन करते हुए अंगोम नरेश, सेंकेड-इन-कमांड के मार्गदर्शन में कांस्टेबल संजीव कुमार उस स्थान पर उपलब्ध थोड़ी बहुत आड़ लेते हुए तथा कम से कम शरीर प्रदर्शित करते हुए शौचालय की ओर चतुराई से आगे बढ़ने लगे। उनका उद्देश्य लक्षित क्षेत्र के नजदीक पहुंचना था, ताकि आतंकवादी को शौचालय से चुपके से निकलने तथा पास के बड़े भवनों में जाने से रोका जा सके। स्वयं को गंभीर खतरे में डालते हुए, वे रेंगते हुए उस स्थान के नजदीक पहुंचे। उन्होंने शौचालय की खिड़की से आतंकवादी की कुछ गतिविधि देखी, जो मोर्चा संभालने का प्रयास कर रहा था।

अचानक, शौचालय में छिपे आतंकवादी ने सैन्यटुकड़ियों को गुमराह करने तथा इस स्थिति का फायदा उठाकर सुरक्षित स्थान पर जाने के उद्देश्य से गोलियों की बौछार कर दी। तथापि, कांस्टेबल संजीव कुमार अपने दुश्मन की गोली की दिशा से तत्काल हटे तथा बिना समय गवाएं जवाबी कार्रवाई की जिससे आतंकवादी पीछे हटने के लिए मजबूर हो गया तथा शायद उसे घालय भी कर दिया। इससे दल के अन्य सदस्यों को मोर्चा संभालने तथा आतंकवादी के नजदीक आने का अवसर मिल गया, तत्पश्चात, आतंकवादी और सैन्यटुकिड़यों के बीच भारी गोलीबारी शुरू हो गई। लगभग 15 मिनट के बाद लड़ाई समाप्त हो गई। तत्पश्चात, शौचालय की तलाशी ली गई तथा एक आतंकवादी नामत: यावर नासीर शेरगुजारी, निवासी शिरपोरा, पीपी-जगलतमंडी, जिला अनंतनाग (जम्मू एवं कश्मीर) का शव बरामद किया गया। मारा गया आतंकवादी हिजबुल-मुजाहिदीन से जुड़ा हुआ था। बरामदगी में, मैगजीन तथा समरूप गोलाबारूद के साथ एक एसएलआर राइफल, एक चीनी ग्रेनेड तथा अन्य विविध सामग्रियां शामिल हैं।

अभियान में, 90 बटालियन सीआरपीएफ के बल संख्या 065230247 संजीव कुमार ने अपनी जान को गंभीर खतरे के बावजूद निडर साहस, पेशेवर कौशल एवं कर्तव्य के प्रति समर्पण का प्रदर्शन किया जिसमें उन्होंने युक्तिपूर्ण मूल्यांकन करके अवसर का लाभ उठाया तथा आतंकवादी को न केवल छिपने के ठिकाने से बचकर भागने से रोकने के लिए तीव्र प्रतिक्रिया दिखाई बल्कि बिना किसी बचाव के गोलीबारी का जवाब दिया और आतंकवादी को घायल करते हुए कठिन परिस्थिति में डाल दिया और अंतत: उसका खात्मा किया जा सका। कांस्टेबल संजीव कुमार की समय पर एवं साहसिक कार्रवाई ने सुरक्षा बलों को संभावित नुकसान से बचा लिया। कांस्टेबल संजीव कुमार ने मुठभेड़ में 10 राउंड गोलियां चलायीं तथा दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले के एक सक्रिय एवं खूंखार आतंकवादी को मारने में विशिष्ट रूप से योगदान दिया।

इस अभियान में, श्री संजीव कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.08.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 155-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. देवेंद्र कुमार,
सेकंड-इन-कमांड,

02. विजय सिंह,
सहायक कमांडेंट

03. बिष्णु सिंह,
हेड कांस्टेबल

04. एज़ाज अहमद भट,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दक्षिण कश्मीर में जिला पुलवामा का त्राल सब-डिवीजन आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन का पारंपरिक गढ़ रहा है। इस आतंकवादी संगठन के कई शीर्ष कमांडर त्राल के ही रहने वाले हैं। इस क्षेत्र में हिजबुल मुजाहिदीन कैडर को जन-समर्थन भी प्राप्त है। त्राल को भौगोलिक लाभ भी प्राप्त है क्योंकि यह ऊपरी और निचले त्राल को अलग करने वाले पठार के किनारे स्थित है। यह घने जंगलों से आच्छादित पहाड़ों से घिरा है। एक तरफ यह आतंकवादियों को प्राकृतिक शरण प्रदान करता है, वहीं यह विद्रोह-रोधी अभियानों को भी अत्यधिक कठिन एवं खतरनाक बनाता है। दिनांक 08 जुलाई, 2016 को मुठभेड़ में हिजबुल मुजाहिदीन के डिवीजनल कमांडर, बुरहान वानी के खात्मे के बाद, उसके अधीनस्थ सबजार अहमद भट ने हिजबुल मुजाहिदीन के परिचालन प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला ।

26 मई, 2017 को लगभग 2000 बजे त्राल पुलिस स्टेशन के अंतर्गत साइमोह गांव के क्षेत्र में हिजबुल मुजाहिदीन के कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त हुई। सूचना का सत्यापन करने के लिए 42 आरआर का एक दल एम.पी.वी. (कैस्पर) में साइमोह के लिए पहले ही कूच कर चुका था। लगभग इसी समय, 180 बटालियन सीआरपीएफ के सेकंड-इन-कमांड, श्री देवेंद्र कुमार की कमान में 180 बटालियन की सी. कंपनी तथा उप पुलिस अधीक्षक त्राल के साथ विशेष अभियान ग्रुप (एसओजी) त्राल, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस (जेकेपी) का एक दल भी पास के रस्थसुना गांव में गश्त लगा रहा था। लगभग 2030 बजे, जब 42 आरआर का एमपीवी साइको गांव पहुंचा, तब उस पर आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी की गई जिसका समुचित जवाब दिया गया। गोली की आवाज सुनकर श्री देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड (ऑप्स) की कमान में सीआरपीएफ ने आरआर की पार्टी के साथ तुरंत संपर्क साधा तथा साइमोह गांव (जहां 42 आरआर दल पर गोलीबारी की गई थी) में घटनास्थल पर पहुंच गए। मेजर विक्रम सिंह, दल कमांडर, 42 आरआर ने उन्हें सूचित किया कि आतंकवादी आरआर दल पर गोलीबारी करने के बाद साइमोह गांव के दत्ता मोहल्ला की ओर भाग गए हैं। तदनुसार, दोनों कमांडरों ने दत्ता मोहल्ला की तत्काल घेराबंदी करने का निर्णय लिया। लगभग 2045 बजे श्री विजय सिंह, सहायक कमांडेंट सी कंपनी के कंपनी कमांडर, 42 आरआर की सैन्य टुकडी तथा एसओजी के साथ श्री देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड, ने लगभग 15 संदिग्ध घरों के चारो ओर सख्त घेराबंदी कर दी।

तदनंतर, श्री राजेश कुमार, कमांडेंट-180 बटालियन, सीआरपीएफ, अवन्तीपुरा, ब्रिगे. राजा चक्रवर्ती, सेक्टर कमांडर भी अभियान की निगरानी करने के लिए घटनास्थल पर पहुंच गए। इसके बाद, संयुक्त दल ने दत्ता मोहल्ले के संदिग्ध घरों की तलाशी लेने का निर्णय लिया क्योंकि सूचना से अन्य आतंकवादियों के साथ हिजबुल मुजाहिदीन के खूंखार कमांडर की मौजूदगी के संकेत मिले थे। संदिग्ध घर की तलाशी लेने के लिए सीआरपीएफ, सेना तथा एसओजी के दो संयुक्त दल बनाए गए। श्री देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड, उनके साथी कांस्टेबल एज़ाज अहमद भट एसओजी तथा आरआर के साथ पहले दल का हिस्सा थे। दूसरे दल में श्री विजय सिंह, सहायक कमांडेंट तथा उनके साथी संख्या 991370898 हेड कांस्टेबल विष्णु सिंह शामिल थे। जब तलाशी चल रही थी, तब से एक घर के मालिक मोहम्मद यूसुफ डार ने कुछ देर पहले गोलीबारी की आवाज सुनने तथा उसके तुरंत बाद हिजबुल मुजाहिदीन के कमांडर सबजार अहमद भट तथा दो अन्य आतंकवादियों के उसके घर में प्रवेश करने की पुष्टि की। इसके साथ-साथ उन्होंने कहा कि वे इस बात से आश्वस्त नहीं हैं कि क्या आतंकवादी अभी भी उनके घर में छिपे हुए हैं अथवा बाहर चले गए हैं। यह सूचना प्राप्त होने पर, आतंकवादियों द्वारा अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकलने के किसी प्रयास को विफल करने के लिए घेराबंदी और भी सख्त कर दी गई। इसके अतिरिक्त, सुबह होने तक तलाशी रोक दी गयी तथा सैन्यटुकड़ियों को सावधान एवं सतर्क रहने की हिदायत दी गई।

अगली सुबह अर्थात् 27 मई को लगभग 0730 बजे, विजय सिंह तथा उनके साथी विष्णु सिंह ने स्वयं को बड़े खतरे में डालते हुए लक्षित घर के दक्षिण की ओर पास के घर की पहली मंजिल पर अपना मोर्चा संभाल लिया। उस स्थान से वे टूटी हुई खिड़की से

लक्षित घर के अंदर की सारी हरकतें देखने की स्थिति में थे। लक्षित घर तीन मंजिला घर था तथा यह कदम गंभीर खतरे से खाली नहीं था क्योंकि आतंकवादी प्रभुत्व वाली स्थिति में थे। विजय सिंह ने अपने साथी हेड कांस्टेबल विष्णु सिंह के साथ उनकी गतिविधि का पता लगाने के लिए लक्षित घर पर कुछ गोलियां चलाई, लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। इसी बीच, देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड तथा उनके साथी एज़ाज अहमद भट ने भी पश्चिम की ओर लक्षित घर के पास वाले घर के भू-तल पर मोर्चा संभाल लिया था।

लगभग 0830 बजे, देवेंद्र कुमार ने लक्षित घर के अंदर कुछ गतिविधि देखी तत्काल सभी दलों को सूचित किया। वे और उनके साथी कांस्टेबल एज़ाज अहमद भट आतंकवादियों को उलझाने के लिए रेंगते हुए लक्षित घर की तरफ आगे बढ़े। इस गतिविधि को देखकर, आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी और लगभग 1030 बजे बड़े पैमाने पर लड़ाई शुरू हो गई। तथापि, देवेंद्र कुमार तथा उनके साथी एज़ाज अहमद भट उससे भयभीत नहीं हुए तथा भारी गोलीबारी के बीच बड़ी चतुराई से लक्षित घर की तरफ आगे बढ़ते रहे। आतंकवादी निरंतर गोली चलाते रहे, परंतु सुरक्षा बलों का ध्यान भटकाने तथा भाग निकलने के लिए वे अपनी जगह भी तेजी से बदल रहे थे। अचानक, भीषण लड़ाई के बीच आतंकवादियों ने अपने हथियार विजय सिंह, सहायक कमांडेंट और उनके साथी विष्णु सिंह की तरफ घुमा दिए। उन्होंने बिना भयभीत हुए गोलीबारी से तुरंत जवाब दिया तथा खिड़की से बाहर कूदने का प्रयास कर रहे आतंकवादियों के भागने की कोशिश को विफल कर दिया। इस नाजुक घड़ी में, देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड और उनके साथी कांस्टेबल एज़ाज अहमद भट ने कुशल रणनीतिक समझ एवं सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए रणनीतिक रूप से अपना स्थान बदला तथा लक्षित घर से ठीक 10 मीटर की मारक दूरी के अंदर चले गए और उन खिड़कियों को अवरूद्ध कर दिया जहां से आतंकवादी सैन्यटुकड़ियों पर गोलीबारी कर रहे थे। चूंकि आतंकवादी एक बहुत ही मजबूत किलेबंद तीन मंजिला इमारत में थे, इसलिए उन पर गोलीबारी का वस्तुत: कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अत:, रणनीति बदलते हुए, श्री विजय सिंह और उनके साथी हेड कांस्टेबल विष्णु सिंह ने लक्षित घर में कुछ मोलटोव काकटेल्स फेंके जिसके परिणामस्वरूप लक्षित घर के भू-तल में आग लग गई तथा उसका धुंआ दूसरी मंजिल तक उठने लगा।

लगभग 1115 बजे आतंकवादियों ने भागने का एक अंतिम प्रयास किया। सैन्यटुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए वे लक्षित घर के विभिन्न निकास स्थलों से बाहर निकले तथा मुख्य द्वार की ओर भागे। देवेंद्र कुमार तथा एज़ाज अहमद भट अपनी स्वयं की सुरक्षा से बेपरवाह तथा सारी सावधानियों को ताक पर रखते हुए आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के सामने आ गए तथा उनमें से एक को निष्क्रिय कर दिया। विजय सिंह तथा उनके साथी विष्णु सिंह, जिन्होंने स्वयं बहुत रणनीतिक रूप से मोर्चा संभाल रखा था, अवसर को गंवाना नहीं चाहते थे तथा अचूक निशाना लगाते हुए दूसरे आतंकवादी को निष्क्रिय कर दिया, बाद में जिसकी पहचान फैजान मुजफ्फर भट उर्फ उमाएरा के तौर पर की गई जिसने त्राल में 04 मार्च, 2017 को सीआरपीएफ की एक यूनिट से 5.56 एमएम की एक इंसास राइफल छीनी थी। मारे गए आतंकवादी से लूटे गए हथियार भी बरामद किए गए। मारे गए दूसरे आतंकवादी की पहचान सबजार अहमद भट उर्फ सबा डॉन उर्फ जरार पुत्र गुलाम हसन भट निवासी रथसुन, त्राल पुलिस स्टेआशन त्राल हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के रूप में की गई। वह एक ए++ श्रेणी का आतंकवादी था जिस पर 12.5 लाख रूपये का नकद इनाम रखा गया था। वह वर्ष 2015 से सक्रिय था तथा बुरहानउद्दीन वानी के खात्मे के बाद हिजबुल मुजाहिदीन के शीर्ष कमांडरों में से एक था। फैजान मुजफ्फर भट उर्फ उमाएरा पुत्र मुजफ्फर अहमद भट त्राल का निवासी था। मारे गए आतंकवादियों में से एक एके-47 असॉल्ट राइफल, एक 5.56 इंसास राइफल, एके-47 की दो मैगजीन, इंसास राइफल की चार मैगजीनें तथा समरूप गोलाबारूद भी बरामद किए गए।

इस अभियान में, श्री देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड तथा विजय सिंह, सहायक कमांडेंट, 180 बटालियन सीआरपीएफ ने सैनिकों के सच्चे नायक के रूप में सामने से नेतृत्व किया तथा कुशल रणनीतिक मूल्यांकन, असाधारण पराक्रम एवं अदम्यी साहस का प्रदर्शन किया और अपने साथियों को अत्यधिक विषम परिस्थितियों में भी उन्हें दी गई जिम्मेदारी के प्रति अडिग रहने के लिए प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप, उन्होंने दोनों आतंकवादियों को निष्क्रिय करने की चुनौती को संयुक्त रूप से समाप्त किया। बल संख्या 991370898 हेड कांस्टेबल विष्णु सिंह तथा बल संख्या 085340215 कांस्टेबल एज़ाज अहमद भट, 180 बटालियन सीआरपीएफ ने भी अपने कमांडरों को निराश नहीं किया और उन पर किए गए विश्वास पर वे खरे उतरे। उन्होंने, स्पष्ट आसन्न खतरे के समक्ष उत्कृष्ट कोटि की प्रतिबद्धता, उत्तरदायित्व की भावना बोध एवं असाधारण साहस का प्रदर्शन किया तथा यह सुनिश्चित किया कि चुनौती का डट कर मुकाबला करें तथा आतंकवादियों को निष्क्रिय कर दिया।

इस अभियान में, सर्व/श्री देवेंद्र कुमार, सेकंड-इन-कमांड, विजय सिंह, सहायक कमांडेंट, बिष्णु सिंह, हेड कांस्टेबल तथा एज़ाज अहमद भट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.05.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 156-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	राजेश कुमार, कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
02.	संजय कुमार, उप कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार)
03.	राजेश कुमार बर्नेला, सहायक कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
04.	संदीप सिंह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
05.	श्री रंजन कुमार साह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
06.	नज़ीर अहमद, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

14 जुलाई, 2017 को लगभग 1530 बजे, जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले में थाना त्राल के अंतर्गत सतूरा गांव में वान्तिवन पर्वतमाला के वान्तिवन चोटियों में जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) संगठन के खूंखार आतंकवादी के छिपने के संदिग्ध ठिकाने के बारे में अवन्तीपोरा के एसएसपी से विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। वान्तिवन चोटी समुद्र तल से 2405 मी. ऊपर स्थित है। लक्षित क्षेत्र की 65 डिग्री ढलान, सुरक्षा बलों के लिए एक चुनौती थी क्योंकि दुश्मन प्रभावशाली स्थिति में था तथा आती हुई सैन्यटुकड़ियों को दूर से ही देख सकता था। लक्षित क्षेत्र, त्राल से 20 कि.मी. की दूरी तथा रोड-हेड से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर त्राल-अरीपाल-सतूरा-जुहीस्थान सड़क पर त्राल के उत्तर में अवस्थित था।

भू-भाग की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, श्री राजेश कुमार, कमांडेंट, 180 बटालियन, सीआरपीएफ द्वारा एक संयुक्त घेराबंदी एवं तलाशी अभियान (सीएएसओ) की योजना बनाई गई। यह जंगल युद्ध की रणनीति में मिले प्रशिक्षण को प्रभावकारी ढंग से अमल में लाने का एक अवसर था। तदनुसार, 15 जुलाई को लगभग 0330 बजे पौ फटने के ठीक पहले, सीआरपीएफ, 42 आरआर तथा सिविल पुलिस के संयुक्त बलों द्वारा क्षेत्र की घेराबंदी की गई। तत्पश्चात, 'ए' कंपनी, 180 बटालियन की क्विक एक्शन टीम (क्यूएटी), डी/42 आरआर तथा सिविल पुलिस की पार्टी से बना एक तलाशी दल, रणनीतिक रूप से लक्षित क्षेत्र की ओर आगे बढ़ा। विगत रात की निरंतर बारिश ने चढ़ाई को और भी अधिक फिसलन भरा एवं कठिन बना दिया। परंतु, सभी विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए सुरक्षा बल लगभग 0645 बजे लक्षित क्षेत्र में पहुंचने में सफल रहे।

श्री संजय कुमार, उप-कमांडेंट, 180 बटालियन ने श्री राजेश कुमार, कमांडेंट के साथ यथोचित रूप से विचार-विमर्श करने तथा त्वरित रूप से मोर्चा संभालने की आवश्यकता को भांपते हुए तथा आतंकवादियों द्वारा अपनी सुबह की गतिविधियां शुरू करने से पहले, सैन्यटुकड़ियों को छिपने के संदिग्ध ठिकाने, जो कि वान्तिवन चोटी के ऊपर एक प्राकृतिक गुफा थी, के आसपास तैनात कर दिया। इस गुफा के पीछे एक बड़ी चट्टान थी, जो उस तरफ घेरा डालने के प्रयासों को वस्तुत: असंभव बन रही थी; अत: 'यू' आकार की घेराबंदी की गई। श्री राजेश कुमार, कमांडेंट ने अपने साथी कांस्टेबल रंजन कुमार साह के साथ स्वयं को लगभग सीधी ढलान के थोड़ा नीचे तैनात कर दिया। गुफा के सामने कोई प्राकृतिक आड़ न होने के कारण सैन्यटुकड़ियों को आगे बढ़कर गुफा के मुहाने के नजदीक जाने में और बाधा उत्पन्न हो रही थी।

लगभग 0750 बजे, दो नवयुवक अपने चारों तरफ घेराबंदी से पूर्णत: अनभिज्ञ होकर गुफा के मुहाने पर आए। सैन्यटुकड़ियों ने यह पता लगाने के लिए कि वे आतंकवादी हैं या स्थानीय चरवाहे, उन्हें चुनौती दी। उस चुनौती का जवाब गोलियों की बौछार से मिला। उनमें से एक भागने का प्रयास करने के दौरान क्यूएटी मोर्चाबंदी पर गोली चलाते हुए ढलान पर नीचे दौड़ रहा था। स्वयं को पूर्णत: घिरा

हुआ पाकर, उसने हताशा में हाथ में हथगोला लेकर घेराबंदी की तरफ आने का प्रयास किया तथा सैन्यटुकड़ियों को आतंकित करने के उद्देश्य से गालियां दे रहा था। चूंकि श्री राजेश कुमार ने अपने साथी कांस्टेबल रंजन कुमार साह के साथ अत्यंत रणनीतिक रूप से पोजिशन ले रखी थी, इसलिए वे आतंकवादी की गतिविधि पर बारीकी से नजर रख सकते थे। यह भांपते हुए कि आतंकवादी गंभीर क्षति पहुंचाने में सक्षम है, राजेश कुमार, कमांडेंट सच्चे अर्थों में एक नायक की तरह असाधारण सूझबूझ दिखाते हुए स्वयं को इस हद तक सामने लाए कि उन उन्हें स्पष्ट नजर आने लगा, उन्होंने सटीक गोलीबारी की तथा आतंकवादी को वहीं पर ढेर कर दिया।

गुफा में फंसे शेष आतंकवादी यूबीजीएल तथा छोटे हथियारों से निरंतर भारी गोलीबारी करते रहे। बिना उचित आड़ के गुफा के पास जाना गंभीर जोखिम एवं खतरे से भरा हुआ था। बिना डरे, श्री राजेश कुमार बर्नेला, सहायक कमांडेंट 180 बटालियन, जो गुफा के सामने थोड़ी दूरी पर मोर्चा संभाले हुए थे, यूबीजीएल तथा अन्य आग्नेयास्त्रों से गुफा पर हमला करते रहे और इस प्रकार, आतंकवादियों के बचकर भागने के प्रयास को विफल कर दिया।

लगभग 1300 बजे, पांच घंटे तक चली लम्बी गोलाबारी के बाद, अभियान की निगरानी कर रहे आरआर के सेक्टर कमांडर ने सैन्य टुकड़ियों को बिना समय गंवाए छिपने के ठिकाने की ओर बढ़ने का आदेश दिया, क्योंकि उनकी राय थी कि अंतिम हमला करने में कोई और विलम्ब करने से आतंकवादियों को अंधेरा होने पर भागने का अवसर मिल सकता है। श्री राजेश कुमार, कमांडेंट ने इस मुद्दे पर अपनी असहमति व्यक्त की तथा सेक्टर कमांडर को सूचित किया कि पर्याप्त आड़ के अभाव में यह कदम खतरनाक साबित हो सकता है क्योंकि आतंकवादी प्रभावशाली स्थिति में थे। उन्होंने एक वैकल्पिक मार्ग का प्रस्ताव किया जो उन्हें छिपने के ठिकाने के काफी करीब ले जाएगा। तत्पश्चात, उन्होंने सलाह दी कि आंसू गैस तथा ग्रेनेड की मदद से धुंआ करके आतंकवादियों को बाहर निकाला जाए। सेक्टर कमांडर श्री संजय कुमार द्वारा इस योजना की प्रशंसा की गई तथा इसे सहजता से लिया गया और उन्होंने इस हमला दल का स्वेच्छा से नेतृत्व करने की इच्छा व्यक्त की, जिसे 180 बटालियन के कमांडेंट द्वारा प्रस्तावित अत्यधिक चुनौतीपूर्ण एवं कठिन मार्ग अपनाकर चोटी के शीर्ष पर भारी किलाबंद छिपने के लिए ठिकाने को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था। सीआरपीएफ, 42 आरआर तथा एसओजी (जेकेपी) के कुल 12 जवानों से बने इस हमला दल का नेतृत्व श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट ने किया और वे रस्सी तथा अन्य पर्वतारोहण उपकरण की सहायता से चोटी पर धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ते गए तथा छिपने के ठिकाने के पीछे पहुंच गए। उन्होंने अत्यधिक विस्मय बनाए रखते हुए चतुराई से मोर्चा संभाल लिया। तत्पश्चात, संजय कुमार अपने साथी कांस्टेबल संदीप सिंह के साथ गुफा की तरफ सतर्कतापूर्वक रेंगते हुए गए। कोई भी गलत कदम उनकी मौत की घंटी बजा देता, लेकिन वे सफलता के लिए कृतसंकल्प थे और इस तरह धैर्यपूर्वक आगे बढ़े। जब वे उचित मारक दूरी पर थे, तो संजय कुमार ने अपने साथी कांस्टेबल संदीप सिंह को गुफा के अंदर आंसू गैस छोड़ने का निर्देश दिया ताकि आतंकवादियों को अपने छिपने के ठिकाने से बाहर निकलने के लिए बाध्य किया जा सके। संदीप सिंह रेंगते हुए और आगे गए तथा गुफा के मुहाने के नजदीक पहुंच गए और गुफा के दायीं तरफ मुहाने से 10 मीटर की दूरी पर स्थित चट्टान के पीछे मोर्चा संभाल लिया। तत्पश्चात संदीप गुफा में आंसू गैस के गोले छोड़ने लगे। यह अभिनव रणनीति फलीभूत हुई जब गुफा में आंसू गैस के गोले छोड़ने के लगभग 15 मिनट के बाद दो आतंकवादी पत्थर से बनी दीवार के पीछे आए और संजय कुमार, उप कमांडेंट एवं उनके साथी संदीप सिंह की ओर गोली चलाने लगे। चतुराई से चट्टान की आड़ लेते हुए, उन्होंने गोलीबारी का जवाब दिया। संजय कुमार ऐसी स्थिति के लिए नए नहीं थे और विगत में भी कई बार आतंकवादियों के प्रचंड हमले का दृढ़ता और जोश के साथ सामना किया था जिससे उन्हें उनके शौर्य के लिए पुरस्कार प्राप्त हुए थे। अपने दुश्मन की ओर से गोलीबारी की बौछार से विचलित हुए बिना, उन्होंने सावधानीपूर्वक निशाना साधा और जवाबी गोलीबारी की। वे उनमें से एक को मारने में कामयाब रहे, जिससे दूसरा आतंकवादी गुफा में वापस जाने के लिए मजबूर हो गया। लेकिन उन्होंने पुन: अपना स्थान बदला और गुफा में आंसू गैस के गोले छोड़े। यह महसूस करते हुए कि अधिकारी गुफा के काफी नजदीक आ गए हैं, गुफा के अंदर छिपे आतंकवादी ने हथगोला फेंका, जिससे बाहर विस्फोट हुआ, जिसमें संजय बाल-बाल बच गए लेकिन स्प्लिंटर से उनका घुटना जख्मी हो गया। परंतु वे इस इस तरह के व्यक्ति नहीं थे कि काम बीच में ही छोड़ देते। अदम्य दृढ़संकल्प, मजबूत इरादा और अड़िग प्रतिबद्धता दिखाते हुए संजय कुमार अपने मोर्चे पर डटे रहे। इस समय तक टीम के आंसू गैस का गोलाबारूद(टीएसएम) समाप्त हो चुका था और उन्होंने आंसू गैस के और अधिक गोलाबारूद की मांग की। श्री राजेश कुमार बर्नेला, सहायक कमांडेंट ओर उनके साथी कांस्टेबल नज़ीर अहमद एवं कांस्टेबल संजय कुमार साह को टीएसएम के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा गया। सभी तीनों रणनीतिक रूप से आगे बढ़े और गुफा के मुहाने तक पहुंच गए। श्री राजेश कुमार बर्नेला ने एक ऊंची चट्टान पर मोर्चा संभाल लिया और गुफा के मुहाने को कवर कर दिया। तत्पश्चात उन्होंने कांस्टेबल नज़ीर अहमद को छिपने के ठिकाने के अंदर आंसू गैस के कुछ गोले दागने का निर्देश दिया। ऐसी स्थिति में, छिपने के ठिकाने के सामने वाले भाग को कवर करने के लिए, कांस्टेबल रंजन कुमार साह को छिपने के ठिकाने के सामने थोड़ी दूर पर स्थित पेड़ के नजदीक मोर्चा संभालने का निर्देश दिया गया। कांस्टेबल रंजन कुमार साह ने अपनी उम्र से अधिक असाधारण परिपक्वता, अटल प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते हुए तथा अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने निर्धारित स्थान पर मोर्चा संभाल लिया। आतंकवादियों ने उनकी गतिविधियां देख लीं और उनकी दिशा में गोलीबारी की, लेकिन राजेश कुमार बर्नेला ने प्रभावकारी ढंग से जवाबी गोलीबारी करके उन्हें पीछे खदेड़ दिया। मौके का फायदा उठाते हुए,

रंजन कुमार साह ने गुफा के अंदर यूबीजीएल के 04 राउंड दागे, लेकिन गुफा के टेढ़े-मेढ़े ढांचे के कारण इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसलिए कांस्टेबल रंजन कुमार साह, आरआर के मेजर शक्ति सिंह के साथ छिपने के ठिकाने के नजदीक पहुंचे और यूबीजीएल की सहायता से गुफा में लगभग 20 मी. की दूरी से और अधिक ग्रेनेड फेंके। इसके जवाब में आतंकवादी ने गुफा से एक हथगोला फेंका जो फट गया और धूल एवं धुंए का गुबार उठने से सैन्यटुकड़ियों को कुछ दिखाई नहीं दिया। इस अफरातफरी का फायदा उठाते हुए, एक आतंकवादी राजेश कुमार बर्नेला एवं उसके साथी कांस्टेबल नज़ीर अहमद की ओर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए गुफा से बाहर भागा। अपनी सुरक्षा को पूरी तरह धता बताते हुए तथा सारी सावधानियों को ताक पर रखकर अपने कवर से बाहर निकलते हुए राजेश कुमार, सहायक कमांडेंट, उनके साथी कांस्टेबल नजीर अहमद एवं कांस्टेबल रंजन कुमार साह ने एक साथ गोलीबारी की और गुफा के बाहर लगभग 5 मीटर की दूरी पर आतंकवादी को निष्क्रिय कर दिया। यह पता लगाने के लिए कि कोई और आतंकवादी गुफा के अंदर छिपे हुए नहीं हैं, कांस्टेबल रंजन कुमार साह द्वारा गुफा के अंदर यूबीजीएल के कुछ और गोले दागे गए लेकिन इसका कोई जवाब नहीं मिला। लगभग 1745 बजे, अभियान को अंजाम तक पहुंचाने के लिए तलाशी दल आगे बढ़ा। रंजन कुमार साह, एसओजी के जवानों के साथ तलाशी दल को कवर फायर देते रहे। 12 घंटे से अधिक समय तक चले इस अभियान से जेईएम के 3 कट्टर आतंकवादियों का खात्मा हुआ। बाद में तलाशी के दौरान, यह पाया गया कि गुफा की कुल लम्बाई लगभग 45 फुट थी तथा इसका आकार वक्रीय था और इसके विशिष्ट आकार एवं विशेष आकृति के कारण समतल प्रक्षेप पथ के हथियार एवं अस्त्र प्रभावकारी साबित नहीं हुए। आंसू गैस के गोलों और ग्रेनेडों का प्रभावकारी प्रयोग पासा पलटने वाला साबित हुआ। मारे गए आतंकवादियों की पहचान, हसन भाई श्रेणी 'क' जेईएम तथा निवासी पाकिस्तान, परवेज अहमद पुत्र गुलाम कादिर मीर, श्रेणी 'ग' जेईएम, निवासी पुहू, काकापुरा, पुलवामा और मुख्तार अहमदलोन, श्रेणी 'ग' जेईएम, पुत्र मोहम्मद अकरम लोन, निवासी गांव अमीराबाद, त्राल पुलवामा के रूप में की गई। सैन्यटुकड़ियों ने 03 ए.के. राइफलें, 14 एके मैगजीन, एके 47 के 80 राउंड, 01 यूबीजीएल, 06 यूबीजीएल राउंड, एंटीना के साथ 01 वायरलेस सेट एवं गोलाबारूद के थैले भी बरामद किए गए। यह भी पता चला कि ये आतंकवादी त्राल में जून, 2017 के महीने में 180 बटालियन सीआरपीएफ एवं 42 आरआर के कैम्प पर हुए हमले के लिए भी जिम्मेदार थे।

इस अभियान में, सर्व/श्री राजेश कुमार, कमांडेंट, संजय कुमार, उप कमांडेंट, राजेश कुमार बर्नेला, सहायक कमांडेंट, संदीप सिंह, कांस्टेबल, रंजन कुमार साह, कांस्टेबल और नज़ीर अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.07.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 157-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राज कमल बर्धन,
सहायक कमांडेंट

02. गायकवाड़ आशीष भास्कर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलवामा जिले का काकापोरा गांव, जुलाई, 2016 में शीर्ष आतंकवादी लीडर के मारे जाने के बाद अपने पुनरूत्थान के समय से दक्षिण कश्मीर में आतंकवाद का अड्डा बन गया है। अब यह लश्करे तैयबा के एक मजबूत गढ़ के रूप में विकसित हो गया है। हाल ही में, यह गांव जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के कट्टर आतंकवादियों को शरण देता रहा है। लश्करे तैयबा का ओजीडब्ल्यू नेटवर्क गांव में बहुत मजबूत है तथा कई अवसरों पर शरारती तत्वों/आतंकवादियों के हमदर्दों द्वारा भारी पत्थरबाजी के कारण काकापोरा में लश्करे तैयबा के आतंकवादियों के विरूद्ध अभियान असफल हुए हैं।

21 जून, 2017 को लगभग 1715 बजे, एसएसपी पुलवामा ने पुलवामा जिले के काकापोरा पुलिस स्टेशन के अंतर्गत न्यू कालोनी, काकापोरा में लश्करे तैयबा के 2 या 3 आतंवादियों की मौजूदगी के बारे में एक सूचना सीआरपीएफ की 182 एवं 183 बटालियनों के कमांडरों तथा 50 आरआर के साथ साझा की गई। एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई तथा शुरूआती ब्रीफिंग के बाद, संयुक्त बल उक्त गांव की ओर चल पड़ा। श्री राज कमल बर्धन, सहायक कमांडेंट, 183 बटालियन सीआरपीएफ की कमान में 183 बटालियन की डी कंपनी मेजर कार्तिकेय मनराल (आईसी- 72229पी) की कमान में 50 आरआर तथा श्री सतीश कुमार, उप पुलिस अधीक्षक, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस की कमान में स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) काकापोरा के संयुक्त सैन्य दलों द्वारा लगभग 15 संदिग्ध घरों के चारों ओर घेराबंदी कर दी गई। तत्पश्चात, सीआरपीएफ, सेना तथा सिविल पुलिस के अतिरिक्त दलों द्वारा घेराबंदी को और मजबूत किया गया।

बाहरी और भीतरी घेराबंदी पूरी तरह लगाने के बाद, तलाशी के लिए छह संदिग्ध बहुमंजिला घरों की पहचान की गई। घरों के ये समूह बहुत नजदीक स्थित थे और बाउंड्री की सामान्य दीवार से एक दूसरे से जुड़े हुए थे। तदनुसार, श्री राज कमल बर्धन की कमान में 183 बटालियन की डी कंपनी की क्विक एक्शन टीम (क्यूएटी) तथा मेजर कार्तिकेय मनराल की कमान में 50 आरआर को मिलाकर एक संयुक्त तलाशी दल बनाया गया। अपने को गंभीर खतरे में डालते हुए, अधिकारियों के अलावा 4 कार्मिकों से बने तलाशी दल ने चार संदिग्ध घरों की तलाशी पूरी की थी तथा पांचवें घर के भू-तल की युक्तिपूर्वक छानबीन की। जैसे ही दल युक्तिपूर्वक प्रथम तल की ओर बढ़ा, प्रथम तल से दल के ऊपर गोलियों की बौछार शुरू हो गई। 50 आरआर के मेजर कार्तिकेय मनराल के दाहिने कंधे में गोली लगी और वे गिर गए। श्री राज कमल बर्धन अपने साथी-युगल बल सं. 115258242 कांस्टेबल गायकवाड़ आशीष भास्कर, 183 बटालियन के साथ, जो मेजर के साथ थे, तुरंत घायल मेजर कार्तिकेय मनराल के बायीं ओर बढ़े और अपनी जान को गंभीर खतरे में डालते हुए आतंकवादी पर गोली चलाई और उन्हें प्रथम तल पर जाने के लिए बाध्य कर दिया। अपने घायल साथी के प्रति सच्चा भाईचारा एवं वास्तविक चिंता दर्शाते हुए, राज कमल बर्धन एवं उनके साथी गायकवाड़ आशीष दोनों ने स्वयं को गंभीर खतरे में डालते हुए 50 आरआर के मेजर कार्तिकेय मनराल को निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले आए।

मेजर कार्तिकेय को सुरक्षित स्थान पर निकाल लाने के बाद, राज कमल बर्धन एवं कांस्टेबल गायकवाड़ आशीष वापस चले गए और अपनी रणनीति बदलते हुए पास के घर की ओर बढ़े क्योंकि वहां से वे आतंकवादियों द्वारा भागने का प्रयास करने पर उनके ऊपर पैनी नजर रख सकते थे। तथापि, जब राज कमल बर्धन और गायकवाड़ आशीष पास के घर की ओर बढ़ रहे थे, तो आतंकवादियों ने गोलियों की दूसरी बौछार शुरू कर दी। वे दोनों चमत्कारिक ढंग से बच गए। घर पहुंचने पर, उन्हें सिविलयन मिले। यह अच्छी तरह से जानते हुए कि सुरक्षा बल घर में मौजूद हैं, आतंकवादियों ने घर पर गोलीबारी जारी रखी। सिविलियनों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के बाद, उन दोनों ने घर के प्रथम तल पर युक्तिपूर्वक मोर्चा संभाल लिया ताकि आतंकवादी को भागने से रोका जा सके क्योंकि भागने का केवल एक ही रास्ता था और इस बात की कमोबेश पुष्टि हो गई थी कि आतंकवादी केवल उस विशिष्ट घर में मौजूद है।

बल, घर पर यूबीजीएल और एमजीएल से तब तक गोलीबारी करते रहे, जब तक उसमें आग लगकर लपटे नहीं निकलने लगीं। अगले दिन लगभग 0100 बजे आग बुझाने के बाद, बलों द्वारा लक्षित घर की संयुक्त रूप से तलाशी ली गई। तीन आतंकवादियों के शव बरामद किए गए। आतंकवादियों की पहचान माजिद मीर पुत्र अब्दुल हमीद मीर श्रेणी 'क', शाकिर अहमद पुत्र बशीर अहमद, श्रेणी 'ख', निवासी काकापोरा, पुलवामा तथा इरशाद अहमद डार पुत्र मोहम्मद सुल्तान डार निवासी पडगामपोरा, अवन्तीपुरा श्रेणी 'ग' के रूप में की गई। ये सभी लश्करे तैयबा आतंकवादी संगठन के थे। सैन्य दल ने एक एके 56 असॉल्ट राइफलें, 03 एके-56 मैगजीनें तथा मैगजीन के साथ एक टी-65 पिस्टल भी बरामद की।

उक्त अभियान में, श्री राज कमल बर्धन, सहायक कमांडेंट और उनके साथी कांस्टेबल गायकवाड़ आशीष ने असाधारण पहल तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए कमरे में प्रवेश करने वाले दल का हिस्सा बनने की इच्छा जताई। जब मेजर कार्तिकेय अपना जोखिम भरा काम करने के दौरान गोली लगने से घायल हो गए, तो दोनों ने सौहार्द, भाईचारे की भावना एवं असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी पर तत्क्षण गोली चलाकर उसे पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया और अपने साथी की बहुमूल्य जान बचाई तथा जोखिम उठाते हुए उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया और साथ ही फंसे हुए नागरिकों को भी सुरक्षित बचा लिया। तत्पश्चात, आसन्न खतरे से भयभीत हुए बिना, सहायक कमांडेंट राज कमल बर्धन अपने साथी कांस्टेबल गायकवाड़ आशीष के साथ पास के भवन, जिस पर आतंकवादी निरंतर गोलीबारी कर रहे थे, में मोर्चा संभाला तथा आतंकवादियों को भागने से रोक दिया। यह बिना किसी संपार्श्विक नुकसान के एक सफल अभियान था, जो अभियान चलाने वाले बलों के बीच सामंजस्य एवं तालमेल का द्योतक है।

इस अभियान में, सर्व/श्री राज कमल बर्धन, सहायक कमांडेंट तथा गायकवाड़ आशीष भास्कर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.06.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 158-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. श्री अजय राठी,
सहायक कमांडेंट

02. अनिल सिंह राणा,
कांस्टेबल

03. एफ. कांता सिंघा,
कांस्टेबल

04. संजय कुमार राय,
कांस्टेबल

05. रूवंगशेल बुंगसोंग,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

डीआईजीपी (ऑप्स) उत्तरी श्रीनगर से सूचना प्राप्त होने पर, श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट, 144 बटालियन की कमान में अपर एस.जी., (एसओजी) श्रीनगर तथा जोनल क्यूएटी (25 कार्मिक) द्वारा दिनांक 05.12.2014 को 0900 बजे एसओजी (कार्गो) के क्षेत्र में एक अभियान की योजना बनाई गई और इसे आरंभ किया गया। श्री अजय राठी की कमान में जोनल क्यूएटी ने एसओजी की टीम के साथ अवन्ता भवन के सामने 90 फीट पर की सड़क एक रणनीतिक नाका डाल दिया।

लगभग 1345 बजे, जब सैन्य टुकड़ियां रास्ते पर आवाजाही की सतर्कतापूर्वक जांच कर रही थीं, तभी अचानक 02 सशस्त्र आतंकवादी आतंकवादी सामने आए और अपने स्वचालित हथियारों से सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्यटुकड़ियां इस आकस्मिक हुई गोलियों से बाल-बाल बचे क्योंकि ये उनके बिल्कुल नजदीक से गुजर गई। त्वरित कार्रवाई करते हुए, जोनल क्यूएटी तथा एसओजी ने जवाबी गोलीबारी की और आतंकवादियों को अवन्ता भवन के बगल वाली गली की ओर भागने के लिए मजबूर कर दिया। जोनल क्यूएटी कमांडर, श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट ने आतंकवादियों के इरादे को भांप लिया और अपनी टीम के साथ उनका पीछा किया। सुरक्षा बलों को अपने पीछे आता हुआ देख कर, आतंकवादियों ने गली के मोड़ पर मोर्चा संभाल लिया और आगे बढ़ रही सैन्यटुकड़ियों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिससे उनका आगे बढ़ना मुश्किल हो गया।

आतंकवादी सुरक्षा बलों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए भारी गोलीबारी कर रहे थे ताकि उन्हें उस क्षेत्र से भागने का समय मिल सके। तथापि, श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट तथा उनके शूरवीर उन्हें भागने देने के मूड में नहीं थे। इस दुर्लभ अवसर का फायदा उठाते हुए, श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट ने आगे बढ़ने और आतंकवादियों को चुनौती देने का निर्णय लिया। भारी गोलीबारी के बीच, वे सं. 060065153 सीटी/जीडी संजय कुमार राय तथा सं. 095150384 सीटी/जीडी आर. बुंगसोंग के साथ आगे बढ़े और एचसी/जीडी पी सेंगर, सीटी/जीडी ज्ञानेंद्र कुमार तथा सीटी/जीडी श्रवण कुमार को कवर फायर देने का निर्देश दिया। घातक खतरे को धता बताते हुए, श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट अपने दो शूरवीरों के साथ तेजी से आतंकवादियों की ओर बढ़े। उक्त तीनों को अपनी तरफ आते देख कर, आतंकवादियों ने गोलीबारी की तीव्रता बढ़ा दी और उनकी गतिविधि को रोकने के लिए ग्रेनेड भी फेंके। तथापि, कोई भी बाधा एवं खतरा उक्त तीनों के हौसले को डिगा नहीं पाया। कठिनाइयों को दरकिनारे करते हुए, वे तीनों आगे बढ़े और सटीक गोलीबारी से आतंकवादियों पर हमला बोल दिया और गली के अंत में एक आतंकवादी को ढेर कर दिया।

सुरक्षा बलों की साहसिक कार्रवाई ने आतंकवादियों के बुरे मंसूबों को नाकाम कर दिया क्योंकि उन्हें भागने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाया और इसलिए अन्य आतंकवादियों ने आसपास के भवनों में शरण ले ली। छिपे आतंकवादी की तलाश करने के लिए, टीम कमांडर ने दो दल बनाए और क्षेत्र लगभग 4 घंटों तक आसपास के क्षेत्र एवं घरों में उनकी तलाशी शुरू कर दी। जब सुरक्षा बल गवर्नमेंट बॉयज मॉडल स्कूल के नजदीक पहुंचे, तो छिपे हुए आतंकवादी ने सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसका सैन्यटुकड़ियों ने माकूल जवाब दिया।

आतंकवादी को भवन से बाहर निकालने के लिए सीटी/जीडी अनिल सिंह राणा, सीटी/जीडी एफ. कांता सिंह, सीटी/जीडी संजय कुमार राय तथा सीटी/जीडी आर. बुंगसोंग तथा एसओजी की सैन्यटुकड़ियों के साथ कमरे में दाखिल होने के लिए एक पार्टी बनाई गई और उसे भवन की तलाशी लेने का काम सौंपा गया। सर्वप्रथम, सैन्यटुकड़ियों ने स्कूल भवन, जहां आतंकवादी छिपा हुआ था, के समीपवर्ती क्षेत्र की पीछे की तरफ से घेराबंदी की ताकि आतंकवादी को बाहर निकलने से रोका जा सके। इसी बीच, आतंकवादी सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए एक समीपवर्ती गौशाला भवन में चले गए। आतंकवादी को घेरने के बाद, सैन्यटुकड़ियों ने आत्मसमर्पण करने की अपील की, इसी बीच, कवरिंग पार्टी की मदद से कमरे में दाखिल होने वाली पार्टी के 04 शूरवीरों ने गौशाला के समीप स्थित घर की दीवार के पीछे अपना मोर्चा संभाल लिया। सुरक्षा बलों की अपील पर का आतंकवादी ने उन पर भारी गोलीबारी से जवाब दिया। सक्रिय रूप से कार्रवाई करते हुए, सीटी/जीडी अनिल सिंह राणा, सीटी/जीडी एफ. कांता सिंह रेंगते हुए आतंकवादी की ओर गए तथा सीटी/जीडी संजय कुमार राय एवं सीटी/जीडी आर. बुंगसोंग के कवर फायर की सहायता से उनके निकट पहुंच गए। अपना धैर्य बनाए रखते हुए और अदम्य साहस प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने आतंकवादी की ओर एक ग्रेनेड फेंका और उसके बाद सटीक गोलीबारी की। उक्त दोनों के द्वारा बिल्कुल पास से प्रचंड एवं अप्रत्याशित हमले ने आतंकवादी को हतप्रभ कर दिया तथा इससे पहले कि वह इस स्थिति का कोई जवाब दे पाता, उसे ढेर कर दिया गया।

भीषण गोलीबारी में, लश्करे तैयबा के दो आतंकवादी नामत: कारी असरार (जिला कमांडर (लश्करे तैयबा) पाक मूल के, जिस पर 5 लाख रूपये का इनाम था) और शहिदुल इस्लाम मलिक (लश्करे तैयबा) को सैन्य टुकड़ियों द्वारा ढेर कर दिया गया तथा मारे गए आतंकवादियों से 03 हथगोलों के साथ 02 एके 47 राइफले-02, एके 47 की 05 मैगजीन भी बरामद की गईं।

इस अभियान में, सर्व/श्री अजय राठी, सहायक कमांडेंट, अनिल सिंह राणा, कांस्टेबल, एफ. कांता सिंघा, कांस्टेबल, संजय कुमार राय, कांस्टेबल तथा रूवंगशेल बुंगसोंग, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.12.2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 159-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. पुष्पेंद्र कुमार,
कमांडेंट

02. अप्पामोनी रॉय,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन बासागुडा के अंतर्गत पुवर्ती, भट्टीगुडा और कोंडापल्ली गांवों के सामान्य क्षेत्र में 100-150 सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) के साथ केंद्रीय समिति के सदस्य गणेश उईक की मौजूदगी के बारे में एक खुफिया सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, माओवादियों को पकड़ने के लिए श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट, 204 कोबरा द्वारा 03 दिन एवं 03 रात के लिए एक संयुक्त तलाशी एवं विध्वंस अभियान की योजना बनाई गई। उपर्युक्त क्षेत्र में माओवादियों के विरूद्ध अभियान हमेशा से ही चुनौतीपूर्ण रहा है, फिर भी श्री पुष्पेंद्र कुमार,

कमांडेंट, 204 कोबरा ने माओवादियों को उनके गढ़ में ही चुनौती देने का साहस किया। उन्होंने इस कठिन काम के लिए 204 कोबरा की 4 टीमों तथा बासागुडा के एक पुलिस घटक को मिलाकर अपना दस्ता बनाया। अभियान की भावी चुनौतियों को भांपते हुए, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने अभियान का नेतृत्व करने का निर्णय लिया।

सभी अवसरों एवं खतरों का आकलन करके, पार्टी कमांडर ने अपनी सैन्यटुकड़ियों के साथ आधार शिविर से दिनांक 15.11.2016 को लगभग 1930 बजे प्रस्थान किया। सैन्यटुकड़ियां गोपनीयता बनाए रखते हुए चांदनी रात में जंगल से होते हुए गांव के कच्चे रास्ते का उपयोग करके लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ते हुए पोलमपल्ली, कोंजर, टेकलगुडम तथा तमिलगुडा गांवों को पार कर गईं। दिनांक 17.11.2016 को लगभग 0600 बजे, जब सैन्यटुकड़ियां क्षेत्र की सावधानीपूर्वक तलाशी ले रही थीं, तो दल के स्काउट ने 40-50 सशस्त्र माओवादी कैडरों के एक गुप्त ठिकाने को देखा। उन्होंने तत्काल सैन्यटुकड़ियों को सतर्क कर दिया तथा अभियान के कमांडर श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट, जो टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे, को सूचना संप्रेषित कर दी। यह कमांडर के लिए एक महत्वपूर्ण समय था क्योंकि उन्होंने अंत में अपने लक्ष्य का पता लगा लिया था, जो उनके सामने था। उन्हें यह समझ में आ गया कि यही वह समय है जिसका वे लम्बे समय से इंतजार कर रहे थे, अर्थात माओवादियों को उनके ही गढ़ में हराना। एक भी पल गंवाए बिना पार्टी कमांडर श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने माओवादियों को दबोचने के लिए एक योजना तैयार की। उन्होंने अपनी सैन्यटुकड़ियों को 03 छोटे दलों में विभाजित कर दिया तथा पार्टी सं. 1 एवं 3 के पार्टी कमांडर को बचकर क्रमश: दायीं एवं बायीं ओर से भागने के मार्ग को अवरूद्ध करने का निर्देश दिया, जबकि माओवादियों का सामने से मुकाबला करने के लिए पार्टी सं. 2 को अपने पास रख लिया।

योजना के अनुसार, पार्टी सं. 1 एवं 3 गोपनीयता बरकरार रखते हुए सावधानीपूर्वक अपने संबंधित लक्ष्यों की ओर गुप्त रूप से आगे बढ़ी। इसी बीच, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने गोपनीयता बरकरार रखते हुए एक उपयुक्त रणनीतिक पोजिशन लेने के लिए माओवादियों के यथासंभव नजदीक पहुंचने का निर्णय लिया। यह एक साहसिक कार्य था, क्योंकि एक भी गलती भारी हथियारों से लैस माओवादियों का ध्यान आकर्षित कर सकती थी, जो आगे बढ़ रही सैन्यटुकड़ियों के लिए घातक हो सकता थी। तथापि, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने एक कमांडर के स्वाभाविक धैर्य एवं साहस का प्रदर्शन करते हुए अपनी सैन्यटुकड़ियों का सामने से नेतृत्व किया और वे अपने साथी सीटी/जीडी अप्पामोनी रॉय के साथ रेंगते हुए माओवादियों के मोर्चे की ओर बढ़े। अपने धैर्य एवं जमीन पर मजबूत पकड़ को बरकरार रखते हुए, दोनों लोग माओवादियों के बहुत नजदीक पहुंच गए। साथी सैन्यटुकड़ी भी अपने कमांडर के पीछे आ रही थी और उनके पीछे मोर्चा संभाल लिया। अपनी सैन्यटुकड़ियों की मोर्चाबंदी सुनिश्चित करने के बाद, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने माओवादियों को उनके समक्ष आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी। सुरक्षा बलों को अपने इतना करीब पाकर माओवादी एक बार हतप्रभ हो गए। तथापि, उन्होंने अगले ही पल स्थिति का सामना किया तथा आत्मसमर्पण के प्रस्ताव का मजाक उड़ाते हुए श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट की टीम की ओर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। गोलियों की बौछार अपने लक्ष्य को भेदने से बाल-बाल चूक गई तथा माओवादियों की गोलीबारी की पहली तपिश से सैन्यटुकड़ियां चमत्कारिक ढंग से बच गईं।

त्वरित कार्रवाई करते हुए, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने माओवादियों की गोलीबारी का जवाब दिया। शीघ्र ही उनके साथी कांस्टेबल अप्पामोनी रॉय भी अन्य सैन्यटुकड़ियों के साथ अपने कमांडर से जा मिले और माओवादियों के विरूद्ध जवाबी हमले को बढ़ाया। माओवादियों ने अति सुरक्षित स्थान के पीछे रणनीतिक स्थान पर मोर्चा संभल रखा था, जिसके कारण सुरक्षा बलों की गोलीबारी प्रभावकारी साबित नहीं हो रही थी। दूसरी ओर, माओवादी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे तथा सुरक्षा बलों को मारने और उनके हथियार छीनने के लिए उन्हें घेरने की कोशिश कर रहे थे। यह स्थिति सुरक्षा बलों के विरूद्ध जा रही थी। माओवादियों के विरूद्ध साहसिक एवं निर्भीक जवाबी कार्रवाई समय की मांग थी। मौके पर खरा उतरते हुए, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट ने अपना स्थान बदलने का निर्णय लिया, क्योंकि माओवादियों के अति सुरक्षित स्थान पर होने के कारण इस स्थान से गोलीबारी करना व्यर्थ जा रहा था। उन्होंने अपने स्थान से आगे एक जगह का पता लगाया जहां से वे माओवादियों पर प्रभावकारी ढंग से गोलीबारी कर सकते थे। लेकिन, यह कार्य तूफान में नाव चलाने जैसा होने वाला था। गोलीबारी की बौछार के बीच आगे बढ़ना एक घातक कदम था, फिर भी कमांडर ने मौत से डरने के बजाय गौरव एवं वीरता का चुनाव किया। उन्होंने अपनी निजी सुरक्षा को पूर्णत: दरकिनार करते हुए सामने से नेतृत्व किया तथा माओवादियों के नजदीक मारक स्थिति में पहुंचने के लिए प्रतिकूल परिस्थिति में अविश्वनीय रफ्तार से रेंगते हुए गए। गोलीबारी के बीच निर्भीक रूप से आगे बढ़ते हुए कमांडर ने स्वयं मोर्चा संभाल लिया तथा अपनी सटीक गोलीबारी से माओवादियों को निशाना बनाना शुरू कर दिया। इसी बीच, उनके साथी पीछे से उनके साथ शामिल हो गए तथा जवाबी हमले की तीव्रता को और भी बढ़ा दिया।

श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट के नेतृत्व में प्रचंड एवं साहसिक जवाबी कार्रवाई ने माओवादियों को स्तब्ध कर दिया। इससे पहले कि माओवादी इस झटके से उबर पाते, उन दोनों ने एक माओवादी को अपनी प्रभावकारी गोलीबारी से ढेर कर दिया। कमांडर एवं उनके साथी की साहसिक कार्रवाई ने उनके सहकर्मी सैन्यटुकड़ियों को उत्प्रेरित किया और उन्होंने भी माओवादियों पर ताबड़तोड़ हमला किया। इसी बीच, पार्टी सं. 1 और 3 भी घटना स्थल पर पहुंच गई और पार्टी सं. 2 के साथ मिलकर माओवादियों को घेरना शुरू कर दिया। अपने आपको घिरा हुआ तथा सुरक्षा बलों की प्रभावकारी गोलीबारी के हमले के दबाव में पाकर, माओवादियों ने कोई अन्य विकल्प न होने पर घने पेड़-पौधे तथा ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति का फायदा उठाते हुए भागना शुरू कर दिया।

भीषण गोलीबारी लगभग 30 मिनट तक जारी रही। मुठभेड़ के पश्चात तलाशी के दौरान, सैन्यटुकड़ियों ने सीपीआई(माओवादी) अर्थात मोचाकामासा, जनमिलिशिया सदस्य 01 शव के साथ एसबीएमएल राइफल-02, पाइप बम-02, डेटोनेटर-04, खाली केस-13 (एके-47-09, इंसास-04), बेयोनेट (चाकू)-01, पिट्ठू बैग-04, कम्बल-10, धनुष एवं बाण, मोबाइल फोन, नक्सल साहित्य/बैनर, 1910/- रुपये की नकद धनराशि तथा दैनिक उपयोग की अन्य विविध सामग्रियां भी बरामद की गईं। इस क्षेत्र में खून के बहुत से धब्बे भी देखे गए जो इस बात की ओर संकेत करते थे कि अन्य माओवादियों को भी गोलियां लगी हैं, लेकिन वे सभी भागने में सफल हो गए हैं। कथित तौर पर, दो घायल माओवादियों ने बाद में पामेड एवं धर्मवरम गांव में अपने जख्मों की वजह से दम तोड़ दिया।

आधार शिविर की ओर लौटते समय नक्सलियों ने सैन्यटुकड़ियों को मारने एवं माओवादी का शव को छीनने के लिए 3 भिन्न-भिन्न स्थानों पर हमला किया, लेकिन सैन्यटुकड़ियों की ठोस जवाबी कार्रवाई के कारण उन्हें अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। जब सैन्यटुकड़ियां गांव पोलमपल्ली के सामान्य क्षेत्र में थीं, तो एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे सीटी/जीडी अप्पामोनी रॉय ने 02 आईईडी देखी, जिसे घटनास्थल पर ही नष्ट कर दिया गया। अच्छी सामरिक निगरानी, सतर्कता एवं सूझबूझ के कारण, सीटी/जीडी अप्पामोनी रॉय आईईडी का पता लगा सके और इस प्रकार से न केवल अप्रिय घटना घटित होने से बचा लिया, बल्कि अपने सहकर्मियों के बहुमूल्य जीवन को भी बचा लिया। मार्ग में सभी विषम परिस्थितियों पर काबू पाते हुए अभियान दल माओवादी के शव एवं बरामद सामग्रियों के साथ दिनांक 17.11.2016 को सकुशल बासागोडा आधार शिविर पहुंच गया।

अभियान के दौरान, श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट, 204 कोबरा ने अपने कार्मिकों की जिंदगी बचाने एवं कार्य को पूरा करने के लिए निश्चित मौत के सामने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए असाधारण नेतृत्व क्षमता, अदम्य साहस एवं मनोबल का प्रदर्शन किया। माओवादियों के प्रबल आक्रमण से भयभीत हुए बिना अपने स्थान पर डटकर उन्होंने सामने से अपनी सैन्यटुकड़ियों का नेतृत्व किया और निरंतर गोलीबारी करते रहे जिससे माओवादियों के पास भागने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा। उन्होंने उत्कृष्ट श्रेणी के शौर्य तथा नेतृत्व के उच्च गुणों का अमिट उदाहरण प्रस्तुत किया, जो बल की उत्कृष्ट परंपरा के अनुरूप है। सीटी/जीडी अप्पामोनी रॉय ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया तथा कठिन समय में अपने कमांडर का साथ दिया। माओवादियों को निष्क्रिय करने तथा उन्हें क्षति पहुंचाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। इसके अतिरिक्त, वापसी के दौरान, उन्होंने विस्फोट से पहले दो आईईडी का पता लगाया तथा अपने साथियों की बहुमूल्य जान बचाई।

इस अभियान में, सर्व/श्री पुष्पेंद्र कुमार, कमांडेंट और अप्पामोनी रॉय, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.11.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 160-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अनिल कुमार चौरसिया,
सहायक कमांडेंट

02. कौशिक मंडल,
कांस्टेबल

03. इंगले लखन प्रकाश,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री अमरनाथजी यात्रा के शुरू होने से कुछ समय पूर्व की अवधि के दौरान दक्षिणी कश्मीर में सुरक्षा की स्थिति ने दिनांक 03 जून को लोवर मुंडा, काजीगुंड में सेना के काफिले पर हमले, दिनांक 16 जून को ठाजीवाड़ा में एसएचओ, अचाबल के नेतृत्व वाले पुलिस दल पर घात लगाकर किए कायरतापूर्ण हमले, सरनाल में न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) अत्तर के आवासीय सुरक्षाकर्मियों से हथियार छीनने और कई एटीएम को लूटने सहित अनेक घटनाओं के साथ विकृत मोड़ ले लिया। इन कायरतापूर्ण कृत्यों का मुख्य अपराधी खूंखार लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) कमांडर बशीर लश्कर था। कुछ विदेशी आतंकवादियों द्वारा उसकी सहायता भी की जा रही थी जिसने उसे दुर्जेय और खतरनाक बना दिया। सर्वप्रथम, उसे, दक्षिण कश्मीर के एलईटी कमांडर अबू दुजाना द्वारा श्री अमरनाथजी की यात्रा करने वाले यात्रियों पर हमला करने का कार्य सौंपा गया था। इसलिए उसे समाप्त करना सुरक्षा बलों के लिए अत्यधिक आवश्यक और यात्रा की सुरक्षा के लिए अधिक महत्वपूर्ण था।

दिनांक 01 जुलाई, 2017 को लगभग 0300 बजे श्री मोहसेन शाहेदी, उप-महानिरीक्षक (अभियान) सीआरपीएफ, अनंतनाग को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी), अनंतनाग से ब्रिंटी, दायलगाम, अनंतनाग में संभावित विदेशी आतंकवादी (एफटी) के साथ-साथ बशीर लश्कर की मौजूदगी के संबंध में आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। एसएसपी ने इस अभियान में रेंज क्यूएटी और सीआई (अभियान) प्लाटून की भागीदारी के लिए अनुरोध किया। डीआईजी, सीआरपीएफ, अनंतनाग ने 40वीं बटालियन की बी कम्पनी के कम्पनी कमांडर, श्री अनिल कुमार चौरसिया, जो यंग प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे, को तत्काल इसकी जानकारी प्रदान की और उन्हें तैयार रहने का निदेश दिया और रेंज क्यूएटी को भी सतर्क कर दिया। इसके साथ-साथ, उन्होंने कानून एवं व्यवस्था संबंधी कम्पनी और रिजर्व को भी आगे आने वाली संभावित मुश्किल स्थिति से निपटने के लिए तैनात कर दिया। यंग प्लाटून को बिना समय गवाएं एसओजी, जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ भेज दिया गया और 40वीं बटालियन के कमांडेंट, जिन्हें नुंवान यात्रा बेस कैंप में कैंप कमांडर के रूप में रखा गया था, की अनुपस्थिति में श्री मोहसेन शाहेदी स्वयं अत्यधिक संवेदनशील आसन्न अभियान, जिसमें प्रभावशाली नेतृत्व की आवश्यकता थी, के बारे में पूर्ण रूप से जानते हुए रेंज क्यूएटी के साथ आगे बढ़े। 96वीं बटालियन के कमांडेंट को मुठभेड़ स्थल पर और उसके आसपास कानून एवं व्यवस्था की स्थिति से निपटने वाले सैन्य-दलों के लिए कानून एवं व्यवस्था समन्वयक के रूप में नामोद्दिष्ट किया गया।

उस स्थान पर पहुंचने पर तत्काल श्री मोहसेन शाहेदी, डीआईजी ने जमीनी स्थिति का शीघ्र जायजा लिया और ब्रीफिंग के पश्चात 40वीं बटालियन की यंग प्लाटून और रेंज क्यूएटी को एसओजी, जम्मू कश्मीर पुलिस और 19 आरआर के साथ मजबूत भीतरी घेराबंदी करने में लगा दिया। लक्षित घर के आसपास का क्षेत्र दुर्गम था क्योंकि उसके एक ओर तेज बहने वाला झरना था और शेष हिस्सा ऐसा एक खुला क्षेत्र था जो कहीं-कहीं पर पेड़ों से आच्छादित था और कम घना होने के कारण छिपने के लिए बहुत कम आड़ उपलब्ध करा रहा था। इसलिए सैन्य-दलों ने एसओजी के साथ सामने और बायीं ओर के उबड़-खाबड़ क्षेत्र में लक्षित घर से लगभग 40 मीटर दूर पोजीशन ले ली। आर आर को लक्षित घर के दायीं ओर और इसके पीछे तैनात किया गया था। श्री मोहसेन शाहेदी ने रेंज क्यूएटी के कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश और श्री अनिल चौरसिया ने कांस्टेबल कौशिक मंडल के साथ लक्षित घर के ठीक सामने की ओर पोजीशन ले ली।

शीघ्र ही यह पता चला की आतंकवादियों ने किसी बशीर अहमद गनी के घर में लगभग 17 नागरिकों को बंधक बना रखा है। श्री मोहसेन शाहेदी, डीआईजी ने अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को गोली नहीं चलाने और बंधकों की आड़ में आतंकवादियों के बच निकलने की कोशिश के मामले में अत्यधिक सतर्क रहने का निर्देश दिया। यह अत्यधिक विकट स्थिति थी। सीआरपीएफ, आरआर और जम्मू-कश्मीर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा एक रणनीति तैयार की गई, जिसमें गांव के मुखिया और स्थानीय मस्जिदों के इमामों की सेवाएं ली गईं और आतंकवादियों से बंधकों को छोड़ने के लिए कहा गया। प्रारंभ में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई जिससे तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। काफी अनुनय-विनय और तनावपूर्ण क्षणों के पश्चात्, बंधक महिलाओं में से एक महिला लक्षित घर की छत पर चढ़ गई और संकेत दिया। श्री मोहसेन शाहेदी कुछ हलचल देखकर शीघ्र भीतरी घेराबंदी में अपनी मूल पोजीशन पर आ गए और सैन्य- दलों को सतर्क कर दिया। शीघ्र ही बंधक बनाए गए लोगों ने बाहर आना शुरू कर दिया और उनको शीघ्र सुरक्षित क्षेत्र में जाने का संकेत दे दिया गया। बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई के तुरंत बाद, आतंकवादियों ने सैन्य-दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। श्री अनिल चौरसिया, कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश और कांस्टेबल कौशिक मंडल के साथ श्री मोहसेन शाहेदी, जिन्होंने लक्षित क्षेत्र के सामने की ओर पोजीशन ले रखी थी, ने गोलियों की बौछारों का सामना किया जो उनके पास से गुजर गईं। श्री मोहसेन शाहेदी ने ठीक समय पर आड़ ले ली और तत्काल 3-4 गोलियां चलाते हुए अपनी पोजीशन से जवाबी कार्रवाई की तथा अपने सामने के दल को प्रभावशाली गोलीबारी से जवाब देने को कहा। प्रारंभ में वे थोड़े हिचकिचाए, परंतु अपने कमांडर को खतरे के समक्ष गोलीबारी करते हुए देखकर उन्होंने भी जवाबी कार्रवाई की। सीधी गोलीबारी से स्वयं को गंभीर खतरा होने के बावजूद श्री मोहसेन शाहेदी, श्री अनिल चौरसिया, इंगले लखन प्रकाश और कौशिक मंडल की रणनीतिक पोजीशन और समय पर जवाबी कार्रवाई ने आतंकवादियों को घर में पीछे हटने को विवश कर दिया। शायद उन में से एक आतंकवादी इस जवाबी कार्रवाई में जख्मी हो गया था क्योंकि उसे भीतर लड़खड़ा कर चलते हुए देखा गया।

आरआर और जम्मू-कश्मीर पुलिस के कमांडरों के साथ श्री मोहसेन शाहेदी ने बिना समय गंवाए शीघ्र ही एक योजना तैयार की। तदनुसार, यह निर्णय लिया गया कि आरआर दीवार को भेदने के लिए यूबीजीएल फायर करेगी और सीआरपीएफ दो तरफ से कवर फायर देगी। इस समय रेंज क्यूएटी के कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश के साथ श्री मोहसेन शाहेदी और यंग पिट के कांस्टेबल कौशिक मंडल के साथ श्री अनिल चौरसिया, सहायक कमांडेंट स्वयं थोड़ा और आगे लक्षित घर के निकट आ गए। यह एक कठिन पोजीशन थी क्योंकि वहां छोटे पेड़ों, जहां कोई व्यक्ति केवल अगल-बगल ही पोजीशन ले सकता था, के अलावा उचित कवर नहीं था। तथापि, उनके पास जोखिम उठाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था, सभी तरफ से कानून एवं व्यवस्था की समस्या के बढ़ने और रात में अभियान को जारी रखने में निहित प्रत्यक्ष जोखिम के मद्देनजर अभियान को शीघ्र समाप्त करना अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इस अवधि के दौरान पुनः भारी गोलाबारी शुरू हो गई जिसका श्री मोसेने शाहेदी, इंगले लखन प्रकाश, श्री अनिल चौरसिया और कौशिक मंडल ने सामने की ओर से प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया जबकि गोलियां उनके पास से निकल गई और कुछ गोलियां आड़ के रूप में प्रयोग किए जा रहे पेड़ के तनों में जाकर लगी। अपने व्यक्तिगत जीवन के प्रति गंभीर और निरंतर खतरे के बावजूद, वे आतंकवादियों पर एकसाथ गोलीबारी करते रहे और उन्हें ऐसी कोई रणनीतिक पोजीशन नहीं लेने दी, जहां से वे सैन्य दलों को भारी नुकसान पहुंचा सकते थे।

दीवार को सफलतापूर्वक भेदने के पश्चात, आईईडी लगाई गई और लक्षित घर में विस्फोट किया गया। तथापि, वह भवन पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ। इसलिए आरआर/एसओजी के सहयोग से रूम इंटरवेशन/तलाशी के लिए संयुक्त हमला दल तैयार किए गए। श्री मोहसेन शाहेदी, डीआईजी ने श्री अनिल चौरसिया, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश और कांस्टेबल कौशिक मंडल को योजना की रूपरेखा और उन आतंकवादियों, जो अभी भी जीवित हो सकते थे, के संभावित प्रतिशोध के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। ऐसा घटित हुआ कि तलाशी प्रक्रिया के दौरान एक आतंकवादी जो अभी भी जिन्दा था, ने सैन्य-दलों पर गोलीबारी की, परंतु उसे सैन्य दल द्वारा तुरंत मार गिराया गया।

अंततः, मलबे की गहन तलाशी के पश्चात, दो एके-47 राइफलों और 02 मैगजीनों के साथ दो आतंकवादियों के शव बरामद किए गए। आतंकवादियों की पहचान अनंतनाग के बशीर अहमद वानी उर्फ उकाशा और बशीर लश्कर (एलईटी) जिला कमांडर (श्रेणी-ए++) और अबू माज, एक विदेशी आतंकवादी (पाकिस्तानी) के रूप में की गई। लश्कर के सिर पर 10 लाख रु. का इनाम था और वह दक्षिण कश्मीर में अत्यधिक वांछित आतंकवादी था।

यह एक भली प्रकार से समन्वित, व्यावसायिक और बहादुरीपूर्ण ढंग से निष्पादित सफल अभियान था जिसे सैन्य-दलों के हताहत और गोली से जख्मी हुए बगैर समय पर पूरा किया गया। इस अभियान का श्रेय श्री मोहसेन शाहेदी, डीआईजी (अभियान) सीआरपीएफ अनंतनाग, श्री अनिल चौरसिया, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश और कांस्टेबल कौशिक मंडल को दिया जाता है। श्री मोहसेन शाहेदी ने बंधक बनाए गए 17 नागरिकों को रिहा कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने इस अभियान में सामने से नेतृत्व किया और अपने व्यक्तिगत जीवन के प्रति गंभीर और निरंतर खतरे, जिसमें उन्होंने कई बार नजदीक से आतंकवादियों की गोलियों की बौछार का सामना किया, के बावजूद वे निडरतापूर्वक डटे रहे और आतंकवादियों को लक्षित घर से बच निकलने अथवा सैन्य-दलों को हताहत करने का कोई अवसर दिए बिना जोरदार ढंग से जवाबी कार्रवाई की। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपनी एके-47 राइफल से प्रभावशाली ढंग से 23 राउंड गोलीबारी की। श्री अनिल कुमार चौरसिया, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल इंगले लखन प्रकाश और कांस्टेबल कौशिक मंडल ने श्री मोहसेन शाहेदी, डीआईजी के साथ कार्रवाई में आगे बने रहकर एक दुर्जेय दल का गठन किया और किसी उचित कवर के बिना गंभीर रूप से आतंकवादियों की गोलीबारी के सामने होने के बावजूद आतंकवादियों का मुकाबला करने के लिए प्रभावशाली ढंग से जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने उस घर की सफलतापूर्वक तलाशी भी ली और दो अत्यधिक वांछित आतंकवादियों को मार गिराया। इस प्रक्रिया में, उन्होंने अपनी एके-47 राइफल से दक्षतापूर्वक क्रमशः 52, 14 और 31 राउंड गोलीबारी की।

इस अभियान में, सर्व/श्री अनिल कुमार चौरसिया, सहायक कमांडेंट, कौशिक मंडल, कांस्टेबल और इंगले लखन प्रकाश, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01/07/2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 161-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जतिन्दर कुमार,
उप-निरीक्षक

02. सतविन्दर पाल भुम्बला,
कांस्टेबल

03. अभय कांत,
कांस्टेबल

04. पवन कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16 जून, 2017 को लगभग 0730 बजे विशेष अभियान दल (एसओजी), जम्मू एवं कश्मीर पुलिस (जेकेपी), अनंतनाग से इस आशय की एक विश्वसनीय आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त होने पर कि 02-03 आतंकवादियों ने पुलिस स्टेशन बिजबेहरा, जिला अनंतनाग (जे एंड के) के अंतर्गत गांव-अरवानी के मलिक मोहल्ला में शरण ले रखी है, हसनपोरा में स्थित 90वीं बटालियन, सीआरपीएफ की जी कम्पनी का त्वरित कार्रवाई दल (क्यूएटी) और संगम में स्थित 90वीं बटालियन, सीआरपीएफ की सी कम्पनी की क्यूएटी तत्काल उस स्थान की ओर निकल पड़ी। 1 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) और एसओजी, अनंतनाग के सैन्य दल भी उस स्थान पर पहुंच गए और मलिक मोहल्ला में एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू करने का निर्णय लिया गया। आरवानी एक अत्यधिक जनसंख्या वाला गांव है और मलिक मोहल्ला इस गांव के भीतर एक छोटी सी कॉलोनी है जिसमें लगभग 50 आवासीय इकाइयां बनी हुई हैं। यह गांव कुख्यात है और गांव के कुछ युवकों के आतंकवादियों के साथ मिले होने के कारण यहां के लोग आतंकवादियों की सहायता करते हैं और सुरक्षा बलों द्वारा शुरू किए गए किसी भी अभियान का कड़ा विरोध किया जाता है।

निर्धारित स्थान पर पहुंचने के बाद यह लगभग निश्चित हो गया कि आतंकवादी मलिक मोहल्ला के निवासी किसी मोहम्मद शफी मलिक के घर में छिपे हुए हैं। तदनुसार, उप-निरीक्षक जतिन्दर कुमार की कमान में 90वीं बटालियन की क्यूएटी ने लक्षित घर के बायीं ओर पोजीशन ले ली और आरआर के सैन्य दलों ने लक्षित घर; एक मंजिला भवन के दायीं ओर पोजीशन ले ली। सीआरपीएफ के सैन्य दलों द्वारा अपनी पोजीशन ले लेने पर, एसओजी के सैन्य दल मोहम्मद शफी के घर पहुंच गए जिसने अपने घर में तीन आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि की। घर के सदस्यों को सुरक्षा के लिए तुरंत बाहर ले जाया गया। तत्पश्चात, लोक संबोधन प्रणाली के माध्यम से आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए एक घोषणा की गई। इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। चूंकि, अब लक्षित घर की निश्चित रूप से पहचान हो गई थी, अतः अपने साथी कांस्टेबल अभय कांत के साथ उप-निरीक्षक जतिन्दर कुमार ने स्वयं बायीं ओर लक्षित मकान से लगभग 20 मीटर दूर दो मंजिला मकान में रणनीतिक ढंग से पोजीशन ले ली। इस पोजीशन से, सामने के प्रवेश द्वार के साथ-साथ बायीं ओर की एक खिड़की साफ-साफ दिखाई देती थी और इनमें से किसी भी स्थान से आतंकवादियों द्वारा बच निकलने के प्रयास को विफल किया जा सकता था। जैसी कि प्रवृत्ति रही है, पड़ोसी गांवों से बड़ी भीड़ मुठभेड़ स्थल के आसपास इकट्ठी हो गई और आतंकवादियों को बच निकलने में मदद करने के लिए, उन्होंने वहां पर तैनात सैन्य दलों पर भारी पत्थरबाजी शुरू कर दी। इसी बीच, किसी कानून और व्यवस्था संबंधी मामले से निपटने के लिए सीआरपीएफ का अतिरिक्त सैन्य दल भी वहां पहुंच गया। वेसु नदी लक्षित घर के बिल्कुल पीछे बहती थी, जो आतंकवादियों को बच निकलने का एक अच्छा मार्ग प्रदान करती थी, बशर्ते कि वे लक्षित घर से बाहर निकल सकें और सैन्य बलों को चकमा दे सकें। आतंकवादियों के इस प्रकार के प्रयासों को विफल करने के लिए, क्यूएटी के कुछ सदस्यों के साथ कांस्टेबल (बगलर) सतविन्दर पाल भुम्बला ने लक्षित घर के दायीं ओर एक सुरक्षित स्थान पर पोजीशन ले ली ताकि लक्षित घर के दायीं ओर से भी किसी प्रकार के निकास, जो नदी की ओर भी जाता था, को अच्छी प्रकार से अवरूद्ध किया जा सके। कुछ जवानों के साथ एक और कांस्टेबल पवन कुमार ने बायें कोने में पोजीशन ले ली जहां से वे लक्षित घर के पीछे की ओर निगरानी कर सकते थे। इस प्रकार बच निकलने के सभी मार्गों को बंद कर दिया गया। ये सभी कार्मिक हमला करने की दूरी के भीतर थे और इसलिए अत्यधिक असुरक्षित सुभेद्य थे।

लगभग 0815 बजे, आतंकवादियों ने अपने छिपने के स्थान के आसपास सुरक्षा बलों की गतिविधि को भांप कर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसका सुरक्षा बलों द्वारा प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया गया। दोनों ओर से रूक-रूक कर गोलाबारी होती रही। लक्षित घर के नजदीक पहुंचने के किसी प्रकार के प्रयास को भारी गोलाबारी से बाधित किया जाता था। लगभग 1400 बजे, मोलोटोव

कोकटेल्स और फ्लेम थ्रोवर की मदद से लक्षित घर में आग लगा दी गई। इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और आतंकवादी पोजीशन बदलते हुए लगातार गोलीबारी करते रहे। यह महसूस करते हुए कि यह चाल काम नहीं कर रही है, सुरक्षा बलों ने लक्षित घर को उड़ाने के लिए रणनीतिक ढंग से एक आईईडी लगा दी, जिसने लक्षित घर के बायीं ओर के हिस्से को क्षतिग्रस्त कर दिया। उसी समय एक आतंकवादी, जो लक्षित घर के बाथरूम में छिपा हुआ था, ने खिड़की से बाहर कूदकर दायीं ओर से बच निकलने का प्रयास किया। कांस्टेबल (बगलर) सतविन्दर पाल, जो विहंगम दृष्टि बनाए हुए थे और जिन्होंने स्वयं रणनीतिक ढंग से पोजीशन ले रखी थी, ने बच कर भाग रहे आतंकवादी पर गोलीबारी शुरू कर दी। उसने सैन्य दलों पर दबाव बनाने के लिए भारी गोलाबारी के साथ जवाबी कार्रवाई की। तथापि, सतविन्दर पाल ने अपना मोर्चा संभाले रखा और दृढ़तापूर्वक जवाबी कार्रवाई की। उप-निरीक्षक जतिन्दर कुमार, कांस्टेबल अभय कांत और कांस्टेबल पवन कुमार ने भी साथ-साथ गोलीबारी करके उनकी सहायता की। इसने आतंकवादी को जल्दी से पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। लगभग 1600 बजे लक्षित घर के दायीं ओर पुनः एक आईईडी लगाई गई क्योंकि उस भवन का वह हिस्सा अभी भी अक्षुण्ण था। विस्फोट की गई आईईडी ने दायीं ओर के हिस्से को भी आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया। तथापि, लक्षित घर से लगातार गोलीबारी होती रही। चूंकि, तेजी से अंधेरा हो रहा था, इसलिए एक और आईईडी की सहायता से लक्षित घर को गिराने का संयुक्त रूप से निर्णय लिया गया। लगभग 1845 बजे, लक्षित घर के पीछे के हिस्से, जो आंशिक रूप से गिर चुका था, से प्रवेश करके एक और आईईडी लगाई गई। यह आईईडी उस घर को गिराने के लिए काफी शक्तिशाली थी। चूंकि, विरोधियों की ओर से और गोलीबारी नहीं हो रही थी, लगभग 2000 बजे सीआरपीएफ, एसओजी और आरआर के संयुक्त दल, जिसमें उप-निरीक्षक जतिन्दर कुमार, कांस्टेबल अभय कांत, सतविन्दर पाल और पवन कुमार शामिल थे, उस घर की तलाशी शुरू कर दी। चूंकि, सभी ओर मलबे का ढेर था, अतः मलबे को हटाने के लिए जेसीबी लगाई गई। लगभग 0030 बजे मलबे से मारे गए एक आतंकवादी का शव बरामद किया गया। दिनांक 17 जून को लगभग 0230 बजे एक आतंकवादी जो शायद विस्फोट से बच गया था और मलबे में फंसा हुआ था, ने अचानक अपने हथियार को उठा लिया और तलाशी दल पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस अप्रत्याशित प्रतिक्रिया से बिना डरे और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, सैन्य दल ने अत्यधिक सजगता का प्रदर्शन करते हुए जवाबी कार्रवाई की और आतंकवादी को मार गिराया। इस तलाशी में, 02 एके-47 राइफलों और 03 मैगजीनों के साथ तीन मृत आतंकवादियों के शव बरामद हुए। यह अभियान लगभग 24 घंटे तक चला। मृत आतंकवादियों की पहचान कुलगाम के निवासी खूंखार एलईटी जिला कमांडर जुनैद अहमद माटू (श्रेणी ए++) पुत्र मंजूर अहमद, सोफिया के निवासी नसीर अहमद शेख (श्रेणी ए+) पुत्र हसन और पुलवामा के निवासी आदिल मुश्ताक मीर (श्रेणी सी) पुत्र मुश्ताक अहमद मीर के रूप में की गई।

इस अभियान में, सर्व/श्री जतिन्दर कुमार, उप-निरीक्षक, सतविन्दर पाल भुम्बला, कांस्टेबल अभय कांत, कांस्टेबल और पवन कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16/06/2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 162-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोंपरांत) सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक	
सर्व/श्री	
01. नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
02. राम कुमार, उप-निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
03. मोहम्मद यासीन ताली, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक) (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 07 दिसम्बर, 2016 को कमांडेंट-90 बटालियन को पुलिस स्टेशन बिजबेहरा, जिला अनंतनाग (जम्मू एवं कश्मीर) के अंतर्गत अरवानी गांव में आतंकवादियों की उपस्थिति के संबंध में आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। इस सूचना की आगे पुलिस

अधीक्षक ऑप्स अनंतनाग से पुष्टि कराई गई और उन्होंने भी इसकी पुष्टि की। अरवानी गांव और उसके आसपास के क्षेत्र अत्यधिक कट्टरवादी हैं जहां आतंकवादियों की नियमित गतिविधि और स्थानीय लोगों के आतंकवादियों के प्रति झुकाव के कारण सैन्य दलों की आवाजाही अत्यधिक मुश्किल है।

सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, कमांडेंट-90 बटालियन, सीआरपीएफ ने उपर्युक्त गांव में एक घेराबंदी एवं तलाशी अभियान (सीएएसओ) की योजना बनाई। कमांडेंट-90 बटालियन ने अपने क्यूएटी कमांडर, एफ/सं.830763144 उप निरीक्षक राम कुमार को तत्काल लक्षित गांव की ओर यूनिट क्यूएटी ले जाने और उस क्षेत्र की घेराबंदी करने का कार्य सौंपा। उप निरीक्षक राम कुमार एक भी क्षण गवाएं बिना 90 बटालियन की यूनिट क्यूएटी के साथ लक्षित गांव की ओर निकल पड़े और एसओजी तथा पुलिस स्टेशन बिजबेहरा, जिला अनंतनाग (जम्मू एवं कश्मीर) के अंतर्गत अरवानी गांव में स्थानीय पुलिस के साथ संदिग्ध घर के आसपास भीतरी घेराबंदी कर दी। बाद में, श्रीनगर सेक्टर सीआरपीएफ की वैली क्यूएटी भी इस अभियान में शामिल हो गयी। सीआरपीएफ सैन्य दलों द्वारा क्षेत्र को सुरक्षित किए जाने के पश्चात् सेना का घटक दल इस अभियान में शामिल हो गया। सुरक्षा बलों द्वारा घेरे जाने पर, आतंकवादियों ने अपनी उपस्थिति को छिपाने का भरसक प्रयास किया और सुरक्षा बलों द्वारा की गई शुरूआती छानबीन संबंधी गोलीबारी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की। चूंकि, अंधेरा हो गया था, इसलिए अभियान को सुबह तक रोकने का निर्णय लिया गया। सीआरपीएफ, आरआर एवं सिविल पुलिस द्वारा सारी रात कड़ी घेराबंदी भी की गई।

अगले दिन अर्थात् दिनांक 08 दिसम्बर, 2016 को, लगभग 0830 बजे उग्रवादियों ने अंततः चुप्पी तोड़ी और सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी करते हुए घटना स्थल से बच निकलने का प्रयास किया। सैन्य दलों ने भी आतंकवादियों की गोलीबारी का जवाब दिया और इसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों तथा सुरक्षा बलों के बीच एक भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। उप-निरीक्षक राम कुमार ने स्वयं लक्षित घर के सामने एक मकान में पोजीशन ले रखी थी और वे आतंकवादियों की गोलीबारी की बिल्कुल सीध में थे। गोलियों की बौछार से बिना डरे, उप-निरीक्षक राम कुमार ने उग्र रूप से जवाबी गोलीबारी की और अपनी पोजीशन से नहीं हिले। उन्होंने निडरता, धैर्य और एक सैनिक के दृढ़ निश्चय और ठोस युक्ति का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादियों को उलझाए रखा और उनको घेरकर रखने में सफल रहे। उन्होंने आतंकवादियों को घटना स्थल से बचकर भागने नहीं दिया। इसी बीच, नजदीकी गांवों से हजारों की संख्या में आम लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने सभी ओर से पत्थर फेंकना तथा भारत-विरोधी नारे लगाना शुरू कर दिया। अंधेरा होने के पश्चात् अभियान रोक दिया गया, फिर भी पूरी रात रूक-रूक कर गोलीबारी होती रही।

9 तारीख की सुबह, आरआर द्वारा उस घर के आसपास आईईडी लगा दी गई, परन्तु इससे केवल कमरे का एक छोटा हिस्सा ही क्षतिग्रस्त हुआ। इसी बीच, मुठभेड़ स्थल और निकटवर्ती गांवों में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बिगड़ गई। क्षेत्र की संवेदनशीलता और कानून एवं व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति को ध्यान में रखते हुए, बिना किसी विलम्ब के कमरे में प्रवेश करने का निर्णय लिया गया। कुछ पूर्ववर्ती घटनाओं, जिनमें सुरक्षा बलों को नुकसान उठाना पड़ा था, के कारण अंतर्निहित खतरों की वजह से कमरे में प्रवेश करने में कुछ हिचकिचाहट थी। इस अवसर पर, एसएसपी अनंतनाग ने सीआरपीएफ की वैली क्यूएटी की क्षमता पर भरोसा किया और अभियान को समाप्त करने के आखिरी उपाय के रूप में श्री नरेश कुमार, वैली क्यूएटी के कमांडर को कमरे में प्रवेश करने की जिम्मेदारी सौंपी। श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने चुनौती को स्वीकार किया और कमरे में प्रवेश करने से पहले उसकी अंतिम रेकी की। उपर्युक्त काम को करने के लिए श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट एवं एसओजी अनंतनाग की कमान में वैली क्यूएटी, सीआरपीएफ वाला एक दल तैयार किया गया। कमरे में प्रवेश करने वाले दल को प्रभावशाली कवर प्रदान करने के लिए, उप-निरीक्षक राम कुमार के नेतृत्व में एक दल लक्षित घर के सामने की ओर तैनात किया गया।

योजना के अनुसार, अपने दल के साथ उप-निरीक्षक राम कुमार ने लक्षित घर के सामने पोजीशन ले ली और कमरे में प्रवेश करने वाले दल के लिए रास्ता बना दिया। तत्पश्चात् श्री नरेश कुमार सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में कमरे में प्रवेश करने वाला दल सभी घातक खतरों को नजरअंदाज करते हुए लक्षित घर के पास पहुंच गया। सभी सावधानियां बरतते हुए, सैन्य दल भू-तल पर पहुंच गया और युक्तिपूर्वक कमरे की छानबीन की, जिसमें उन्हें एक आतंकवादी का शव मिला। श्री नरेश कुमार और उनके साथी कांस्टेबल/जीडी मो. यासीन ताली अन्य कमरों की छानबीन करने के लिए एक-दूसरे को कवर फायर देते हुए आगे बढ़े। अगले कमरे के नजदीक पहुंचने पर उन्होंने कमरे के भीतर कुछ हलचल महसूस की। वे दोनों सतर्क हो गए और एक बहादुरीपूर्ण तथा सटीक निर्णय लिया जिसमें उन्होंने कमरे के भीतर एक ही समय में दो हैंड ग्रेनेड फेंके और जब वे कमरे में प्रवेश करने लगे, तो विस्फोट के प्रभाव से कमरे की छत ढह गई। पहले से क्षतिग्रस्त, ऊपरी तल के अचानक गिर जाने से श्री नरेश कुमार और उनके साथी पीछे हटने पर विवश हो गए। तत्पश्चात्, तलाशी दल ने भवन के शेष कमरों की छानबीन की।

श्री नरेश कुमार की कमान वाले दल ने बिना किसी सम्पार्श्विक क्षति के छिपने के स्थान की सफलतापूर्वक छानबीन की। कमरे की छानबीन की प्रक्रिया के दौरान, कांस्टेबल/जीडी मो. यासीन ताली के होठों पर ग्रेनेड के विस्फोट के कारण दीवार से गिरने वाले सीमेंट के मलबे से चोट लग गई। (बाद में, उन्होंने फिदायीन के विरुद्ध लड़ते हुए शहादत प्राप्त की)।

मलबे की सफाई के दौरान, दो खूंखार आतंकवादियों नामतः माजिद अहमद जारगर, जिला-कुलगाम में एलईटी के डिवीजनल कमांडर और राहिल अमीन डार, जिला अनंतनाग में एलईटी के जिला कमांडर के शव और 02 एके-47 राइफलें, 01 यूबीजीएल अटैचमेंट, 01 मैगजीन और रिकॉयलिंग राड बरामद हुई।

इस अभियान में श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, उप-निरीक्षक/जीडी राम कुमार स्व. कांस्टेबल/जीडी मो. यासीन ताली ने गंभीर और आसन्न खतरे के समक्ष कुशल रणनीतिक दक्षता, अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। दो शीर्ष एलईटी आतंकवादियों के सफाए ने अनंतनाग और कुलगाम जिलों में उग्रवाद की कमर तोड़ दी।

इस अभियान में सर्व/श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, राम कुमार, उप-निरीक्षक और स्व. मोहम्मद यासीन ताली, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 07/12/2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 163-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अशोक जाखड़,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जुलाई, 2016 में एक शीर्ष हिजबुल मुजाहिद्दीन कमांडर के मारे जाने से सामान्य तौर पर कश्मीर घाटी में और विशेष तौर पर दक्षिण कश्मीर में उग्रवाद में अचानक वृद्धि हो गई। अचानक हुई इस वृद्धि ने दक्षिण कश्मीर विशेष तौर पर शोपियां और पुलवामा जिले में विद्रोह-रोधी और कानून एवं व्यवस्था संबंधी मामलों से निपटने के कार्य में लगे सुरक्षा बलों के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न कर दीं। परन्तु, कुछ समयावधि में, सुरक्षा बलों ने स्वदेशी आसूचना नेटवर्क के साथ-साथ स्थानीय पुलिस की सहायता से शत्रुओं की महत्वपूर्ण आसूचना एकत्र कर ली, जिसके परिणामस्वरूप शत्रुओं के विरुद्ध एक सुनियोजित और सर्जिकल अभियान चलाया जा सकता था। दिनांक 3 जुलाई, 2017 को लगभग 0800 बजे राज्य पुलिस से जम्मू एवं कश्मीर (जे एंड के) में ग्राम-बामनू, पुलिस स्टेशन-राजपोरा, जिला पुलवामा के क्षेत्र में 5-6 उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में इस प्रकार की एक आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। बामनू एक सघन जनसंख्या वाला गांव है, जिसमें मकान आपस में सटे हुए हैं। वहां के निवासी विशेष तौर पर सुरक्षा बलों के विरुद्ध हैं और उनका झुकाव स्पष्ट रूप से आतंकवादियों की तरफ है।

तदनुसार, एसएसपी पुलवामा के परामर्श से श्री नरेन्द्र पाल सिंह, कमांडेंट, 182 बटालियन और श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड, 183 बटालियन द्वारा एक विशेष संयुक्त घेराबंदी और तलाशी अभियान (सीएएसओ) की योजना बनाई गई। कमांडेंट, 182 बटालियन के द्वारा प्रारंभिक जानकारी दिए जाने के पश्चात, सीआरपीएफ और विशेष अभियान दल (एसओजी), पुलवामा के सैन्यदल रणनीतिक ढंग से ग्राम-बामनू की ओर निकल पड़े। मार्ग में 44-आरआर के सैन्यदल उनमें शामिल हो गए। उक्त गांव में पहुंचने के बाद, सैन्यदलों, जो पहले ही तीन दलों में विभाजित हो गए थे, ने गांव की घेराबंदी शुरू कर दी। चूंकि, ग्रामीणों ने अपनी पहचान आतंकवादियों द्वारा समर्थित उद्देश्य से जुड़े होने के रूप में दी, इसलिए सुरक्षा बलों को कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। कानून और व्यवस्था संबंधी घटकों द्वारा समुचित ढंग से सहायता प्राप्त होने पर, सैन्यबल आगे बढ़े और आतंकवादियों के बच निकलने के प्रयास को विफल करने के लिए घेराबंदी की गई। एक बार बाहरी घेराबंदी कर देने और बचकर निकलने के सभी मार्गों को अवरुद्ध कर देने पर, जब सुरक्षा बलों ने संदिग्ध घरों के आसपास घेराबंदी को कड़ा करना शुरू कर दिया, तो आतंकवादियों ने आगे बढ़ रहे सैन्यदलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादियों का तीन घरों में छुपे होने का संदेह था। वे सैन्यदलों को उलझाने के लिए इन घरों के बीच स्थान बदल रहे थे। सर्वप्रथम इन घरों में मौजूद कुछ नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। तत्पश्चात् लोक संबोधन प्रणाली पर घोषणा करके आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसका उनके द्वारा गोलियों की बौछार से उत्तर दिया गया।

सैन्य दलों ने भी उनको घेरने के उद्देश्य से उन्हें एक घर में धकेलने के इरादे से भारी गोलाबारी के साथ उनको जवाब दिया। आतंकवादी सुरक्षा बलों की रणनीति को भांपते हुए काफी चालाकी से एक घर में फंसने से बचते रहे और लगातार एक घर से दूसरे घर के बीच आते-जाते रहे तथा सैन्य दलों को उलझाये रखा। आतंकवादियों की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट था कि वे एक लम्बी बंदूक की लड़ाई के लिए पूर्ण रूप से तैयार थे। उसी समय कमांडरों ने लम्बी चलने वाली लड़ाई की निरर्थकता को महसूस किया। इसलिए, एसएसपी पुलवामा, कमांडेंट 182 बटालियन सीआरपीएफ, सेकंड-इन-कमांड 183 बटालियन सीआरपीएफ और 44 आरआर के कमांडिंग अधिकारी ने संयुक्त रूप से कमरे में प्रवेश करने का निर्णय लिया। तीन घरों में एक साथ भीतर प्रवेश करने के लिए तीन दल गठित किए गए। पहले दल में नरेन्द्र पाल सिंह, कमांडेंट 182 बटालियन सीआरपीएफ, उनके साथी कांस्टेबल उज्ज्वल भुजेल और 44 आरआर के सैन्यदल शामिल थे, दूसरे दल में आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड 183 बटालियन सीआरपीएफ, उनके साथी और 44 आरआर के सैन्यदल शामिल थे। तीसरे दल में 44 आरआर के मेजर शुक्ला, उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ और 44 आरआर के सैन्यदल शामिल थे। सभी तीनों दल स्वयं को गंभीर खतरे में डालते हुए अपने संबंधित लक्षित घरों की ओर पहुंच गए और उनकी घेराबंदी कर दी। दृढ़ संकल्प और पूर्ण दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन करते हुए नरेन्द्र पाल सिंह और उनके दल ने ग्रेनेड फेंक कर और नियंत्रित गोलीबारी करते हुए पहले घर में प्रवेश किया। आतंकवादियों ने उस दल पर गोलीबारी करना जारी रखा, परन्तु नरेन्द्र पाल और उनके साथी उज्ज्वल भुजेल, जो इस हमले का नेतृत्व कर रहे थे, ने आतंकवादियों को एक कोने में धकेल दिया। वे उनमें से एक को घेरने में सफल रहे, परन्तु तभी दो आतंकवादियों, जो प्रथम तल पर फंसे हुए थे, ने अचानक निकट दूरी से सैन्यदल पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस अप्रत्याशित हमले से डरे बिना, नरेन्द्र पाल सिंह, कमांडेंट और कांस्टेबल उज्ज्वल भुजेल ने अनुकरणीय साहस और विलक्षण धैर्य का प्रदर्शन करते हुए, सभी प्रकार की सावधानी को ताक पर रखते हुए दोनों आतंकवादियों को मारने के लिए भयंकर रूप से एक जोरदार जवाबी हमला किया। परन्तु इन कुछ मिनटों की लगातार गोलीबारी से आतंकवादियों को अपना स्थान बदलने में सहायता मिली। उन्होंने बचने के इरादे से लक्षित घर के पीछे, जहां उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ के साथ मेजर शुक्ला के दल ने पोजीशन ले रखी थी, तैनात सैन्य दलों पर एक के बाद एक ग्रेनेड फेंके। उसी समय दो आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए उस भवन के प्रथम तल से छलांग लगा दी। त्वरित प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करते हुए, कमांडेंट नरेन्द्र पाल सिंह, कांस्टेबल उज्ज्वल भुजेल और उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ अपने कवर से बाहर आ गए और उन दोनों को मार गिराने के लिए गोलियों की बौछार करने लगे। इस नजदीकी लड़ाई में, उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ और तीन सैन्य कर्मियों को स्पिलंटर से चोट लग गई। तथापि, उस घर से रूक-रूक कर गोलीबारी होती रही।

इसी बीच, श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड, जो संदिग्ध घरों की तलाशी कर रहे थे, ने घायल कार्मिकों को देखा और तत्काल उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए दौड़ पड़े। वे अपने साथी सैन्यदलों की सहायता से अपनी जान की परवाह किए बिना भारी गोलाबारी के बीच सभी घायल कार्मिकों को एक सुरक्षित स्थान पर ले गए। तत्पश्चात्, जब श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड संदिग्ध घरों की तलाशी करने के लिए लौटे, तो उनकी ओर गोलियों की भारी बौछार आई। गोलियों का निशाना जरा सा चूक गया, फिर भी इससे आतंकवादियों की स्थिति का पता चल गया। श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड ने इस अवसर का लाभ उठाया और बड़े रणनीतिक ढंग से लक्षित घर की ओर आगे बढ़ गए, ताकि अंधेरा होने से पहले इस अभियान को समाप्त किया जा सके। उग्रवादियों ने अपनी ओर बढ़ रहे सुरक्षा बलों की गतिविधि को भांप लिया और उनको आगे बढ़ने से रोकने के लिए ग्रेनेड फेंकना शुरू कर दिया। गंभीर खतरे से डरे बिना और एक कमांडर के सच्चे धैर्य का प्रदर्शन करते हुए, श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड धीरे-धीरे परन्तु दृढ़ता से अपने सैन्यदलों को घर के भीतर ले गए। तथापि, आतंकवादियों ने कड़ा विरोध करना जारी रखा और लगातार गोलीबारी करते रहे। इसी बीच, अंधेरा हो गया और कमरों की तलाशी के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया। इसी समय उन्होंने जमीन पर लेटने की आवश्यकता भी महसूस की क्योंकि किसी भी अनावश्यक गतिविधि से उनके कार्मिक दिखाई दे जाते। इसलिए आनंद कुमार अपने दल के साथ घर के भीतर डटे रहे और हमला करने के अवसर का इंतजार करते रहे। तथापि, आतंकवादियों की ओर से पूरी रात कोई भी गतिविधि नहीं हुई। पौ फटने पर श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड और उसके दल ने पुनः उस घर की तलाशी शुरू कर दी। जब दल एक कमरे में पहुंचा, तो छिपे हुए आतंकवादियों ने अचानक बहुत निकट दूरी से गोलीबारी शुरू कर दी। अत्यधिक धैर्य और अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड ने तीव्र प्रतिक्रिया की और उग्रवादी पर गोलीबारी की। इसी बीच, उस घर में आग लग गई। अपने सैन्यदलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड रणनीतिक ढंग से घर से बाहर आ गए परन्तु वे आतंकियों को बच निकलने से रोकने के लिए उनकी ओर गोलीबारी करते रहे। बाद में आग बुझाई गई और उस घर से आतंकवादी का शव बरामद किया गया। मुठभेड़ के बाद तलाशी के दौरान, मुठभेड़ स्थल से एक मैगजीन के साथ एके-47, दो मैगजीनों के साथ एक इंसास राइफल और एक मैगजीन के साथ एक एसएलआर के साथ-साथ मृत आतंकवादियों के कुल तीन शव बरामद किए गए, बाद में, जिनकी पहचान हिजबुल मुजाहिद्दीन के किफायत अहमद खांडे (श्रेणी ख), जहांगीर अहमद खांडे (श्रेणी ग) और मोहम्मद अख्तर उर्फ तैयब (श्रेणी ग) के रूप में की गई।

यह अभियान श्री नरेन्द्र पाल सिंह, कमांडेंट 182 बटालियन और 183 बटालियन सीआरपीएफ के श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड दोनों की ओर से एक गतिशील नेतृत्व का उदाहरण था। दक्ष व्यावसायिक कौशल और रणनीतिक कुशाग्रता का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने सच्चे नीडर की तरह सामने से नेतृत्व किया। विपरीत परिस्थितियों में बहादुरी दिखाते हुए और जीवन के प्रति आसन्न खतरे का सामना करते हुए, उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ और कांस्टेबल उज्ज्वल भुजेल की विधिवत सहायता से दोनों अधिकारियों ने आतंकवादियों को ढेर करना सुनिश्चित किया। उप-निरीक्षक अशोक जाखड़ और कांस्टेबल उज्ज्वल भुजेल ने अभियान के दौरान अत्यधिक जोखिम और जीवन के प्रति खतरे का सामना किया परन्तु वे अंतिम लक्ष्य के प्रति धैर्यवान और दृढ़ निश्चय बने रहे। यह अभियान फील्ड कमांडरों द्वारा प्रदान किए गए बहादुरीपूर्ण, साहसिक और गतिशील नेतृत्व के कारण पूर्णरूपेण सफल हुआ।

इस अभियान में श्री अशोक जाखड़, उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च- कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.07.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 164-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. मुशकूर अहमद लोन, हेड कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. बिष्णु सिंह, हेड कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
4. भोई शैलेषकुमार, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
5. एजाज अहमद भट कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
6. मनीष वर्मा, कांस्बेटल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08 अगस्त, 2017 को 180 बटालियन की सी और जी कम्पनियां वूयान, पम्पोर में जम्मू एवं कश्मीर के माननीय मुख्यमंत्री के दौरे के संबंध में कानून और व्यवस्था संबंधी कार्य पूरा करने के पश्चात् अपने शिविरों में लौट रहे थे। जब वे लगभग 12 बजे चक गांव के निकटवर्ती क्षेत्र में से गुजर रहे थे, तो श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट, सी/180 कम्पनी के कम्पनी कमांडर को गांव गुलाब बाग, पुलिस स्टेशन त्राल, जिला- पुलवामा में कुछ आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना पर शीघ्रता से कार्रवाई करते हुए, वे 180 बटालियन के कमांडेंट को सूचित करने के पश्चात् लक्षित गांव की ओर निकल पड़े।

गुलाब बाग एक घनी आबादी वाला गांव है, जो त्राल में 180 बटालियन के मुख्यालय से लगभग 5 किमी. दूर स्थित है। गांव के दक्षिण दिशा के किनारे एक 100 मीटर चौड़ा नाला बहता है। जब सी कम्पनी गुलाबबाग गांव में पहुंची, तो 42 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) का दल गांव की दक्षिण दिशा की घेराबंदी कर रहा था। 42 आरआर के कम्पनी कमांडर के साथ संक्षिप्त विचार विमर्श के

पश्चात्, श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट ने गांव की उत्तरी दिशा की ओर अपना दल तैनात कर दिया। लगभग 1300 बजे, जब घेराबंदी की जा रही थी, तो आतंकवादियों ने यह सोचते हुए कि उनको सुरक्षा बलों द्वारा घेर लिया गया है, सैन्यदलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसी बीच, श्री राजेश कुमार, कमांडेंट-180 बटालियन भी अपने त्वरित कार्रवाई दल (क्यूएटी) के साथ लक्षित गांव में पहुंच गए और इस अभियान में शामिल हो गए।

आतंकवादियों की गोलीबारी का जवाब देते हुए, सुरक्षा बलों ने भी किसी सम्पार्श्विक क्षति से बचने के लिए सटीक और नियंत्रित जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। लगभग 1345 बजे दोनों ओर से भारी गोलाबारी के बीच, तीन आतंकवादी नाले से बच निकलने के प्रयास में सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए गांव से बाहर आ गए। उन्होंने अपने बच निकलने के प्रयास को सफल बनाने के लिए नाले के भीतर छलांग लगा दी। चूंकि, इस समय ग्रीष्म ऋतु थी, अतः नाले में बहुत कम पानी बहने से वह काफी हद तक सूख गया था और वे इसमें से आसानी से बचकर निकल सकते थे। नाले में प्राकृतिक चट्टानें/उखड़े हुए पेड़ आदि भी थे, जिससे आतंकवादियों को प्राकृतिक कवर मिल गया। उपर्युक्त के कारण सुरक्षा बलों की गोलीबारी विफल हो रही थी, इस बीच प्राकृतिक कवर का प्रयोग करते हुए आतंकवादी सुरक्षा बलों को पीछा करने से रोकने के लिए उन पर गोलीबारी करते रहे।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर, कमांडेंट-180 बटालियन ने श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट को आतंकवादियों का सामना करने तथा उन्हें बच निकलने से रोकने का निर्देश दिया। श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट ने हेड कांस्टेबल मुशकूर अहमद लोन, हेड कांस्टेबल बिष्णु सिंह, कांस्टेबल भोई शैलेषकुमार बाबूभाई, कांस्टेबल एजाज अहमद भट और कांस्टेबल मनीष वर्मा वाले अपने छोटे दल के साथ तुरंत नाले में प्रवेश किया और गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए एवं प्राकृतिक कवर का प्रयोग करते हुए आतंकवादियों की ओर आगे बढ़े। इसी बीच, 42 आरआर और एसओजी के सैन्यदल भी इनमें शामिल हो गए और अपने हमले को तेज कर दिया।

आतंकवादी, बीच-बीच, में आगे बढ़ रहे सैन्यदलों की ओर गोलीबारी कर रहे थे। इसी बीच मलिक दल के दो जवानों ने आतंकवादियों के आगे की ओर नाले को पार कर लिया और बचकर भाग रहे आतंकवादियों के रास्ते में रणनीतिक ढंग से मोर्चा संभाल लिया, जबकि मलिक और उनके दल के शेष सदस्य आतंकवादियों के बिल्कुल पीछे थे। निकट दूरी से पीछा करते समय, श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट ने दो आतंकवादियों को देखा जिन्होंने एक गिरे हुए पेड़ की छाल के पीछे कवर ले रखा था। उनमें से एक आतंकवादी ने निराशा में अपनी पोजीशन को छोड़ दिया और बच निकलने के लिए नाले के किनारे की ओर दौड़ पड़ा। अब तक, अपने शेष तीन बहादुर सैनिकों के साथ श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट ने भी नाले को पार कर लिया।

श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट और उनके साथी कांस्टेबल भोई शैलेषकुमार बाबूभाई ने आतंकवादी को किनारे की ओर आते हुए देखकर सभी सावधानियों को ताक पर रखकर बिल्कुल नजदीक से आतंकवादी पर हमला कर दिया और उसे मौके पर ही मार गिराया।

शेष दो आतंकवादियों ने स्वयं को बचाने के प्रयास में एक बड़े उखड़े हुए पेड़, जो नाले में तिरछा पड़ा हुआ था, के पीछे कवर ले लिया। आतंकवादियों ने नाले के किनारे की ओर आगे बढ़ते हुए सैन्यदलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करना जारी रखा। आगे बढ़ रहे सैन्यदलों की दूर रखने के लिए, एक आतंकवादी, जो किनारे के नजदीक पहुंच गया था, ने एक ग्रेनेड फेंका और हेड कांस्टेबल बिष्णु सिंह और उनके साथी एजाज अहमद भट पर गोलीबारी की। ग्रेनेड कुछ दूरी पर फट गया और चूंकि दोनों ने पेड़ों के पीछे कवर ले रखा था, अतः वे सुरक्षित लगने से बच गए। तथापि, उन्होंने अवसर का फायदा उठाया और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने संबंधित कवर से बाहर आ गए और उन्होंने विलक्षण बहादुरी, अदम्य साहस और अत्यधिक व्यावसायिक दक्षता का प्रदर्शन करते हुए सशस्त्र आतंकवादी पर हमला कर दिया। दोनों ने अपनी सधी हुई गोलीबारी से दूसरे आतंकवादी को मार गिराया।

तीसरे आतंकवादी ने नाले में उखड़े हुए पेड़ की आड़ के पीछे से बीच-बीच में गोलीबारी करना जारी रखा। चूंकि, उसे घेर लिया गया था और यह महसूस करते हुए कि उसके दोनों सहयोगी पहले ही मारे जा चुके हैं, उसने अपने कवर को नहीं छोड़ा। वह अपनी ओर बढ़ने का प्रयास करने वाले किसी भी व्यक्ति पर गोलीबारी करते हुए अपनी पोजीशन पर डटा रहा। इस अवसर पर, हेड कांस्टेबल मुशकूर अहमद लोन और उनके साथी कांस्टेबल मनीष वर्मा ने दुश्मन द्वारा सुरक्षा बलों को चोट पहुंचाए जाने से पहले उससे आमने सामने लड़ने का निर्णय लिया। वे दोनों गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए तीसरे आतंकवादी की ओर आगे बढ़े। अपनी जान को अत्यधिक आसन्न खतरे में डालते हुए, दोनों बहादुर जवान हमला करने की दूरी पर पहुंच गए और छिपे हुए आतंकवादी पर गोलीबारी की, और उसे मौके पर ही मार गिराया। इन बहादुर सैनिकों ने मुठभेड़ को अत्यधिक साहसिक ढंग से समाप्त किया।

इस अभियान के दौरान, सैन्यदलों द्वारा तीन आतंकवादियों को मार गिराया गया, जिनकी पहचान बाद में पुलिस स्टेशन त्राल, जिला-पुलवामा के अंतर्गत बाटागुंड के निवासी अंसार-गजावत-उल-हिंद गुट के इशाक अहमद भट, श्रेणी 'क' पुत्र अब्दुल सलाम भट, पुलिस

स्टेशन त्राल, जिला-पुलवामा के अंतर्गत ग्राम-नावडाल के निवासी जाहिद अहमद, श्रेणी 'ख' पुत्र अब्दुल राशिद भट और पुलिस स्टेशन त्राल, जिला-पुलवामा के अंतर्गत ग्राम त्रिच के निवासी मोहम्मद अशरफ, श्रेणी 'ग' पुत्र गुलाम मोहम्मद डार के रूप में की गई। मारे गए आतंकवादियों से 02 एके-47 राइफलें, 04 एके मैगजीन, एके गोलाबारूद के 105 राउंड, एक चाइनीज पिस्तौल, एक पिस्तौल की मैगजीन, पिस्तौल की गोलियों के 02 राउंड, 02 गोलियों के पाउच और एक ब्लैक कैन्वस की बेल्ट बरामद की गई।

इस अभियान के दौरान, श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट और उनके छोटे दल ने अनुकरणीय युद्ध कौशल एवं रणनीति, चतुराईपूर्ण रणनीतिक सूझबूझ, असाधारण साहस और धैर्य का प्रदर्शन किया। उन्होंने भारी विपरीत परिस्थितियों का सामना होने के बावजूद अपने सैन्यदलों को किसी प्रकार की समपार्श्विक क्षति या नुकसान के बगैर बिल्कुल नजदीक से कुशलता के साथ लड़ी गई लड़ाई में तीन आतंकवादियों को सफलतापूर्वक मार गिराया गया।

इस अभियान में, सर्व/श्री राजेन्द्र नाथ मलिक, सहायक कमांडेंट, मुशकूर अहमद लोन, हेड कांस्टेबल, बिष्णु सिंह, हेड कांस्टेबल, भोई शैलेषकुमार, कांस्टेबल, एजाज अहमद भट, कांस्टेबल और मनीष वर्मा, कांस्बेटल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.08.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

सं. 165-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सिकन्दर यादव,
   सहायक कमांडेंट
2. सुरेन्द्र कुमार शर्मा,
   हेड कांस्टेबल
3. नवीन कुमार,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 1 अगस्त, 2017 को लगभग 0330 बजे, ग्राम-हाकरीपोरा, पुलिस स्टेशन एवं जिला-पुलवामा क्षेत्र में 2-3 आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में राज्य पुलिस से एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, श्री सिकन्दर यादव, सहायक कमांडेंट की कमान में 183 बटालियन की बी कम्पनी के त्वरित कार्रवाई दल (क्यूएटी), मेजर अखिल की कमान में 55 आरआर के दो युद्ध संबंधी कार्रवाई दलों (सीएटी) और जम्मू और कश्मीर पुलिस (जेकेपी) के उप-निरीक्षक नूरबो ओनपो के नेतृत्व में विशेष अभियान दल तथा एसओजी नेवा द्वारा एक विशेष संयुक्त घेराबंदी एवं तलाशी अभियान (सीएएसओ) की योजना तैयार की गई तथा तत्पश्चात् इसे शुरू किया गया।

हाकरीपोरा एक घनी आबादी वाला गांव है जिसमें सीआरपीएफ की 183 बटालियन की बी कम्पनी के मुख्यालय से लगभग 5 किमी. की दूरी पर 160 के आस-पास घर स्थित हैं। यह गांव घने बगीचों से घिरा हुआ है और यहां प्रायः खूंखार एलईटी आतंकवादी कमांडर अबु दुजाना आता-जाता रहता था। यहां के ग्रामीण पूर्ण रूप से आतंकवादियों के समर्थक हैं और वे विशेषतौर पर सैन्य बलों के विरोधी हैं। गांव के एक घर में, जो एक मंजिला घर था, 2-3 आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना से अत्यधिक वांछित एलईटी आतंकवादी अबु दुजाना की उपस्थिति के बारे में भी पता चला, जो काफी लम्बे समय से सुरक्षा बलों को बड़ी चालाकी से चकमा दे रहा था। यह घर एक छोटे से परिसर में स्थित था जो एक चारदीवारी से घिरा हुआ था जिसमें एक और घर भी मौजूद था और यह जामा मस्जिद के सामने स्थित था।

संयुक्त योजना के पश्चात, बी/183 की क्यूएटी, एसओजी नेवा के साथ-साथ 55 आरआर के दो युद्ध संबंधी कार्रवाई दल (सीएटी) लगभग 20 मिनट में ग्राम- हाकरीपोरा पहुंच गए और लक्षित घर के निकटवर्ती लगभग 12 घरों के चारों ओर कड़ी घेराबंदी कर दी। संदिग्ध घर से लगभग 20 मीटर की दूरी पर स्थित गली के प्रवेश पर बीपी बंकर स्थापित कर दिया गया। सिकन्दर यादव ने लक्षित घर के सामने की दिशा के साथ-साथ दायीं ओर रणनीतिक ढंग से अपनी क्यूएटी को तैनात कर दिया। वे स्वयं अपने साथी कांस्टेबल नवीन कुमार के साथ इधर-उधर चक्कर लगाते रहे और लक्षित घर पर कड़ी निगरानी रखी। मेजर अखिल के नेतृत्व में आरआर के सैन्यदलों न लक्षित घर के पीछे की ओर पोजीशन ले ली और एसओजी नेवा ने स्वयं लक्षित घर के दायीं ओर पोजीशन ले ली। चूंकि, सुरक्षा बल संख्या में अपर्याप्त थे, इसलिए सीआरपीएफ की 182 और 183 बटालियनों, जेकेपी और आरआर से अतिरिक्त सैन्यदल की मांग की गई। प्रभात होने पर, श्री कुमार मयंक, सेकंड-इन-कमांड-182 बटालियन और श्री आनंद कुमार, सेकंड-इन-कमांड-183 बटालियन की कमान में सीआरपीएफ की 182 और 183 बटालियनों की यूनिट क्यूएटी, 55 आरआर के अतिरिक्त सैन्यदलों और सिविल पुलिस वाले सहायक सैन्यदल वहां पहुंच गए और उन्होंने घेराबंदी को मजबूत कर दिया। कुमार मयंक और उनके साथी सहायक उप-निरीक्षक गंगाराम और श्री राज वर्धन, सहायक कमांडेंट, 183 बटालियन और उनके साथी हेड कांस्टेबल सुरेन्द्र कुमार शर्मा भी भीतरी घेराबंदी में शामिल थे। संदिग्ध घरों की तलाशी करने के लिए सेना, जेकेपी और सीआरपीएफ के चुनिंदा अधिकारियों और जवानों, जिनमें श्री सिकन्दर यादव और उनके साथी भी शामिल थे, का एक दल तैयार किया गया। यह भलीभांति जानते हुए की इन घरों में आम लोग मौजूद हैं, सुरक्षा की दृष्टि से उनको बाहर निकालने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, तलाशी दल रणनीतिक ढंग से संदिग्ध घर के समीप पहुंच गया और उसने खिड़की से भीतर प्रवेश किया तथा एक नागरिक को बचाया, जिसने घर के भीतर अत्याधुनिक हथियारों के साथ दो आतंकवादियों की उपस्थिति की पुष्टि की। इसी बीच, सार्वजनिक सूचना प्रणाली पर बार-बार आतंकवादियों से अपने हथियार डालने की घोषणा की गई, परन्तु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सुरक्षा बलों की बढ़ती हुई गतिविधि को देखते हुए, आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसका लक्षित घर के आसपास रणनीतिक ढंग से पहले से ही मौजूद सैन्यदलों द्वारा प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया गया। कवर फायर की उपयुक्त सहायता से तलाशी दल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आगे बढ़ता रहा। यह एक मंजिला भवन था और आतंकवादी अटारी पर सुरक्षित रूप से बैठे हुए थे और इसलिए बाहरी गतिविधियों पर नजर रख सकते थे। जब तलाशी दल लक्षित घर के बिल्कुल निकट पहुंचा, तो उन पर भारी गोलीबारी की गई। सिकन्दर यादव और उनके साथी बाल-बाल बच गए। उपयुक्त कवर लेते हुए सैन्यदल ने जोरदार जवाबी हमला किया। परस्पर भारी गोलीबारी के कारण, मुख्य रूप से लकड़ी की बनी हुई अटारी में आग लग गई, जिससे आतंकवादी नीचे उतरने के लिए मजबूर हो गए। बाहर निकलने के दुस्साहसिक प्रयास में वे सुरक्षा बलों पर जोरदार ढंग से गोलीबारी करते रहे। परस्पर भारी आपसी गोलीबारी के कारण तलाशी दल आगे नहीं बढ़ सका। वे पीछे हट गए और उन्होंने रणनीतिक ढंग से घर के आसपास मोर्चा संभाल लिया। अंतिम प्रयास में, आतंकवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए घर के बाहर आ गए। वे हेड कांस्टेबल सुरेन्द्र कुमार शर्मा की दिशा में आगे बढ़ रहे थे, जो आरआर और एसओजी के अन्य सदस्यों के साथ भीतरी घेराबंदी में मौजूद थे। सुरेन्द्र कुमार शर्मा आतंकवादियों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रख रहे थे। उनको अपनी ओर आते हुए देखकर, उन्होंने मौके का फायदा उठाते हुए आतंकवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई से चकित होकर, वे सुरक्षा के लिए पीछे हट कर घर के अन्दर चले गए। इस आपसी गोलीबारी में शायद एक आतंकवादी को चोट लग गई। रूक-रूक कर यह गोलीबारी लगभग 4 घंटे तक चली। तत्पश्चात् अचानक सन्नाटा छा गया। जब लक्षित घर से कोई और गोलीबारी नहीं हुई, तो आईईडी की सहायता से घर को उड़ाने का निर्णय लिया गया। आईईडी लगाने के लिए संयुक्त दल तैयार किए गए जिसमें आरआर और सीआरपीएफ के सैन्यदल शामिल थे। सिकन्दर यादव और उनके साथी ने आईईडी को सफलतापूर्वक लगाने और बाद में घर को उड़ाने के लिए जाने वाले इन दलों को कवर फायर प्रदान किया। उस इमारत के ढह जाने और लपटें शांत हो जाने के पश्चात, सिकन्दर यादव के नेतृत्व वाले सीआरपीएफ, जेकेपी और आरआर के रूम इंटरवेंशन दल ने खिड़की से घर में प्रवेश किया। वह घर जले हुए अवशेषों के अंगारों के कारण कढ़ाई जैसा लग रहा था। जब तलाशी दल नजदीक गए, तो एक आतंकवादी, जिसने स्वयं को अपने हमवतन के शव के पीछे चालाकी से छिपा रखा था, ने तलाशी दल पर अचानक गोलियों की बौछार कर दी। सिकन्दर यादव और उनका साथी, जो नेतृत्व कर रहे थे, इस अप्रत्याशित हमले से बाल-बाल बच गए। एकाएक सिकन्दर यादव, नवीन कुमार के संयुक्त दल ने अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह न करते हुए भीषण जवाबी हमला किया और आतंकवादी पर जोरदार गोलीबारी की और उसे निष्क्रिय कर दिया।

तलाशी के दौरान दो आतंकवादियों जिनकी पहचान अबु दुजाना, श्रेणी 'क++', डिविजनल कमांडर, निवासी पाकिस्तान और आरिफ नबी डार उर्फ रेहान पुत्र गुलाम नबी डार निवासी लेलहार काकापोरा श्रेणी 'ख' के रूप में की गई, के शवों के साथ-साथ एक एके-56 राइफल, चार एके-56 मैगजीन, 7.62x39 गोलाबारूद के 50 राउंड, मैगजीन के साथ चाइनीज पिस्तौल और समकक्ष गोलाबारूद बरामद किए गए।

इस अभियान में, सर्व/श्री सिकन्दर यादव, सहायक कमांडेंट, सुरेन्द्र कुमार शर्मा, हेड कांस्टेबल और नवीन कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.08.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 166-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री प्रदीप कुमार पाठक,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30 नवम्बर, 2017 को भोर में, जिला-बारामुला में पुलिस स्टेशन बोमई, पीडी-सोपोर के अंतर्गत ग्राम सागीपोरा के क्षेत्र में एक पहाड़ी पर आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, सेना के 9 पैरा द्वारा एक विशेष अभियान शुरू किया गया। अभियान के दौरान, आतंकवादियों ने 09 पैरा के सैन्यदलों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके फलस्वरूप एक जवान गोली लगने से घायल हो गया। जब 9 पैरा के सैन्यदलों ने जवाबी कार्रवाई की, तो आतंकवादी पहाड़ी से उतर कर सागीपोरा गांव के कुमार मोहल्ला की दिशा में भाग गए। यह सूचना एसएसपी सोपोर द्वारा लगभग 1000 बजे कमांडेंट, 92 बटालियन, सीआरपीएफ के साथ टेलीफोन पर साझा की गई, जिन्होंने श्री एस.एस. देव, उप-कमांडेंट की कमान में अपने त्वरित कार्रवाई दल (क्यूएटी) को लक्षित क्षेत्र की ओर जाने का निदेश दिया। इस पर शीघ्र कार्रवाई करते हुए, 92 बटालियन की क्यूएटी लक्षित क्षेत्र में पहुंच गई और इस अभियान में जम्मू एवं कश्मीर पुलिस और 22 आरआर के विशेष अभियान दल में शामिल हो गई।

92 बटालियन की क्यूएटी के सागीपोरा गांव में पहुंचने के पश्चात, संयुक्त सैन्यदलों ने गांव और निकटवर्ती पहाड़ियों की तलाशी शुरू कर दी। इसी बीच, 92 बटालियन, 172 बटालियन एवं 179 बटालियन के अतिरिक्त सैन्यदल भी घटना स्थल पर पहुंच गए और उन्होंने आतंकवादियों को बच निकलने से रोकने के लिए गांव के चारों ओर कड़ी घेराबंदी कर दी। जब तलाशी जारी थी, तो एक आतंकवादी, जिसने नाले में पोजीशन ले रखी थी, डराने और सुगमता से बच निकलने के इरादे से भारी गोलीबारी करते हुए 92 बटालियन के तलाशी दल की ओर दौड़ा। तथापि, सैन्यदल सतर्क थे और उन्होंने प्रभावशाली ढंग से जवाबी कार्रवाई की और इस प्रकार उसकी योजना को विफल कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आतंकवादी और सुरक्षा बलों के बीच परस्पर भारी गोलीबारी शुरू हो गई। उस आतंकवादी ने अपने फायदे के लिए उबड़-खाबड़ क्षेत्र और नाले के प्राकृतिक कवर का चतुराई से प्रयोग किया और वह सुरक्षा बलों की गोलीबारी से बचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर आता-जाता रहा।

कुछ समय पश्चात, रूक-रूक हो रही गोलीबारी के दौरान, क्यूएटी 92 बटालियन के कांस्टेबल प्रदीप कुमार पाठक ने यह देखा कि वह आतंकवादी घटनास्थल से बच निकलने के लिए नाले में रेंगकर चलने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने आतंकवादी की ओर सधी हुई गोलीबारी की जो उनकी पोजीशन से प्रभावशाली साबित नहीं हुई, क्योंकि लक्ष्य की दिशा अधिक स्पष्ट नहीं थी। बहादुर व्यक्ति ऐसे अवसरों को व्यर्थ नहीं जाने देते। जोशपूर्ण ढंग से, अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, कांस्टेबल प्रदीप कुमार अपने कवर से बाहर आकर दौड़े और रेंगकर आतंकवादी की ओर गए तथा शत्रु की चाल का अनुमान लगाते हुए उपयुक्त पोजीशन ले ली। इस पोजीशन से, उन्हें यह विश्वास था कि वे भाग रहे आतंकवादी को प्रभावशाली ढंग से रोकने में सफल रहेंगे। जैसा कि अनुमान था, आतंकवादी लगातार गोलीबारी करते हुए कांस्टेबल प्रदीप कुमार की दिशा में आगे बढ़ा। जैसे ही आतंकवादी हमला करने की सीमा में आया, तो कांस्टेबल प्रदीप कुमार अपने कवर से बाहर आ गए और अपने हथियार से सधी हुई भारी गोलीबारी शुरू कर दी तथा आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया।

जब सबकुछ शांत हो गया और परस्पर कोई गोलीबारी नहीं हुई, तो उस क्षेत्र की पूरी तलाशी की गई, जिसके परिणामस्वरूप एक एके-47 राइफल, 01 यूबीजीएल, 05 मैगजीनों, गोलाबारूद के 124 राउंड, 03 यूबीजीएल राउंड और 01 पाउच के साथ-साथ एक मारे गए आतंकवादी का शव बरामद हुआ। मृत आतंकवादी की पहचान मुज्जामिल (श्रेणी-ए++), निवासी पाकिस्तान के रूप में की गई। वह उत्तर कश्मीर में लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का डिवीजनल कमांडर था।

इस अभियान में, श्री प्रदीप कुमार पाठक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.11.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 167-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (मरणोपरांत)/पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक	
सर्व/श्री	
1. शरीफ-उद-दीन गनाई, कांस्टेबल	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (मरणोपरांत)
2. मो. तफैल, हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (मरणोपरांत)
3. अमर सिंह नेगी, उप महानिरीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
4. नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
5. एस. प्रकाश, कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
6. जितेन्द्र कुमार, कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
7. लोकराकपम इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
8. उत्तम राज, सहायक उप-निरीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
9. बुधी सिंह, कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
10. जुल्फकार अहमद, कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

वर्ष 2017 कश्मीर घाटी में विद्रोह-रोधी अभियानों के लिए महत्वपूर्ण था, जिसमें घाटी में आतंकवाद के अशांतिपूर्ण इतिहास में एक कैलेंडर वर्ष में पहली बार 200 से अधिक आतंकवादियों को निष्क्रिय किया गया। वर्ष के अंत तक, सुरक्षा बलों के संयुक्त अभियानों ने वस्तुतः दो प्रमुख आतंकवादी संगठनों नामतः लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) और हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) की कमर तोड़ दी। इस आघात से उबरने के लिए जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) गुट ने वर्ष की अंतिम तिमाही में बड़ी मात्रा में विदेशी आतंकवादियों (एफटी), जिनकी संख्या लगभग 36 थी, को शामिल करके शीर्ष स्थान हासिल कर लिया था जिसमें उन्हें सैन्यदलों को अधिक से अधिक हताहत करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ सुरक्षा बलों के शिविरों पर फिदायीन हमले करने का कार्य सौंपा गया था।

दक्षिण कश्मीर में अवंतीपुरा के नजदीक सीआरपीएफ का लेथपोरा शिविर, एक संवेदनशील शिविर है, उस क्षेत्र के बड़े सुरक्षा बल प्रतिष्ठानों में से एक है, जो 131 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग से लगभग तीन किमी. अंदर की ओर स्थित है। वर्तमान में, इसमें दो सर्विस कम्पनियों के साथ-साथ 185 बटालियन सीआरपीएफ का यूनिट मुख्यालय है। इस शिविर में जवानों के बैरक, पुरुष क्लब, एसओ मेस, कार्यालय परिसर, आवासीय क्वार्टरों, अस्पताल ब्लॉक आदि सहित कई बहु-मंजिला भवन हैं। इस स्थान का उपयोग कश्मीर ऑप्स सेक्टर सीआरपीएफ के प्रशिक्षण नोड के रूप में भी किया जा रहा है, जिसमें ऑप्स सेक्टर के यूनिटों के कार्मिकों के लिए नियमित आधार पर भर्ती-पूर्व प्रशिक्षण और अन्य पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। खतरे की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए, 4.5 किमी. लम्बी चारदीवारी के दायरे में बाड़ लगाने और परिधि में रोशनी की व्यवस्था करने सहित सुरक्षा संबंधी अवसंरचना के स्तरोन्नयन का कार्य सीपीडब्ल्यूडी के साथ प्रक्रिया में है। आतंकवादियों द्वारा शिविर पर हमला किए जाने की सुभेद्यता के कारण, शिविर की सुरक्षा के लिए दैनिक आधार पर बड़ी संख्या में सैन्यदल तैनात किए जाते हैं।

दिनांक 23 दिसम्बर, 2017 को, सिविल पुलिस से रात में शिविर पर एक फिदायीन हमले की संभावना के संबंध में आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। तदनुसार, सुरक्षा को मजबूत कर दिया गया और संरचनात्मक अपर्याप्तता के बावजूद, सम्पूर्ण शिविर को हाई अलर्ट पर रख दिया गया। एहतियाती उपाय के रूप में स्थाई त्वरित कार्रवाई दलों को भी अतिरिक्त रूप से तैनात कर दिया गया। सभी सुरक्षापायों के बावजूद, लगभग 0200 बजे, जेईएम गुट के तीन भारी हथियारबंद आतंकवादी मोर्चा सं. 11 और 12 के बीच परिधि की दीवार को तोड़ते हुए पूर्वोत्तर पहाड़ी की ओर से चोरी-छिपे उस परिसर में घुसे और उबड़-खाबड़ क्षेत्र तथा झाड़ियों का फायदा उठाते हुए आवासीय क्वार्टरों की ओर आगे बढ़े। बाउंडरी को पार करने के पश्चात, आतंकवादियों ने संतरियों और गश्त दल पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका तुरंत जवाब दिया गया। तथापि, शिविर के भीतर कम रोशनी और परिधि की बाड़ के भीतर उबड़-खाबड़ क्षेत्र और झाड़ियों के बड़े हिस्से का लाभ उठाते हुए, आतंकवादी थोड़ा और भीतर जाने में सफल हो गए तथा बैरकों के बाहर तैनात संतरी को निशाना बनाते हुए वे टाइप-2 और टाइप-4 क्वार्टरों के चार मंजिला भवन के अंदर जाने में सफल हो गए। 185 बटालियन सीआरपीएफ के संख्या 065343211 कांस्टेबल शरीफ-उद-दीन गनाई जो सुरक्षा चेतावनी के कारण अपने साथियों के साथ टाइप-2 क्वार्टर के ब्लॉक संख्या-1 में सहायता के लिए खड़े हुए थे, बंदूक की गोलियों की आवाज सुनकर तुरंत हरकत में आ गए। बड़े परिसर के कारण, उस वास्तविक स्थान की पहचान करना मुश्किल था, जहां से गोलीबारी और विस्फोटों की आवाज आ रही थी। तथापि, भवन की सुरक्षा करने की अत्यावश्यकता के कारण, शरीफ-उद-दीन गनाई अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादियों का मुकाबला करने के लिए रणनीतिक ढंग से क्वार्टर से बाहर आ गए। जब वे बाहर निकल रहे थे, तो सामने स्थित टाइप-4 क्वार्टर में मौजूद आतंकवादियों ने टाइप-2 क्वार्टर की ओर गोलीबारी की। कांस्टेबल शरीफ-उद-दीन गनाई तुरंत सीढ़ियों के खुले क्षेत्र में रेंगने लगे और उस दिशा में जवाबी गोलीबारी की जहां से गोलीबारी की गई थी। आतंकवादी इस अचानक जवाबी कार्रवाई से स्तब्ध हो गए। शरीफ-उद-दीन गनाई इस पर नहीं रूके। उन्होंने अपने साथियों को कमरों से बाहर न आने का निर्देश देते हुए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की और आतंकवादियों के स्थान की स्पष्ट रूप से पहचान करने के लिए साहसपूर्ण ढंग से अकेले ही सीढ़ियों की लोहे वाली रेलिंग के नजदीक आ गए और आतंकवादियों को सामने वाले बैरक में देखते ही उन्होंने अपनी राइफल से कई गोलियां चलाईं। तथापि, इस आगामी बंदूक की लड़ाई में आतंकवादी ने सीढ़ियों पर एक यूबीजीएल से फायर किया। इसके परिणामस्वरूप, शरीफ-उद-दीन गनाई स्प्लिंटर की चोट से गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन वे निडरता के साथ उस समय तक गोलीबारी करते रहे, जब तक कि वे बेहोश होकर सीढ़ियों पर नहीं गिर गए। आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की और वे टाइप-2 और 4 क्वार्टरों के ऊपरी मंजिल की अटारी पर चले गए, जबकि बैरकों में रह रहे कार्मिकों ने अपने दरवाजे बन्द कर लिए ताकि आतंकवादियों को जबरन प्रवेश करने से रोका जा सके।

185 बटालियन सीआरपीएफ के सं. 903040734 सहायक उप-निरीक्षक उत्तम राज के साथ-साथ सात जवानों को मोर्चा संख्या 9 और बट्ट रेंज सं. 1 के बीच वाले खुले क्षेत्र में क्षेत्र की सुरक्षा के लिए बंकर पर तैनात किया गया था। टाइप 2 और 4 क्वार्टर वाले क्षेत्र में गोलीबारी और विस्फोट की आवाज सुनने पर उत्तम राज तुरंत उस क्षेत्र की ओर गए तथा कांस्टेबल मालमे समाधान को आतंकवादियों की गोलीबारी से जख्मी हालत में पाया गया। आतंकवादियों की पोजीशन स्पष्ट नहीं होने के बावजूद, उत्तम राज ने खुले क्षेत्र में निकलकर स्वयं को गंभीर खतरे में डाल दिया और बिना समय गंवाए घायल जवान को प्राथमिक सहायता पहुंचाने के लिए सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। तत्पश्चात्, उन्होंने बंकर को रणनीतिक ढंग से टाइप 4 और 5 के क्वार्टरों के बीच लगा दिया। आतंकवादियों ने वाहन को देखकर उसकी पोजीशन की तरफ गोलीबारी जारी रखी, जिसका उत्तम राज और उनके दल ने अतिरिक्त सहायता पहुंचने तक प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया। इस तरीके से, उन्होंने शुरूआती तौर पर काफी समय तक आतंकवादियों को उलझाए रखा, जिससे कार्मिकों को कवर लेने तथा स्वयं को क्वार्टरों में सुरक्षित करने का समय मिल गया।

सीआरपीएफ कैंप पर फिदायीन हमले के संबंध में सूचना प्राप्त होने पर तत्काल, श्रीनगर से वैली क्यूएटी और दक्षिण कश्मीर ऑप्स रेंज (एसकेओआर) और अनंतनाग की रेंज क्यूएटी की मांग की गई तथा उन्होंने लगभग 0400 बजे लेथपोरा में रिपोर्ट किया। शिविर कमांडर द्वारा ब्रीफिंग और क्यूएटी द्वारा जमीनी स्थिति का शीघ्र मूल्यांकन करने के पश्चात, क्यूएटी को कक्ष में प्रवेश करने और छानबीन करने का कार्य सौंपते हुए सर्वप्रथम टाइप 2 और 4 क्वार्टरों में फंसे हुए कार्मिकों को बाहर निकालने का निर्णय लिया गया।

तदनुसार, रेंज क्यूएटी, अनंतनाग को टाइप 4 क्वार्टरों के ब्लॉक 1 और 2 को खाली कराने का कार्य सौंपा गया जिसमें 185 बटालियन के दो कार्मिक फंसे हुए थे और उन्हें बचाने की आवश्यकता थी। अपने स्काउट के नेतृत्व वाले दल, 163 बटालियन के सं. 125075282 कांस्टेबल जुल्फकार अहमद (रेंज क्यूएटी, अनंतनाग से सम्बद्ध) ने सावधानीपूर्वक तलाशी ली और भूतल से ऊपरी मंजिल तक 8 क्वार्टरों को खाली कराया तथा कुछ कार्मिकों को सुरक्षित बाहर निकाला। अब यह स्पष्ट था कि टाइप 4 क्वार्टर के भीतर वाला आतंकवादी ब्लॉक 1 में ही था और उसने अटारी को पार नहीं किया था। कांस्टेबल जुल्फकार अहमद ने अपने साथी के साथ स्वयं ब्लॉक 2 और 3 के जंक्शन पर रणनीतिक रूप से मोर्चा संभाल लिया ताकि आतंकवादी की गतिविधि पर नजर रखी जा सके और उसे ब्लॉक 3 से ब्लॉक 2 में जाने से रोका जा सके तथा इस प्रकार की किसी संभावित घटना की स्थिति में उसे देखते ही मारा जा सके। यह बहुत ही संवेदनशील पोजीशन थी क्योंकि यह सीढ़ियों पर बिल्कुल खुला हुआ क्षेत्र था और इस बात की बहुत अधिक संभावना थी कि आतंकवादी अपने बच निकलने का मार्ग बनाने के लिए अटारी से गोलीबारी करेगा। तथापि, उस स्थान पर डटे रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था और जुल्फकार अहमद अपने काम पर डटे रहे।

इस अवधि के दौरान, श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट और श्री एल. इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाली वैली क्यूएटी के साथ-साथ 44 बटालियन, सीआरपीएफ के कांस्टेबल बुधी सिंह सं. 045232487 और 43 बटालियन, सीआरपीएफ के कांस्टेबल एस. प्रकाश सं.115031994 (दोनों वैली क्यूएटी से सम्बद्ध) ने 185 बटालियन के कांस्टेबल शरीफ-उद-दीन गनाई, जिनकी बहादुरी के साथ आतंकवादियों की गोलीबारी का जबाव देते समय घायल होने के कारण मृत्यु हो गई थी, का शव निकालने के लिए एक साथ टाइप-।। क्वार्टर के प्रथम ब्लॉक के भूतल में प्रवेश किया। यह एक मुश्किल काम था, क्योंकि कार्मिकों को खुली सीढ़ियों से होकर आगे बढ़ना था, जिसको ब्लॉक के ठीक सामने वाले टाइप 4 क्वार्टर के ब्लॉक 3 में छिपे आतंकवादियों द्वारा आसानी से निशाना बनाया जा सकता था। सतत् प्रयासों और उपयुक्त कवर फायर देने के पश्चात ही यह दल अंततः शहीद कांस्टेबल शरीफ-उद-दीन गनाई के शव को बरामद करने में सफल हो सका। इस कठिन निकासी के पश्चात, नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, एल. इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट के साथ-साथ कांस्टेबल बुधी सिंह और कांस्टेबल एस. प्रकाश सं.115031994 यूनिट नियंत्रण कक्ष, सिग्नल सेन्टर, ऑप्स शाखा और एमआई कक्ष वाले टाइप 4 क्वार्टरों के ब्लॉक 3 के पहले दो तलों में फंसे हुए लगभग 5-6 कार्मिकों को बचाने के लिए आगे बढ़े। यह अत्यधिक जोखिम से भरा हुआ काम था क्योंकि दल को दोनों ओर के दो क्वार्टरों के बीच से होकर गुजरना था जिसमें आतंकवादी स्पष्ट निगरानी के साथ तैनात थे और हमला करने की लाभपूर्ण पोजीशन में थे। ऐसा हुआ कि जब सैन्यदल टाइप 4 क्वार्टर के बिल्कुल नजदीक पहुंच रहा था, तो टाइप 4 क्वार्टर में पोजीशन लिए हुए आतंकवादी ने उन पर यूबीजीएल से हमला किया और ग्रेनेड फेंका, जिससे इस प्रक्रिया में बीपी जिप्सी पंक्चर हो गई। सैन्यदल को वह वाहन मजबूरन छोड़ना पड़ा और वे अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे के बावजूद बिना किसी कवर के खुले में टाइप 4 क्वार्टर की ओर आगे बढ़े। कक्ष में प्रवेश और उसकी की छानबीन संबंधी कठिन प्रक्रिया के पश्चात, भारी कठिनाइयों का सामना करते हुए निरीक्षक/क्रिप्टो कुलदीप रॉय, जो बेहोशी की हालत में पाए गए थे और जिनकी बाद में दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई थी, के साथ-साथ फंसे हुए कार्मिकों को बाहर निकालने का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया। सुरक्षित बाहर निकालने का कार्य पूरा हो जाने पर, टाइप 4 क्वार्टर के ब्लॉक 3, जहां आतंकवादी लगातार तीसरे तल पर दिया हुआ था, के ठीक सामने टाइप 5 क्वार्टर में कमान पोस्ट स्थापित की गई। तत्पश्चात् सैन्यदलों ने सीजीआरएल और एमजीएल से गोलीबारी करते हुए जवाबी हमला किया।

इसी बीच, टाइप 4 के पीछे स्थित टाइप 2 क्वार्टरों के ब्लॉक 2 में भी कुछ लोग थे, जिनको बचाए जाने की आवश्यकता थी। उन्हें बाहर न निकलने का निर्देश दिया गया क्योंकि उस ब्लॉक में आतंकवादियों की पोजीशन और संख्या स्पष्ट नहीं थी। 185 बटालियन, सीआरपीएफ के हेड कांस्टेबल मो. तफैल अहमद सं.920200102 को आतंकवादियों की किसी भी घुसपैठ को रोकने और कक्षों में मौजूद उन सभी व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ब्लॉक 2 के तीसरे तल की सुरक्षा करने का कार्य सौंपा गया। उनकी पोजीशन असुरक्षित थी क्योंकि यह बिना किसी कवर के थी और इस पर हमलों की संभावना थी। वे आसपास की सभी गतिविधियों को बारीकी से देख रहे थे और उसे सुन भी रहे थे। लगभग 1030 बजे, उन्होंने अटारी में कुछ गतिविधि देखी। वे बिना किसी डर के बहादुरी के साथ अपने दो साथियों सहित अटारी की छानबीन करने और उसे सुरक्षित करने के लिए आगे बढ़े। जब वे सामने की पोजीशन की ओर गए, तो उन्होंने अटारी पर छिपे हुए एक आतंकवादी को देखा और उसे चुनौती दी। यह एक विलक्षण आमने-सामने की लड़ाई थी, जिसमें हेड कांस्टेबल मो. तफैल अहमद डटे रहे। दोनों ने एक-दूसरे पर गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, आतंकवादी ने चोटी पर लाभप्रद पोजीशन में होने के कारण मो. तफैल अहमद, जो अपनी अंतिम सांस तक बहादुरीपूर्ण ढंग से लड़ते रहे, को गंभीर चोटें पहुंचाई। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई में, मो. तफैल अहमद ने छिपे हुए आतंकवादी की पोजीशन को उजागर कर दिया और उसके द्वारा योजनाबद्ध गुप्त हमले से बहुत से कार्मिकों को बचा लिया।

टाइप 2 क्वार्टर के ब्लॉक 2 की अटारी में छिपे आतंकवादी को तत्काल निष्क्रिय करना अब अत्यधिक महत्वपूर्ण था, क्योंकि वह दोनों ओर के कमरों में फंसे हुए कार्मिकों को निशाना बनाने की पोजीशन में था। इस स्थिति से निपटने के लिए, लगभग 1045 बजे, रेंज क्यूएटी एसकेओआर और अनंतनाग को टाइप 2 क्वार्टर से फंसे हुए लगभग 20 कार्मिकों को बाहर निकालने बचाने का कार्य सौंपने का

निर्णय लिया गया। तदनुसार, दोनों क्यूएटी कमांडरों को लक्षित भवन से लगभग सौ मीटर दूर स्थित पुरुष के क्लब के नजदीक डीआईजी एसकेओआर और अनंतनाग द्वारा पूर्ण जानकारी दी गई। रेंज क्यूएटी अनंतनाग को भवन के ब्लॉक 1 और 2 को सुरक्षित करने का कार्य सौंपा गया तथा रेंज क्यूएटी एसकेओआर को ब्लॉक 3 को सुरक्षित करने का कार्य सौंपा गया। पूर्ण जानकारी प्राप्त होने के पश्चात दोनों क्यूएटी ने अपने संबंधित कमांडरों की कमान में अपना कार्य शुरू कर दिया। एसकेओआर की रेंज क्यूएटी ब्लॉक 3 से ऊपर की ओर बढ़ी और रेंज क्यूएटी अनंतनाग इसी ढंग से ब्लॉक 1 से ऊपर की ओर बढ़ी। एसकेओआर क्यूएटी कमांडर श्री जिले सिंह, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल राजेन्द्र कुमार नैन (जो एक भारी बुलेट प्रूफ (बीपी) शील्ड ले जा रहे थे) और 180 बटालियन के कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार सं.145081561 के साथ सबसे आगे थे। ब्लॉक 3 के दूसरे और तीसरे तल से लगभग 10 कार्मिकों को बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाने के पश्चात, जिसमें कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, दल ने ब्लॉक 2 में जाने का निर्णय लिया। जब एसकेओआर क्यूएटी तीसरे तल पर अटारी की ओर जाने वाले दरवाजे पर पहुंची, तो भीतर छिपे आतंकवादी ने अपनी एके-47 राइफल से गोली चला दी। दोनों ओर से परस्पर गोलीबारी शुरू हो गई और क्यूएटी कमांडर और उनके साथी ने बहादुरी के साथ इसका जबाव दिया। तथापि, आतंकवादी के द्वारा चलाई गई एक गोली जो कि संभवतः कवचभेदी (एपीआई) गोली थी, राजेन्द्र कुमार नैन, जो सबसे आगे थे, की बीपी शील्ड में घुस गई और उनकी छाती के ऊपरी हिस्से में जा लगी। बीपी शील्ड फर्श पर गिर गई और कांस्टेबल नैन अटारी के दरवाजे के ठीक सामने फर्श पर गिर गए। कोई समय बरबाद किए बिना और अपनी जान की परवाह किए बिना, जितेन्द्र कुमार दरवाजे के निकट पहुंच गए और आतंकवादी को कांस्टेबल राजेन्द्र नैन को और अधिक चोट पहुंचाने से रोकने के लिए कवर गोलीबारी शुरू कर दी और इस प्रक्रिया में क्यूएटी कमांडर उन्हें खींचकर सीढ़ियों पर सुरक्षित स्थान पर ले जाने में सफल हो गए। कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार ने अपनी जोखिमपूर्ण पोजीशन नहीं छोड़ी और उन्होंने आतंकवादी को उलझाए रखा, जिसके कारण वह सीढ़ियों पर यूबीजीएल अथवा ग्रेनेड फेंककर हमला नहीं कर सका, जिससे कार्रवाई के लिए वहां तैनात सैन्यदलों को गंभीर क्षति हो सकती थी। इसी बीच, क्यूएटी कमांडर ने तत्काल वायरलेस सेट पर सहायता मांगी। सभी ओर आंतक फैला हुआ था। यह एक अत्यधिक कठिन स्थिति थी क्योंकि आतंकवादी ने छोटी सी अवधि में दो बार चोट पहुंचा दी थी। हर व्यक्ति अशांत और बेचैन था।

इस अवसर पर, श्री ए. एस. नेगी, उप-महानिरीक्षक एसकेओआर और रेंज क्यूएटी के प्रभारी उस भवन में गंभीर खतरा मंडराने के बावजूद तुरंत आगे बढ़े, अपने निजी हथियार को लिया, बीपी पटका पहना और क्यूएटी कमांडर की सहायता करने के लिए शीघ्रता से ब्लॉक 3 की सीढ़ियों पर गए। बीच में वे जिले सिंह से मिले, उसका मनोबल बढ़ाया और वे एक साथ आगे ऊपरी तल पर गए। सर्वप्रथम, श्री ए. एस. नेगी, डीआईजी ने कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार के साथ अति आवश्यक चिकित्सा सहायता के लिए घायल कांस्टेबल राजेन्द्र नैन को बाहर निकाला। स्थिति का तत्काल जायजा लेने के पश्चात, उन्होंने पहल की और जितेन्द्र कुमार द्वारा दी गई कवर गोलीबारी में श्री जिले सिंह के साथ बहादुरी से अटारी के दरवाजे की ओर आगे बढ़े। यह एक खतरनाक कार्य था, क्योंकि आतंकवादी ग्रेनेड फेंक सकता था अथवा यूबीजीएल से हमला कर सकता था। तथापि, उसके वास्तविक स्थान का पता लगाने और उसे निष्क्रिय करने के लिए उसके नजदीक जाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था क्योंकि वह अटारी पर एक सीमेंट के बने हुए बैरिकेड के पीछे छिपा हुआ था और लगातार गोलीबारी कर रहा था। तत्काल सोची गई अंतिम कार्रवाई में श्री ए. एस. नेगी ने गोलियों की बौछार कर दी और वे अपनी जान की परवाह किए बिना शीघ्रता से अटारी के भीतर पानी की टंकी के नजदीक चले गए। इस कार्रवाई से घायल आतंकवादी का ध्यान कुछ क्षण के लिए भंग हो गया और जब वह अपनी पोजीशन से हिला तो क्यूएटी कमांडर ने उसको लक्ष्य बनाने के लिए अवसर का फायदा उठाया। इस संयुक्त कार्रवाई में उसे कुछ सेकंड में ही मार गिराया गया। ऐसी उत्तेजनापूर्ण स्थिति में किसी भी देखने वाले के लिए यह एक विलक्षण वीरता का कार्य था, क्योंकि इसने तनावपूर्ण स्थिति के स्वरूप को बदल दिया और सैन्यदल आतंकवादी को मार गिराने पर उत्साहित थे। इसने आगे की जवाबी कार्रवाई के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। मारे गए आतंकवादी की पहचान मंजूर अहमद बाबा निवासी ड्राबगाम, पुलवामा के रूप में की गई। क्यूएटी ने आगे अपना काम जारी रखा और अटारी से गुजरकर ऊपरी मंजिल से नीचे उतरने के पश्चात ब्लॉक 2 को सुरक्षित किया। इस प्रक्रिया में जितेन्द्र कुमार के साथ श्री ए.एस. नेगी के नेतृत्व वाले दल ने हेड कांस्टेबल मो. तफैल अहमद के शव को निकाला जिनकी अटारी में छिपे आतंकवादी के साथ बहादुरी से लड़ने के पश्चात चोटों के कारण मृत्यु हो गई।

अभी यह कठिन परीक्षा समाप्त ही हुई थी कि लगभग 1230 बजे मोर्चा संख्या 12 के नजदीक वाले दायरे के भीतर के क्षेत्र में एक आतंकवादी के दिखाई देने के संबंध में सूचना प्राप्त हुई। वैली क्यूएटी दल को उस स्थान पर पहुंचने तथा आतंकवादी को उलझाए रखने का निर्देश दिया गया। नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, एल. इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट के साथ-साथ कांस्टेबल बुधी सिंह, कांस्टेबल एस. प्रकाश और सहायक उप-निरीक्षक उत्तम राज वाले दल ने इस उद्देश्य के लिए तत्काल कार्रवाई की। जब वे उस स्थान के नजदीक गए, तो आतंकवादी ने अपने स्वचालित हथियार से बीपी बंकर पर विस्फोट कर दिया जिसमें बीपी बंकर के भीतर एक एपीआई राउंड घुस गया और भीतर तैनात 49 बटालियन के कांस्टेबल मल्ला राम को लग गया और इस प्रक्रिया में उनको मामूली चोटें आईं। दल तुरंत उस वाहन से उतर गया, क्योंकि उबड़-खाबड़ क्षेत्र के कारण यह और आगे नहीं जा सकता था। आतंकवादी फायरिंग रेंज के असमतल खुले क्षेत्र में छिपा हुआ था और लगातार गोलीबारी कर रहा था। जीवन के प्रति गंभीर खतरे के बगैर उस तक पहुंचने के लिए कोई

प्रभावशाली कवर उपलब्ध नहीं था। कठिन जमीनी वास्तविकताओं की परवाह किए बिना, नरेश कुमार, एल इबोम्चा सिंह के साथ-साथ बुधी सिंह, एस. प्रकाश और उत्तम राज गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए और क्षेत्र में उपलब्ध छोटे-मोटे कवर का प्रयोग करते हुए खुले क्षेत्र में आगे बढ़े। जब वे नजदीक पहुंचे, तो आतंकवादी ने ग्रेनेड फेंकें। बुधी सिंह ने आतंकवादी के छिपने की पोजीशन की ओर एमजीएल से हमला किया जिसके कारण उसे मजबूरन बाहर आना पड़ा। ज्योंही वह दिखाई दिया, श्री नरेश कुमार और एस. प्रकाश ने एल. इबोम्चा सिंह, उत्तम राज और बुधी सिंह द्वारा दी गई कवर गोलीबारी की सहायता के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना इस अवसर का लाभ उठाया, वे और नजदीक चले गए और तत्काल आतंकवादी को मार गिराया। मारे गए आतंकवादी की पहचान फरदीन अहमद खांडे पुत्र गुलाम मोहिउद्दीन खांडे निवासी त्राल, पुलवामा के रूप में हुई।

यह काम निपटाने के पश्चात् वैली क्यूएटी वापस क्वार्टर सं. 4 की ओर चली गयी, जहां फंसे हुए कार्मिकों को बचाने का कार्य पूरा हो गया था, परंतु आतंकवादी तीसरे ब्लॉक की ऊपरी मंजिल पर कब्जा किए हुए था। उस भवन के एक हिस्से को आईईडी की सहायता से गिराए जाने के प्रयास किए गए, परन्तु इससे वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुआ। तत्पश्चात, फ्लेम थ्रोवर (अग्नि वर्षा) की भी सेवा ली गई, परंतु कमरों में किसी प्रकार का ज्वलनशील पदार्थ न होने के कारण आग नहीं लग पाई। इसलिए, लगभग 1700 बजे एक सोचे-समझे निर्णय के पश्चात, नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, एल. इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट के साथ-साथ कांस्टेबल बुधी सिंह, एस. प्रकाश और पी. के. पंडा वाले दल को कमरे में प्रवेश करने और भूतल से ऊपरी मंजिल तक इसे सुरक्षित करने संबंधी कठिन कार्य सौंपा गया। दल एक कठिन प्रक्रिया से गुजरा, जिसमें भूतल और प्रथम दो तलों को सुरक्षित किया गया। तत्पश्चात्, कांस्टेबल पी. के. पंडा ने अपने साथी कांस्टेबल एस. प्रकाश के साथ कमरे के भीतर एक ग्रेनेड फेंकने के पश्चात बहादुरी से ऊपरी मंजिल की बायीं ओर के ब्लॉक में प्रवेश किया। तथापि, जब वे दूसरे कमरे में घुसे, तो एक कोने में छिपे आतंकवादी ने सर्वप्रथम कांस्टेबल पी. के. पंडा को निशाना बनाते हुए उनकी ओर गोलीबारी शुरू कर दी, जिन्होंने तुरंत जवाबी गोलीबारी की। इस अचानक हमले से विचलित हुए बिना, श्री नरेश कुमार और कांस्टेबल एस. प्रकाश ने भी आतंकवादी को मार गिराने के लिए उस दिशा में गोलियों की बौछार करके तुरंत जवाबी कार्रवाई की। इसी दौरान, एल. इबोम्चा सिंह और बुधी सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना घायल पी. के. पंडा को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए कई प्रयास किये। अंत में दल के संयुक्त प्रयास ने आतंकवादी को ऐसे किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचने से रोकने में सहायता की, जहां से वह कांस्टेबल पी. के. पंडा की तरह अन्य लोगों को भी और चोटें पहुंचा सकता था। तथापि, इस परिस्थिति में, दल के पास रणनीतिक ढंग से पीछे हटने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था।

सुरक्षा बलों द्वारा ग्रेनेड हमले का अंदेशा लगाते हुए, आतंकवादी जल्दी से टॉयलेट ब्लॉक में घुस गया और दीवार में बने छोटे से छेद से गोलीबारी करता रहा। टॉयलेट ब्लॉक की दीवार को रॉकेट लॉन्चर (आरएल) चलाकर तोड़ दिया गया, परन्तु शत्रु और आगे बढ़कर भवन के पीछे चला गया और अपनी सुरक्षित पोजीशन को बनाए रखने के लिए शांत बना रहा। चूंकि, अब तक दृश्यता कम हो गई थी और रात होने वाली थी, इसलिए घटना स्थल पर रोशनी करने और लक्षित भवन के आसपास कट ऑफ के रूप में बीपी बंकर, जिनमें सैन्यदलों को तैयार पोजीशन में रखा गया था, लगाने के पश्चात अभियान को रोक दिया गया।

भोर होने के पश्चात, अगली सुबह अर्थात् 1 जनवरी, 2018 को अभियान पुनः शुरू किया गया। रेंज क्यूएटी कमांडर, अनंतनाग ने टाइप 2 क्वार्टर के ब्लॉक 1 की दूसरी मंजिल पर दो श्रेष्ठ निशानेबाजों को तैनात कर दिया जहां से टाइप 4 क्वार्टर का तीसरा ब्लॉक दिखाई दे रहा था जहां आतंकवादी छिपा हुआ था। सामने टाइप 5 क्वार्टर से आरएल चलाए जाने के जोखिम से बचने के लिए आतंकवादी के पीछे की ओर जाने की प्रबल संभावना थी। इसलिए क्यूएटी कमांडर ने कांस्टेबल जुल्फकार अहमद के साथ उनके साथी को इस कार्य के लिए तैनात कर दिया। तदनन्तर, टाइप 4 क्वार्टर के तीसरे ब्लॉक को उड़ाने के लिए एक दिशापरक आईईडी लगाई गई, जिसमें जुल्फकार अहमद ने अपने साथी के साथ प्रभावशाली कवर फायर प्रदान किया। तथापि, आईईडी विस्फोट का अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ा फिर भी, नींव कमजोर हो गई। तत्पश्चात्, दीवार को तोड़ने के लिए आर एल चलाया गया। कुछ प्रयास के पश्चात कमरे के भीतर वाली दूसरी दीवार को भी तोड़ दिया गया। इस कार्रवाई के पश्चात, यूएवी की सेवा ली गई और जब यह लक्षित घर के निकट पहुंचा, तो इस पर आतंकवादी द्वारा गोलीबारी की गई जिससे उसकी पोजीशन का पता चल गया। इस प्रक्रिया में, उसको भवन के पीछे की ओर जाने पर विवश होना पड़ा, जिससे उसको मुश्किल से 20 मीटर दूर कांस्टेबल जुल्फकार अहमद द्वारा ली हुई पोजीशन दिखाई दे गई। खतरे को भांपते हुए उसने उस पोजीशन पर गोलीबारी की। तथापि, जुल्फकार अहमद, जिनकी आंखे बालकनी पर टिकी हुई थीं, ने ठीक समय पर अपना सिर नीचे झुका लिया और स्वयं को गोलियों की बौछार से बचा लिया परन्तु उसी तत्परता से अपनी जान की परवाह किए बगैर उन्होंने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और आतंकवादी पर गोलियां चलाईं। इसके परिणामस्वरूप, आतंकवादी जमीन पर गिर पड़ा और उसने वापस गोली चलाने का प्रयास किया परन्तु वह दोनों ओर से दोहरी गोलीबारी में फंस गया।

दिनांक 1 जनवरी, 2018 को लगभग 1300 बजे, उस भवन में मृत आतंकवादी के शव की पुष्टि हुई। तत्पश्चात् श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाली वैली क्यूएटी ने भीतर प्रवेश किया और रणनीतिक ढंग से शहीद कांस्टेबल पी. के. पंडा और एक विदेशी आतंकवादी, जिसकी पहचान नहीं हो पाई, का शव बरामद किया। इसके पश्चात, क्यूएटी को कार्य सौंप कर सभी भवनों की पूर्ण

तलाशी ली गई और कार्रवाई स्थल को 'परिधि से बाहर' के रूप में चिह्नित कर दिया गया क्योंकि वहां पर जिन्दा गोलाबारूद होने की संभावना थी जिसे बाद में बीडीडी दल द्वारा ही हटाया जा सकता था। मुठभेड़ स्थल से हुई बरामदगियों में 03 एके-47 राइफल, 11 एके-47 मैगजीनें, 01 यूबीजीएल, 04 एचई ग्रेनेड, कुछ जिन्दा गोलाबारूद, पाउच और जेईएम का झंडा शामिल था। यह अभियान लगभग 1730 बजे पूरा हुआ।

लेथपोरा का अभियान अत्यधिक भयावह और चुनौतीपूर्ण था जो 36 घंटों से अधिक समय तक चला और इसे सीआरपीएफ द्वारा स्वयं सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह अभियान संभारकीय बाधाओं, विस्तृत और जटिल क्षेत्र, जिसमें आतंकवादियों से निपटने की आवश्यकता थी, भवनों में फंसे हुए अनेक बल कार्मिकों को कठिनाई और जोखिमपूर्ण ढंग से बचाने और प्रारंभिक क्षतियों से बचने सहित अनेक चुनौतियों से भरा हुआ था। बल द्वारा तीन खूंखार आतंकवादियों का सफाया करने की उपलब्धि का श्रेय सीआरपीएफ वैली क्यूएटी तथा अवंतीपोरा और अनंतनाग की रेंज क्यूएटी के सदस्यों के जबरदस्त धैर्य, दृढ़ निश्चय, अनुकरणीय साहस और कभी हार न मानने की भावना को दिया जा सकता है। इस यादगार अभियान के प्राथमिक योजनाकर्ता श्री अमर सिंह नेगी, डीआईजी दक्षिण कश्मीर ऑप्स रेंज (एसकेओआर), श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, 79 बटालियन सीआरपीएफ, सं. 115031994 कांस्टेबल एस. प्रकाश, 43 बटालियन सीआरपीएफ, सं.145081561 कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार, 180 बटालियन सीआरपीएफ, सं.065343211 स्व. कांस्टेबल शरीफ-उद-दीन गनाई, 185 बटालियन सीआरपीएफ और सं.920200201 स्व. हेड कांस्टेबल मो. तफैल अहमद, 185 बटालियन सीआरपीएफ थे। उपर्युक्त अधिकारियों/कार्मिकों ने इस अभियान में मुख्य हमला किया और अभियान को निर्णायक स्तर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभाई। वे वास्तव में इस अभियान के पुरोधा थे। इसके अतिरिक्त, श्री एल. इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट, 29 बटालियन सीआरपीएफ, सं.903040734 सहायक उप-निरीक्षक उत्तम राज, 185 बटालियन सीआरपीएफ, सं.045232487 कांस्टेबल बुधी सिंह, 44 बटालियन सीआरपीएफ और सं.125075282 कांस्टेबल जुल्फकार अहमद, 163 बटालियन सीआरपीएफ ने भी आवश्यक सहायता पहुंचाने और सैन्य बल के लिए अत्यधिक लाभपूर्ण स्थिति उत्पन्न करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अभियान में अंत तक आतंकवादियों की संख्या और उनकी पोजीशन के संबंध में लगातार अनिश्चितता बने रहने, इस तथ्य कि वे भारी हथियारबंद थे और एपीआई राउंड से लगातार गोलीबारी कर रहे थे, के बावजूद उपर्युक्त अधिकारी और कार्मिक अपनी जान और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना इस कार्रवाई में निडरतापूर्वक आगे डटे रहे। उनके साहसपूर्ण तरीके से कमरे में प्रवेश करने से बैरकों से बड़ी संख्या में कार्मिकों को समय पर बाहर निकालने में सहायता मिली जिससे बहुमूल्य जानें बच गईं।

इस अभियान में, सर्व/श्री स्व. शरीफ-उद-दीन गनाई, कांस्टेबल, स्व. मो. तफैल, हेड कांस्टेबल, अमर सिंह नेगी, उप महानिरीक्षक, नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, एस. प्रकाश, कांस्टेबल, जितेन्द्र कुमार, कांस्टेबल, लोकरापम इबोम्चा सिंह, सहायक कमांडेंट, उत्तम राज, सहायक उप-निरीक्षक, बुधी सिंह, कांस्टेबल और जुल्फकार अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.12.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 168-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. प्रतीक गुलिया,
   सहायक कमांडेंट
2. शिवपाल उइके,
   कांस्टेबल
3. तपस घोष,
   कांस्टेबल

4. मिलन सिंह नेताम,
कांस्टेबल

5. के. बिरेस्वर सिंघा,
कांस्टेबल

6. सुमित कुमार,
उप-निरीक्षक

7. सुरेन्द्र,
हेड कांस्टेबल

8. श्यामापदा रे,
कांस्टेबल

9. सरोज कुमार मोहापात्रा,
कांस्टेबल

10. संतोष उइके,
कांस्टेबल

11. नीलू बाबू,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.11.2016 को, पुलिस स्टेशन-छिपादोहर, जिला-लातेहार के अंतर्गत ग्राम-करमडीह, नवारनागु और खामीखास के समीपवर्ती जंगल वाले क्षेत्र में बीजेएसएसी के वरिष्ठ माओवादी नेताओं जिनमें 30-35 सशस्त्र काडरों के साथ-साथ अरविंदजी उर्फ देव कुमार, सुधाकर, दीपक खैरवार, नकुल यादव शामिल थे, की उपस्थिति के बारे में एक सूचना के आधार पर, 209 कोबरा और राज्य पुलिस द्वारा माओवादियों को पकड़ने के लिए एक अभियान की योजना बनाई गई। यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ और झाड़खंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित होने के कारण रणनीतिक महत्व रखता है। पहाड़ी क्षेत्र, उबड़-खाबड़ मैदान, दूर से दिखने वाली खड़ी चट्टानें, खाइयों वाले घने जंगल, निरंतर बहती हुई कोयल नदी इस क्षेत्र में अभियान चलाने के कार्य को कठिन तथा चुनौतीपूर्ण बना देते हैं। इस निर्भीक और चुनौतीपूर्ण कार्य को करने की जिम्मेवारी श्री कमलेश सिंह, कमांडेंट के सम्पूर्ण पर्यवेक्षण में 209 कोबरा के दो हमला दलों और एक एसएटी (विशेष कार्रवाई दल) को सौंपी गई। श्री राजविन्दर सिंह, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाले हमला दल-I और श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाले हमला दल-II को लक्षित क्षेत्र पर हमला करने का कार्य सौंपा गया, जबकि 14 कमांडो के साथ श्री अविज्ञान कुमार, उप-कमांडेंट की कमान में एसएटी को बैकअप संबंधी सहायता प्रदान करने और संचार को सुगम बनाने के लिए बेस कैंप में तैनात किया गया। हमला दल-I एवं II 49 कमांडो से मिलकर बना हुआ था जिसमें श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट शामिल थे।

योजना के अनुसार, दोनों हमला दल और एसएटी दिनांक 21.11.2016 को लगभग 1830 बजे मुख्यालय (खूंटी) से निकले और दिनांक 21.11.2016 को लगभग 2330 बजे पूर्व निर्धारित स्थान पर वाहन से उतरे (हमला दल-01 मोरवाई गांव के नजदीक वाहन से उतरा और हमला दल-II लाडी गांव के नजदीक वाहन से उतरा)। एसएटी को लाभर सीआरपीएफ बेस कैंप पर तैनात किया गया। वाहन से उतरने के पश्चात, सैन्यदल अग्रिम चेतावनी प्रणालियों और लगाई गई आईईडी की व्यूह रचना से बचने के लिए सावधानीपूर्वक लक्षित क्षेत्र की ओर आगे बढ़े। दिनांक 22.11.2016 को लगभग 0930 बजे दल संख्या 10 के स्काउट कांस्टेबल/जीडी शिवपाल उइके ने उत्तर से दक्षिण की ओर उत्तरी कोयल नदी को पार करते हुए लगभग 8-10 लोगों की कुछ संदिग्ध गतिविधि (जो उनकी पोजीशन से लगभग 700 मीटर दूर थी) देखी। उन्होंने तत्काल अपने सेक्शन कमांडर उप-निरीक्षक/जीडी मोहम्मद रियाज आलम अंसारी और दल कमांडर श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट को सूचित किया, जिन्होंने दूरबीन का प्रयोग करते हुए स्थिति का जायजा लिया और शस्त्रों के साथ काली पोशाक में कुछ संदिग्ध व्यक्तियों को देखा। उन्होंने सैन्यदलों को सतर्क किया और माओवादियों को रोकने के लिए 12 चुनिंदा कमांडो का एक दल तैयार किया जिसमें प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट और उप-निरीक्षक/जीडी सुमित कुमार शामिल थे। यह छोटा दल आसन्न खतरों की परवाह किए बिना माओवादियों की पोजीशन की ओर निकल पड़ा। उस स्थान पर पहुंचते ही, दल ने उस क्षेत्र को रणनीतिक ढंग से कवर कर लिया और इसकी सम्पूर्ण तलाशी की तथा माओवादियों की उपस्थिति के स्पष्ट संकेत और 10-15 व्यक्तियों के क्षण भर रूकने के चिह्न देखे। इस घटनाक्रम के बारे में कमांडेंट-209 कोबरा को सूचित किया गया।

दलों ने उत्तरी कोयल नदी और ग्राम-करमडीह के बीच रात्रि में रणनीतिक ढंग से विश्राम किया। ये घटनाक्रम माओवादियों के साथ एक संभावित मुठभेड़ का संकेत दे रहे थे। इस उभरती हुई स्थिति के संबंध में दल तैयार करने के लिए, श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट ने अपने दल के परामर्श से एक योजना तैयार की। उन्होंने उपलब्ध नफरी से 3 दल तैयार किए; दो दल गांव और नदी के बीच के क्षेत्र की तलाशी के लिए और एक दल पीछे के क्षेत्र को कवर करने के लिए। तदनुसार, दोनों दलों ने योजना के अनुसार दिनांक 23.11.2016 को लगभग 0430 बजे उस क्षेत्र की तलाशी शुरू कर दी। श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट का दल पूर्वी दिशा की ओर जबकि प्रतीक गुलिया की कमान में दूसरा दल पश्चिमी दिशा की ओर उस क्षेत्र की तलाशी कर रहा था। लगभग 0730 बजे, जब उप-निरीक्षक/जीडी मोहम्मद रियाज आलम अंसारी, कांस्टेबल/जीडी शिवपाल उइके और कांस्टेबल/जीडी तपस घोष वाला स्काउट दल जंगल वाले क्षेत्र से लगभग 30 मीटर अंदर जरा सा नदी के तल में गया, तो वे गोलियों की भारी बौछार में घिर गए। जैसाकि अनुमान लगाया था, माओवादियों ने शायद सुरक्षा बलों की उपस्थिति को देख लिया था और वे उन पर आक्रमण करने के लिए तैयार थे। माओवादियों ने नदी पार अपने भली प्रकार सुरक्षित स्थान से सैन्यदलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इस पर तेजी से कार्रवाई करते हुए, स्काउट दल ने मिट्टी के गढ़्ढों में कवर लेने के लिए अपनी पोजीशन को बदलते हुए तुरंत जवाबी गोलीबारी की। इसी बीच, श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट ने 04 माओवादियों को देखा, जो नदी के बीच में रेत के टीलों के पीछे से गोलीबारी कर रहे थे। उन्होंने सशस्त्र माओवादियों को आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी, परन्तु उन्होंने गोलीबारी और तेज कर दी। कोई अन्य विकल्प नहीं पाने पर, सैन्यदलों ने भी आत्मरक्षा में दिशापरक जवाबी गोलीबारी की। इसी बीच, स्थिति के बारे में बेस कैंप को सूचित किया गया।

श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट ने बाएं किनारे को कवर करने के लिए अपने दल का नेतृत्व किया और श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट को दाएं किनारे को कवर करने का निर्देश दिया। श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट से निर्देश प्राप्त होने पर, श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट अपनी पोजीशन से बाहर निकले और पश्चिमी दिशा से दाएं किनारे को कवर करने के लिए बरसती हुई गोलियों के बीच बहादुरी के साथ अपने दल का नेतृत्व किया। स्काउट दल माओवादियों की सीधी और भारी गोलीबारी में फंस गया और उसे तत्काल सहायता की आवश्यकता थी। आवश्यकता को भांपते हुए, श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट ने स्थिति को संभाला और उन्होंने कांस्टेबल/जीडी सरोज कुमार मोहापात्रा, कांस्टेबल/जीडी मिलन सिंह नेताम और कांस्टेबल/जीडी श्यामापदा रे के साथ बायीं ओर से जवाबी हमला किया। साथ ही साथ, उन्होंने हेड कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र को स्काउट दल को उनकी जवाबी कार्रवाई में सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया। दोनों ओर से सैन्यदल आसन्न चुनौतियों का सामना करते हुए, गोलीबारी के बीच नदी-तल के खुले क्षेत्र में से चलते हुए अपने घिरे हुए स्काउट दल की सहायता करने के लिए माओवादियों की ओर आगे बढ़े।

सैन्यदलों को उन्हें घेरते हुए देखकर, माओवादियों ने दोनों ओर गोलीबारी की मात्रा बढ़ा दी। इस अवसर पर, सैन्यदलों के पास खुले क्षेत्र में होने के कारण गोलियों से बचने के लिए कोई कवर नहीं था। श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट और श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट अपने दल के साथ सभी खतरों को नजरअंदाज करते हुए दोनों किनारों से माओवादियों के नजदीक पहुंच गए और उन पर आक्रामक हमला कर दिया। लगभग इसी समय, दोनों ओर से सहायता प्राप्त होने पर, उप-निरीक्षक/जीडी मो. रियाज आलम अंसारी के नेतृत्व वाले घिरे हुए स्काउट दल ने माओवादियों पर धावा बोल दिया और रण-कौशल का प्रयोग करते हुए उनकी ओर आगे बढ़ गए। शीघ्र ही ये माओवादी दोनों दिशाओं और सामने की ओर से जवाबी गोलीबारी से घिर गए। सैन्यदलों की इस बहादुरीपूर्ण कार्रवाई ने माओवादियों को अपनी पोजीशन से पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। इससे पहले कि सैन्यदल माओवादियों का पीछा कर पाते, उनको उत्तरी कोयल नदी के पास पत्थरों और पेड़ों के पीछे तैनात माओवादियों के अचानक हमले ने चौंका दिया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, रेत के टीले के पीछे छिपे माओवादी अपनी दिशा से पीछे की ओर हट गए। माओवादी एलएमजी सहित अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग करते हुए अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। दूसरी ओर, दोनों किनारों के सैन्यदलों के पास गोलियों से बचने के लिए कोई उपयुक्त कवर नहीं था। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, श्री विकास जाखड़ ने कांस्टेबल/जीडी श्यामापदा रे को माओवादियों की गोलीबारी को दबाने के लिए अपनी एलएमजी से जबावी हमला करने का आदेश दिया। एलएमजी से सटीक गोलीबारी ने माओवादियों की गोलीबारी को थोड़ी देर के लिए शांत कर दिया। तथापि, दोनों दल कमांडर यह बात जानते थे कि वे अपने सैन्यदलों की रणनीतिक ढंग से कमजोर पोजीशन के कारण लम्बे समय तक स्थिति को नहीं संभाल सकते हैं। मौजूदा स्थिति में केवल दो विकल्प थे, या तो पीछे हट जाएं अथवा शत्रुओं के विरुद्ध साहसपूर्ण जवाबी हमला करें। दोनों विकल्पों के बीच, सैन्यदलों ने दूसरे विकल्प; शौर्य और बहादुरी को चुना। माओवादियों की भारी गोलाबारी के बीच खुले क्षेत्र में नदी के पार जाना एक निडरतापूर्ण कार्य था, जिसके भयंकर परिणाम हो सकते थे। सभी को दरकिनार करते हुए, करो और मरो की स्थिति में, सभी सावधानियों को नजरअंदाज करते हुए, श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट और श्री प्रतीक गुलिया ने अपने बहादुर कमांडो के साथ माओवादियों के विरुद्ध भयंकर जवाबी हमला शुरू कर दिया। सैन्यदल माओवादियों पर गोलीबारी करते हुए अपने कवर से बाहर आ गए और वे यूबीजीएल और एचई बम की सहायता से भारी गोलीबारी का प्रयोग करते हुए नदी के दूसरी ओर दौड़ पड़े। इसी समय, उप-निरीक्षक/जीडी मो. रियाज आलम अंसारी, कांस्टेबल/जीडी शिवपाल उइके, कांस्टेबल/जीडी तपस घोष और हेड कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र ने अपने सामने वाले माओवादियों पर सामने से हमला जारी रखा। उन्होंने नदी के बीच में से एक

माओवादी को मार गिराया। इसके अतिरिक्त, एक और आतंकवादी श्री विकास जाखड़, सहायक कमांडेंट की कमान में बायीं ओर के फायरिंग जोन में फंस गया और उनके द्वारा मार गिराया गया। इसी समय, दो अन्य माओवादियों ने हमारे सैन्यदलों पर गोलीबारी करते हुए पीछे की ओर दौड़ते हुए नदी को लगभग पार किया ही था कि उनको सैन्यदलों द्वारा गोली मार दी गई और वे किनारे के दूसरी ओर गिर गए। एक घायल माओवादी रेंगकर नदी के किनारे के नजदीक एक पत्थर के पीछे चला गया, उसने उसके पीछे पोजीशन ले ली और आगे बढ़ रहे सैन्यदलों, जो उत्तरी कोयल नदी के बहाव में प्रवेश कर चुके थे, पर जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। दायीं ओर के सैन्यदलों को घायल माओवादी की पोजीशन का पता चल गया। अवसर का लाभ उठाते हुए, श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट ने उप-निरीक्षक/जीडी सुमित कुमार के साथ घायल माओवादी पर गोलीबारी की और उसे मार गिराया।

सैन्यदलों द्वारा यूबीजीएल और एचई बमों की सहायता से भारी गोलीबारी के साथ की गई कार्रवाई ने माओवादियों को चकित कर दिया। सैन्यदलों ने माओवादियों को दूसरी ओर से प्रभावशाली जवाबी कार्रवाई करने का बिलकुल समय/अवसर न देते हुए लक्षित दिशापरक गोलीबारी जारी रखी। इस समय तक, दोनों दिशाओं के सैन्यदलों ने नदी को पार कर लिया था और उपलब्ध कवर के पीछे पोजीशन ले ली थी। कवर लेते समय श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट के दल पर उनके दायीं ओर के जंगल वाले हिस्से से माओवादियों द्वारा गोलीबारी की गई, जिससे वे बाल-बाल बच गए। श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट ने उप-निरीक्षक/जीडी सुमित कुमार, कांस्टेबल/जीडी संतोष उसके, कांस्टेबल/जीडी के. बिरेस्वर सिंह और कांस्टेबल/जीडी नीलू बाबू के साथ त्वरित कार्रवाई करते हुए माओवादियों पर गोलीबारी की और उसके बाद यूबीजीएल से हमला किया। इस आक्रामक जवाबी कार्रवाई ने माओवादियों को अपनी अति सुरक्षित पोजीशन और अपने एक काडर का शव भी छोड़ने पर विवश कर दिया। इसी बीच दूसरी ओर, सुरक्षा बलों को अपनी पोजीशन के नजदीक पाकर, माओवादियों ने श्री विकास जाखड़ के दल की ओर एक हैंड ग्रेनेड फेंका जो उनके नजदीक फट गया, परन्तु सैन्यदलों की त्वरित प्रतिक्रिया और शीघ्र कार्रवाई के कारण उन्हें कोई क्षति नहीं पहुंची। माओवादियों को कोई और अवसर न देते हुए, श्री विकास कुमार जाखड़ ने कांस्टेबल/जीडी मिलन सिंह नेताम और कांस्टेबल/जीडी सरोज कुमार मोहापात्रा के साथ माओवादियों पर बिलकुल निकट से हमला कर दिया। इस भयंकर हमले ने माओवादियों की सुरक्षा को ध्वस्त कर दिया और उनकी कार्रवाई को शांत कर दिया। वे अपने एक मृत काडर का शव छोड़कर भाग गए।

यह गंभीर और भयंकर बंदूक की लड़ाई लगभग 20 मिनट तक जारी रही, जिसमें सैन्यदलों ने अपने जीवन के प्रति आसन्न खतरे को नजरअंदाज करते हुए उत्तरी कोयल नदी के लगभग 200 मीटर चौड़े क्षेत्र में चलते हुए बहादुरी से गोलियों का सामना किया। सैन्यदलों ने भाग रहे माओवादियों का पीछा किया। रूक-रूक कर गोलीबारी लगभग 90 मिनट तक चलती रही। अंततः, सुरक्षा बलों के तीव्र आक्रमण एवं जवाबी कार्रवाई को देखते हुए, माओवादी घने जंगल की आड़ लेते हुए, अपने मृत काडरों, विस्फोटक/शस्त्र/गोलाबारूद का एक बड़ा जखीरा और अपने सामान को छोड़कर भाग गए। इस समय तक दल संख्या-1 और 16 वाला हमला दल-1 भी नदी की उत्तरी दिशा में पहुंच गया था। मुठभेड़ स्थल की सम्पूर्ण तलाशी में 6 शव, 7 हथियार और बहुत सा भिन्न-भिन्न प्रकार का गोलाबारूद बरामद हुआ। आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों की पूछताछ रिपोर्ट और आईबी रांची द्वारा किए गए अन्तरावरोधन से इस मुठभेड़ में एक और महिला माओवादी नामतः अनुप्रिया, गांव-कुमारी, पुलिस स्टेशन-विष्णुपुर, जिला-गुमला के मारे जाने की पुष्टि हुई।

इस अभियान के दौरान, सैन्यदल ने एक घमासान लड़ाई लड़ी और अपने जीवन के प्रति गंभीर और सन्निकट खतरे में अदम्य बहादुरी के कृत्य का प्रदर्शन किया। मिशन के प्रति यह अडिग प्रतिबद्धता और वह भी विपरीत परिस्थिति में, एक वास्तविक हिम्मत और शौर्य की गाथा है। कोबरा सैन्यदलों द्वारा कार्रवाई के माध्यम से दिए गए जोशपूर्ण और निर्णायक संदेश ने माओवादी क्षेत्र में कार्यरत सुरक्षा बलों के मनोबल को बढ़ाया है।

इस अभियान में, सर्व/श्री प्रतीक गुलिया, सहायक कमांडेंट, शिवपाल उइके, कांस्टेबल, तपस घोष, कांस्टेबल, मिलन सिंह नेताम, कांस्टेबल, के. बिरेस्वर सिंघा, कांस्टेबल, सुमित कुमार, उप-निरीक्षक, सुरेन्द्र, हेड कांस्टेबल, श्यामापदा रे, कांस्टेबल, सरोज कुमार मोहापात्रा, कांस्टेबल, संतोष उइके, कांस्टेबल और नीलू बाबू, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.11.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 169-प्रेज़/2018—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मिथिलेश कुमार,
   सहायक कमांडेंट
2. विश्वदीप कपिल,
   सहायक कमांडेंट
3. कन्नन के,
   कांस्टेबल
4. मृत्युंजय देबनाथ,
   कांस्टेबल
5. जयंत सेन,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पालकोट पुलिस स्टेशन, जिला-गुमला के अंतर्गत बोराडीह गांव के घने वन क्षेत्र में 20-25 सशस्त्र कॉडरों के साथ खूंखार माओवादी नेता आशीष (बीजेएसएसी सदस्य, 25 लाख रू. के इनामी) की मौजूदगी के संबंध में आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त होने पर, 209 कोबरा की विशेष टीमों द्वारा एक सर्जिकल अभियान की योजना बनाई गई और इसे शुरू किया गया। ऊबर-खाबड़ भारी वन आच्छादित पहाड़ी भू-भाग में पीक मानसून के मौसम में रास्ते पर आगे बढ़ने की जटिलता के अलावा सैन्य दलों द्वारा तय की जाने वाली दूरी, माओवादियों की अग्रिम चेतावनी प्रणाली, जिसे चकमा दिया जाना था, भारी बारूदी सुरंग युक्त तय किए जाने वाले पहुंच के रास्तों तथा चतुराई से तैनात संतरियों जिनकी आखों में धूल झोंकनी थी, को देखते हुए माओवादी दल पर उसके अपने अड्डे में घुसकर हमला करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। कार्य के दौरान गति, विस्मय तथा गोपनीयता को बनाए रखने के लिए, छोटी टीमों के साथ सर्जिकल अभियान चलाने का निर्णय लिया गया और इसलिए 209 कोबरा की 03 विशेष कार्रवाई टीमों (एसएटी) को अभियान को अंजाम देने का कार्य सौंपा गया।

तदनुसार, श्री मिथिलेश कुमार, एसी और श्री विश्वदीप कपिल, एसी की कमान में 209 कोबरा की दो विशेष कार्रवाई टीमों (एसएटी-I और एसएटी-II), जिसमें से प्रत्येक में 08 सैनिक थे (एसी-01, एसआई/जीडी-01, सीटी/जीडी-06), को माओवादियों पर हमला करने का कार्य सौंपा गया, जबकि, कमलेश सिंह, कमांडेंट की कमान में एसएटी- III (कमांडेंट-01, एसआई-01, एचसी/आरओ-01, सीटी/जीडीओ 6) को अभियान के दौरान सहायता उपलब्ध कराने के लिए तैनात किया गया। दिनांक 11/09/2016 को, एसएटी, नागरिक पैटर्न के हल्के वाहनों का उपयोग करके लक्षित क्षेत्र के लिए निकल पड़ीं और लगभग 1130 बजे लक्षित क्षेत्र के लगभग 05 किमी उत्तर में एक सुनसान स्थान पर उतर गईं। वहां से सैन्यदल जंगल के अंदर, छिपते हुए पैदल आगे चल पड़े। सैन्यदल को अभियान के लक्ष्य को हासिल करने के लिए घनी झाड़ियों, जल क्षेत्रों और पहाड़ी भूभाग से ढंके हुए स्थानों के बीच से होकर चलना पड़ा। इस तरह के दुर्गम इलाके में, सैन्यदल पारस्परिक सहयोग से समानांतर चल रहे थे और माओवादियों अथवा उनके संकेतों का पता लगाने के लिए जंगल की बारीकी से जांच कर रहे थे।

दिनांक 11/09/16 को, लगभग 1315 बजे, टीमें लक्षित क्षेत्र के पास पहुंच गईं और एक छोटी पहाड़ी-लॉक को सुरक्षित करने के बाद सैन्यदल ने क्षेत्र को उपयुक्त मुआयने के लिए निगरानी में रखा। लगभग 1445 बजे, जब सैन्यदल खतरनाक ढलानों पर चढ़ रहे थे और खुली दलदली भूमि में आगे बढ़ रहे थे, तब पत्थरों और विशाल पेड़ों के पीछे रक्षात्मक पोजीशन लिए हुए माओवादियों ने आगे बढ़ रहे सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। एसएटी के सैनिक खुले इलाके में माओवादियों के किलिंग जोन में फंस गए जहां पर आड़ लेने के लिए बहुत कम कवर उपलब्ध था। तुरंत कार्रवाई करते हुए, संख्या में माओवादियों से कम होने के बावजूद सैन्यदल हरकत में आ गए और माओवादियों की गोलीबारी का जवाब दिया। सैन्यदलों और माओवादियों के बीच एक भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। एसएटी के सैन्यदल को घेरने के लिए, जो कि संख्या में कम थे, माओवादी छोटे समूहों में बंट गए और उन्होंने मुठभेड़ स्थल के आसपास हावी हो सकने वाली जगहों को कवर करना शुरू कर दिया। पहले से लिए गए कवर का फायदा उठाते हुए, माओवादियों ने हमला करने वाले सैन्यदल पर आक्रमण करने की पैंतरेबाजी की। इस तरह की जीवन के लिए घातक स्थिति में, जहां पर कुछ ही विकल्प और कम समय

था, श्री मिथिलेश कुमार, एसी ने सीटी/जीडी मृत्युंजय देबनाथ के साथ मिलकर माओवादियों को आमने-सामने की लड़ाई में उलझा लिया। इसी बीच श्री विश्वदीप कपिल, एसी, कांस्टेबल कन्नन के. और कांस्टेबल जयंत सेन के साथ अन्य माओवादी दल को उलझाने के लिए आगे बढ़े, जो सैन्यदलों को घेरने का प्रयास कर रहे थे। गोलियों की बौछार के बीच, श्री मिथिलेश कुमार माओवादियों की पोजीशन के करीब पहुंच गए। सैनिकों को इतना नज़दीक देखकर, माओवादी ने श्री मिथिलेश कुमार, एसी को लक्ष्य बनाते हुए एक हैंड ग्रेनेड फेंका, परन्तु अपने युद्ध कौशल का उपयोग करके उन्होंने अपने आप को बचा लिया। माओवादियों के हमले को विफल करते हुए, श्री मिथिलेश कुमार, एसी ने माओवादियों पर और तीक्ष्ण हमला किया। दूसरी तरफ, माओवादियों की गोलीबारी से बिना डरे, श्री विश्वदीप कपिल, एसी और कांस्टेबल कन्नन के. ने माओवादियों से आमने-सामने की, लड़ाई की जबकि कांस्टेबल जयंत सेन ने विपरीत दिशा से उनपर धावा बोला और उन्होंने निकट से माओवादियों को उलझा दिया। असाधारण साहस और सामरिक श्रेष्ठता को प्रदर्शन करते हुए, श्री मिथिलेश कुमार, एसी और श्री विश्वदीप कपिल, एसी ने अपने बहादुर सैनिकों के साथ न केवल माओवादियों के हमले का जवाब दिया, बल्कि माओवादियों को पकड़ने के लिए आगे बढ़ना भी जारी रखा। सैन्यदल के वीरतापूर्ण कारनामे ने माओवादियों को उनकी किलाबंद पोजीशनों से धकेल दिया। गोलीबारी 1530 बजे तक जारी रही। मुठभेड़ के उपरांत तलाशी के दौरान, सैन्यदल को मुठभेड़ स्थल से इंसास राइफल के साथ एक माओवादी का शव मिला, जिसकी पहचान बाद में आशीष उर्फ बिजेंद्र यादव, बीजेएसएसी सदस्य (25 लाख रुपये के इनामी) के रूप में हुई। इसके अलावा, सैन्यदल ने मुठभेड़ स्थल से 01 एसएलआर, 01 स्प्रिंगफील्ड (यूएस राइफल), विविध गोला-बारूद, हैंड ग्रेनेड और अन्य विविध सामान बरामद किए।

अभियान में, सैन्यदलों ने दिए गए मिशन को पूरा करने के लिए प्रतिकूल वातावरण में दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया, जो सच्चे साहस और शौर्य की गाथा है। मुट्ठी भर उत्साही जंगल योद्धाओं ने माओवादियों के नापाक इरादों को निस्तब्ध और विफल कर दिया।

1. हथियार

क)	इंसास	:	01
ख)	एसएलआर	:	01
ग)	स्प्रिंग फील्ड	:	01

मैगजीन

क)	इंसास	:	04
ख)	एसएलआर	:	01

2. गोला बारूद (जिन्दा राउंड)

क)	आईएनएसए	:	186
ख)	एसएलआर	:	13
ग)	स्प्रिंग फील्ड	:	79
घ)	.202	:	01

3. खाली केस

क)	7.62x39 मिमी (एके-47)	:	05
ख)	इंसास	:	03
ग)	एसएलआर	:	01
घ)	स्प्रिंग फील्ड	:	02

4. डेटोनेटर

क)	इलेक्ट्रिक	:	05
ख)	गैर इलैक्ट्रिक	:	09

इस अभियान में, सर्व/श्री मिथिलेश कुमार, सहायक कमांडेंट, विश्वदीप कपिल, सहायक कमांडेंट, कन्नन के., कांस्टेबल, मृत्युंजय देबनाथ, कांस्टेबल और जयंत सेन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.09.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

———

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi the 5th December 2018

No. 116-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Tabu Ram Pegu
Addl. Superintendent of Police

02. Ramen Kalita
Constable

03. Hemanta Rajbongshi
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 28-08-2015 at about 9.45 PM, based on a specific information provided by the S.P., Chirang regarding the presence of a group of hardcore NDFB(S) cadres in village Oxiguri under Amguri P.S. Dist. Chirang, Shri Tabu Ram Pegu, APS, Addl. S.P.(HQ), Chirang alongwith PSOs and Assam Police Commandos swiftly arrived at Amguri P.S and promptly chalked out a plan alongwith the OC, Amguri P.S and officers of the 7th Sikh LI Regiment of Indian Army to nab the militants.

Thereafter, Shri Pegu alongwith the entire Ops team proceeded to the target village. In order to maintain the element of surprise, Shri Pegu decided to take an arduous and round about way to the target village in a soggy night. After walking for around 3 (three) hours amidst heavy downpour, the ops party arrived at the village Oxiguri at about 1.30 AM next day i.e. 29-08-2015. On arrival at the target village, Sheri Pegu laid an effective cordon to block all likely escape routes of the militants. At the first light down, Shri Pegu led the search operation alongwith a search party at the jungle area surrounding the village. At about 5.15 AM, the search party led by Shri Pegu noticed a group of suspected NDFB(S) cadres taking shelter in a bamboo grove and on being challenged, the militants opened indiscriminate fire upon the search party. Shri Pegu and his team immediately took cover and opened retaliatory fire in self defense. A heavy exchange of fire took place between both the sides. In the meantime, the militants started fleeing towards a paddy field nearby. Shri Pegu alongwith 02 (two) commandos, namely, Const.-369 Ramen Kalita and Const.-494 Hemanta Rajbongshi chased the militants fearlessly and engaged the militants in a close quarter firefight in a paddy field seriously injuring two militants of the NDFB(S) and recovered sophisticated arms and ammunition from their possession. The grievously injured two militants were immediately evacuated and rushed to the hospital, but succumbed to their injuries on the way to the hospital. An extensive search was carried out and the following arms/ammunition, empty cases & other articles were recovered from the place of the incident.

Recoveries:—

1) 01 (one) M-16 Rifle fitted with UBGL.

2) 04 (four) M-16 Magazine.

3) 100 (one hundred) rounds M-16 live ammunition.

4) 02 (two) nos. of Magazine Pouch.

5) 01 (one) AK Series Rifle.

6) 03 (three) nos. of AK Series Rifle Magazine.

7) 36 (thirty six) rounds AK Series Live Ammunition.

8) 01 (one) 7.65 mm Pistol.

9) 84 (eighty four) nos. empty cases.

10) 02 (two) nos. Polythene Sheet (Black Colour).

11) 02 (two) nos. Backpack Bag (Black Colour).

In the instant encounter, Shri Tabu Ram Pegu, APS alongwith Const. Ramen Kalita & Const. Hemanta Rajbongshi displayed exceptional courage and bravery in chasing the militants through bamboo groves while the militants were raining down bullets on them. Shri Pegu and the Commandos constantly kept changing their position and fought valiantly against

militants in close quarter knowing full well the grave danger to their lives. Shri Pegu kept his cool, maintained co-ordination with his ops party despite heavy gunfire and applied himself deftly to avoid casualty of his comrades.

In this operation, S/Shri Tabu Ram Pegu, Addl. Superintendent of Police, Ramen Kalita, Constable and Hemanta Rajbongshi, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/08/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 117-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Bihar Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Vinay Kumar Sharma
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13.04.2000 morning Shri Niraj Sinha, SP, Buxar who was about to proceed on leave already sanctioned, received a message that an encounter between police and criminals was going on in Village Jaitpur under Rajpur PS. He postponed his leave and with available armed force rushed to Jaitpura. On reaching there he was told about an information that in the house of one Kashi Rajbhar some heavily armed criminals were guarding a kidnapped person by the name of Tipan Singh. On receiving this information, the OC Rajpur PS with his force surrounded the suspected house and tried to get its door opened for searching it. The criminals hiding in the house fired at the police. The police had to resort to controlled intermittent firing in self defence. The intermittent exchange of fire between the criminals and police was continuing when Shri Sinha arrived at the place of occurrence. Firing was not only coming from the house of Kashi Rajbhar, but also occasionally from some adjoining houses, which indicated that the criminals were periodically moving between these houses. Inspite of the firing Shri Sinha moved around the place of occurrence, giving directions to the police party, where and in what manner they should take position and operate. Shri Sinha constituted a team which included Shri Anwar Hussain, Inspector Sanjay Kumar, SI Ajay Kumar Mishra & SI Sri Kant Ram to try to get the door of the house of Kashi Rajbhar opened, and briefed the team members regarding operational strategy and precautions. The team advanced cautiously, while Shri Sinha provided covering fire. Some terrified villagers fleeing the village secretly informed Shri Sinha that the criminals hiding in the village belonged to the notorious gang of Suresh Rajbhar which had committed several heinous crimes. The also informed that Jaitpura and neighboring villages were predominantly populated by people belonging to the caste of Suresh Rajbhar who had several supporters in these villages. So Shri Sinha cautioned the police parties to be extra vigilant. Immediately after darkness set in, the police parties suddenly came under extremely heavy firing from several directions. Shri Sinha immediately directed the police parties to take positions and to return fire. The police parties immediately returned the fire. Shri Sinha saw that a large number of armed supporters of the surrounded criminals had assembled in the crop fields outside village Jaitpura, and were firing heavily at the police. It was indeed an ordeal for the police. In the darkness and the awesome sounds of heavy firing from several directions, members of several police parties could not properly identify the places from which they were being fired upon. Most of the police personnel available there were not used to night firing . Shri Sinha ordered the police personnel to return the fire. Firing by the criminals within the village continued intermittently. Shri Sinha assessed that the criminals hiding in the village had taken very secure and fortified positions. Therefore firing was not likely to be successful in dislodging them from their positions. To force them to leave their positions grenades appeared to be necessary but the same was not available. Hence he requested for grenades over wireless. After midnight SP Rohtas Shri S.K. Singhal arrived with a police party equipped with grenades. In spite of intermittent firing by criminals in the darkness, Shri Sinha and Shri Singhal took up positions adjacent to and south of the place of occurrence. Throughout the night intermittent firing continued between the criminals and police. After dawn on 14.4.2000 a police team under Shri Sinha started the search of suspected houses. From the house of Kashi Rajbhat, Tipan Singh was recovered, who had been kidnapped for ransom by armed criminals. A country made rifle with a live bullet in its chamber, several empty cartridges, several police uniforms, a peak cap with IPS badge, a cap with CRPF badge and a rifle cleaning road were also recovered from the said house. Shri Tapan Singh informed that 5 armed criminals had kept him in the said house of which 2 criminals had escaped on 13.4.2000 when the police had arrived and the remaining 3 had escaped into a adjacent house using a ladder. When the police was advancing through a narrow alley towards the house of Vishwanath Rajbhar suddenly a volley of several arounds was fired at the police from inside the house. By the time the police could take cover, Constable Lalan Singh got hit by a bullet near his left elbow and Havildar Hira Prasad sustained firearm injuries below his left knee. The criminals

continued to fire heavily at the police from the said house. Shri Sinha decided to use grenades to dislodge the criminals from their positions. But these grenades did not have much impact. Then Shri Sinha decided to make holes in the walls of the room in which the criminals were hiding and insert grenades through these holes. While the criminals were kept engaged by covering fire, some officers including Inspector Kumar, SI AK Mishra, VK Sharma & SK Ram crawled to the house of Vishwanath Rajbhar and made holed in the walls. Then Shri Sinha, Shri Singhal and Constables Sudhir Kumar Singh, Ashok Kumar Singh, Ravinder Rai & Radhe Shyam Prasad equipped with grenades crawled and reached the said house taking advantage of covering fire. The criminals were also firing through the holes made in the walls. Facing grave danger to life, Shri Sinha & Shri Singhal and members of the grenade team threw four grenades through the holed made in the walls. But there was no response from inside the house. Thereafter the house of Vishwanath Rajbhar and adjacent houses were searched. In the Angan courtyard of the house of Vishwanath Rajbhar was found the dead body of one unknown criminal, with a regular DBBL gun, 12 live cartridges and several empties. In the sough-east room of this house were found the dead body of another unknown criminal alongwith a Mauser rifle, 170 live cartridges, 5 live other cartridges, a grenade, its fuse, and three explosive gelatin sticks. In the south-west room of the house were found the dead body of a third unknown criminal, along with two regular rifles, 107 live rifles cartridges and several empties.

In this operation, S/Shri Vinay Kumar Sharma, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2000.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 118-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhatishgarh Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Amol Kumar Xalxo
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on reliable intelligence input regarding presence of CPI (Maoist) cadres in the village of Keshkori of Distt. Kanker. Date 02-02-2016, a joint operation of DEF, STF and 140 Bn BSF was launched under the overall command of Inspector Shri Amol Xalxo. Shri Amol Xalxo devided the Ops party into two groups i.e. DEF/STF and BSF to cordon off the village from right and left flank respectively.

As the parties moved further towards Keshkori village, around 16.30 hrs, there was a sudden outburst of fire by heavily armed naxalites on the police party with an intention to inflict severe casualitites to the police personnel. The troop commander immediately alerted his men and ordered them to take position and tactfully adcvance towards the location of the naxals. The troop commander announced the identity of the troops and warned the naxalites to stop the indiscriminate firing. Inspite of repeated warning, the naxalites were heavily firing on the police party. The security forces re-grouped themselves into smaller units and tactfully advanced towards the location from where the naxalites were firing. In self defense, the troop commander along with his men opened fire.

In this important operation he performed systematic planning and Shri Amol kumar Xalxo, Inspector shown rare and exceptional example of courage, bravery, leadership qualities, devotion to duty. He guided all forces of joint party with systematic plan and skillful leadership. Amol Kumar Xalxo has been contributed a lot of naxali operation and got success also. Then his talent and characterable leadership compliance as per duty self sacrificing are also benefited for naxal operation and the police got many successes in naxali opration under xalxo leadership.

In this operation, Shri Amol Kumar Xalxo had showed a rare and exceptional example of courage, bravery, leadership qualities, devotion to duty for mother India.

In this operation, Shri Amol Kumar Xalxo, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/02/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 119-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhatishgarh Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajesh Devdas
Inspector

02. Anant Pradhan
Sub-Inspector

03. Mangal Majji
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04-08-2016 Superintendent of Police, Dantewada received information about the presence of Bhairamgarh area Commander Sanjay alongwith his Members. Information was gathred by Mangal Singh Majji, Constable of Special Intelligance Branch. Mangal Singh Majji informed S.P. Dantewada that 15-20 armed Maoists are present in the forest of village Kundar and they are planning to cross the Indravati river via Alnar and Kundenar. A Joint Team of Police party Comprising of Shri Rajesh Devdas, Inspector, SHO of P.S. Dantewada, Shri Vinod Eka,, Sub Inspector, Sangram Singh, ASI, Shri Bhisnisen Bharti and two Head Constables, 12 Constablse, 04 Asst. Constables of P.S. Faraspal and DRG of Dantewada ware deployed for effective cordon and twart the intentions of Maoists. S.P. Dantewada briefed the police party about the information and detailed instructions were given to the police party.

Police Party moved toward the target area and they laid ambush near Kunder on Kaccha Vally. On 05.08.2016 at around 05.45 hrs, some villagers spotted police party and alrted Maoists. Maoists started indiscriminately firing on Police Party. Police Party also relatiated with unprecedented valor and bravery. Inspector Shri Rajesh Devdas and Sub Inspector Anant Pradhan led the Police Party from the front and coordinated extensively with various police troops. Seeing the upper hand of police party Maoists retreated and escaped towards Mountain, taking advantage of dense forest. Two male and one female Maoists were neutrilised in the encounter Maoists were indentified as Fagu telam@ Nishant R/o Purmel, PS Mirtur, one muzzle loaded gun was recovered. Another was indentified as Ajit Muriya R/o Jagargunda (Member of Jagargunda LOS), One 0.315 bore country made rifle was recoved. Female Maoist was indentified as Manila@ Manki@ Geeta R/o Puslanka, PS Kutru (Member of NIB Company).

Inspector Rajesh Devdas and Sub Inspector Anant Pradhan displayed dauntless courage and extra ordinary valour under indiscriminate firing of Maoists. Their leadership was vital in cordoning the Maoists. It was due to their planning and quick decision making, forced Maoist to retreat and despite of large number of Maoists, no harm to police party was noticed.

It was only due to this specific information of Constable Mangal Majji of Special Intelligence Branch upon which Police party could inflict heavy damage to the Maoists and eliminated armed Maoists.

In this action Shri Rajesh Devdas, Inspector and Sh. Anant Pradhan, Sub Inspector provided exemplary leadership to his troops at the hour of crisis. When his party was attacked by Maoists he exhibited great presence of mind and superb operational sense. Shri Rajesh Devdas, Inspector and Shri Anant Pradhan, Sub Inspector fought without caring for their life, they motivated their men to defend each other, under their able guidance and leadership the police personnel kept moving forward to counter the naxal attack, knowing fully well that every step could have been fatal.

In this operation, S/Shri Rajesh Devdas, Inspector, Anant Pradhan, Sub-Inspector and Mangal Majji, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/08/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 120-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhatishgarh Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Raman Usendi
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Mr.Raman Usendi, Inspector joined Police force as Constable in the year 2004 and he was promoted Sub-Inspector in the year 2012 under One Time Promotion scheme. In the year Dec. 2015 and posted in the highly naxal affected area.

On 01.01.2016, 10:30 hrs DRG party reach the nearest hill of the Kutul and moving towards the Kutul . On the way they saw the armed Naxals on the other side of the hill. The D.R.G. force immediately decided to cordon the naxals by making more than one formation. On seeing the Police party approaching towards them, the naxals in order to cause casualty to the Police party started firing. The Police party replied the firing in the aim of self defence. On seeing the police party getting dominant the naxal started running in all directions. The D.R.G. party that chased the naxals and cordon them from all directions. On seeing this naxals started escaping towards the hill, taking away injured naxals along them stop the Police party, followed them and climbed the hill. On seeing this naxals again started firing, which was replied by firing from police side. Mr Raman Usendi Sub-Inspector along with his police formation followed the naxals, heavy exchange of fire took place and the above mentioned personal exhibited conspicuous gallant act and bravery under difficult circumstances. The naxals on seeing the dominance of Police party escaped in to the jungle. The police party Incharg Raman Usendi conducted searching in the area and two dead bodies of naxal named Lakhkhu Kwashi and Kamalu Dandamiand three naxals Chaitu Varda,Vikash Usendi and Narka varda are arrested. Police party recovered One 303 rifle, three 315 rifle three 12 bor rifle, one country made rifle (Bharmar), 35 round of 315 rifle, 6 round of S.L.R. rifle and other destructive materials, two black uniform etc. from the spot.

In this operation, Shri Raman Usendi, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/01/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 121-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhatishgarh Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Roshan Kaushik
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Inspector Roshan Kaushik displayed extraordinary courage and presence of mind during exchange of fire with the Naxalites on 05-10-2016 in the jungles of Distt. Narayanpur. Mr. Kaushik on receiving intelligence inputs, quickly briefed his team and left for the target area without any delay on 04-10-2016. He ensured that the team was fully equipped with arms-ammunitions and special equipments required for the anti-Naxal and search operation.

On 05-10-2016, as soon as Mr. Kaushik along with his team reached near the hill in Kundul-Gumchur area, the Naxalites, who were hiding near the hill, started firing on the police party with their automatic weapons like AK-47, LMG, INSAS, SLR etc. Mr. Kaushik, immediately instructed his troops to take proper cover and retaliate in self defence. Consequently, heavy firing took place between the Naxalites and the police party. In the mean time, the Naxalites fearing for their life, escaped to the hill side so that they could take advantage of the hill features.

Sensing this, Inspector Kaushik along with 4-5 policemen started moving forward by crawling while the bullets were shooting over them. The exchange of fire continued for about one hour and then ultimately the Naxalites fled away in the jungles. On searching the area, police party recovered one uniformed Naxal's dead body with INSAS Rifle-01, Bharmar-01, 315 Rifle-01. INSAS IMG Make-02, INSAS Rifle make-02, INSAS Round-46, Knife-01, Torch-01, Black Belt-01, camouflage cap-02, Flash Camera-02, Pauch-01 and other daily usages items were also recovered. No casualty was reported from the police party. It was later discovered that the exchange of fire had taken place with the Company Number 5 of the Naxalites which was heavily armed. The dead Naxalite was identified as it's platoon commander named Santu Pinem r/o Bhairamgarh (Bijapur). Thus, Inspector Roshan Kaushik who not only demonstrated his ability to lead from the front but also responded quickly without caring for his life.

In this operation, S/Shri Roshan Kaushik, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/10/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 122-Pres/2018—The President is pleased to award the 7th Bar to Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Sanjeev Kumar Yadav Deputy Commissioner of Police	(7th Bar to PMG)
02.	Lalit Mohan Negi Inspector	(2nd Bar to PMG)
03.	Hridaya Bhushan Inspector	(2nd Bar to PMG)
04.	Ramesh Chander Lamba Inspector	PMG
05.	Sukhbir Singh Sub Inspector	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The most desperate criminals of Delhi and Haryana namely Surender Malik @ Neetu Dabodha and Sandeep Chitania (since died in police encounter by Haryana Police on 17th May 2012 in Sonipat, Haryana) had escaped from Haryana Police custody on 2nd April, 2012 from Dwarka area, while they were being taken back to Bhondsi Jail after producing in Saket court.

Special Cell enhanced their efforts to arrest accused Surender Malik @ Neetu when it was revealed that they along with their associates namely Alok Gupta and one Kale killed Delhi Police Head Constable Ram Kishan posted at P.S. Kanjhawla, Delhi in the intervening night of 25/26.11.2012, who had stopped them at Jonti police picket in Kanjhawala, Delhi during picket checking. On 18.02.2013, an encounter took place between the joint teams of Special Cell and Punjab Police and accused Surinder Malik @ Neetu Dabodha @ Mohit and his associates in Sardoolgarh, Distt. Mansa, Punjab in which accused Neetu Dabodha received bullet injury but could succeed in his escape but his associate Dayanand r/o Haryana and three other local aides apprehended and accused Dayanand had also received bullet injury in the said encounter.

On 24.10.2013 specific input was received that accused Surinder Malik @ Neetu Dabodha and his associates, unknown in number, was expected to arrive in late evening hours somewhere near the petrol pump situated on the service road adjacent to Hotel Grand, Vasant Kunj, in a white Hyundai i-20 car bearing a Delhi number plate 3716. It was also informed that this visit of Neetu was to meet a contact for planning a sensational kidnapping for ransom of an unknown target. Accordingly a raid was organized to locate the suspected car of criminals and to apprehend them.

At about 10.30 PM the suspected car carrying three occupants was spotted near petrol pump. However the occupants fled away on link road going towards Hotel Grand to C-5 Block, Vasant Kunj with their car suspecting police presence. They were chased by Special Cell teams in different vehicles.

After a short follow-up the i-20 car of criminals was intercepted by ACP Manishi Chandra by his self driven Scorpio car by taking sharp left turn. The criminals, instead of applying brakes, dashed their i-20 car into Scorpio car. Immediately thereafter all the three criminals got down from their car and fled away in different directions. The criminals, sitting on the front left side fired upon the Scorpio car driven by Sh. Manishi Chandra, ACP and ran on the front, whereas its driver and the third occupant sitting on the rear seat fled on the back side towards Hotel Grand, while firing indiscriminately. In the meantime the team led by Inspr. Hriday Bhushan, SI Ravinder Joshi overtook the accidental i-20 car of suspected criminals & Scorpio car of police team and took position on the front of accidental cars and team members got down taking appropriate positions.

The criminal, later on identified as accused Surender Malik @ Neetu Dabodha, who ran on the front side of accidental vehicles after firing on Scorpio car was challenged by DCP Sanjeev Kumar Yadav and Inspr. Hriday Bhushan and other team members by disclosing their identities and asked him to surrender but instead, he started indiscriminate firing upon the police team members. Two of the gun shots fired by him hit SI Ravinder Joshi on his bullet proof jacket worn by him. In self defence and in order to save their lives, the police team members also fired upon the criminal, who got injured and fell down on the road side. One revolver make "Webley" was found lying beside him. After a short run, one of them crossed the road on left side and he was intercepted by the team of Inspr. Lalit Mohan Negi consisting of SI Sukhbir Singh & others. Inspr. Lalit Mohan Negi disclosed his identity and asked the criminal to surrender, but instead he opened

indiscriminate fire on the police team members and one of his gunshot fired by him hit on the bullet proof jacket worn by SI Sukhbir Singh. In self defence and in order to save their lives, the police team members also fired upon the criminal, who got injured and fell down on the road side. He was later identified as accused Alok Gupta r/o Kannauj (U.P), a close associate of accused Neetu Dabodha. One Steel colored pistol was found lying beside him.

The third criminal, who was running on the right side of the road going towards Hotel Grand and holding weapon in his hand, was intercepted by the team of Inspr. Ramesh Chander Lamba. Inspr. Ramesh Chander Lamba disclosed his identity to the suspected criminal and asked him to surrender but instead he started firing indiscriminate upon the police team members and one of the gun shot fired by him hit on the bullet proof jacket of Inspr. Ramesh Chander Lamba. In self defence and in order to save their lives, the police team members also fired upon the criminal, who got injured and fell down on the road side. He was later identified as accused Deepak Gupta r/o Uttam Nagar, Delhi, associate of accused Neetu Dabodha. One pistol on which "made in USA" was engraved, found lying beside him. All the three injured criminals were removed to AIIMS Trauma Center, where all the three were declared brought dead.

In this operation, S/Shri Sanjeev Kumar Yadav, Deputy Commissioner of Police, Lalit Mohan Negi, Inspector, Hridaya Bhushan, Inspector, Ramesh Chander Lamba, Inspector and Sukhbir Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/10/2013.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 123-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Neeva Jain, IPS Superintendent of Police	PMG
02.	Nasir Ahmed Addl. Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
03.	Kuljeet Singh Dupty Superintendent of Police	PMG
04.	Sanjeev Singh Slathia Inspector	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20/03/2015 at 6.15 an information was received at police control room Kathuwa that two heavily armed fidayeens wearing combat uniforms had entered Police Station Rajbagh and resorted to heavy firing thereby killing a sentry and a civilian on the spot. On receiving the information SP Kathua alongwith a team of officers which included Shri Nasir Ahmed, Addl. SP Kathua, Shri Mushim Ahmed Dy SP Hqrs, Kathua, Shri Kuljeet Singh, Dy SP DAR and Inspr. Sanjeev Slathia, SHO Kathua rushed to Police Station Rajbagh in minimum possible time, to counter the attack and prevent any further damage. On reaching the spot SP Kathua was briefed about the situation regarding presence of the fidayeens who were hiding inside the Police Station building by Shri Diwaker Singh, SDPO Border Chadwal. Different teams were constituted to cordon off the Police Station building so that the fidayeens do not escape from the building and all the exit routes were plugged immediately. Shri Dewaker Singh, SDPO Border Chadwal, and Inspr. Sanjeev Slathia, SHO P/S Kathua, along with their PSOs and other police men covered front side of the Police Station while Shri Mushim Ahmed, DySP Hqrs, Kathua and Shri Kuljeet Singh, DySP DAR Kathua, along with sufficient men covered the right side of the Police Station building where an escape route was detected, thus blocking any chances of escape by the fidayeens. In the meantime two parties were placed on left and back side of the Police Station building outside the boundary wall. SP Kathua alongwith Shri Nasir Ahmed, Addl. SP Kathua, went to the top of the adjacent building (Family quarters) to assess the situation as CRPF men who were on the 1st storey of the Police Station building had to be evacuated first without causing any damages. In the meantime heavy firing by the fidayeens continued from inside which was effectively retaliated by parties at front led by Shri

Dewaker Singh and Inspr. Sanjeev Slathia, SHO P/S Kathua and by Dy SP Hqrs. Kathua Shri Mushim Ahmed and Dy SP DAR, Shri Kuljeet Singh who were covering from the right side. While the parties led by Shri Dewaker Singh, SDPO Border, Chadwal and Inspr. Sanjeev Slathia from the front side and Shri Mushim Ahmed, Dy SP Hqrs. Kathua and Shri Kuljeet Singh, Dy SP DAR Kathua from the right side engaged the fidayeens by giving cover fire, the CRPF jawans who were trapped on the 1st floor of the Police Station building were evacuated safely. Upon questioning evacuated CRPF Jawans, it became clear that one fidayeens is hiding on Ist floor while the other was hiding on the ground floor. After the CRPF men were evacuated by SP Kathua and Addl SP Kathua Nasir Ahmed, a strategy was chalked along with other two team leaders Shri Dewaker Singh, SDPO Border Chadwal, Shri Mushim Ahmed, Dy SP Hqrs. Kathua, Shri Kuljeet Singh, Dy SP DAR Kathua and Inspr. Sanjeev Slathia. While SP Kathua and her party took positions giving covering fire, the boundary wall was punctured from 6 different locations on the two sides (front and the right side). But heavy firing continued from inside the Police Station building which was effectively retaliated through the punctured locations. The exchange of fire between fidayeens and Police teams continued for almost one-and-a half hour but the fidayeens were denied any chances of escaping. The terrorists were asked to surrender but they declined the offer by firing incessantly. The fidayeens were heavily armed who lobbed grenades and fired at the police party with the intention to kill. The police parties also retaliated the fire in self defence during the course of which tear gas shells and grenades were also lobbed by Shri Diwaker Singh, SDPO Border, Chadwal, Inspr. Sanjeev Slathia, SPO P/S Kathua, Shri Muslim Ahmed, Dy SP Hqrs. Kathua, Shri Kuljeet Singh Dy SP DAR Kathua. After some time firing from inside the building stopped and using the opportunity in a daring act, SP Kathua, Addl.SP Kathua, Dy SP Hqrs., Kathua and Dy SP DAR kathua dashed inside the Police Station gate in a BP bunker, while as Shri Dewaker Singh, SDPO Border, Chadwal and Inspr. Sanjeev Slathia ran towards SHOs office and barged inside through the window without caring for their lives. Showing great courage, Shri Diwaker Singh, SDPO Border Chadwal, Inspr. Sanjeev Slathia fired on the fidayeens from the SHOs office and injured the fidayeens who ran outside from the building firing indiscriminately, but the fidayeens came under heavy retaliatory fire from both sides by SP Kathua Neva Jain, IPS ,Shri Nasir Ahmed, Addl.SP Kathua, Shri Mushim Ahmed, Dy SP Hqrs., Kathua, Shri Kuljeet Singh, Dy SP DAR Kathua, Shri Diwaker Singh, SDPO Border, Chadwal and Inspr. Sanjeev Slathia from the other side. As a result, the fidayeen was neutralized. During the gunfight, Shri Diwaker Singh, SDPO Border was hit by a gunshot, however, Inspr. Sanjeev Slathia, SHO P/S Kathua, displayed great courage and without caring for his life evacuated Shri Diwaker Singh, SDPO Border, Chadwal from the encounter side. Moving tactically, Ms Neva Jain, IPS, SP Kathua, Shri Nasir Ahmed, Addl SP Kathua, Shri Mushim Ahmed, Dy SP Hqrs., Kathua and Shri Kuljeet Singh Dy SP DAR DPL Kathua proceeded towards the 1st floor of the Police Station, where the 2nd fidayeen was hiding and fired number of gun shots and lobbed grenades. The police parties displayed exemplary courage and in a daredevil manner not only evacuated 07 CRPF Jawans from the Police Station safely but also neutralized the two fidyeens, while their own lives in grave danger.

In this operation, S/Shri Neeva Jain, IPS, Superintendent of Police, Nasir Ahmed, Addl. Superintendent of Police, Kuljeet Singh, Dupty Superintendent of Police and Sanjeev Singh Slathia, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/03/2015.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 124-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ashish Kumar Mishra, IPS
Addl. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

During intervening night of 16/17-06-2016 at about 01:00 hours, Police Sopore acting on a specific input about the presence of two terrorist of HM outfit, in co-ordination with troops of 22-RR, 92 & 179 Battalions CRPF cordoned off the entire hamlet of Chaan Mohalla Bomai Sopore. All the possible escape routes were plugged off to ensure that hidden terrorists may not be provided any chance to break the cordon.

Next day in the wee hours, door to door search was started during which the target house was pin pointed by search party. In the meantime, it was noticed that some civilians were trapped in target area who were cautiously evacuated to safer places. However, in order to evacuate the residents from the target house a well planned strategy was evolved and all the family members were evacuated safely. After due deliberations the operation was carried forward and two advance parties led by Shri Javaid lqbal, SP PC, Srinagar and Shri Ashish Kumar Mishra-IPS SDPO Sopore including Showkat Ahmad Dar, KPS-116067 and Shri Ghulam Hassan, KPS-116210 and others were constituted respectively with a party of 22-RR which sealed the target house.

In the meantime, the police party led by Shri Javaid lqbal, SP PC Srinagar occupied the houses adjacent to the target house in front side while as the another party led by Shri Ashish Kumar Mishra-IPS occupied the houses in rear side of the target houses. Both the parties started zeroing the target from all directions. The holed up terrorists sensing noose around their neck started indiscriminate firing in order to break the cordon and escape from the scene. However, advance parties led by Shri Javaid Iqbal, SP PC Srinagar and Shri Ashish Kumar Mishra-IPS SDPO Sopore including Showkat Ahmad Dar and Shri Ghulam Hassan and others exhibited extra ordinary courage and bravery retaliated the fire effectively which triggered a face to face gun battle. The gun battle lasted for some time and culminated with the elimination of two holed up terrorists later identified as Altaf Ahmad Mir S/o Abdul Rashid Mir R/o Brath Kalan, Sopore and lmtiyaz Ahmad Lone S/o Ab. Khaliq Lone R/o Wasun Khui Pattan, Baramulla. A huge cache of Arms ammunition was recovered from encounter site and case FIR No. 62/2016 U/S 307 RPC & 7/27 I.A Act stands registered in Police Station Sopore in this regard.

The professionalism coupled with outstanding courage displayed by Shri Javaid Iqbal, SP PC, Srinagar & Shri Ashish Kumar Mishra-IPS, of assault party with accurate presence of mind in demanding situation, simultaneously reaching target extremely in aggressive situation was truly gallant by all definitions and means. The operation was extremely surgical with no damage of civilians though the miscreants had started stone pelting upon the security forces who were manning the outer cordon and the situation was extremely disarray in both fronts viz-a-viz eliminating the terrorists and dealing with stone pelters.

In this operation, S/Shri Ashish Kumar Mishra, IPS, Addl. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/06/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 125-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Fayaz Hussain Shah
Dupty Superintendent of Police

02. Ab. Rehman
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wee hours of 23-06-2016 an input was received and developed regarding presence of terrorists in Waterkhani Drugmulla area of District Kupwara. A joint operation was planned and launched by District Police, Kupwara and 47 RR, Police component led by Shri Aijaz Ahmad SSP Kupwara, Shri Fayaz Hussain ASP, Kupwara, Shri Fayaz Hussain, DySP (Hqr's) Kupwara, SHO Kupwara and I/C PP Drugmulla. The search was intensified and additional troops and Police personnel were inducted in the cordon and search operation. Terrorists who were hiding in a stone quarry at Waterkhani fired indiscriminately upon the search party in order to break the cordon and escape from the scene. The search party was enough vigilant and remained unharmed during the attack. They effectively retaliated the fire, thus successfully engaged the terrorists who were positioned in a stone quarry surrounded by dense forest trees.

In the meantime, a tactical plan was chalked out based on the ground realities by Supervisory Officer. Shri Fayaz Hussain, Dy SP (Hqrs), Kupwara and HC Abdul Rehman No 136/KP and a few other officials volunteered themselves to be part of the assault team. DySP Sh. Fayaz Hussain exhibited quality leadership and led the team close to the target during which they faced stiff resistance from the hidden terrorists, but the team held steel nerves and repulsed the fire tactfully and succeeded in zeroing three terrorists. Later assault team headed by Shri Fayaz Hussain, DySP (Hqrs), Kupwara and HC Abdul Rehman 136/KP moved close to the target and finally eliminated the three terrorist one by one. The operation ended without any collateral damage which exhibits quality leadership of the DySP Sh. Fayaz Hussain and selfless devotion and dedication by all team members especially by HC Ab. Rehman. Investigation conducted revealed that all the three terrorists belonged to LeT outfit and had recently infiltrated into this side. These terrorists were planning to target security forces and police establishments.

During the operation, the role of Sh Fayaz Hussain Dy SP, (Hqrs), Kupwara and HC Ab Rehman remained audacious, selfless and commendable. Both fought from the front without caring for their lives. Their quality leadership, selfless devotion, bravery and camaraderie has been instrumental in elimination of these 03 hard core terrorists.

In this operation, S/Shri Fayaz Hussain Shah, Dupty Superintendent of Police and Ab. Rehman, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/06/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 126-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mohd. Hussain Wani
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On a specific information generated by Police Handwara regarding presence of terrorist, a joint operation was planned/executed by Police Handwara with the assistance of 21-RR at Wudder Bala Village and adjoining forest areas on 23-06-2016. After establishing the presence of hidden terrorist, target area was further zeroed to prevent his escape. On noticing the presence of operational men, hidden terrorist started indiscriminate firing which created a chaos among the civilians present in the area. However, lnspr Tariq Ahmad No.4483/NGO and HC Mohd Hussain No.182/H volunteered themselves to take the responsibility of evacuating trapped civilians. Despite hostile situation, they exhibited extra ordinary courage and bravery and succeeded in evacuating the trapped civilians amidst volley of fire.

In the meantime, for result oriented operation, on spot assault teams were constituted headed by lnspr. Tariq Ahmad including HC Mohd Hussain who again volunteered themselves for the task and directed assault teams to march towards hiding terrorist in various directions thus tightened cordon further and swiftly retaliated the terrorist attack. As the terrorist was heavily armed and highly trained, he started indiscriminate firing on the assault teams and lobbed several grenades thus making the-task more difficult for the assault teams to move forward. However, lnspr Tariq Ahmad and HC Mohd Hussain without caring for their personal lives, exhibiting nerve of steel marched towards dreaded terrorist in a fire retaliatory action and reached in close proximity of the hiding terrorist. The assault teams provided cover fire to them during the final assault upon the hiding terrorist resulting elimination of holed-up terrorist later identified as Zubair R/o PaK. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No 233/2016 U/S 307, 7/27 A Act stands registered in PS Handwara in this regard.

In the entire operation lnspr. Tariq Ahmad and HC Mohd Hussain displayed matchless courage and selfless devotion to duty of highest order and ensured safe evacuation of the civilians. The exemplary initiatives exhibited by them resulted in successful culmination of the operation without any collateral damage.

In this operation, Shri Mohd. Hussain Wani, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/06/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 127-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dawood Ayoub
Addl. Superintendent of Police

02. Rayees Ahmad Bhat
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.09.2016, on the basis of specific information regarding presence of Fidayeen terrorist in the house of Sher Ahmed Cheechi S/O Shah Zaman of Chak Mohalla Chapran Aragam, a joint cordon/search operation was launched at about 2300 hours by Police Bandipora alongwith troops of 13 RR and 3rd Battalion CRPF, under the supervision of SSP Bandipora.

For result oriented operation, two advance teams, one headed by Shri Dawood Ayub ASP Bandipore and Major H.N. Suanlian of 13 RR and second headed by Mir Murtaza Hussain DySP PC. Bandipore and Major Sunil Singh of 13 RR were constituted and target house was effectively zeroed. While as the CRPF 3rd Battalion alongwith components of Police was assigned to lay outermost cordon in law and order attire to check the entry of miscreants in target area.

In the meantime, hidden terrorist on noticing the movement of operational men started indiscriminate firing in order to break the cordon and escape from the scene. However, priority was to evacuate trapped civilians from target and adjacent houses. To evacuate these civilians, teams headed by Shri Dawood Ayub ASP Bandipore assisted by Constable Rayees Ahmed No.353/Bpr and Mir Murtaza Hussain DySP. P.C Bandipore started evacuation process and succeeded in evacuating all trapped civilians under the cover fire provided by other operational mates. It was herculean task which recommendees without caring for their lives completed, despite hostile circumstances, volley of fire from holed-up terrorists.

Now the critical phase was to neutralization holed-up terrorists. Before launching final assault, holed-up terrorist was asked to surrender but he refused and started indiscriminate firing. However, Shri Dawood Ayub, ASP Bandipore alongwith constable Rayees Ahmed, Major H.N. Suanlian of 13 RR alongwith his team, Mir Murtaza Hussain Dy.S.P. P.C. Bandipora alongwith S.I. Gurdeep Singh and Major Sunil Singh of 13 RR with his team from different directions started to storm the target house. As the advance teams from all directions reached near the target house, holed-up terrorist started firing which resulted in face to face gun battle. The gun battle lasted for some time and culminated with the elimination of holed-up terrorists later identified as @ Hafiz R/O Pakistan. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and in this regard, case FIR No 36/2016 U/S 307 RPC, 13 U.L.A. Act, 7/27 I.A Act stands registered at PS Aragam.

In this operation, S/Shri Dawood Ayoub, Addl. Superintendent of Police and Rayees Ahmad Bhat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/09/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 128-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gawhar Ahmad Khan
Dupty Superintendent of Police

02. Irshad Ahmed Wani
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On a specific information about presence of terrorists by Police Pattan at Goushbugh on 17-09-2013, an operation was planned by SP Baramulla/DySP (Ops) Pattan with 29 RR. After planning the operation, joint teams of police/Army rushed to Goshbugh Pattan and carried out cordon and search operation of the area. Gawhar Ahmad, DySP(Ops) Pattan who was searching a part of the suspected area, sensed that the terrorists are hiding in Higher Secondary School Goshbugh and immediately instructed his party not to get inside the building to avoid any civilian/SF casualty. DySP Gawhar Ahmad, framed a rescue team of a few police personnel included Ct. Irshad Ahmed 840/IR-7th Bn and led it from the front. Two separate joint rescue parties of Police/Army were also framed who got engaged in rescuing the civilians from houses, adjacent to target Building. As soon as DySP Gawhar Ahmad and his men approached the target site, they were fired upon by terrorists. However, no retaliation was made to avoid civilian casualties and efforts were made to get close to the room where terrorists were hiding. Soon after the evacuation exercise, a joint assault party was prepared and one such party comprising of DySP Gawhar Ahmad/Ct. Irshad Ahmed 7th Bn and others were assigned the role of room intervention. Both the assault parties under the outer covering support of joint operation teams, went very close to building which lead to intense gun battle. In the first instance, terrorists lobbed grenades and opened volley of fire and tried to break the cordon. However, DySP Gawhar Ahmad and his men remained committed and did not allow the terrorists to come out of the building and break the cordon. The fierce firefight between the assault parties and terrorists remained continuing for hours together during which Dy

SP Gawhar Ahmad and his team showed high order camaraderie and retaliated the fire from a very close distance. The officer accompanied by Ct. Irshad Ahmed 7th Bn and others intensified the retaliation which lead to their intervention in the building and further advancement to the room where terrorists were hiding. The officer without caring for his life opened volley of fires towards the room where terrorists were hiding and there was immediate retaliation on part of terrorists. The close range gun battle between DySP Gawhar Ahmad, Ct. Irshad Ahmed 7th Bn and terrorists took place for more than 15 Minutes which lead to elimination of two local terrorists of HM Outfit who were latter on identified as Aquib Rashid Sofi @Yaqoob R/o Sofi Mohallah Palhallan Pattan, "C" Category terrorist of HM outfit and Bilal Ahmed Bhat R/o New Colony Palhallan Pattan of HM outfit. Arms/ammunition have been recovered from slain terrorists. For the incident, Case FIR No 174/2013 U/S 307, RPC, 7/27 I.A.Act stands registered in Police Station Sumbal. It may be mentioned that both the slain terrorists were active in Pattan and Sopore area of District Baramulla for a long period and had developed a rein of terror among the people/Main stream Political workers/Sarpanches of the said area. These terrorists were great threat for VIPs, Security forces and police agencies and were also motivating youth to join terrorists ranks.

In this operation, S/Shri Gawhar Ahmad Khan, Dupty Superintendent of Police and Irshad Ahmed Wani, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/09/2013.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 129-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Ajaz Ahmed Dupty Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02.	Bilal Ahmad Parray SGCT	PMG
03.	Javed Ahmad Khan Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10-10-2016, Supervisor J&K EDI Pampore informed Police Station Pampore that fire had broken out in the attic of the hostel building of J&K EDI. Accordingly, after informing the Fire & Emergency Service department, Police team from PS Pampore rushed to the spot. In the meantime when the officials of Fire & Emergency Service were combating the fire, they were fired upon by terrorists of Fidayeen group, who were hiding in the said complex. As soon as the information was shared with higher ups, Police with the assistance of 50-RR & 110 Battalion CRPF cordoned off the entire complex.

After ensuring the concrete cordon, hidden terrorists were asked to surrender which they declined. For result oriented operation and to avoid collateral damages, a comprehensive plan was chalked out under the supervision of Shri Mohammad Zaid, SSP Awantipora and to ensure that no civilian is trapped in target area, besides, to neutralize the trapped terrorists, Shri Mohammad Zaid KPS, SSP Awantipora, Shri. Ajaz Ahmad-KPS, Dy.SP(PC) Pampore, Shri Manzoor Ahmad, (Inspr) SHO P/S Pampore and SI Madasar Naseer No. 438/PAU with a police party consisting upon Sgct. Mohammad Yaseen No. 527/Awt, Sgct. Hans Raj No. 366/IR 12th Bn, Sgct. Nisar Hussain No. 499/AP 9th, Sgct. Faizan Ullah No. 529/Awt, Sgct. Bilal Ahmad No. 263/Awt, Sgct. Karnail Singh No. 776/IR 5th Bn, Ct. Tanveer Ahmad No. 670/Awt, Ct. Zahid Ahmad No. 582/Awt, Ct. Shameem Ahmad No. 455/Awt, Ct. Manzoor Ahmad No. 445/Awt alongwith 12 SPOs started zeroing the target from all directions. While they entered the complex, holed up terrorists started indiscriminate firing in order to inflict casualties and to break the cordon. However, advance team which included recommendees exhibited extra ordinary courage/determination and retaliated the fire effectively. A face to face fire fight triggered which lasted for three days and culminated with the elimination of holed up terrorists. One Army personnel of 9 Para got injured during the encounter. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No.177/2016, U/S 436,307,7/27 A.Act, 16, 18, and 20 of ULA (P) Act stands registered in Police Station Pampore in this regard.

In this operation, S/Shri Ajaz Ahmed, Dupty Superintendent of Police, Bilal Ahmad Parray, SGCT and Javed Ahmad Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/10/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 130-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ashaq Hussain Para
Inspector

02. Mohd. Iqbal
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/02/2016, a specific information was received regarding presence of terrorists in Village Marsari of Chowkibal area. Accordingly, a joint operation was planned/launched by Police Kupwara in collaboration with 41 RR & 16 Grenadiers under the supervision of Shri Aijaz Ahmed, SSP Kupwara. After establishing of cordon in entire hamlet, search operation was started and it was ascertained that terrorists had taken shelter in an abandoned house belonging to Mohammad Qasim Wani. While the cordon around the target house was being established, hidden terrorists on noticing the presence of operational men started indiscriminate firing followed by grenade lobbing which resulted in injuries to six Army men. However, fire was retaliated by advance party which included Shri Ashaq Hussain, EXK-001757, SHO Kralpora and SI Mohd lqbal, ARP-109315 and holed up terrorists were not provided any chance to break the cordon and flee from the spot.

The utmost priority at that time was to evacuate the injured Army men and advance team which included recommendees in few attempts under the cover fire provided by other team mates succeeded in evacuating injured Army men. But unfortunately Sepoy Sahadan Maruti Morey, No. 15228018-H and Nk Sikander Shenker Chandra Bhan No. 2799285W of 41 RR succumbed to their injuries.

As it was getting dark, operation was suspended for next day after ensuring all measures including tightening of cordon and illumination of target area. During night hours, holed up terrorists made several attempts to break the cordon, but they were not provided any chance to succeed. Next day, for final assault, holed up terrorists were engaged by operational troops from front side and the team which included Shri Ashiq Hussain, lnspr, SHO P/S Kralproa and SI Mohd. lqbal No. 109/PAU striked from back side which triggered a face to face gun fight which concluded with elimination of 05 hardcore terrorists later identified as Fahad, Maaz, Hafiz, and Chota Dujana & Ukasha. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No. 0/2016 u/s 307 RPC, 7/27 A Act stands registered in PS, Kralpora in this regard. It is worth mentioning that slain terrorists were active in Kupwara district since 2013 and were involved in number of terror attacks.

In this operation, S/Shri Ashaq Hussain Para, Inspector and Mohd Iqbal, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/02/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 131-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sayed Sajad Hussain (1st Bar to PMG)
Dupty Superintendent of Police

02. Sandeep Bhat PMG
Dupty Superintendent of Police

03. Kuldeep Kumar Koul — PMG
Sub-Inspector

04. Lakhbir Singh — PMG
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05.12.2014, an input was received by ESU Rajbagh about possible Fidayeen attack by LeT in Srinagar City before the visit of Hon'ble Prime Minister of India. Accordingly, SI Mohd. Altaf 3642/S, I/C ESU Rajbagh alongwith his team activated the sources and Naka was laid down at Awantibhawan on 90 feet road by teams comprising of SP City South Srinagar, I/C ESU South Srinagar alongwith their men, PC Srinagar and Police party of SP Hazratbal Srinagar under the overall supervision of SSP Srinagar.

At about 1300 hours, a Santro was intercepted by Naka men, on noticing the presence of Naka parties, two armed terrorists came down and started indiscriminate firing upon Naka party and later on rushed towards Awantabawan residential area. Accordingly reinforcement was called by SSP Srinagar and the operation was launched at 1325 hours. Before launching the operation, teams were constituted to lay the-cordon of the area. All the operational, nafri were divided into three parties, first, party comprised the nafri of Hazratbal Zone and nafri of CRPF 144 Bn F-Coy laid the outer cordon, second party headed by DySP Furqan Qadir comprising of Police component Srinagar cordoned some houses of the Mohalla, whereas the third party headed by Shridhar Patil, SP, City South Srinagar comprising of Dy.SP Ops Syed Sajad Hussain, DySP (Ops) Sandeep Bhat, SI Kuldeep Koul ARP-046125, SI Mohammad Irfan EXK-109318, HC Farooq Ahmad 309/AP7th , Ct. (Now HC) Lakhbir Singh 1446/S, Sgct Tariq Ahmad 142/S and others laid the inner cordon of the houses where terrorists were hiding.

At that stage DIG CKR Srinagar, Shri Afhadul Mujtaba-IPS who was the Incharge of the operational parties further constituted two small parties, one was headed by Dy.SP Syed Sajad Hussain, assisted by DySP Ops Sandeep Bhat, ASI Ather Pervaiz 2084/PW, Sgct Tariq Ahmad 142/S and others, the second party headed by Shridhar Patil-IPS, SP City South comprising of SI Kuldeep Koul ARP-046125, SI Mohd. Irfan EXK-109318, HC Farooq Ahmad 309/AP7th, Ct. (Now HC) Lakhbir Singh 1444/S and others. As soon as the second party tried to enter the Mohalla, the terrorists lobbed grenades which exploded without causing any damage. However, the team headed by Shridhar Patil-IPS, SP South tactfully and without caring for their lives evacuated the inmates from the nearby houses. But here the terrorists again started indiscriminate firing in an attempt to break the cordon and run away. However, both the parties headed by Shridhar Patil and DySP Syed Sajad Hussain reached the target point and retaliated the fire effectively by showing highest Gallantry action and successfully eliminated both these terrorists who were later on identified as Qari Asrar R/O Pakistan and Shahid Ul Islam Malik @ Hassan S/O Mohammad Shafi Malik R/O Eidgah Mohallah Arwani, Bijbehara. From the site of encounter AK-47 rifle 02 Nos, Magazine AK 06 Nos, Grenade 01 No, Pouch 02 Nos and Rounds of AK-47=27no's were recovered. In this regard, a case FIR No. 133/2014 U/S 307 RPC, 7/27 I.A Act has been registered in P/S Soura Srinagar.

In the instant operation, the role of Shridhar Patil IPS SP South Srinagar, DySP Syed Sajad Hussain, Dy.SP Sandeep Bhat, SI Kuldeep Koul ARP-046125, and Ct. (Now HC) Lakhbir Singh 1446/S remained extra ordinary since the generation of information till its culmination. During entire operation these personnel remained determinant despite hostile circumstances.

In this operation, S/Shri Sayed Sajad Hussain, Dupty Superintendent of Police, Sandeep Bhat, Dupty Superintendent of Police, Kuldeep Kumar Koul, Sub-Inspector and Lakbir Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/12/2014.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 132-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Mir Murtaza Hussain Sohil — (1st Bar to PMG)
Dupty Superintendent of Police

02. Rashid Akber Makayee — (1st Bar to PMG)
Dupty Superintendent of Police

03.	Aijaz Ahmad Bhat Constable	PMG
04.	Altaf Nazir Shah Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22.11.2016, on the basis of specific information regarding presence of foreign terrorists of Fidayeen squad in Bonkhan Mohalla Hajin, who were planning for terror strike in the area, cordon was established with assistance of 13-RR and 45th Battalion CRPF under the overall supervision of SP Bandipora. During search operation, target area was pinpointed and zeroed by team consisting upon Police and troops of Army including Shri Dawood Ayub, ASP Bandipora, Mir Murtaza Hussain DYSP PC Banipora, Rashid Akber SDPO Sumbal headed by Shri Zulfikar Azad, SP Bandipora.

After zeroing the target from all side, advance party under the overall supervision of Shri Sheikh Zulafikar Azad, SP Bandipora and Col. Vikram Jeet Singh CO 13 RR was divided into two teams, one headed by Shri Dawood Ayub, ASP Bandipora, Rashid Akber SDPO Sumbal, Major P.K. Pathak of 13 RR including, Const Altaf Nazir, EXK-111724, Const Mohd Ashraf, ARP-078304 & others, this team was assigned to lay cordon from Northern to Southern sides of the target while as the second team under the command of Mir Murtaza Hussain DySP, P.C. Bandipora, Major Malay Baidya of 13 RR, including Const. Aijaz Ahmad, ARP-078317 Const. Tawseef Ahmad, EXK-116732 & others was assigned to lay cordon from Eastern to Western sides of the target. The manpower of 45th Battalion CRPF in collaboration with Police was assigned cordon and law & order duties.

In the meantime, hidden terrorists on sensing noose around their neck started indiscriminate firing. However, it was noticed that some civilians have got trapped in target area. The job of evacuation of trapped civilians were assigned to above constituted teams under the supervision of Shri Zulfikar Azad, SP Bandipora. The teams under safety cover, provided by other operational men, succeeded in evacuating the trapped civilians in several attempts. After evacuation process, the critical phase was to neutralize the holed up terrorists. Before launching final assault, holed up terrorists were asked to surrender which they declined instead resorted to indiscriminate firing and grenade lobbing. To neutralize them teams comprising of Shri Dawood Ayub Addl.S.P. Bandipora, Rashid Akber SDPO Sumbal with his men including Constable Altaf Nazir No. 836/BPR, Constable Tawseef Ahmed No. 446/BPR and Major P.K. Pathak of 13 RR with his men including Mir Murtaza Hussain Dy.S.P, P.C. Bandipora, constables namely Constable Aijaz Ahmed No. 560/IRP 8th Bn. and Constable Mohd Ashraf No. 569/IRP 8th Bn. and Major Malay Baidya of 13 RR headed by Shri Sheikh Zulafikar Azad, SP Bandipore & Col. Vikram Jeet Singh CO 13 RR started zeroing the target from all directions which triggered face to face gun battle and culminated with elimination of holed up terrorists later identified @ Ali and @ Baber of LeT outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No.72/2016 U/S 307 RPC, 7/27/I.A.Act stands registered at P/S Hajin in this regard.

During entire operation, Shri Sheikh Zulafkar Azad (SP Bandipora), Shri Dawood Ayub (Addl.S.P Bandipora), Shri Mir Murtaza Hussain (Dy.S.P. P.C. Bandipora), Shri Rashid Akber (SDPO Sumbal), Constable Aijaz Ahmed No. 560/IRP 8th Bn., Constable Mohd Ashraf No. 569/IRP 8th Bn., Constable Tawseef Ahmed No. 446/BPR and Constable Altaf Nazir No. 836/BPR exhibited extra ordinary courage, determination, gallant action in evacuation of trapped civilians and in neutralizing of holed up terrorists.

It is in place to mention here that Mir Murtaza Hussain Sohil,DySP PC Bandipora also played exemplary role in the operation carried out on 10.01.2017 at Parray Mohalla Hajin Bandipora in which one foreign LeT outfit terrorist namely Abu Mavia R/o Pak "A" category was killed and Shri Rashid Akber Makayee, DySP SDPO Sumbal also participated in the operation carried out on 19.01.2017 at Khos Mohalla Hajin Bandipora in which one foreign LeT Divisional Commander namely Abu Musaib @ Musa @ Maaz "A+" category was killed.

In this operation, S/Shri Mir Murtaza Hussain Sohil, Dupty Superintendent of Police, Rashid Akber Makayee, Dupty Superintendent of Police, Aijaz Ahmad Bhat, Constable and Altaf Nazir Shah, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 133-Pres/2018—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Harmeet Singh Superintendent of Police	(2nd Bar to PMG)
02.	Zia-Ur-Rehman Sub-Inspector	PMG
03.	Sajad Ahmed Khan SGCT	PMG
04.	Dawood Ahmed Bhat Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

During intervening night of 13/14.12.2016 at about 01:00 AM acting on tip, regarding presence of one Pak terrorist Commander of LeT outfit, Police Sopore in collaboration with 92/177 and 179 Battalions CRPF cordoned off the entire hamlet of village Doni Mohalla, Edipora, Bomai. The troops of 22 RR also joined the operation later on. After ensuring the chink proof cordon, it was prime priority to evacuate the civilians from target area and for the purpose, a joint advance team of Police and troops of Army which included SI Zia-ur-Rehman No. ARP-109257, SI Parveen Kumar No. ARP-085601, Const. Mohd Younis No. 743/Spr, EXK-118709 and Const. Ab Rashid No. 548/Spr, EXK-107833, Sgct. Sajad Ahmad No. 3666/PW and Ct. Dawood Ahmad No. 09/Spr, was formed in overall supervision of Shri Harmeet Singh-SP Sopore was constituted. The team exhibited highest degree of professionalism and courage in evacuating the trapped civilians from target area till wee hours.

In the wee hours, during search operation location of hidden terrorist was pin pointed, who on noticing the presence of operational men started indiscriminate firing. However, advance party which included recommendees retaliated the fire effectively which triggered a fierce gun battle. The holed up terrorist was in good position to prolong the operation till dark hours so as to manage his escape. However, advance team which included SI Zia-ur-Rehman , Si Parveen Kumar, Const. Mohd Younis, and Const. Ab Rashid, Sgct. Sajad Ahmad, Ct. Dawood Ahmad, led by Shri Harmeet Singh, SP-Sopore, started zeroing the target further in order to storm the target house. When advance party which included recommendees managed to reach in compound of target house, holed up terrorist once again resorted to indiscriminate firing and came down to first floor of the target house. However, advance party which included recommendees remained determinant like a rock and retaliated the fire effectively. The face to face fire fight culminated with the elimination of holed up terrorist later identified as Abu Bakr R/o Pak, Divisional Commander of Let for North Kashmir. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No. 151/2016 U/S 307/RPC, 7/27 A. Act stands registered in P/S Bomai in this regard. It is worth mentioning that the slain terrorist was functioning as Divisional Commander for LeT in North Kashmir and was managing fresh infiltrations, besides, facilitating infiltrators and providing them support till they could reach their places of operation. During the entire operation Shri Harmeet Singh, SP Sopore, SI Zia-ur-Rehman, SI Parveen Kumar, Const. Mohd Younis and Const. Ab Rashid, Sgct. Sajad Ahmad, Ct. Dawood Ahmad exhibited a conspicuous role of bravery & camaraderie. Shri Harmeet Singh, SP Sopore exhibited the highest degree of leadership in extremely hostile situation.

In this operation, S/Shri Harmeet Singh, Superintendent of Police, Zia-Ur-Rehman, Sub-Inspector, Sajad Ahmad Khan, SGCT and Dawood Ahmad Bhat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/12/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 134-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Shahnawaz Ahmad Paday Asstt. Sub Inspector	(1st Bar to PMG)

02. Farooq Ahmad Dar — PMG
Head Constable

03. Nisar Ahmad — PMG
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

During intervening night of 06/07-05-2016, Police Awantipora received a specific information regarding presence of terrorists in the house of Gh Hassan Shergojri of village Panzgam. Accordingly, target house was cordoned off by Police Pulwama & Srinagar with the assistance of 55 RR/130 Bn CRPF. Two assault teams, one headed by Shri Shridhar Patil-IPS, SP Awantipora and another by Shri Sandeep Chaudhary-IPS, SP (PC) Srinagar were framed. After zeroing the target house, family members were asked to come out. However, hidden terrorists started indiscriminate firing and family members got stuck in ground floor of the target house. Before retaliation, the holed up terrorists were asked to surrender and allow the family members to come out. However, they denied and fired indiscriminately. For safe evacuation of family members, advance team headed by Sh. Shridhar Patil-IPS, SP Awantipora entered the house followed by heavy volume of fire from holed up terrorists. Police party headed by Shri Shandeep Chaudhary-IPS, SP(PC) Srinagar, ASI Shahnawaz Ahmad No. 3656/S, HC Farooq Ahmad No. 309/AP 7th, Sgct Zahoor Ahmad No. 1070/S, Sgct Shabir Ahmad No. 1506/S, Ct. Mukhtar Ahmad No. 4546/S, Ct Mehraj Ud-Din No. 3172/S, Ct. Showkat Ahmad No. 1070/S, Ct. Mohammad Altaf No. 4529/S, Ct. Mohammad Shafi No. 4535/S, Foll. Fayaz Ahmad No. 89/F IR 2nd alongwith 05 SPOs kept the terrorists above their head, engaged in firing while as Shri Shridhar Patil-IPS, SP Awantipora alongwith ASI Manzoor Ahmad No. 223/Awt, ASI Irshad Ahmad No. 346/Awt, Sgct. Mohammad Aslam No. 811-IR 11th, Sgct Altaf Ahmad No. 804/PL, Ct Sartaj Ahmad No. 629/Awt, Ct. Shabir Ahmad No. 597-IR 11th Bn, Ct Nisar Ahmad No. 805/AP 12th Bn alongwith 08 SPOs proceeded meticulously for room intervention. On seeing police party proceeding ahead, one of the terrorist volunteered as Fidayeen, came out of the house covertly from back window and positioned himself against the wall of the building where from he could easily target the police party who were about to enter the house. SP Police Component Srinagar noticed the terrorist and in a fraction of second confronted him alongwith 05 SPOs and shot him dead in a brief firefight. The party headed by SP Awantipora entered the house cautiously however, they were challenged by another terrorist who was in the corridor. The police party took shield behind the staircase and retaliated the fire. Ct. Nisar Ahmad No. 805/AP 12th Bn was hit by a bullet in the initial assault near the chest but luckily no damage occurred as he was wearing bullet proof gadgets. In the brief exchange of fire, the terrorist got killed in the corridor. Later, all the family members were safely evacuated. After evacuation of the civilians, a room intervention party comprising upon ASI lrshad Ahmad, Sgct Mohammad Aslam , Sgct. Altaf Ahmad, Ct. Sartaj Ahmad, Ct. Shabir Ahmd, Ct Nisar Ahmad along with 08 SPOs headed by SP Awantipora entered into the house under the cover of fire. Abruptly the terrorist inside the house fired upon the party during effective retaliation, the said terrorist was also killed. All the three slain terrorists were identified as lshfaq Hamid Dar S/o Ab Hamid Dar R/o Dogripora (A category), Haseeb Ahmad Pal S/o Gul Pal R/o Braw Bandina (A category) and Ishfaq Baba S/o Gh Qadir Baba R/o Tahab Pulwama (B category) . Case FIR No.60/2016 U/S 307 RPC, 7/27 A.Act stands registered in police station Awantipora in this regard.

In this operation, S/Shri Shahnawaz Ahmad Paddy, Asst. Sub Inspector, Farooq Ahmad Dar, Head Constable and Nisar Ahmad, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 07/05/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 135-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dawood Ayoub — (1st Bar to PMG)
Addl. Superintendent of Police

02. Gurdeep Singh — (1st Bar to PMG)
Inspector

03. Nisar Ahmad Dar — PMG
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19.01.2017, based on a specific information regarding presence of some foreign terrorists in Khos Mohalla, Hajin, having the intensions to carry out fidayeen attack in nearby Police/Army establishment. The information was shared with Army 13 RR and CRPF 45 BN and accordingly joint Cordon/search operation was launched at about 0700 hours by SOG Bandipora, Police team from Police Station Hajin, Army 13 RR and CRPF 45 Bn. under the overall supervision of SP Bandipora . The Police teams were led by Shri Sheikh Zulafkar Azad SP Bandipora, Shri Dawood Ayub, Addl.S.P. Bandipora, Mir Murtaza Hussain Dy.S.P. P.C. Bandipora and Rashid Akber SDPO Sumbal. The operational parties used their tactical acumen to reach to the target area without getting exposed. Initially two composite squads of Army/Police were constituted for laying close/strong cordon of the suspected area. One operational team under the command of Shri Dawood Ayub, Addl.S.P. Bandipora, Rashid Akber, SDPO, Sumbal and Major Bishal Singh Thapa of 13 RR were assigned to lay cordon from North to South of the target area covering western side while as, the second operational team under the command of Mir Murtaza Hussain Dy.S.P. P.C. Bandipora, and Major Amit Gour of 31 RR were assigned to lay cordon from North to South of target area covering the Eastern side of the suspected area under the overall command and supervision of SP Bandipora and Col. Vikram Jeet Singh CO 13 RR. During cordon, the composite force components i.e Police/Army established greater coordination through and hence acted in a very synchronized/professional manner. While as, the CRPF 45 Bn team and another Police party were assigned to lay outermost cordon in law and order mode. As the cordon was laid, the terrorists hiding in the adjacent area fired indiscriminately upon the operational parties. It was, thus, herculean task for the operational parties to evacuate the civilians who got entrapped. Therefore, two teams were constituted for the purpose. One team under the command and control of Addl.S.P. Bandipora and SDPO Sumba' and other team under the command of Dy.S.P. P.C. Bandipora. It was an uphill task for these parties to evacuate the trapped civilians for which Addl. SP Bandipora and SDPO Sumbal alongwith their buddy. DYSP PC Bandipora Dy.S.P. probationary Saqib Gani, SI. Gurdeep Singh ARP-046132 alongwith his buddy HC Nisar Ahmad and Constable Vikas Sharma/IRP 8th Bn. moved to close proximity of the target area that is the adjoining area from where the hiding terrorists were regularly firing .After successful evacuation of civilians, the third and most critical phase was the neutralization of hiding terrorists. The terrorists were challenged to surrender but they striked back with volley of fire and grenade lobbying. An anti fidayeen (anti suicidal) squads comprising of Addl.S.P. Bandipora and SDPO Sumbal, SI. Gurdeep Singh alongwith HC Nisar Ahmad and Major Bishal Singh Thapa of 13 RR with his buddy and Dy.S.P. P.C. Bandipora and alongwith his buddy and Major Amit Gaur of 31 RR with his buddy under the overall command and supervision of Shri Sheikh Zulafkar Azad, SP, Bandipora and Col. Vikram Jeet Singh CO 13 RR were constituted. Both these volunteered operational teams stormed the target area. The terrorists tried to run away towards protesters in order to escape. The cordon was intensified and BP vehicles were positioned on the road to foil his movement. The said terrorist sensing himself to be trapped, took position in the street and resorted heavy firing on the forces which caused bullet injuries to one SOG jawan namely Ct. Vikas Sharma and damage to mini forces vehicles. The fire was effectively retaliated by the joint forces and in the ensuing gun battle, one foreign terrorist of Lashkar-e-Taiba was killed. The Slain terrorists was Divisional Commander of Lashkar-e-Taiba namely Abu Musaib @ Musa @ Maaz A+ category terrorists. Arms/Ammunition recovered from the possession of the slain terrorists. Case FIR NO. 04/2017 U/S 307,148,149,336,353 RPC, 7/27 I.A Act stands registered at P.S. Hajin in this regard. Arms/ammunition recovered during the operation includes one AK-56 Rifle, 03 Nos of AK-56 Magazines(02 Damaged), 66 AK-56 live Cartridges, 03 Nos of Chinese Grenades and 01 Pouch.

In this operation, S/Shri Dawood Ayoub, Addl. Superintendent of Police, Gurdeep Singh, Inspector and Nisar Ahmad Dar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/01/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 136-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu &Kashmir Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Farooq Ahmad Mantoo
Head Constable

02. Reyaz Ahmad
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based upon a specific intelligence input regarding presence of foreign terrorists in general area of Drusoo Rafiabad , Police Sopore in collaboration with 22-RR, contingents of 179, 177 & 92 Bn. CRPF launched a cordon and search operation at Village Drusoo Jageer, Rafiabad on 09-11-2016 at about 1500 hours. During search operation it was ascertained that terrorists are hiding in shrine of Sakhi Sarwar and are foreign terrorists, fully equipped with sophisticated weapon. As the civilians were busy in their fields adjacent to target area, there were apprehensions of collateral damages/civilian casualties.

Keeping in view circumstantial perspective, a joint team of Police/Army led by Shri Showkat Ahmad—KPS, No. 116067-KPS, Dy.SP(Ops), Sopore including HC Farooq Ahmad No. 24/Spr, PID No. 012574 & Sgct Reyaz_Ahmad, No. 2923/S, PID No. EXK-971469 was constituted and the evacuation process of civilians from the target area was started. The team in few attempts succeeded in complete evacuation of civilians. After evacuation process, target was further zeroed and hidden terrorists were asked to surrender, but they opened indiscriminate firing. However, the advance operational teams, included recommendees retaliated the fire effectively, which triggered a face to face firefight. The joint team of Police/Army including HC Farooq Ahmad & Sgct Reyaz Ahmad led by Shri Showkat Ahmad—KPS, Dy.SP (Ops) Sopore remained on forefront while fighting with the holed up terrorists. In the meantime, advance team which included recommendees started zeroing the target by advancing from all directions towards the target. Sensing noose around their neck, holed up terrorists came out from the Shrine showering bullets. However, the joint team led by Shri Showkat Ahmad, Dy.SP (Ops) Sopore including HC Farooq Ahmad & Sgct Reyaz Ahmad, exhibiting extra ordinary courage and bravery remained determinant and face to face gun battle culminated with the elimination of holed up terrorists later identified as Mustafa and Ali Rs/o Pak of LeT outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No.115/2016 U/S 7/25 A Act stands registered in PS Dangiwacha in this regard.

It is worth mentioning that the slain terrorists were active in the area since long and were involved in number of terrorist related incidents. They were also involved in luring the youth towards terrorist ranks.

During the entire operation Shri Showkat Ahmad, Dy.SP (Ops) Sopore , HC Farooq Ahmad & Sgct Reyaz Ahmad played a conspicuous role of bravery and ensured the safe evacuation of the innocent civilians. The officer exhibited the highest standards of leadership in a critical time and ensured that no collateral damage takes place. Besides providing operation command, by sheer amount of his professionalism, devotion to duty, leadership qualities showed rare bravery in such volatile situations.

In this operation, S/Shri Farooq Ahmad mantoo, Head Constable and Reyaz Ahmad, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 137-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Shitalkumar Anilkumar Doijad
Police Sub Inspector

02. Harshad Baban Kale
Police Sub Inspector

03. Prabhakar Rangaji Madavi
Naik Police Constable

04. Mahesh Dattu Jakewar
Police Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10.01.2016, the Additional S.P. Bijapur Shri I.K.Elesela along with 79 police personnel arrived at S.P.S. Damrancha by Helicopter. As per the plan, on 11.01.2016 under the leadership of Shri Elesela, commandos belonging to Chattisgarh state and Special Operation Squad (C 60) set out from S.P.S. Damrancha. This party crossed over the river Indravati and proceeded through the forest areas of village Sandra, Gartul and Kokera. Another party headed by PSI Doijad along with P.S.I. Kale and Staff of S.P.S. Damrancha and commanods of Special Operation Squad aided by commandos of

Chattisgarh State proceeded towards village Chintarveli and crossed the river Indravati. Thereafter, this party marched via Sandra, via Arepalli combing through the forest.

As these parties were patrolling in the forest, at around 1000 hrs. They were ambushed by armed naxalites belonging to National Park Area Committee. The naxalites opened indiscriminate fire at the police in order to kill them and thereafter snatch away their arms and ammunition. In self defence, the police retaliated by firing in the direction of naxalites. P.S.I. Doijad noticed some armed naxalited clad in olive green uniform carrying pittus on their back. Accordingly, he alerted P.S.I. Kale and at the same time opened the fire at these naxalites. His gallant act boosted the morale of other police men who were also with him and they too retaliated bravely. The additional S.P., Shri Elesela and P.C. Mallaya Pendam too noticed the naxalites and at once took position in the forest and then began to advance. But the naxalites opened a volley fire at them and compelled them to stick to their positions.

Since the party headed by additional S.P., Shri Elesela and Mallaya Pendam came under intense attack of naxalites, P.S.I. Doijad, PSI Kale, NPC/939 Prabhakar Madavi, PC/5413 Mahesh Jakkewar risking their lives rushed to the aid of Shri Elesela by opening counter attack to the naxalites. PSI Doijad gave cover fire to P.S.I. Kale as result P.S.I. Kale could reach to the additional S.P. The naxalites were heard calling aloud to their comrades by name Dilip, Rainu, Roshan, Mangu and asking them to surround the police and kill them. The police personnel appealed to the naxalites for surrender but they did not pay any heed. And the naxalites continued firing at the direction of police party.

P.S.I. Doijad, P.S.I. Kale, Prabhakar Madavi, Mahesh Jakkewar they all displayed extraordinary courage on the battle field. Because of their bravery and presence of mind in the midst of gun fire, the ambush laid by the naxalites could be broken and precious lives of other police men could be saved. The naxalites suffered a setback and began to retreat. The encounter between the police and the naxalites lasted for two hours and the naxalites fled away taking cover of dense forest. The Chattisgarh police fired 230 rounds and the Gadchiroli police fired 625 rounds in this encounter.

The sound of the gun fire from the direction of the naxalites having subsided, the police conducted a search of the above place of incident. During the search, the police recovered the following viz., Insas rifle-1, magazine-3, Burmar gun-1, steel container-1, battery sets-2, radio sets-1, pittus-6, 1 meter wire, wrist watch, naxal dangri, naxal literature, magazine box, etc. from the place of incident. Also, the police found two dead bodies of naxalites (including one woman naxalite) lying close to the above items.

In this operation, S/Shri Shitalkumar Anilkumar Doijad, Police Sub Inspector, Harshad Baban Kale, Police Sub Inspector, Prabhakar Rangaji Madavi, Naik Police Constable and Mahesh Dattu Jakewar, Police Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/01/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 138-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ajitkumar Bhagvan Patil
Police Sub Inspector

02. Tikaram Sampatary Katenge
Naik Police Constable

03. Rajendra Shriram Tadami
Police Constable

04. Somnath Shrimant Pawar
Police Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02/01/2017 at around 07.00 hrs in the evening, PSI Ajitkumar Patil along with party commander Tikaram Katenge and other 23 policemen set out from Gadchiroli for conducting an anti naxal operation in the forest of Wadgaon under sub division Kurkheda. They all reached village Kosmi and thereafter halted for the night in the nearby forest. From 03/01/2017 to 04/01/2017, the party conducted search operation in the forest of Kisneli, Wadgaon, Botezari, Harketola and then made night halt at the forest of Narkasa.

On 05/01/2017, while the police party was conducting anti naxal operation in the forest of Wadgaon, at around 1500 hrs, they were suddenly attacked by 10 to 12 armed naxalites. The naxalites had surrounded the group of policemen headed by party commander Tikaram Katenge and they were indiscriminately firing at them with an intention of snatching away arms and ammunition after having killed the policemen. Hence, PSI Ajitkumar Patil and his men took position on the ground and observed at the direction of assaults.

Upon which they were convinced that the attackers belonged to CPI (Maoist) group of naxalites which is a banned terrorist organization. Hearing the sound of gun fire, PSI Patil instructed the other policemen over the walkie-talkie sets namely Rajendra Tadami, Somnath Pawar to rush towards the direction of attackers also alongwith other policemen advanced to the direction of fire risking his lives. PSI Patil appealed to the naxalites loudly for surrendering before the police. The naxalites did not pay heed to the appeals and kept firing at the direction of police. The naxalites were heard telling among themselves "Pankaj, Soni and Madhu you people cover from right direction; Suraj and Kamli you two cover the police from left side: do not let go of the policemen; eliminate everybody." PSI Patil alongwith his men began to flank the naxalites from southern side and party commander Tikaram Katenge began to flank the naxalites from northern side by putting their own lives in great dangerous in the midst of firing and thus they could successfully retrieve the trapped policemen from the killing zone of naxalites. In such a fearful situation the policemen belonging to both the groups did not flinch back out of fear and countered the naxalites bravely. Thereafter, sensing mounting police pressure the naxalites retreated back into forest taking cover of hilly areas and thick forest. The encounter lasted for above 15 to 20 minutes.

After the firing had stopped coming from the direction of naxalites, PSI Patil gathered all the men at a place and enquired of them. PC Rajendra Tadami had received minor injury while the rest of the policemen were safe and unharmed. Then following proper SOP (Special Operating System) the police party conducted a search of the place of incident. During the search, one injured woman naxalite lying unconscious was found by the police. Also, one .303 rifle alongwith one magazine and sealing, three rounds of .303 rifle, one green colored pittu, naxal literature, etc. were recovered from the place of incident.

During the encounter the police party fired following quantity of ammunition viz. Ak-m-49 rounds, SLR-22 rounds and Insas rifle-03 rounds. The injured and unconscious woman naxalite alongwith the articles seized from the place of incident was placed in a mine protective vehicle (MPV) and carried to the general hospital, Gadchiroli for treatment. The medical officer examined the body of the woman naxalite and declared her to be dead.

In this encounter PSI Ajitkumar Bhagvan Patil, NPC Tikaram Katenge, PC Somnath Pawar and PC Rajendra Tadami all of them belonging to the Special Operation Squad (C-60) Gadchiroli have displayed extra ordinary courage and valour while fighting, the armed naxalites by putting their own lives into great danger. Because of the bravery, tactics and dedication towards their duty as shown by the above police personnel, one hardcore woman naxalite could be eliminate by the police.

In this operation, S/Shri Ajitkumar Bhagvan Patil, Police Sub Inspector, Tikaram Sampatray Katenge, Naik Police Constable, Rajendra Shriram Tadami, Police Constable and Somnath Shrimant Pawar, Police Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/01/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 139-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Vivekanand Singh, IPS SDPO	(1st Bar to PMG)
02.	Gopison R Marak Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Vivekanand Singh, IPS, Sub-Divisional Police Officer, Dadenggre received a source information on 26th July 2015 morning, that six (6) suspected ASAK militants were camping at Darenchigre/Ganarugre jungle area and planning to abduct someone. The officer who was camping at Phulbari at that time immediately rushed to Tikrikilla Police Station along with Shri R. A. Sangma, CI Phulbari and team.

The operation team left Tikrikilla PS and as per plan, the cordon team under SI B. Hajong, O/C Tikrikilla PS cordoned the whole area to the extent possible. Simultaneously, the assault team consisting of Shri Vivekanand Singh, IPS, Inspector R A Sangma, ABC Gopison R Marak, ABC Simseng Marak, ABC Rakesh Prasad, ABC D Rabha along with Major Romi Singh and three other army personnel started moving towards the target location tactically and stealthily as it was broad daylight. The terrain was hilly with thick jungle and it was raining heavily. Shri Vivekanand Singh was leading the assault team with ABC/394 Gopison R Marak moving at No. 2 position. As the assault team moved towards the target,at about 4:30 PM Shri Vivekanand Singh, IPS saw around 5-6 heavily armed militants and immediately alerted the team to take cover. However, the sentry of the militant group, armed with automatic assault rifle who was hiding in thick jungle, saw him and suddenly opened indiscriminate fire. Both Shri Vivekanand Singh and Gopison R Marak did not flinch at the sudden fire but fired back and also ordered the assault team to return fire. Despite heavy exchange of fire Shri Vivekanand Singh and Gopison R Marak started moving towards the militants tactically and engaged them in an intense gun battle which lasted for over 10 minutes. Shri Vivekanand Singh and Gopison R Marak did not relent in facing the militants and kept on firing without least concern for personal safety. As a result, one dreaded militants named (L) Silseng D Sangma (27) S/o Monsu Sangma, R/o Nogorpara, PO-Hollaidanga, Dist-West Garo Hills, Meghalaya was neutralized on the spot. The deceased was a ASAK militant and had been a menace in the area for a very long time.The operation was executed extra-ordinarily without any injury or casualty to the Police personnel or public. The operation was meticulously planned and perfectly executed. Shri Vivekanand Singh, IPS, SDPO and Gopison R Marak showed extreme courage in face of danger to their life, and tactical skills during the operation.

In this operation, S/Shri Vivekanand Singh, IPS, SDPO and Gopison R Marak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/07/2015.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 140-Pres/2018—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	T C Chacko Dupty Superintendent of Police	(2nd Bar to PMG)
02.	Tony M Sangma Sub-Inspector	PMG
03.	Phil Dkhar Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Source information about the general location of the joint general camp/training camp of Garo National Liberation Army (GNLA)and United Liberation Front of Assarn (ULFA) deep inside the Durama Range was received on 05/04/2015. Accordingly a plan of action was drawn up to locate and destroy the camp. As per the reports received, there were about 90(ninety) cadres of the ULFA/GNLA undergoing training along with many new recruits of the GNLA outfit. One senior ULFA cadre by the name of Irian was reportedly present in the camp to oversee the training of its cadres.

Accordingly, a plan of action was drawn up in which a strong team comprising of SWAT personnel would enter from Durabanda and proceed towards the suspected location to seek and destroy the camp.

As per the plan a team of 43(forty three) SWAT personnel under the command of Shri T.C Chacko, MPS, Dy.SP, inducted at 11:30 pm on 06/04/2015. In order to keep the secrecy and surprise, the team inducted from Durabanda village, South Garo Hills' District, vertically climbing the Nokrek peak (Highest peak in Meghalaya) cross country and after traversing about 15(fifteen) hours cross country reached the suspected area. On reaching the area, the team heard sounds of people and tell-tale signs of camp nearby. Accordingly, a team under the leadership of SI Tony M Sangma was sent towards the western side of the suspected camp to cut off/flank the camp and another team approached the area from the eastern side. After moving ahead for a while it was realized that the attack party took a larger flank and there was a cliff between the camp and the attack party. Since it was day light and chances Of exposure was more in calling the party back to take a different

route and to attack the militants from a direction which will drive them towards the cut off, the team commander with 2(two) SWAT boys dared to proceed from a different direction to the camp and taking cover of the two SWAT commandos who were behind him approached towards the camp. On reaching about 20 meters to the camp, a group of heavily armed militants consisting of both GNLA and ULFA opened fire at the approaching party. Shri T.C Chacko with the help of the covering party daringly retaliated killing one ULFA militant, identified later as (L) Rambilash Koch @ Kantrang @ Pijak s/o Panchat Koch of village Soraigaon, P.O. Rairnona, District-Kokrajhar (from the identity card recovered), and injuring a number of them. The entire militants numbering about 90(ninety) after a fierce gun battle fled towards the cut off party. Seeing police again there, the fleeing militants fired upon the police party under the leadership of SI Ronald Nongrum. SI Ronald Nongrum assisted by BNC/624 Phil Dkhar and others further attacked them from their positions daring the incessant firing from the militants and injured many of the militants.

One 7.65 mm pistol with 1(one) round in its chamber and 3(three) rounds in the magazine in a cocked condition was recovered from the slain ULFA militant. On search of the area various items including IED, wireless sets etc were recovered and seized. Apart from the items seized many other items like 90(ninety) Nos. of back packs, camouflage dresses, 70(seventy) Nos. of dummy rifles used for training, many bags of rice, blankets, magazine pouches, clothing, personnel belongings, cooking utensils, generator set etc. and 12(twelve) huts/barracks spread over in an area of about 1 (one) square kilometres were also discovered and destroyed.

Later on, it was confirmed from both technical and human intelligence that 3(three) more injured militants died in the jungle and many of them suffered serious injuries.

In this operation, S/Shri T C Chacko, Dupty Superintendent of Police, Tony M Sangma, Sub-Inspector and Phil Dkhar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/04/2015.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 141-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:—

	NAME & RANK OF THE OFFICERS S/Shri	
01.	Niranjan Sahu Addl. Superintendent of Police	PMG
02.	Umesh Kumar Singh Sub-Inspector	PMG
03.	Haribandhu Kirsani Constable	PMG
04.	Bhisma Karuan Constable	PMG
05.	Samanta Majhi Constable	(1st Bar to PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11.04.2017, reliable information received regarding criminal conspiracy of members of banned CPI(Maoist) organization of Koraput Division in Dhayagurha forest area under highly Maoist infested Narayanpatna, Koraput District, to blast and destroy the State Highway connecting Laxmipur to Parvatipuram targeting to kill the security forces moving on this road by blasting of IEDs.

On intervening night of 11-12.04.2017, DVF and SOG small team No. 04 under the leadership of Sri Niranjan Sahu, Addl. S.P Operation, Koraput was sent for an anti-Maoist operation to apprehend the banned organization. When the team reached the forest area, the armed Maoists resorted to sudden unprovoked firing from automatic weapons and mounted a flanking attack, making the police team vulnerable heavy fire from different directions and hurled grenades causing injuries to two SOG commandos Bhisma Karuan and Samanta Majhi. Unwavered by the firing, the team under leadership of Niranjan

Sahu, Addl. S.P Operation retaliated valiantly despite numerical disadvantage and severe terrain limitations with total disregard to personal safety. Niranjan Sahu, Addl. S.P Operation along with commando Haribandhu Kirsani charged the Maoists in a very risky frontal attack braving heavy fire and forced the Maoist to retreat. Another small team consisting of SI(A) Umesh Kumar Singh, Bhisma Karuan, Samanta Majhi, countered by a flanking attack from the right side and fearlessly took on the Maoist. Team leader Niranjan Sahu, Addl. S.P Operation, Koraput and four commandos rose to the occasion against overwhelming odds and put on an inspiring fight against a numerically superior and tactically better placed enemy. Their act led to the death of one lady Maoist cadre Padma @ Kantamani Hereka (ACM) of Nandapur Area Committee of Koraput Division and recovery of Live IEDs-2,SBBL Gun-1, SBML Gun-1, Detonator-3, Walkie talkie-1 and other camp items. On 12.05.2017 two ACM ranked hardcore Maoists of same EOF group, Sonu and Divya of Koraput Division surrendered before Koraput police. During interrogation, Sonu revealed that other than Padma @ Kantamani Hereka (ACM) one more lady Maoist namely Tuburi Mandangi (ACM) of Koraput Division had also died in the same EOF.

The brave and valiant act wrecked havoc in the enemy lines neutralized two lady Maoist cadres and also thwarted the evil designs of the Maoists and prevented a major violent incident.

In this operation, S/Shri Niranjan Sahu, Addl. Superintendent of Police, Umesh Kumar Singh, Sub-Inspector, Haribandhu Kirsani, Constable, Bhisma Karuan, Constable and Samanta Majhi, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12.04.2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 142-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rakesh Kumar Swain
Constable

02. Ajay Behera
Constable

03. Jyoti Kumar Kiro
Sergeant

04. Soumya Ranjan Dash
Dy. Subedar

05. Dhaneswar Majhi
Constable

06. Bhakta Priya Sahoo
Havildar

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15.09.2016 based on a reliable and real-time intelligence input of Sh. Dhaneswar Majhi, Ct who put his life in sake and remain at Jungle and nearby areas on the previous night to confirm the intelligence, and in the early morning Sh. Dhaneswar Majhi confirmed the presence of a group of armed cadres of banned CP.I.(Maoist) at Phulbari Reserve Forest near village Katlang under Bijepur PS, Dist: Kalahandi having definite plans plans of violent activities like killing innocent civilians, target SFs etc, and to spread terror and war against the state. An anti naxal operation was planned and launched by the SP, Kalahandi with teams of SOG Small team No. 02 and Special Operation Group (SOG) AT-02 under the leadership of Jyoti Kumar Kiro, Sergent of Police and Soumya Ranjan Dash, Deputy Subedar to apprehend the banned Maoist cadres. Given the treacherous lay out of the terrain and desperation of the plan chalked out, Sh. Dhaneswar Majhi, Ct lead the team from the front as scout to make the SOG teams reached at a nearest dominating position. The direction of the police team to them to surrender in clear and loud voice was to no avail. Rather the Maoist started sudden and indiscriminate fire in which five policeman sustained bodily injuries. Sh.Rakesh Kumar Swain, Ct and Ajay Behera, Ct despite their bodily injury and

numerical disadvantage tactically moved very closer to Maoist group at the risk of their lives umwavered by the heavy firing from Maoist side and retaliated valianty to counter the Maoist which facilitated the police party to take safe cover position. Sh. Jyoti Kumar Kiro, Sh. Soumya Ranjan Dash, Sh. Dhaneswar Majhi and Sh. Bhakta Priya Sahoo, Hav also moved forward closer to Maoist group putting their lives at risk and fired to counter them. The all recommendee, thus, fearlessly charged the enemy in a very risky frontal attack forcing them to escape. Because of their gallant action one uniformed female Maoist cadre subsequently identified as Sangita of Bansadhara-Ghumsar-Nagabali-Division was neutralized with recovery of SLR, 01, Insas Rifle-1,.303 Rifle-2, 12 bore broken Rifle-01, 2 live rounds of SLR,06 live rounds of Insas, 06 rounds of .0303 Rifle, 10 Haversakes, 1 walky talky, Maoist literature, documents and other camp articles etc.

In this operation, S/Shri Rakesh Kumar Swain, Constable, Ajay Behera, Constable, Jyoti Kumar Kiro, Sergeant, Soumya Ranjan Dash, Dy. Subedar, Dhaneswar Majhi, Constable and Bhakta Priya Sahoo, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15.09.2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 143-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Punjab Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Kuldeep Singh, IPS Addl. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Kuldeep Singh, IPS (Punjab:—2009), while posted as Assistant Superintendent of Police, City-11 & Traffic in district Bathinda in 2012 displayed conspicuous gallantry in a day light live encounter with a dreaded gangster in which the gangster with 11 criminal cases against him got killed in an exchange of fire.

On the evening of 06.09.2012, on receiving an information o wireless from SHO, PS Bathinda Cantt. That a white coloured Fortuner car no. PB-31-k-0045 was roaming in the city under suspicious circumstances, Sh. Kuldeep Singh went alongwith his police party (gunmen sr. const. Jagsir Singh no. 519, const. Jaskaran Singh no. 1187, HC Harvans Singh , no.1115) in his official car no. PB-76-P-4223, being driven by HC Rajinder Singh no. 165/LDH for a lookout. At about 7 PM, the party on reaching Kamla Nehru Colony located the vehicle. A young man on the driver's seat was accompanied by a girl on the left front seat. On seeing the police party, they tried to flee in the vehicle, but were blocked from the front by the police vehicle. At this, the girl shouted "open fire" and "get the car out". The man started firing at the police party led by the ASP with an intention to kill them. On being fired at, Sh. Kuldeep Singh jumped out of his vehicle and organized the response of the police team. He did not care for his life as during the exchange of fire, one of the bullets missed the officer by a whisker and he escaped narrowly. Sh. Kuldeep Singh fired back at the suspected criminal who got injured. The suspected criminal was identified as one Gurshahid Singh @ Shera S/O Jarnail Singh, r/o Khumban Bahaw wala, district Fazilka, a dreaded gangster and his companion as one Namdeek Kaur, r/o Malout City, district Sri Muktsar Sahib. Gurshahid Singh was rushed to civil Hospital, Bathinda where he succumbed to the injuries sustained in the encounter. Two rounds were fired by Sh. Kuldeep Singh, ASP to neutralize the criminal and in the process he narrowly escaped the barrage of bullets at him by the criminal and thus committed an act of utmost bravery and commitment towards his duty.

It is pertinent to point out that at the time of the encounter, the recommendee Shri Kuldeep Chahal was young IPS officers in the rank of ASP with little over 2 years of service and he, with a few personal security officers immediately rushed to respond to a wireless call of his SHO, and faced a dreaded and top gangster without flinching in a manner which shows utmost devotion to duty.

Gurshahid Singh @ Shera was involved in as many as 11 FIRs which included murder of a top gangster Happy deora on suspicion of passing information to the police resulting in beginning of a gang war between rival gangsters in Punjab : murder of one Sadaugar Singh who was a witness in a court case against Shera; murder of Nishan Singh due to election-related enmity; snatching of fortuner car from well-known Punjabi Singer Jazzy Bains ; extortion and demand of ransom of Rs. 30 lakh from one Sandeep Singh ; kidnapping for ransom, inflicting injury and extraction of ransom of Rs. 10 lakh from Hardeep Singh @ Jolly, involved in cricket betting; kidnapping of a person and snatching car at gun point ; snatching of Pajero car & Innova cars as well.

A case FIR no. 83 dated 06-09-2012 u/s 307/34 IPC 25 Arms act was registered in police station Bathinda cant. Against Gurshahid Singh @ Shera and Namdeek Kaur; one 09 mm pistol (Glock) with 4 live cartridges, 4 empty cartridges and one stolen Fortuner car were recovered from the spot. Gurshahid Singh @ Shera was involved in eleven criminal cases.

This encounter has withstood legal, magisterial and judicial scrutiny. Magisterial inquiry conducted by the additional Deputy Commissioner (General), Bathinda did not find any wrong doing on part of the police. A Civil writ petition no. 24439 of 2012 filed in the Hon'ble Punjab and Haryana High Court has been disposed off vide order dated 24-12-2015 in favour of the State. Namdeek Kaur, the companion of Gurshahid Singh @ Shera and his co-accused has been convicted in case FIR no. 83 of 2012 registered in police station Bathinda cant. And awarded rigorous imprisonment of four year and six months and fine of Rs. 3000/-. Moreover, the National Human rights commission has also upheld the action by the police party and relevant portion of the order of the NHRC is reproduced hereunder:—

"The police team was lead by an IPS officer. All the firearm injuries received by the Gurshahid Singh Shera on the lower part of the body. This indicates that the police did not had intention to kill him. Forensic report further show that deceased Gurshahid Singh opened fire from the 9 mm pistol, considering these facts were inclined to believe the police version of incident. It appears that the police had to shoot at Gurshahid Singh in exercise of self defence."

It is pertinent to mention here that at the time incident a large number of civilians were present at the spot and the quick police response did not allow any harm to come to the general public.

Shri Kuldeep Singh, IPS Assistant Superintendent of Police, while carrying out his duty, displayed immense courage and leadership. He led his men from the front without caring for his & inspite of coming under volley of fire from the criminal, retaliated back and killed the criminal, thus showing exemplary courage, bravery and conviction towards his duty. His swift action saved his men's life after being fired upon, and also prevented loss of life of general public. He has an unblemished and blotless career of more than four years. His work is accordance with the highest traditions of police services and is praise-worthy and deserves recognition of the highest order for showing tremendous courage, quick response, high sense of dedication of duty, highest quality of leadership at grave risk of his personal life. Sh. Kuldeep Singh, IPS, the then Assistant Superintendent of police (now SSP, Hoshiarpur) is strongly recommended for the award of Police Medal for Gallantry" for his courageous and brave act.

In this operation, S/Shri Kuldeep Singh, IPS, Addl. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/09/2012.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 144-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttar Pradesh Police:—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Laxmi Niwas Mishra Dupty Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18.04.2012, Shri Jogendra Kumar, SP Mau received information about the police encounter of SOG with notorious and rewarded criminal Dheeraj Singh in village Karmi Mathia, within the jurisdiction of PS Chirrayakot, immediately, sprung into action and rushed to the site. criminal Dheeraj and his companion, had forcibly entered in the house of Ramji Barnwal, in Karmi Mathia and brutally killed him and hostaged his 05 years child and were incessantly firing towards the police party and Shri Govind Singh, Inspector/SHO Kotwali City Mau, in the mean time, who arrived there and leading the police team, strategically challenged the criminals-duo and without caring for his life and limb, displaying conspicuous gallant act of bravery, moved ahead, with controlled firing, to arrest them alive, but in indiscriminate firing by the criminals, he was seriously injured, who was promptly, rushed to hospital for treatment, who later died.

S.P.Mau arrived there with reinforcement, after that Shri Vijay Singh Meena, S.P.Azamgarh also reached there and challenged the criminals to surrender, but criminals dared to continue incessant firing, more violently, towards them, with an intention to kill. SP Mau, SP Azamgarh, Shri Laxmi Niwas Mishra, CO city Mau, Shri Bind Kumar SI, Shri Shashi Bhushan Rai, SI and Shri Ashok Kumar Singh, HCAP undeterred of dangerous firing offensive of criminals-duo, strategically, counter attacked them with teargas, causing one of the criminal, coming out of the house, firing, incessantly and violently, towards the police party and in this situation of 'do or die', police team with indomitable courage and in utter disregard of their personal safety and security and with determination to arrest the criminal, alive, challenged him, to surrender and fearlessly moved ahead, in front of him, resorting controlled firing in self-defence and the criminal fell injured.

The police team with an objective to rescue the hostage child and capture the criminal, alive, who was terribly firing towards the police party, from inside the house, dauntlessly led the attack, themselves and police team, continuing performance of conspicuous gallant and sense of dedication towards their duty, in most unmistakable terms, without caring for their life and limb, immediately, barged in the house and ensuring the safety of hostage child, resorted restricted firing and criminal fell down, injured and the hostage child was successfully rescued. Both the criminal were later declared to be dead and identified as notorious criminal Dheeraj and Vikas.

Shri Jogendra Kumar SP, Shri Vijay Singh Meena SP, Shri Laxmi Niwas Mishra CO city, Shri Govind Singh Inspector CP, Shri Bind Kumar SICP, Shri Shashi Bhushan Rai SICP and Shri Ashok Kumar Singh HCAP have exhibited exceptional courage, conspicuous gallantry and devotion to duty in this encounter.

In this operation, S/Shri Laxmi Niwas Mishra, Dupty Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/04/2012.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 145-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force (BSF):—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Raj Kumar Assistant Commandant

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of information through local source about hiding of militants, in general area Hamkhal, a thick forest area, who were planning to attack on security forces and return to same forest area as that hide out was at dominating ground and provided good cover for hiding, Shri Raj Kumar, AC, Coy Comdr `D' Coy shared the info with Commandant of the unit and launched an operation on 26th June 2002 at about 0815 hrs. Shri Raj Kumar, AC, took assistance from a column of 44 RR which was already in the area for familiarization and asked them to cover different route to thwart the militants from escaping the cordon of the Dhoks of Hamkhal. While clearing the area, ops party observed some suspicious movement of a persons in one of the Dhoks. Immediately, Shri Raj Kumar, AC appreciated the situation and directed the party to lay siege. Thereafter, two more suspected militants come out of the Dhok and all three opened heavy volume of fire and fled towards nearby nallah under the cover of fire. Ops party retaliated fire but militants managed sneak through nallah.

Shri Raj Kumar, AC alongwith CT Khudiram, CT M M Shah and CT Shiv Charan chased the militants and crossed the nallah. Militants got into the thick forest and wild growth and started firing heavily towards the party. Shri Raj Kumar, AC alongwith his party took positions and without caring for the life retaliated in natural alignment. Resultantly, one of the militant sustained bullet injuries. Shri Raj Kumar, AC directed CT Khudiram & CT M M Shah to provide supporting fire and Shri Raj Kumar, AC alongwith CT Shiv Charan took detour and occupied a position higher than the injured militant who was purposely positioned by his fellow militants on the high ground so as to engage Ops party and prevent them from making further hot pursuit. The injured militant was continuously firing on the Ops party.

Shri Raj Kumar, AC and CT Shiv Charan after occupying position on the higher stretch, rolled down through boulders and thick growth. The injured militant observed the movement and fired heavily on Shri Raj Kumar, AC, who had a miraculous escape. Shri Raj Kumar, AC, wasting no further opportunity charged on the militant. Had he not done so in time, the militant would have effectively fired upon the other party and inflicted heavy casualties. As per drill Const Shiv Charan fired in the direction to pin down the militant and Sh Raj Kumar, AC continued his charge and killed the militant in close quarter battle. A daring and valiant action by the officer resulted in eliminating a hard core militant who was subsequently identified as Omar Mukhtar Wani R/o Arwani, Distt-Kulgam, Srinagar, a Pak trained Militant of HM outfit who was a terror in the area. The following Arms and Amn were recovered from his possession:—

a.	AK 47 Rifle	01 No
b.	AK Mag	02 Nos.
c.	AK Amn	50 Rds.
d.	EFCs	05 Rds.

e.	Wireless Set	01 No
f.	Antenna	01 No
g.	Grenade (Chinese)	01 No
h.	Indian Currency	Rs. 2030/-
i.	Wrist watch	01 No

In this operation, S/Shri Raj Kumar, Assistant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/06/2002.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 146-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vikas Kunwar
Second-In-Command

02. Narendra Kumar
Assistant Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

35 Bn BSF is deployed in one of the most hyper sensitive Naxal affected area of Chhattisgarh, wherein major portion of area of operation of the unit is extremely difficult due to tough terrain and conducting operations in this area is extremely challenging in itself. The general surrounding area of Village Gome and Gattakal (POO) is extremely notorious because of the presence of Maoists due to its geographical terrain.

On 10th Nov 2016, an Aggressive Ops was launched after detailed analysis of available input under direction of Sh Vikas Kunwar, Second-In-Command in the general area of Gome and Gattakal. The area is notorious for presence of Naxals, as it consists of thick forest and hillocks, provides good cover and ideal hideouts for them. The officer assessed the threats, took safety measures with meticulous ops planning, tasked every element and conducted the joint operation as a part of aggressive ops comprising of 08 teams of various units including team of COB Koyalibeda in an effective manner. At about 1740 hrs, the team led by Sh Vikas Kunwar, Second-In-Command, alongwith ASI Narender Kumar came under heavy volume of fire from Naxals, who were hiding in the forest and had taken position to ambush the moving BSF party. The BSF Party, after identifying the direction of fire, immediately took position behind the small boulders and undulating ground of the forest and started retaliating the fire in self-defence. Sh Vikas Kunwar, Second-in-Command after identifying the position of Naxals controlled the fire of BSF troops and alongwith ASI Narender Kumar, moved tactically without caring for their lives amidst heavy fire of naxals. The supporting fire was given by the other team members as per his direction. In accordance with the tactics of fire and move and observing professional discipline under continuous threat to their lives, both of them reached very close to the position where Naxals were firing on the BSF team.

With this gallant and prompt move, maintaining fire discipline and adopting fire and move tactics, Sh Vikas Kunwar, Second-In-Command and ASI Narender Kumar surprised Naxals and brought effective fire on them, as a result they were forced to flee away leaving behind their arms and other stores. During subsequent search, dead body of one un-identified Naxal alongwith 03 Nos of Gun (Bharamar) weapons were recovered. The deceased was later identified by Chhattisgarh Police as Sobi Kowachi, a wanted maoist, S/o Ram Singh, Viii-Gattakal, PS Koyalibeda Distt-Kanker (CG).

Shri Vikas Kumar, 2IC and ASI Narender Kumar displayed outstanding bravery, commendable leadership traits, high standard of initiative and professional approach during the operation which resulted into killing of one Hardcore Maoist, recovery of 03 SMBL (Bharmar) Gun and other items and compelled other Maoists to leave their positions and flee away to save their lives. The successful and result-oriented operation is an example of unparalleled gallant action coupled with high standard of leadership and co-ordination. This not only brought good name to the Battalion but also to the Border Security Force.

In this operation, S/Shri Vikas Kunwar, Second-In-Command and Narender Kumar, Asst. Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 147-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Baljit Singh Kasana Dupty Inspector General	(1st BAR to PMG)
02.	Mukesh Kumar Choudhary Constable	PMG
03.	Yudhvir Yadav Assistant Commandant	PMG
04.	Surjeet Singh Poonia Assistant Sub-Inspector	PMG
05.	Om Prakash Assistant Sub-Inspector	PMG
06.	Paras Ram Constable	PMG
07.	Bivas Batabyal Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 28th Nov 2016, at around 2330 hrs, HHTI of Naka Mound No. 12 of BOP Fatwal spotted the movements of 03 militants at a distance of approx. 40 mtrs on the home side of border fence in alignment of BP No. 45. The matter was immediately reported to the Coy Comdr Shri Yudhvir Yadav, AC, who after getting the information took stock of the overall situation and laid a cordon around the location of the militants with the help of forward & depth naka troops and available manpower at the BOP Chamliyal. Sh Yudhvir Yadav kept the movement of militants under regular watch through out night with the help of HHTIs and NVDs. In this regard, the information was also passed to Bn HQ and further to Shri Baljit Singh Kasana, DIG SHQ Jammu and also to Shri D K Upadhayaya, IG Jammu Ftr who immediately left for the place of occurrence to supervise and coordinate the operation. On the direction of the DIG, the flanking Coys were asked to send reinforcements for laying outer cordon/stops.

At around 0130 hrs, after effective deployment of inner & outer cordon/stops, Shri Yudhvir Yadav, AC directed to fire Para Bombs of 51 mm Mor in the direction of the militants, hiding in the fields, who opened heavy volume of fire by automatic weapons and also lobbed grenades towards inner cordon party realizing that they had been spotted and cordoned off, which was retaliated effectively. Sh Yudhvir Yadav, AC kept a regular vigil on militants through NVDs, which did not allow them to escape. After reaching at BOP Fatwal, Sh B S Kasana, DIG took stock of the situation and started coordinating the spl ops, kept on tracking the movements of the militants till first light when 03 militants got holed up in a tubewell (Bamby). Sh Kasana planned engagement of the target by coordinating the fire plan and went ahead towards the target. At about 0650 hrs, the terrorist, made final bid to escape by carrying out heavy firing on Naka No. 8 and party of Sh Yudhbir Yadav, AC supported with heavy volume of UMG firing and Mortar shelling from Pak rangers at own troops, to divert focus from the target. No. 876440403 ASI Om Prakash deployed at Mound No. 8, with scant regard to his personal safety, by displaying combat audacity and exemplary courage under trying conditions promptly retaliated the fire befittingly and injured/killed one of militants. As a result the militants were effectively pinned down. Meanwhile, in the ongoing exchange of fire, Shri Kasana by adopting fire and move tactic, who was leading from the front moved along with the dets of AGL, MMG, Sniper, RL and AMR under heavy militant firing, deployed the weapons at forward position in order to bring down accurate & effective fire on the militants. On the directions of Shri Kasana, Ct Paras Ram by displaying exemplary courage coupled with sheer professionalism grit and bravery under trying conditions accurately fired with AMR and silenced the guns

of militants which gave a cushion to main party to reorganize in which ASI Surjeet Singh Bishnoi with AK 47, Const. Mukesh Kumar Choudhary with AMR, Const. Paras Ram with 12.7 Barret Sniper Rifle and Const. Bivas Batbyal with RL without caring for their personal safety engaged the militants, hiding in the general area of tube well & trees groves and displayed steel nerves and combat sense under direct militant firing. However, holed up militants did not come out. Thereafter Sh Kasana, asked for MMG and moved alongwith MMG party comprising of HC Mukesh Kumar Choudhary, Bibas Batbyal, Ct Paras Ram & others by displaying sheer professionalism, grit and bravery under trying conditions by adopting fire & move tactics to the closest location and brought effective fire of MMG, resultantly one side of tube well wall was broken. He further moved alongwith party to another hay static location by adopting fire & move tactics, and in the display of exemplary courage reached close to the holed up militants and fired heavy volume of fire from MMG which finally broke another wall of tube well. At about 1100 hrs, Sh Kasana, and Sh Yudhvir Yadav, AC alongwith ASI(GD) Surjit Singh Bisnoi & respective parties without caring for their lives reached near tube well tactically through Casper vehicle.

Sh Kasana alongwith ASI(GD) Surjit Singh Bishnoi came out of Casper vehicle by displaying combat audacity and exemplary courage advanced towards the target & lobbed grenades. To ensure that militants had been killed Sh Kasana sprayed bullets by AK Rifle and busted the hideout and found few militants lying on the ground.

During the whole operation, Sh D K Upadhyay, IG BSF, Jammu kept on guiding the operational parties for achieving the success without any harm to own troops. Resultantly, 03 dead bodies of heavily armed terrorists suspected to be of LeT as per recent input by DC(G) lndeshwar Nagar, were recovered. Sh D K Upadhyay, IG BSF, Jammu Ftr directed to search the dead body and site of incident in a careful manner. During search, three militants were found killed with heavy quantity of Arm/Amn/GPS/Radio Sets/IEDs etc. While the dead body and site of incident were being searched, Pakistan started heavy firing and Mortar shelling across the border through nearby post, due to which Sh B S Kasana, DIG BSF Jammu, ASI Om Prakash, Ct Mukesh Kumar Choudhary, Ct Parasram and Ct Bivas Batabyal received multiple bullet & splinter injuries and immediately evacuated to 166 MH Satwari for further management.

During search Ak 47 Rifle-03 Nos, Ak 47 Rifle Magazine-20 Nos, Ak 47 Ammunition-517 Rds, Empty Fire Case Ak 47-09 Nos, Empty fire case Big Size-01 no, Pistol-01 No, Pistol Magazine--01 No, Pistol Ammunition-16 Rds, Grenades-31 Nos, IED All Types-10 Nos, Fidayeen Jackets & Belts-02 Nos, Wireless Set-02 Nos, Knives-02 Nos, Wire Cutter-01 No, Torch-02 Nos,,Hand Gloves-02 Pair, Rechargeable Cells-16 Nos, Dairy Milk Chocolates-03 Nos, First Aid Kit-03 Nos, Power Bank-02 Nos, Shoes Leather/Plastic-04 Pair, Dry Fruit-05 Pkt, Indian Army Uniform-02 Pair, Rucksacks-03 Nos, Jacket-02 Nos, First Aid Kit-03 Nos, Power Bank-02. Nos, Indian Army Patka Duplicate-02 Nos, Mobile-01 No, Diff Coloured Liquid In Bottle-03 Nos, Lighter-02 Nos, Hand Cuff (Plastic)-10 Nos, GPS-01 Nos, Monocular-01 Nos has been recovered from site of incident.

The entire operation was conducted in epitome of professional & exemplary manner under the direct and able leadership of Sh B S Kasana DIG Jammu, who was ably assisted by Sh Yudhvir Yadav, AC Coy Comdr. In the entire operation ASI Surjit Bishnoi, ASI Om Prakash, Const Parsa Ram, Const Bivas Batbyal and Const Mukesh Kumar Choudhary also played key role in effectively neutralizing heavily armed Lasker-e-Toiba (LeT).

In this operation, S/Shri Baljit Singh Kasana, Deputy Inspector General, Mukesh Kumar Choudhary, Constable, Yudhvir Yadav, Asst. Commandant, Surjeet Singh Bishnoi, Asst. Sub-Inspector, Om Prakash, Asst. Sub-Inspector, Paras Ram, Constable and Bivas Batabyal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 148-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gufran Ahmad
Assistant Commandant

02. Awdhesh Kumar Suman
Sub-Inspector

03. Nagendra Prasad
Head Constable

04. Chemail Singh
Head Constable

05. Maniranjan Singh
Constable

06. Patil Pravin Dinkar
Constable

07. Romen Lambal Mayum
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on the specific information regarding presence of top Maoist leaders including Abhijeet Yadav, Arvind Bhuiyan, Murad, Bihari, Sandeep jee with 50-60 Maoist, a Search and Destroy Operation was planned in forest area of Village Bhaluahi, Gopaldera, Morma, Kachnar, Chhuchiya and Dulare under PS Dhibra and Dumariya, Distt. Aurangabad/Gaya. Accordingly, troops comprising of 2 teams of 205 CoBRA, Team No. 8 of C/205 CoBRA under command of Shri Chandan Kumar, AC and Team No. 6 of B/205 CoBRA under command of Shri Gufran Ahmad, AC and state Police under overall command of Sh. Chandan Kumar, AC, moved out for operation in the above said area on 07/01/2016 from 1215 Hrs. As per Ops Plan troops assembled at CRPF camp of 153 BN, at Bhaluahi at approx. 1445 hrs on the same day and moved ahead towards the main area of operation taking advantage of thick vegetation and adopted less approachable route to enter into the jungle in order to maintain utmost surprise and secrecy. The teams took LUP at a safe location in the night of 07/01/2016.

On 08/01/2016, while troops were wending through the jungles to spot the Maoists, at around 1715 hrs CT/GD Amarnath Mishra saw smoke rising at a place about 800-900 meters away, a possible indication of Maoists presence being engaged in cooking/hand warming due to cold weather. Scout observed carefully and immediately informed the commanders about the scene. Both the commanders alerted the troops through field signals keeping probable danger ahead in mind. Both the team commanders chalked out a plan with their team members and briefed them about the prevailing situation with direction to remain cautious/alert as encounter may took place at any point of time. During movement when troops reached nearby suspected area, they observed some noises/suspicious activity and billows of smoke coming out from some distance. As per the instant plan, to have a flanking approach, both teams bifurcated and advanced stealthily towards the target area. When the teams were fast on their way, though still treaded cautiously to avoid getting noticed, Sh. Chandan Kumar, AC, directed his Scouts CTs/GD Patil Pravin D. and Amarnath Mishra to ascend the hillock in the front. During the advance, the sentry of the Maoists sensed the presence of SFs and instantly opened indiscriminate fire on the troops followed by heavy fire from multiple direction using sophisticated automatic weapons by the Maoists. Troops immediately took position and challenged Maoists to surrender before them, but they did not pay heed to it rather intensified the volley of fire on the troops.

Sh. Chandan Kumar, AC ordered SI/GD Awdhesh Kumar Suman to cover the right flanks of Maoists whereas he along with his commandos CT/GD Amarnath Mishra, Maniranjan Singh, Patil Pravin D., HC/GD Chemail Singh and SI Aditya Kumar, SHO (PS:Dhibra) advanced towards front taking scantily available cover of stones and undulating ground. Meanwhile, HC/GD Nagendra Prasad; taking an initiative amidst heavy firing by Maoists in obedience to and protecting the constitutional law, again challenged the Maoists to surrender before them but they continued with even more indiscriminate firing on the troops one of which pierced through his right shoulder. On seeing no way out, troops retaliated the Maoists firing. HC/GD Nagendra Prasad in spite of the bullet injury fired back on Maoist location and gave them heavy blow which suppressed their firing. In the meantime first-aid was given to HC/GD Nagendra Prasad at the spot only.

CT/GD Maniranjan Singh, Patil Pravin D. and HC/GD Chemail Singh showed true grit and shouldered the responsibility entrusted into them by the commander to counter the Maoists firing. They, ignoring heavy fire and despite insufficient cover available; crawled, advanced and fired from different positions to make it more effective without caring for their own safety to neutralize the Maoists. Even the bruises and cuts due to thorny bushes, rocky ground and splinters could not deter their courage and enthusiasm. The masculinity and unparallel bravery shown by CT/GD Maniranjan Singh, Patil Pravin D. and HC/GD Chemail Singh surprised the Maoists as they were badly hit by their firing. Their maneuverability forced the Maoists to escape in small groups in different directions. Due to above, a group of Maoists shifted towards right flank where SI/GD Awadhesh Kumar Suman had taken position. Sh. Gufran Ahmad, AC , who, along with their troops was further right to SI/GD Awadhesh Kumar Suman, closed in from the right flank to augment and support SI/GD Awadhesh Kumar Suman and his team.

Shri Gufran Ahmad, AC and SI/GD Awadhesh Kumar Suman ferociously attacked on Maoists position by their precised firing. In such panic situation, Maoists, to revenge their losses counter attacked on the troops with heavy volume of fire. They showered bullets upon the troops using sophisticated automatic weapon. To overcome from the fatal situation, Sh.

Gufran Ahmad, AC displayed his tactical acumen and directed CT/GD Romen Lambal Mayum to fire UBGL on Maoist position. CT/GD Romen Lambal Mayum crawled and advanced amidst the tide of bullets raining from Maoists' barrels towards a small bracket of boulders to occupy a tactical position for putting accurate fire of UBGL. Sh. Gufran Ahmad, AC gave mutual support by covering fire to CT/GD Romen Lambal Mayum and he complied with his commander's orders in letter and spirit. In this process not only Sh. Gufran Ahmad, AC fired precisely on Maoists, but also the UBGL shell fired by CT/GD Romen Lambal Mayum also landed at the right spot and thus both of them inflicted fatal damages to the advancing Maoists group.

Despite insufficient cover available and heavy fire coming from Maoists, troops continued their advance decisively to cordon the fleeing Maoists from right flank. The mighty counter attack and fearless approach of the troops left Maoist devastated. They fled away to save their lives with their injured cadres. They were decimated badly as they left behind bodies of their dead cadres which generally they don't. Encounter lasted for approx 35-40 minutes.

The encounter site/area was searched thoroughly on first light of 09/01/2016. During search 04 dead bodies of Maoists identified as RAJIV YADAV @ BIHARI (Regional Committee Member), RAMRATAN YADAV @ JAGDISH JI @ JAYANT YADAV (Zonal Commander) , DEVKI BHARTI (Area Commander) and BIRENDRA@ RAVINDRA BHOKTA (Fighting Cadre) were recovered from the encounter site. Besides, a huge cache of arms/ammunitions including AK-47 Assault rifle-1 No. Carbine-1, 303 Rifle-2 and other incriminating items, were also recovered from encounter site.

During the operation troops showed great tactical skill, synergy, enthusiasm, operational appreciation and above all how to respond properly in such a difficult situation.

In this operation, S/Shri Gufran Ahmad, Asst. Commandant, Awdhesh Kumar Suman, Sub-Inspector, Nagendra Prasad, Head Constable, Chemail Singh, Head Constable, Maniranjan Singh, Constable, Patil Pravin Dinkar, Constable and Romen Lambal Mayum, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/01/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 149-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gaurav Kumar Balyan
Assistant Commandant

02. Pawan Kumar Trigunayat
Assistant Commandant

03. Vikram Paul
Constable

04. A Bairavan
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13 Dec 2016, on receipt of a reliable intelligence input about the presence of dreaded foreign terrorist Abu Bakar, Divisional Commander, LeT, a joint operation was planned by Special Operations Group (SOG), J&K Police and CRPF. Accordingly, two teams, first team consisting of Range Quick Action Team (QAT) North Kashmir Operational Range (NKOR), under command Shri Pawan Kumar Trigunayat, Asstt. Comdt, and SOG, JKP and the second team consisting of E/179, under command Shri Gaurav Kumar Balyan, Asstt. Comdt, 179 Bn and SOG, JKP were formed.

On intervening night of 13th-14th Dec 2016, a joint operation was launched in the target area. Abu Bakar, the terrorist, was well known for his vicious move and had eluded the SFs number of times. Troops had to search villages Hajin, Jalura and Panipora to reach the probable location; village Bomai. Though by this time the temperature had slumped down to subzero, the troops, defying all odds, rushed to the target area. On reaching village Bomai, a cordon was laid around a complex of five houses in Dhooni Mohalla of vill-Bomai under PS Bomai in Distt-Baramulla at around 0330 hrs.

After confirming the presence of one armed terrorist from the owner of the house, Shri Gaurav Kumar Balyan and his team positioned themselves in the front as well as on the right side, whereas Shri Pawan Kumar Trigunayat and his team took position covering the rear and left side of the complex. While troops were patiently observing the target houses, Constable A. Bairavan noticed some movement in one of the target house. Once the presence of terrorist was confirm inside the target house, troops were alerted and the occupants of the target/adjacent houses were evacuated to a safer place. The terrorist was asked to surrender before the troops by making announcement on the public address system but all went in vain.

Finding no other option, at around 0600 hrs, it was decided to further tighten the noose by carrying out room intervention. To take the terrorist by surprise, two intervention teams, the first one under command Shri Gaurav Kumar Balyan and the second one under command Shri Pawan. Kumar Trigunayat were tasked to enter the target house from the front and rear side simultaneously. The moment, the teams entered the target house, the terrorist positioned at a strategic location opened heavy fire on the first team and lobbed a grenade towards the other. In this lethal attack, both the teams had miraculous escape. Though troops reacted promptly to the situation but before they could target the terrorist, he moved to the other room and started firing from different locations to distract the troops. Meanwhile, at around 0730 hrs QAT/179 Bn, CRPF under command Shri Dhairya Pal Singh, 2IC, SSP Sopore and 22 RR also reached the spot as reinforcement. The cordon was strengthened with the help of additional troops.

The terrorist was aptly equipped and continued to engage the security forces till 1300 hrs. Seeing the efforts of the troops going into vain against the terrorist; as he had taken advantage position, it was decided to demolish the house using IED. Since it was a large house, the terrorist shifted to the bathroom and remained unaffected by the blast. Thereafter, the terrorist made an attempt to flee from the front side firing indiscriminately, but couldn't succeed due to effective retaliation by the troops positioned on the front side. Meanwhile a bullet pierced through terrorist's leg and he fell down. The forces were up against a tough customer; he immediately got up and rushed for the cover. At this point of time, both Pawan Kumar Trigunayat and Gaurav Kumar Balyan, who were already in position, simultaneously opened fire upon the terrorist which was replied by even heavier volume of fire from the injured militant. The duo brave hearts with their buddies not only saved themselves from the terrorist's bullets but also responded effectively forcing the terrorist to take shelter behind a wall.

The battle was drawing long and the probability of law & order issues cropping up was inevitable as per the past trends. The situation was demanding a quick and final assault to conclude the operation. Sensing the gravity of the situation Shri Gaurav Kumar Balyan and Shri Pawan Kumar, displaying daring initiative, decided to take the challenge and put them ahead to lead the final assault. The duo with their buddies Constable A. Bairavan and Constable Vikram Paul displaying exceptional courage, and unmindful of their own safety, crawled towards the terrorist amid the rain of bullets to launch an effective attack. Finding himself totally cornered, the terrorist unleashed the barrage of bullets towards the approaching troops and prepared to hurl a grenade. But this time Shri Gaurav Kumar Balyan, Shri Pawan Kumar Trigunayat, Constable A. Bairavan and Constable Vikram Paul not only saved themselves but also reacted promptly. Throwing all cautions to wind, they ferociously charged at the terrorist and neutralised him on the spot by their accurate fire. The terrorist was later identified as Abu Bakar (r/o Pakistan), Divisional Commander, LeT A++ category carrying a reward of Rs 12.5 lacs and was operational in Chandigam area in Lolab valley of Kupwara District since 2009. Subsequent search of the incident site also led to the recovery of one AK 47 rifle, matching magazines, ammunition and grenades.

In this operation, S/Shri Gaurav Kumar Balyan, AC, Pawan Kumar Trigunayat, AC, Vikram Paul, Constable and a Bairavan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/12/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 150-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Jay Dave
Sub-Inspector

02. Avtar Singh
Head Constable

03. Mukesh Kumar
Constable

04. Gawai Shekhar Dadarao
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11 Feb, 2017, at about 2340 hrs, SSP Kulgam informed Shri Henzang, Commandant-18 Bn, CRPF, that terrorists had fired upon a cordon and search party consisting of 1 RR, Special Operations Group (SOG) of Jammu & Kashmir Police (JKP) and the Civil Police party at Kujur (NagbalMohalla) under Police Post-Frisal, Police Station-Yaripora, Dist-Kulgam in J&K. He requested for immediate reinforcement. Accordingly, Shri Henzang along with the Quick Action Team (QAT) of Ops Range Anantnag reached the site at about 0040 hrs. On arrival at the spot, Comdt-18 Bn was informed that four suspected terrorists are hiding in the house of Abdul Majeed Reshi, son-in-law of Abdul Kabir Sheikh and have taken • Ashiq Hussain s/o Abdul Majeed Reshi as the hostage. Accordingly, a strategy was chalked out and the village was cordoned by the troops of 1 RR on the northern and eastern side, SOG and civil police on the western side and QATs of CRPF on the southern side.

The target house was a multistoried structure. Once the cordon was established, it was searched twice by the troops but the terrorists could not be located. However, getting confirmation about the presence of terrorists from the house owner, it was decided to search the house once more by the party of RR and SOG. As the search party approached the first floor of the building, the terrorists opened indiscriminate fire, wherein two army personnel suffered grievous injuries. The search party was taken aback by the volume of fire and had to rush for cover. The injured jawans of RR had to be evacuated, the search party was scattered and had to be rescued and the exact location of the terrorists was still unknown.

At this point of time, on getting directions from the Commandant 18 Bn, Head Constable(Driver) Avtar Singh of 18 Bn, displaying exceptional valour, moved the Bunker vehicle from the outer cordon and placed it very close to the target house and helped the search party in safe evacuation from the house. Owing to the undulating terrain and the slippery/muddy conditions, placing the vehicle at an appropriate place was proving extremely difficult and replete with grave risk. However, driver Avtar Singh defying all the odds, deftly maneuvered his vehicle thrice in the area amidst the heavy firing and with the help of covering fire, helped in the rescue of 5-6 trapped personnel. While the troops were being rescued, terrorists were kept engaged and due to which troops got the opportunity to plant the IED in the rear part of the house. All the possible escape routes of terrorists were plugged to prevent slipping out of terrorists from the target house. The exchange of fire continued throughout the night intermittently.

Seeing the situation, Sub Inspector Jay Dave Singh of 90 Bn, CRPF (member of QAT of Anantnag Ops Range); positioned with the outer cordon, took an initiative to locate the terrorists and moved into a house opposite to the target house on the southern side. With no options remaining, the IED was blasted by RR which could bring down 80% of the house. With the certainty that the terrorists would have been killed, a search operation was launched. In order to clear the rubble, a JCB was pressed into service, but the moment it moved in, one of terrorist rose from the rubble and tried to load his weapon. Jay Dave Singh who had positioned himself in the adjacent house, exhibiting sharp reflexes, clear perception and extraordinary presence of mind opened aimed fire at the terrorist neutralising him on the spot.

As a part of target house was still surviving, another IED was blasted resulting in the complete demolition of the house. However, this also couldn't kill the remaining three terrorists as they came out of the debris and ran towards the south-eastern to escape by firing indiscriminately on the SFs. The RR troops deployed on that side fired precisely on the fleeing terrorists and neutralised one of them. The remaining two terrorists tried to escape towards the adjacent nallah. Commandant 18 Bn noticed the movement of terrorists and immediately directed two of his brave troopers Constable/Bugler Mukesh Kumar and Constable Gawai Shekhar Dadarao to chase the fleeing terrorists. Meanwhile, the terrorists continued to fire at the troops. Since the law and order component of the Forces were positioned in the route of the escape, any move had to be made with due care and caution. It was a daunting challenge for Constable/Bugler Mukesh Kumar and Constable Gawai Shekhar Dadarao who had the terrorists in front of them, but the presence of the troops in the line of fire was obstructing their move. At the same time, they were not willing to let the opportunity slip by. Displaying exemplary bravery, tactical skills, and raw valour, both of them stepped out of the gypsy and crawled towards the terrorists ignoring the flying bullets. The duo, reached close to terrorists, positioned themselves and without caring for their lives, opened targeted but controlled fire from close range eliminating both the terrorists at the spot.

The operation lasted for more than 10 hours and culminated with the elimination of four HM terrorists named Farooq Ahmad Dar (Cat.`C), s/o Mohammad Yousaf Dar, r/o Arreh, PS & Distt. Kulgam, Mudassir Ahmad Tantray @ Asim (Cat.'A'), s/o Mohammad Akbar Tantray, r/o Redwani Bala, PS & Distt-Kulgam, Wakeel Ahmad Thoker (Cat.'C'), s/o Mohammad Ahsan Thoker, r/o Hadigam, PS & Distt Kulgam and Mohd Younis Lone (Cat.'B'), s/o Ghulam Qadir Lone, r/o Hawoora, PS & Distt-Kulgam. The troops also recovered one INSAS Rifle, one AK 47 Rifle, one AK 56 Rifle, two pistols,

two INSAS magazines, four AK 47 magazines, two pistol magazines and assorted ammunition from the slain terrorists. Two RR personnel martyred and one civilian (hostage) was killed by the terrorists during the operation.

In this operation, S/Shri Jay Dave, Sub-Inspector, Avtar Singh, Head Constable, Mukesh Kumar, Constable and Gawai Shekhar Dadarao, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/02/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 151-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dalbir Singh
Head Constable

02. Rajesh Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An information was received from own sources that a large number of Maoists, fully equipped with automatic weapons, are camping in Palachalma Village of Sukma district of Chhattisgarh. Sukma is one of the most Maoist affected districts of the country. This region is the proclaimed territory of the Maoists where supposedly they run a parallel government. The area is considered to be the toughest operational area due to its geographical location, treacherous terrain, remoteness, Maoists cadre strength and alleged local support to the Maoists. The information was an opportunity for the security forces (SFs) to strike the well-equipped Maoists in their own bastion which could have far-reaching consequences for the region, and its equations. It was a daunting task for the SFs and expected to be one of the most challenging operations against the Maoist in the region.

To execute the task, a joint "search" operation was planned by IGP Operations CRPF, Chhattisgarh Sector, involving the troops from 217 Bn, 219 Bn and 208 CoBRA. According to the plan, the operation was launched from the base camps Bheji and Gorkha of Sukma district at 0430 hrs. on 20/10/2014 under the overall command of IGP (Ops) Chhattisgarh Sector. The troops moved towards the target area i.e. village-Palachalma. Troops were "tactically searching the area while advancing towards the target, but found nothing at the end of the day and, hence, took LUP at the night in the jungle area, approx. 02 Km short of Palachalma village. Due to the strong hold over the area and intelligence network, there was every possibility that Maoists would have sensed the presence of SFs in the area. An ambush/attack from the Maoists was most expected on next day. Troops were also aware of this and prepared for such situations.

On 21/10/2014, keeping the tactical requirements of the situation in view, the troops were divided into 04 groups to carry out the search of the area more effectively. Troops of 217 Bn were given the task to cordon the left side of jungle area of village Palachalma and its surroundings. Accordingly, the troops of 217 Bn advanced towards their target area at about 0930 hrs. As was expected, Maoists were observing the movement of the troops and had laid an ambush against the troops towards the left side of the jungle area which was assigned to 217 Bn to search for. As the troops reached the ambush zone of the Maoists, they opened indiscriminate firing on the troops with the intention to kill them and snatch their weapons. The troops also responded quickly with the counter firing towards the Maoists, but, they were having very less cover against the bullets and, hence, it was very difficult for them to hold the ground for a long. The situation was very dicey and demanding a bold and courageous counter action.

In the need of hour, HC/GD Dalbir Singh and CT/GD Rajesh Kumar of 217 Bn took the initiative and decided to launch a bold counter offensive against the Maoists. The duo, amid the heavy firing, fearlessly moved forward and counter-attacked the entrenched enemy from the left flank. The sudden but courageous move of the duo awestruck the Maoists and subdued their firing for a while. Meanwhile, the fellow troops, enthused by the bold and courageous move of the duo, also joined them, thus, augmented the counter offensive against the Maoists. The encounter continued for about 30 to 40 minutes. The audacious and concentrated counter offensive devastated the Maoist defense and forced them to flee away, leaving their armed dead cadre behind. The bold counter offensive by the troopers not only broke the deadly ambush laid by the Maoists, but, also led to the killing of one dreaded Maoist. During post encounter search dead body of one maoist (later identified as

"Sodhi Masa" S/O Somada,village-Palachalma, PS-Kistaram, Distt-Sukma, CG) alongwith 01 country made gun and 02 maoist pamphlet were recovered from the encounter site. The dead maoist was a Jan Militial member of Palachalma.

In this operation, S/Shri Dalbir Singh, Head Constable and Rajesh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/10/2014.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 152-Pres/2018—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Ashok Kumar Second-In-Command	(2nd Bar to PMG)
02.	Narpat Assistant Commandant	PMG
03.	Saurabh Verma Sub-Inspector	PMG
04.	Balbinder Pathania Constable	PMG
05.	Jkharias Lakra Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of reliable information about the presence of 40-50 armed Maoists led by Manila (Secretary Pamed-Usur Area Committee) and Somdu(Usur LOS Commander) on the axis of village-China-Borkel, Komatpalli and Bhattiguda, Distt-Bijapur (CG), a joint Search and Destroy Operation (SADO), consisting 04 teams of 204 CoBRA along with STF & DRG of Civil Police (CG) was planned and launched under the overall command of Shri Ashok Kumar, 2-I/C 204 CoBRA Bn. The target area is assumed to be the citadel of the Maoists due to the insurmountable terrain, strong Maoist cadre strength and robust intelligence set-up of Maoists. Maintaining surprise and secrecy, which are the key requirement in any operation, have always been a challenge before the SFs and the troops were aware of this.

As per the Ops plan, on 03/01/2017 at about 0430 hours, the troops left the base camp Basaguda and Tarem for the operation. Maintaining utmost secrecy and moving stealthily, troops reached the jungle area of Peddagelur at around 1610 hours and advanced towards their target area. Suddenly, they came under heavy firing from the front direction. Maoists had sensed the presence of SFs in the area and were ready to attack them. Maoists were firing indiscriminately upon the troops with the intention to kill them and loot their weapons. Acting promptly, troops retaliated in self-defense. In this exchange of fire, a DRG Jawan namely Somaru Hemla, sustained bullet injuries and was requiring immediate medical support as blood was profusely coming out of the wounds. At this juncture, Shri Ashok Kumar, 2-I/C displaying the raw courage and grit of true commander rose to the occasion to rescue the injured DRG jawan. He along with CT/GD Balbinder Pathania took a grave risk and moved into the Maoist firing zone. The duo rescued the injured jawan to a safe area and arranged first aid to injured jawan. Later the injured was evacuated to the base camp and troops continued the operation with even strong determination.

On 04/01/2017, when the troops reached near the jungle area of village Bhattiguda for SADO, the party commander, Shri Ashok Kumar, 2-I/C divided the troops into 04 parties numbering Party No.-1, 2, 3, & 4 respectively, to carry out the task more effectively. While troops were searching the area, at about 1600 hours, around 70-80 armed Maoists hiding in an ambush, fired heavily and lobed HE grenades on Party No.2. Troops immediately took the position and started retaliation. Since the party No. 02 was outnumbered; they asked the Ops commander for support. Displaying the exemplary leadership qualities and unparalleled tactical acumen, ops Commander Shri Ashok Kumar, 2-I/C quickly chalked out a counter-attack plan and coordinated the same with all party Commanders. As per the plan, troops launched a ferocious counter-attack on the Maoists to support the party No.2. Accordingly, Party No.1 was asked to lay cut off from the right side and parties 3 & 4

from the left side. When parties were laying cut off, they also came under heavy firing from automatic weapons. Maoists were firing from well-defended positions and thus making difficult for the forces to lay an effective cut-off against them. A deadly blow to the Maoists was the need of the hour to break their fortified defense and thus the ambush. Shri Ashok Kumar, 2-I/C, finding no other option and to avoid losses to his troops, formed two micro assault teams of 3 persons each. The Assault-1 was led by Shri Ashok Kumar, 2-I/C along with Insp Laxman Kewat and CT/GD Balbinder Pathania whereas Assault-2 was led by Shri Narpat, AC along with SI/GD Sourav Verma and CT/GD J. Lakra.

The micro assault teams moved ahead under the cover fire towards the dominating heights where Maoists were taking natural cover and firing on the troops with area weapons. The micro assault teams, led by Sh Ashok Kumar 2IC, adopting sensible fire and move tactics and exhibiting conspicuous courage closed in on the Maoists positions amid the heavy firing. Finding them at the right position and utilizing the opportune moment, both the assault teams charged upon the Maoists leaving their well-defended position devastated. The 02 micro assault teams with strength of just 03 men on each team could brilliantly tackle a group of 15-20 heavily armed Maoists, hiding in their natural cover. The audacious attack by a small bunch of valiant troopers dazed the Maoists. The attack trembled the courage of the Maoists.

Taken aback by this extraordinary courage and ferocious counteroffensive, Maoists fled leaving one dead body of a Maoists (age approx 25 year, later identified as Sodi Mula S/o Linga, vill-Chutwahi, PS-Basaguda, Distt-Bijapur (CG) along with one 5.56 MM INSAS LMG, one magazine, 16 rounds, 02 HE grenade and other items. A lot of blood stains were found at the encounter site, indicating that Maoists had suffered heavy casualties but they managed to drag the bodies of injured/killed Maoists. Later, as per the intelligence corroborated from various Int agencies, it is confirmed that 02 Maoists were killed and 04 were severely injured during the encounter.

In this operation, S/Shri Ashok Kumar, Second-In-Command, Narpat, AC, Saurabh Verma, Sub-Inspector, Balbinder Pathania, Constable and Jkharias Lakra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/01/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 153-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gajanand Yadav
Sub-Inspector

02. Mukesh Kumar Pandey
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Srigufwara in Anantnag district of J&K has been a hub of terrorist activities on account of the inhospitable terrain, forest cover and active support of the local population. On 14 Dec 2016, at around 0700 hrs, based on a specific intelligence input about the presence of some terrorists in village Bewoora, Shri Satish Pandey, Asst. Comdt. with his troops of E/116 Bn and Special Operation Group (SOG) launched a cordon and search operation in the village. Troops reached near the target village by maintaining utmost surprise and secrecy. Meanwhile, troops from 3 Rashtriya Rifles (RR) also reached the village and joined the ops parties. Immediately, joint troops started cordoning the village.

While troops were cordoning the village, one terrorist taking advantage of the dense fog and poor visibility tried to flee towards a nallah preceded by undulating terrain by firing indiscriminately in the direction of the troops. No.121160043 Sub Inspector Gajanand Yadav and his buddy No. 125380536 Constable Mukesh Kumar Pandey of E/116 Bn CRPF, who were in the leading party came in the direct line of fire of the terrorist. The bullets missed them just by a whisker and they had a miraculous escape in this unexpected fire from the terrorist. Using their sharp reflexes, they immediately took tactical positions and tried to locate the terrorist. They noticed an armed terrorist at around 50 meters from their position firing in their direction and running towards the nallah to escape from the site. Sensing the intention of the terrorist, Sub Inspector Gajanand Yadav and Constable Mukesh Kumar Pandey pursued the terrorist without caring for their lives and throwing all cautions to air. Their fellow troops also followed them.

A prolonged chase followed through the dense orchards. The visibility was extremely poor on account of the early morning mist and the accumulated snow was severely hampering their movement. The movement through the orchard was a risky affair due to the poor visibility and thus facilitating an opportunity to the fleeing terrorist to employ some deceptive tactics. He could have stopped short, taken appropriate cover and shot at the two of them from close quarters. However, the young and energetic duo were charged up and determined for their cause. They fearlessly continued the chase, ducking and weaving through the dense apple trees, amidst intermittent fire from the fleeing terrorist. The terrorist was continuously firing on the troops to interrupt the movement of SFs. However, these odds couldn't deter the courage of the duo as they kept chasing the terrorist. Once Gajanand Yadav and Mukesh Kumar Pandey came out of the orchard, they located the fleeing terrorist as he was visible to them now. Finding the SFs too close to him, the terrorist fired upon them to make his escape good but this time Gajanand Yadav and Mukesh Kumar Pandey were prepared and ready to challenge him. They not only saved themselves from the terrorist's fire but also fired at him. The terrorist got hit and neutralized there only.

However, there was another terrorist who managed to escape taking advantage of the poor visibility and favorable terrain. The killed terrorist was later identified as Basit Rasool Dar, s/o Gh. Rasool Dar, r/o Marhama of Hizbul Mujahideen militant outfit. One AK 56 Rifle, 11 rounds of AK ammunition, two AK magazines and one HE grenade was recovered from the slain terrorist.

In the operation, Sub Inspector Gajanand Yadav displayed extraordinary courage and tactical acumen in appreciating the situation and responded to the situation in a most professional manner. Defying all the threats, he, along with Constable Mukesh Kumar Pandey chased the fleeing terrorist despite constantly being in the line of fire of the terrorist. Constable Mukesh Kumar Pandey also seized the opportunity and stood up to the challenge. He played a pivotal role in chasing and neutralizing the terrorist. In recognition of their exemplary bravery, unflinching commitment to duties and firm determination in the face of clear and imminent threat, names of Sub Inspector Gajanand Yadav and Constable Mukesh Kumar Pandey of 116 Bn, are strongly recommended for the award of "Police Medal for Gallantry".

In this operation, S/Shri Gajanand Yadav, Sub-Inspector and Mukesh Kumar Pandey, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/12/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 154-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanjeev Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

The old KP (Khanabal-Pahalgam) road from Bijbehara to Pahalgam is a vast stretch of undulating terrain with large dense forests and orchards. Movement of the troops in the area is difficult. The area is also notorious for stone-pelting and provides ample cover for movement of terrorists. Successful operaiion in the area requires specific information and proper synchronization by a large number of troops to cut off escape routes.

On 03 Aug 2017, at around 1845 hours, Comdt 90 Bn received information from SDPO Bijbehara that some militants had fired on the Army and Police party in village Kanelwan, under P.S. Bijbehara, about 08 kms away from HQrs of 90 Bn CRPF, Uranhall. Shri Ajai Kumar Sharma, Commandant-90 Bn CRPF alongwith Shri Angom Naresh Singh, Second-in-Command and Unit Quick Action Team (QAT), immediately rushed to the village and cordoned off the suspect area in co-ordination with Special Operations Group (SOG) JKP & RR. Since it was dusk and darkness had already started to settle in, it was an impediment in the smooth movement of troops. Further, the open area laced with orchard trees provided very little cover to the troops during their advance to the suspect location. Nevertheless, with some calculated risks and appreciation of the input and terrain, the security forces embarked on a joint search operation of some suspect houses. Shri Angom Naresh alongwith Constable Sanjeev Kumar of 90 Bn CRPF formed one such team for search operation. However, despite conducting the search of three houses, which took considerable time, nothing was found.

During the search of a suspected house of one Abdul Qayoom Bhat s/o Gh. Mohd Bhat, Constable Sanjeev Kumar who was observing every detail with rapt attention, noticed a magazine pouch lying near the washroom situated just outside

the suspect house. Sensing something amiss he immediately informed his senior on the significant recovery. Consequently, the cordon of the suspected house was tightened and alert was sounded to the troops involved in the search to be extremely vigilant. It was found that the washroom had been locked from inside, which confirmed the suspicion of the militant being holed up inside. Several warnings were made to the militant to surrender but there was no response. To provoke the militant to come out of the hide-out, tear smoke shells were also fired by the civil police towards the washroom. However, it did not have the required effect. Approaching the area was a difficult proposition as it was open and afforded little cover in case of fire from the militant. Due to the apparent threat, nobody volunteered to move ahead. At this critical juncture, exhibiting exemplary bravery and professional acumen, Constable Sanjeev Kumar under the guidance of Angom Naresh, Second-in-Command started advancing forward tactically towards the bathroom using whatever little cover the ground could provide and by adopting the smallest posture. His aim was to close in on the target area so as to prevent the militant from sneaking out of the washroom and moving into the adjacent large buildings. Exposing himself to the gravest threat, he crept close to the location. He observed some movement of the militant trying to take position from the window of the washroom.

Suddenly, the militant, who was hiding in the washroom, opened a volley of fire with the intention of disorienting the troops and taking advantage of this situation to move out to safer location. However, Constable Sanjeev Kumar immediately leapt out of the way of the adversary's fire and retaliated without loss of time forcing the militant to move back and probably injuring him as well. This gave an opportunity to the other members of the team to take position and further close in on the militant. Thereafter, a heavy exchange of fire ensued between the militant and the troops. After about 15 minutes the gun battle ended. Thereafter, search of the washroom was organized and body of one militant namely Yawar Nasir Shergujary, r/o Shirpora, PP-Jaglatmandi, Distt-Anantang (J&K) was recovered. The killed militant was associated with Hizbul Mujahideen group. Recoveries included one SLR Rifle with magazine and matching ammunition, one Chinese grenade and other miscellaneous articles.

In the operation, Force No. 065230247 Constable Sanjeev Kumar of 90 Bn, CRPF displayed exemplary and unflinching courage, professionalism, dedication towards duties in the face of grave threat to his personal life, wherein he seized the opportunity with tactful appreciation and reacted swiftly in not only preventing the militant making good his escape from the hide-out but repulsed the fire with hardly any cover to himself, injuring and cornering the militant thereby leading to his final elimination. The timely and gallant reaction of Constable Sanjeev Kumar prevented a probable damage to the security forces. Constable Sanjeev Kumar fired 10 rounds in the encounter and distinctly contributed to the killing of one active and dreaded militant of Anantnag district of South Kashmir."

In this operation, S/Shri Sanjeev Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/08/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 155-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Devendra Kumar
Second-In-Command

02. Vijay Singh
Assistant Commandant

03. Bishnoo Singh
Head Constable

04. Ajaz Ahmad Bhat
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Tral sub-division of District Pulwama in South Kashmir has been a traditional stronghold of terrorist outfit Hizb-al-Mujahideen (HM). Many of the top Commanders of the terrorist outfit hail from Tral. Also the cadres of HM enjoy popular

support in the area. Tral also has a geographical advantage as it is situated on the edge of the plateau dividing upper and lower Tral. It is surrounded by densely forested mountains. While it provides natural shelter to the terrorists, it also makes counter-insurgency operations extremely difficult and hazardous. After the elimination of Burhan Wani, Divisional Commander of Hizb-ul-Mujahideen in an encounter on 08 July 2016, his subordinate Sabzar Ahmad Bhat had taken over as the Operational Chief of HM.

On 26 May 2017 at about 2000 hrs, an input was received about the presence of some HM terrorists in the area of village-Saimoh under PS-Tral. A party of 42 RR in a MPV (Casper) had already moved to Saimoh to verify the input. Almost around the same time, a party of C-Coy of 180 Bn, under command of Shri Devendra Kumar, Second-in-Command (Operation) 180 Bn, CRPF and Special Operations Group (SOG) Tral of Jammu and Kashmir Police (JKP) alongwith, Dy. S P. Tral were also patrolling in the nearby Rasthsuna village. At around 2030.hrs, when-the MPV of 42 RR reached Saimoh village, it was fired upon by the .terrorists which was appropriately retaliated. On hearing the gunshots, the CRPF party under command of Shri Devender Kumar Second-in-Command(Ops) immediately got in touch with the party of RR and reached the spot in village Saimoh (where the party of 42 RR was fired upon). Major Vikram Singh, Party Commander of 42 RR informed him that the terrorists have fled towards Dutta Mohalla of village Saimoh after opening fire on the party of RR. Accordingly, both the Commanders decided to instantly cordon off Dutta Mohalla. At about 2045 hrs, Sh. Devendra Kumar, Second-in-Command alongwith Shri Vijay Singh, Asst. Comdt. Company Commander of C coy, troops of 42 RR and SOG laid a tight cordon around 15 suspected houses.

Subsequently Sh. Rajesh Kumar, Comdt-180 Bn, CRPF, SSP Awantipora, Brig. Raja Chakraborty, Sector Commander also reached the spot to supervise the operation. Thereafter, the joint team decided to carry out search of suspected houses of Dutta Mohalla as inputs indicated the presence of a dreaded Hizb-ul-Mujahideen commander along with other terrorists. Two joint teams of CRRE, Army and SOG were formed to carry out search of suspected houses. Sh. Devender Kumar, Second-in-Command, his buddy Constable Ajaz Ahmed Bhat with a team of SOG and RR were part of the first team. The second team comprised of Sh. Vijay Singh, Asstt. Comdt. and his buddy No 991370898 Head Constable Bishnoo Singh. While the search was on, one of the house owners Mohd. Yusuf Dar confirmed hearing gun shots a while ago and that immediately thereafter HM Commander Sabzar Ahmad Bhatt along with two other terrorists had entered his house. At the same time he expressed that he was unsure whether they were still hiding in his house or had moved out. On receiving this information, the cordon was further tightened to foil any escape of the terrorists taking advantage of the darkness. Further search was suspended till first light and the troops were briefed to remain alert and cautious.

The next morning i.e. on 27 May, at about 0730 hrs, Vijay Singh and his buddy Bishnoo Singh exposing themselves to great risk positioned themselves on the first floor of the neighboring house on the southern side of target house. From that position they were able to see all the activities inside the target house through shattered windows. The target house was a threes storied structure and it was a move fraught with grave risk as terrorists were on a dominating position. Vijay Singh alongwith his buddy Head Constable Bishnoo Singh fired few probing shots towards the target house but they received no response. Meanwhile, Devendra Kumar, Second-in-Command and his buddy Constable Ajaz Ahmed Bhat also had taken position on the ground floor of the house adjacent to the target house on the western side.

At about 0830 hrs, Devendra Kumar observed some movements inside the target house and immediately alerted all parties. He and his buddy Constable Ajaz Ahmed Bhat moved forward by crawling towards the target house in order to engage the terrorists. On observing the movement, the terrorists opened heavy fire and a massive gunfight ensued at around 1030 hrs. Devendra Kumar and his buddy Ajaz Ahmed Bhat however were undeterred and amidst the heavy fire continued their move towards the target house very tactically. The terrorists continued to fire but were also rapidly changing positions with an intention to throw the security forces off guard and make good their escape. Suddenly amidst the fierce gun battle, the terrorists turned their weapons in the direction of Vijay Singh Asst. Comdt and his buddy Bishnoo Singh. Undeterred they responded promptly with burst fire and aborted the attempted escape of terrorists who were trying to jump out of the window. At this critical juncture Devendra Kumar, Second-in-Command and his buddy Constable Ajaz Ahmed Bhat, exhibiting shrewd tactical acumen and presence of mind, strategically shifted their positions and moved to within striking distance of just 10 meters from the target house and directly engaged the windows from where the terrorists were firing at the troops. As the terrorists were in a very well fortified three 'storied building, they were virtually not impacted by the fire. Therefore, changing tactics, Sh. Vijay Singh and his buddy Head Constable Bishnoo Singh pitched a few Molotov cocktails inside the target house as a result of which the ground floor of the target house caught fire and the smoke billowed up to the second floor.

At about 1115 hrs, the terrorists made one last bid to escape. Firing indiscriminately at the troops they rushed out of the target house from different exit points and ran towards the main gate. Devendra Kumar and Ajaz Ahmed Bhat unmindful of their personal safety and throwing all caution to wind, positioned themselves against the heavy fire of the terrorists and neutralized one of them. Vijay Singh and his buddy Bishnoo Singh who had positioned themselves very tactically did not let go the opportunity either and firing accurately neutralized the second terrorist who was later identified as Faizan Muzaffar

Bhat @ Umaira who had snatched one 5.56 mm lnsas Rifle from one of the CRPF units in Tral on 04 Mar 2017. The looted weapon was also recovered from the slain terrorist. The other slain terrorist was identified as Sabzar Ahmad Bhat @ Saba Don @ Zaraar s/o Gh. Hassan Bhat r/o Rathsun.a under PS Tral of Hizb-Ul-Mujahideen outfit. He was an A++ Category terrorist carrying a cash reward of Rs 12.5 lacs. He was active since 2015 and was one of the top Hizb-U1-Mujahideen Commander post the elimination of Burhan-uddin Wani. Faizan Muzaffar Bhat @ Umaira s/o Muzaffar Ahmad Bhat was a r/o Tral. One AK-47 assault rifle, one 5.56 Insas Rifle, two magazines of AK-47, four magazines of lnsas Rifle and matching ammunition were also recovered from the slain terrorists.

In the operation, Shri Devendra Kumar, Second-In-Command and Shri. Vijay Singh, Asstt. Comdt. of 180 Bn CRPF led from the front like true leaders of men and 'exhibited astute tactical appreciation, extraordinary courage and raw valour and motivated their buddies to remain steadfast in the roles assigned to them under the most trying circumstances. As a result they jointly accomplished the challenge of neutralizing both the terrorists. Force No. 991370898 Head Constable Bishnoo Singh and Force No. 085340215 Constable Ajaz Ahmad Bhat of 180 Bn, CRPF, too, did not let their Commanders down and kept up the faith reposed in them. They displayed highest degree of commitment, sense of responsibility and exceptional bravery in the face of clear imminent danger and ensured that they stood up to the challenge and neutralized the terrorists.

In this operation, S/Shri Devendra Kumar, Second-In-Command, Vijay Singh, AC, Bishnoo Singh, Head Constable and Ajaz Ahmad Bhat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/05/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 156-Pres/2018—The President is pleased to award the 3rd Bar to Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Rajesh Kumar Commandant	(1st Bar to PMG)
02.	Sanjay Kumar Dupty Commandant	(3rd Bar to PMG)
03.	Rajesh Kumar Barnela Assistant Commandant	PMG
04.	Sandeep Singh Constable	PMG
05.	Ranjan Kumar Sah Constable	(1st Bar to PMG)
06.	Nazir Ahamed Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 14 July 2017 at around 1530 hrs, a specific input was received from SSP Awantipora about a suspected hideout of the dreaded terrorist outfit Jaish-e-Mohammad (JeM) in the Wantiwan Ridges of Wantiwan mountain ranges in Vill-Satoora, under PS-Tral in Pulwama district of Jammu and Kashmir (J&K). Wantiwan Ridge is located 2405 metres above the mean sea level. The 65 degree gradient of the target area was a challenge for the security forces, as the enemy was in a dominating position and could spot the approaching troops from a distance. The target area was located to the north of Tral on Tral-Aripal-Satoora-Juhisthan road at a distance of 20 kms from Tral and a approx. 2 kms from the road head.

Considering the nature of the terrain, a joint Cordon and Search operation (CASO) was planned by Shri Rajesh Kumar Commandant of 180 Bn, CRPF. It was an opportunity to effectively put to practice the training he had acquired in jungle warfare tactics. Accordingly, on 15 July, just before the crack of dawn at around 0330 hrs, the area was cordoned off by the joint forces of CRPF, 42 RR and the Civil Police. Thereafter, a search party comprising of 'A' company and Quick Action Team (QAT) of 180 Bn, D/42 RR and party of Civil Police tactically moved towards target area. Non-stop rainfall on

the previous night had made the climb further slippery and difficult. But braving all odds, the security forces managed to reach the target area at about 0645 hrs.

Shri Sanjay Kumar, Dy. Comdt. of 180 Bn after due deliberations with Shri Rajesh Kumar, Comdt and sensing the necessity to quickly take positions, before the terrorists commenced their morning activities, placed the troops tactically around the suspected hideout which was a natural cave on top of the Wantiwan Ridge. Behind this cave was a big cliff, rendering it virtually impossible to lay the cordon on that side; therefore a "U"-shaped cordon was placed. Shri Rajesh Kumar Comdt along with his buddy Constable Ranjan Kumar Sah positioned himself a little below on a seemingly vertical undulation. The absence of a natural cover in front of the cave was further hampering the advance of the troops closer to the mouth of the cave.

At about 0750 hrs, two young men appeared at the mouth of the cave absolutely unaware of the cordon around them. The troops challenged them in order to ascertain whether they were terrorists or local shepherds. The challenge was responded with a volley of bullets. One of them in a bid to escape, ran down the slope firing towards the QAT deployment. Finding himself completely trapped, in sheer desperation he tried to approach the cordon, with grenade in his hand and mouthing choicest expletives in a bid to terrorize the troops. Since Shri Rajesh Kumar along with his buddy Constable Ranjan Kumar Sah were positioned very tactically, they could closely observe the movement of the terrorist. Sensing that the terrorist was capable of inflicting serious damages, Rajesh Kumar, Commandant like a true leader, exhibiting remarkable presence of mind in a split second move exposed himself to the extent that he had the line of sight very clear, fired accurately and gunned down the terrorist.

The remaining terrorists who were trapped in the cave continued to fire heavily with UBGL as well as small arms. Without appropriate cover, approaching the cave was fraught with grave risk and danger. Not to be cowed down, Shri Rajesh Kumar Barnela Asst. Comdt, 180 Bn who had taken position at a distance in front of the cave continued to pound the cave with UBGL and other firearms thus preventing the terrorists from making escape attempts.

At about 1300 hrs, after a prolonged gunfight lasting almost five hours, Sector Commander of RR, who was supervising the operation ordered the troops to advance towards the hideout without loss of time, as he was of the view, that, any further delay in the final assault may provide the terrorists with the opportunity to escape once the darkness set in. Shri Rajesh Kumar, Comdt expressed his reservations on the issue and informed the Sector Commander that the move may prove disastrous in the absence of adequate cover, as the terrorists were occupying a dominating position. He proposed an alternative route that would take them much closer to the hideout. Thereafter he suggested smoking out the terrorists with the help of Tear Smoke shells and grenades. The plan was appreciated and well taken by the Sector Commander Shri Sanjay Kumar, Dy. Comdt volunteered to lead the Assault Team which was tasked to destroy the heavily fortified hideout on the top of the ridge adopting the most challenging and difficult route proposed by Comdt 180 Bn. This Assault Team comprising of total 12 jawans of CRPF, 42 RR and SOG (JKP) led by Shri Sanjay Kumar, Dy. Comdt moved up slowly negotiating the cliff with the help of ropes and other rock climbing equipments and emerged at the rear side of the hideout. Maintaining utmost surprise they tactically took positions. Thereafter, Sanjay Kumar alongwith his buddy Constable Sandeep Singh crawled towards the cave cautiously. Any false move could have spelt death knell for them, but they were determined to succeed and thus stoically moved forward. When they were at a reasonable striking distance, Sanjay Kumar directed his buddy Constable Sandeep Singh to fire Tear Smoke shells inside cave to induce the terrorists out of their hideout. Sandeep Singh further crawled and moved closer to the opening of cave and took position behind a boulder located at a distance of 10 meters short of the opening to the right of the cave. Sandeep then started pounding the mouth of the cave with Tear Smoke Shells. This innovative tactics paid dividends when after about 15 minutes of pounding the cave with tear smoke munitions, two terrorists appeared behind a wall made of stones and fired in the direction of Sanjay Kumar, Dy. Comdt and his buddy Sandeep Singh. Tactfully taking the cover of the boulder, they retaliated the fire. Sanjay Kumar was not a novice to such situations and had faced the fury of terrorists with tenacity and vigor in the past as well on many occasions thereby earning him awards for his gallantry. Completely undaunted by the flurry of fire from the adversaries he took careful aim and returned the fire. He managed to strike one of them forcing the other terrorist to withdraw into the cave. But he changed his position again and tossed more tear smoke grenades into the cave. Realizing that the officer had inched very close to the cave, the terrorist hiding inside the cave lobbed a Hand Grenade which blasted outside narrowly missing Sanjay but not without leaving him with a splinter injury in his knee. But he was not the kind to give up midway. Displaying indomitable resolve, nerves of steel and unflinching commitment Sanjay Kumar held his position. The team by this time had exhausted their Tear Smoke Munitions (TSM) and they demanded more. Shri Rajesh Kumar Barnela, Asst. Comdt., his buddy Constable Nazir Ahamed and Constable Ranjan Kumar Sah were tasked to move ahead with TSMs. All the three moved tactically and reached near the opening of the cave. Rajesh Kumar Barnela placed himself on a dominating rock and covered the opening of the cave. He then directed Constable Nazir Ahamed to fire few tear smoke shells inside the hideout. At this juncture, to cover the front of the hideout, Constable Ranjan Kumar Sah was directed to take position near a tree located at a distance opposite the hideout. Displaying exceptional maturity beyond his age, unflinching commitment and unmindful of his personal safety Constable Ranjan Kumar Sah took his position at the designated place. The terrorists observed the movements and fired in their

direction but Rajesh Kumar Barnela returned the fire effectively forcing them to withdraw. Seizing the opportunity, Constable Ranjan Kumar Sah fired 04 rounds of UBGL inside the cave but the irregular structure of the cave rendered it ineffective. So Constable Ranjan Kumar Sah along with Major Shakti Singh of RR inched closer to the hideout and from a distance of about 20 meters fired more grenades into the cave with the help of UBGL. In response the terrorist lobbed a Hand Grenade out of the cave which exploded erecting a dust and smoke curtain blinding the troops. Taking advantage of this melee, one terrorist ran out of the cave firing indiscriminately in the direction of Rajesh Kumar Barnela and his buddy Constable Nazir Ahamed. With utter disregard to their own safety and throwing all caution to wind stepping out of their covers Rajesh Kumar, Asst Comdt, his buddy Constable Nazir Ahamed and Constable Ranjan Kumar Sah fired simultaneously and neutralized the terrorist about 5 meters outside the cave. In order to ascertain that no more terrorists were hiding inside the cave, few more rounds of UBGL were fired by Constable Ranjan Kumar Sah inside the cave but there was no response. At around 1745 hrs, the search party moved ahead to mop up the operation. Ranjan Kumar Sah along with jawans of SOG continued to give covering fire to the search. party. The over 12 hour long operation led to the elimination of three hardcore terrorists of JeM. Later during search, it was found that the total length of the cave Was a approx. 45 ft, was curvilinear in shape and on account of its typical shape and special features flat trajectory weapons and projectile had proved ineffective. The effective use of Tear Smoke Shells and grenades had proved to be the game changer. The slain militants were identified as Hasan Bhai, category 'A' JeM and a r/o Pakistan, Parvez Ahmed s/o Ghulam Qadir Mir, category 'C' JeM r/o Puhoo, Kakapura, Pulwama and Mukhitar Ahmad Lone, category 'C' JeM, s/o Mohd. Akram Lone, r/o Vill-Amirabad, Tral, Pulwama. Troops also recovered 03 AK-47 Rifles, 14 AK magazines, 80 rounds of AK-47, 01 UBGL, 06 UBGL rounds, 01 wireless set with antenna and ammunition pouches. It was also learnt that these terrorists were responsible for attacks on the camps of 180 Bn CRPF and 42 RR in Tral in the month of June 2017.

In this operation, S/Shri Rajesh Kumar, Commandant, Sanjay Kumar, Dupty Commandant, Rajesh Kumar Barnela, Asst. Commandant, Sandeep Singh, Constable, Ranjan Kumar Sah, Constable and Nazir Ahamed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/07/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 157-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Raj Kamal Bardhan
Assistant Commandant

02. Gayakwad Ashish Bhashkar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

The village of Kakapora in district Pulwama has become the hot-bed of militancy in South Kashmir, since its revival, in the aftermath of the killing of a top militant leader in July 2016. It has now developed as the strongest bastion of Lashkar-e-Toiba (LeT). Off late, the village has been also harboring the hard core Jaish-e-Mohammed (JeM) terrorists. The OGW network of LeT is very strong in the village, and on numerous occasions, operations against LeT terrorists in Kakapora have failed, due to massive stone pelting resorted to by the miscreants/sympathizers of the terrorists.

On 21 June 2017 at about 1715 hrs, SSP Pulwama shared an input about presence of 2 or 3 LeT terrorists in New Colony, Kakapora under PS-Kakapora, District Pulwama with Commandants of 182 and 183 Bns of CRPF and 50 RR. A joint operation was planned and after initial briefing joint forces proceeded to the said village. A cordon was laid around 15 suspected houses by the joint troops of D Coy of 183 Bn under command of Shri Raj Kamal Bardhan, Assistant Commandant, 183 Bn, CRPF, 50 RR under command Major Kartikeya Manral (IC-72229P) and Special Operations Group (SOG) Kakapora under command Shri Satish Kumar, Dy SP, J&K Police. Subsequently, the cordon was further reinforced by additional troops of CRPF, Army and Civil police.

After outer and inner cordon were completely placed, six suspected multi-storied houses were identified for search. These clusters of houses were very closely located and connected with each other with common boundary walls.

Accordingly, a joint search party of Quick Action Team (QAT) of D coy of 183 Bn under command Shri Raj Kamal Bardhan and 50 RR under command Major Kartikeya Manral were formed. Subjecting themselves to grave risk, the search parties comprising of 4 personnel apart from the officers completed the search of four suspected houses and had also tactically cleared the ground floor of the fifth house. As the party tactically moved towards the first floor, a volley was fired upon the party from the first floor. Major Kartikeya Manral of 50 RR was hit by the bullet on his right shoulder and he fell down. Shri Raj Kamal Bardhan alongwith his buddy-pair Force No. 115258242 Constable Gayakwad Ashish Bhaskar of 183 Bn who was with the Major immediately moved to the left of the injured Major Kartikeya Manral and exposing themselves to grave risk of life fired at the terrorist forcing him to withdraw to the first floor. Exhibiting true camaraderie and genuine concern for their wounded colleague, both Raj Kamal Vardhan and his buddy Gayakwad Ashish evacuated Major Kartikeya Manral of 50 RR to safety subjecting themselves to grave risk.

After evacuating Major Kartikeya to safety Raj Kamal Bardhan and Constable Gayakwad Ashish returned back and moved towards the adjacent house changing their tactics, as from there they could keep a hawk's eye on the terrorists if they made a bid to escape. However, when Raj Kamal Bardhan and Gayakwad Ashish were moving towards the adjacent house, the terrorists let loose another volley of bullets. Both of them had a miraculous escape. On reaching the house, they found civilians inside. Knowing very well that the security forces were present in the house, the terrorists continued to fire at the house. After the civilians were evacuated to safety, both of them placed themselves tactically on the first floor of the house in order to prevent the terrorist from escaping as there was only one escape route and it was more or less confirmed that the terrorists were present in that particular house only.

The forces kept bombarding the house with UBGL and MGL till it caught fire and went up in flames. At around 0100 hours next day, after the flames were extinguished, the target house was jointly searched by the forces. Dead bodies of three terrorists were recovered. The terrorists were identified as Majid Mir S/o Abdul Hamid Mir category ' A', Shakir Ahmad s/o Washeer Ahmad category 'B', r/o Kakapora, Pulwama and lrshad Ahmad Dar s/o Mohammad Sultan Dar r/o Padgampora, Awantipura category 'C' , all from the LeT militant outfit. The troops also recovered one AK-56 Assault Riffle, three AK-56 magazines and one T-65 Pistol with magazine.

In the said operation Shri Raj Kamal Bardhan, Asst Comdt and his buddy Constable Gayakwad Ashish displaying extraordinary initiative and raw valor volunteered to be part of the room intervention team. When Major Kartikeya sustained bullet injury while carrying out this risky task, both of them exhibiting the spirit of brotherhood and camaraderie and exceptional courage compelled the terrorist to withdraw by firing at him in a split second's time, thereby saving valuable life of a colleague and evacuating him to the confines of safety at great risk they also evacuated trapped civilians to safety. Thereafter, without getting bogged down by the imminent threat, Asst Comdt Raj Kamal Bardhan alongwith with his buddy Constable Gayakwad Ashish took position in the adjacent building which was under constant fire from militants and prevented the terrorists from making good their escape. It was a clean operation without any collateral damages which reflected the synergy and cohesiveness between the operating forces.

In this operation, S/Shri Raj Kamal Bardhan, Asst. Commandant and Gayakwad Ashish Bhashkar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/06/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 158-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ajay Rathee
Assistant Commandant

02. Anil Singh Rana
Constable

03. F Kanta Singha
Constable

04. Sanjay Kumar Ray
Constable

05. Ruwngshel Bungsong
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On an information received from DIGP(Ops) North SNR, an operation was planned and launched by Additional S.P., (SOG) SNR and Zonal QAT, (25 personnel) U/C Sh. Ajay Rathee, A/C 144 Bn in the area of SOG (Cargo) at 0900 Hrs on 05/12/2014. Zonal QAT under command Sh. Ajay Rathee along with SOG team laid a tactical NAKA at 90 feet road, in front of Avanta Bhavan.

At about 1345 Hrs, while troops were vigilantly checking the movements on the axis, suddenly 02 armed terrorists emerged and opened indiscriminate fire on SFs with their automatic weapons. The troops had a narrow escape from the stray bullets as they just passed them by a whisker. Acting promptly, the Zonal QAT and SOG retaliated the fire and forced the terrorists ran away towards the side street of Avanta Bhavan. The Zonal QAT commander, Sh. Ajay Rathee, A/C sensed the intentions of terrorists and chased them, along with his team. Seeing the SFs behind them, terrorists took the position at the turn of the street and started firing towards the advancing troops making them difficult to move ahead.

Terrorists were firing heavily to delay the advance of the SFs to get time to run away from that area. However, Sh. Ajay Rathee, A/C, and his brave hearts were in no mood to let them escape. Taking the rare opportunity in hand, Sh. Ajay Rathee, A/C decided to move forward and challenge the terrorists. Amid the heavy firing, he along with No. 060065153 CT/GD Sanjay Kumar Ray and No. 095150384 CT/GD R.Bung Sung moved ahead and directed to HC/GD P. Sengar, CT/GD Gyanendra Kumar and CT/GD Sarwan Kumar for giving them covering fire. Defying the mortal threats, Sh. Ajay Rathee, A/C along with his two brave hearts moved quickly towards the terrorists. Finding the above trio advancing towards them, terrorists increased the volume of firing and also threw a grenade to stop their movement. However, no obstacle and threats could deter the courage of above trio. Setting aside the odds, the trios moved forward and charged on the terrorists with accurate firing and neutralized one of the terrorists at the end of the street.

The audacious action by the SFs devastated the evil designs of the terrorists as they could not get sufficient time to run away and hence the other terrorist took shelter in nearby buildings. To search the hidden terrorist, team commander made two parties and started searching for him in the nearby area and houses for approx. 04 hours. When the security forces reached near the Govt. Boys Model School, the hidden terrorist opened indiscriminate firing on the security forces which was aptly retaliated by the troops.

To get the terrorist out from the building, a room intervention party comprising CT/GD Anil Singh Rana, CT/GD F. Kanta Singh, CT/GD Sanjay Kumar Ray and CTGD R.Bung Sung, along with troops from SOG was formed and assigned the task to search the building. Firstly troops cordoned the area near the school building, where the terrorist was hiding, from the backside to prevent any slip out of the terrorist. Meanwhile, the terrorist got located in a nearby Cow shade building, firing indiscriminately on SFs. After cornering the terrorist, troops made an appeal for surrender, meanwhile, with the help of covering party above 04 brave hearts of room intervention party positioned themselves behind the wall of the house near the cow shade. On the appeal of SFs, the terrorist responded with a barrage of bullets towards them. Acting pro-actively, CT/GD Anil Singh Rana, CT/GD F. Kanta Singh crawled towards the terrorist position and reached close to him with the help of covering fire of CT/GD Sanjay Kumar Ray and CT/GD R. Bung Sung. Holding their nerves and displaying rare courage, they lobed a grenade towards the terrorist followed by the accurate firing. The ferocious and unexpected attack from close range by the above duos stunned the terrorist and before he could act upon the situation, he got neutralized.

In the fierce gun battle two LeT terrorists namely Qari Asrar (District Commander (LeT) Pak Orgin carrying reward of 5 Lakh) and Shahid-UI-Islam Malik (LeT) were neutralized by the troops and AK 47 Rifles-02 Nos., Mag AK 47-05 Nos. with 03 Hand grenades were also recovered from slain terrorists.

In this operation, S/Shri Ajay Rathee, Asst. Commandant, Anil Singh Rana, Constable, F Kanta Singha, Constable, Sanjay Kumar Ray, Constable and Ruwngshel Bungsong, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/12/2014.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 159-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Pushpendra Kumar
Commandant

02. Appamoni Roy
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input was received about the presence of Central Committee Members Ganesh Uike along with 100-150 armed CPI (Maoists) in general area of villages Puvarti, Bhattiguda and Kondapalli under PS Basaguda. Accordingly, a joint Search and Destroy Operation for 03 days and 03 nights was planned by Shri Pushpendra Kumar, Commandant, 204 CoBRA to nab the Maoists. Operating against the Maoists in the above area has always been challenging, yet, Shri Pushpendra Kumar, Commandant, 204 CoBRA dared to test the Maoists in their citadel. He made his squad for this daunting task comprising of 04 teams of 204 CoBRA and State Police component from Basaguda. Sensing the unborn challenges of the operation, Shri Pushpendra Kumar, Commandant decided to lead the operation.

Weighing all the opportunities and threats, the party Commander left the base camp Basaguda on 15/11/2016 at around 1930 hours along with his troops. Troops were advancing towards the target area using cross-country routes through the jungles in the moonlight while maintaining the secrecy and crossed the Polampalli, Konjer, Tekalgudem and Tumilguda villages. On 17/11/2016 at around 0600 hrs, while troops were carefully searching the area, scout of the Team noticed a hideout of Maoist having 40-50 armed cadres. He immediately alerted the troops and communicated the information to Ops Commander, Shri Pushpendra Kumar, Comdt who was in the leading Section. It was a crucial moment for the commander as they could finally locate their target which was in front of them. He sensed that this is the time for which they were looking for since long; to defeat the Maoists in their citadel. Without wasting a fraction of moment party Commander Shri Pushpendra Kumar, Comdt chalked out a plan to nab the Maoists. He divided his troops into 03 smaller parties and directed to Party Commanders of Party No. 1 & 3 to lay the cut off on escape routes from the right and back side respectively, while keeping Party no. 2 along with him to confront the Maoists from the front.

As per the plan, Party No. 1 & 3 advanced towards their respective targets stealthily taking due cautions to maintain the secrecy. Meanwhile Shri Pushpendra Kumar, Comdt. decided to reach as near as possible to the Maoist position to get a suitable tactical position while maintaining the secrecy. It was a daring move, as; a single mistake could have attracted the notice of heavily armed Maoists that could have been fatal for the approaching troops. Nevertheless, Shri Pushpendra Kumar, Comdt. displaying the true grit and metal of a commander, led his troops from the front as he crawled towards the Maoists position along with his buddy CT/GD Appamoni Roy. Holding their nerves and the ground, the duo reached very close to the position of Maoists. The fellow troops also followed their commander and took position behind him. After securing the position of his troops, Shri Pushpendra Kumar, Comdt. challenged the Maoists to surrender before them. Maoists, at once, got stunned on finding SFs so close to them. However, they took on the situation at very next moment and mocking the offer of surrender, opened a barrage of bullets towards the team of Shri Pushpendra Kumar, Comdt. The shower of bullets missed their targets by a hairs breadth and the troops had a miraculous escape from the first brunt of the Maoists firing.

Acting promptly, Shri Pushpendra Kumar, Comdt. retaliated to the Maoists firing. Soon his buddy Constable Appamoni Roy along with other troops also joined his commander and augmented the counter-attack against the Maoists. Maoists had occupied tactical positions behind the fortified defense due to which the firing from the SFs was not proving effective. On the other hand, Maoists were firing indiscriminately and trying to encircle the SFs to kill them and snatch their weapons. The situation was turning against the troops. A bold and courageous counter-offensive against the Maoists was the need of the hour. Rising to the occasion, Shri Pushpendra Kumar, Comdt, decided to change his position as the firing from this position were going into vain due to the fortified defense of Maoists. He located a place ahead of his position from where he could have effectively fired upon the Maoists. But, this was going to be like sailing amid the tempest. Advancing amid the raining bullets was a fatal move; yet, the commander chooses the glory and bravery over the fear of fatality. He, displaying the utter disregard for his personal safety, led from the front and crawled with incredible speed in hostile conditions to reach close to the Maoists at the striking position. Advancing fearlessly amid the firing, the commander positioned himself and started targeting the Maoists with his accurate fire. Meanwhile, his buddy also joined him from behind and galvanized the intensity of the counter-attack.

The fierce and daring counter-offensive led by Shri Pushpendra Kumar, Comdt astonished the Maoists. Before the Maoists could overcome the blow, the duo neutralized one of the Maoists through their effective firing. The valorous act of

the commander and his buddy catalyzed the fellow troops, who also charged ferociously upon the Maoists. Meanwhile the Party no 1 & 3 also reached the spot and started encircling the Maoists in coordination with the Party no. 2. Finding them encircled and under the thrust of effective fire of SFs, Maoists, having no other option, started fleeing away taking advantage of thick vegetation and undulating ground.

The fierce gunfight continued for approx. 30 minutes. During post encounter search troops recovered 01 Dead Body Of CPI(Maoist) namely MochakaMasa, Jan Militia member along with SBML Rifle-02 Nos, Pipe Bomb – 02 Nos, Detonator – 04 Nos, Empty Cases – 13 Nos (Ak 47-09 Nos, Insas-04 Nos), Bayonet (Knife) – 01 No., Pitthu Bags-04 Nos, Blanket – 10 Nos, Bow & arrow, Mobile Phone, Naxal Literature/Banner, Cash Money of Rs 1,910/-and other miscellaneous daily use items. A lot of blood stains were also noticed in the area indicating that other Maoists have also been hit by bullets but managed to escape. Reportedly, two injured Maoists later succumbed to their injuries in Pamed and Dharmavram village.

While returning towards Base Camp Naxals fired upon our troops at 03 different places to kill the SFs and to snatch away the dead body of the Maoist, but due to strong retaliation by the troops, they had to run away to save their lives. When troops were in general area of Vill Polampalli, CT/GD Appamoni Roy who was in leading section noticed 02 IEDs which were demolished at the spot. Due to good tactical observation, alertness and presence of mind, CT/GD Appamoni Roy could detect the IEDs and thus not only averted the untoward incident but also saved precious life of his colleagues. The Ops party after overcoming all the odds on the way reached base camp Basaguda safely on 17/11/2016 along with the dead body of the Maoist and recovered items.

During the operation Shri Pushpendra Kumar, Commandant, 204 CoBRA, displayed exceptional leadership qualities, raw grit and moral courage risking his own life in the face of certain death, in order to save the lives of his men and accomplish the task. Undaunted by the strong offensive by the Maoists, he stood his ground, led his troops from the front and continued to fire leaving the Maoists with no option but to flee. He set an indelible example of chivalry of the highest order and sterling qualities of a leader, in keeping with the highest traditions of the Force. CT/GD Appamoni Roy fought bravely and accompanied his commander in tough times. He was instrumental in neutralizing and inflicting injuries to the Maoists. Besides, during the return, he detected the two IEDs before the blast and saved precious lives of his fellow comrades.

In this operation, S/Shri Pushpendra Kumar, Commandant and Appamoni Roy, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 160-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Anil Kumar Chaurasia
Assistant Commandant

02. Kousik Mondal
Constable

03. Ingale Lakhan Prakash
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the period just before the commencement of Shri Amarnathji Yatra the security situation in South Kashmir took an ugly turn with a spate of incidents including the attack on Army convoy on 3rd June at Lower Munda, Quazigund, the brazen ambush of police party under SHO Achabal on 16th June at Thajiwara , the snatching of weapons from residential guards of Justice (Retd) Attar at Sarnal and looting of many ATMs. The main culprit in these dastardly acts was the dreaded Lashkar-e-Toiba (LeT) Comdr Bashir Lashkar. He was also being assisted by a few foreign terrorists which made him formidable and dangerous. To top it all, he had been tasked by Abu Dujana, the LeT Comdr of South Kashmir to organize attack on yatris undertaking Shri Amarnathji Yatra. His elimination was therefore extremely crucial to the SFs and more importantly for the safety of the Yatra.

At around 0300 hrs on 1St July, 2017 Shri Mohsen Shahedi, DIG (Ops) CRPF Anantnag received intelligence input from SSP Anantnag regarding presence of Bashir Lashkar at Brinty, Dialgam in Anantnag alongwith a possible Foreign Terrorist (FT). SSP requested for participation of Range QAT and CI (Ops) Platoon in the operation. DIG CRPF Anantnag immediately briefed and directed Shri Anil Kumar Chaurasia, Coy Commander of B coy of 40 Bn who was commanding Young Platoon to be in readiness and also alerted Range QAT. Simultaneously, he also detailed the law and order coys and reserves to tackle the likely difficult situation ahead. The Young Platoon was marched with SOG, JKP without loss of time and in the absence of Comdt 40 Bn, who was placed as Camp Comdr at Nunwan Yatra Base Camp, Shri Mohsen Shahedi himself simultaneously moved with the Range QAT fully aware of the very sensitive impending operation which would require effective leadership. Comdt 96 Bn was designated as the law and order co-ordinator for the troops dealing with law and order situation in and around the encounter site.

Immediately on reaching the location, Shri Mohsen Shahedi, DIG undertook a quick appreciation of the ground situation and after briefing placed the Young Platoon of B/40 and Range QAT in a strong inner cordon with the SOG, JKP and 19 RR. The terrain around the target house was a difficult one, as, in that, on one side there was a fast flowing stream and on the remaining sides it was an open stretch spruced up intermittently with trees which afforded little cover due to their small girth. The troops therefore positioned themselves about 40 meters from the target house in the undulating terrain on the front and left side with SOG. RR was positioned on the right side of the target house and its rear. Shri Mohsen Shahedi with Constable Ingale Lakhan Prakash of Range QAT and Shri Anil Chaurasia with Constable Kousik Mondal took positions right in front of the target house.

Soon it was revealed that militants had kept as many as 17 civilians as hostages in the house of one Bashir Ahmad Ganie. Shri Mohsen Shahedi, DIG instructed his officers and men not to open fire and be extremely vigilant in case militants tried to move out under cover of the hostages. This was an extremely difficult situation. A strategy was devised by the senior officers of CRPF, RR and JKP wherein services of village Headman and Imams of local mosques were roped in and the militants were asked to release the hostages. Initially there was no response which created a tense situation. After a lot of coaxing and cajoling and tense moments, one of the ladies who was a hostage climbed on the roof of the target house and signaled. Shri Mohsen Shahedi sensing some action quickly went back to his original position in the inner cordon and alerted the troops. Soon the hostages started coming out and were signaled to move quickly to safe area. Immediately after the release of the hostages militants started heavy firing on the troops. Shri Mohsen Shahedi alongwith Shri Anil Chaurasia, Constable Ingale Lakhan Prakash and Constable Kousik Mondal who were positioned at the front side of the target house faced a volley of bullets which went past them. Shri Mohsen Shahedi just managed to take cover in time and immediately retaliated from his position by firing 3-4 bursts and shouted to his frontal team to respond with effective fire. Initially they were a bit hesitant but seeing their Comdr fire in the face of threat they too responded. The tactical placement and timely counter-action by Sheri Mohsen Shahedi, Shri Anil Chaurasia, Ingale Lakhan Prakash and Kousik Mondal despite grave threat to them from direct fire, forced the militants to retreat back into the house. Probably one of the militants was hit in the counter-action as he could be seen limping inside.

Without losing time Shri Mohsen Shahedi alongwith Comdrs of RR and JKP quickly formulated a plan. Accordingly, it was decided that RR will fire UBGL to breach the wall and CRPF will give covering fire from two sides. This time Shri Mohsen Shahedi alongwith with Constable Ingale. Lakhan Prakash of Range QAT and Shri Anil Chaurasia, AC with Constable Kousik Mondal from Young Pit placed themselves further ahead and close to the target house. This was a difficult position as there was no proper cover with just the girth of small trees where one could take position only sideways. However, they had no option but to take the risk as early winding up of the operation was extremely crucial in view of increasing law and order problem from all sides and the apparent risks involved in continuing the operation by night. During this period heavy fire started again which was effectively repulsed by Shri Mohsen Shahedi, Ingale Lakhan Prakash, Shri Anil Chaurasia and Kousik Mondal in the forefront even as bullets grazed past them and some got embedded in the tree trunks being used a cover. Despite grave and continuous threat to their personal life, they kept firing on the militants in cohesion and did not allow them to move to tactical position from where they could have caused heavy damage to troops.

After a successful breach of the wall, IED was placed and the target house was blasted. The building however, did not collapse completely. Therefore, joint assault teams were prepared for conducting room intervention/search in co-ordination with RR/SOG. Shri Mohsen Shahedi, DIG briefed Shri Anil Chaurasia, Asst. Comdt, Constable Ingale Lakhan Prakash and Constable Kousik Mondal on the layout and likely reprisal by the militants who may still be alive. It so happened that during the search procedure one of the militants who was still alive, fired on the troops but was instantly eliminated by the team.

Finally, after an intense search of the debris, dead bodies of two militants were recovered alongwith two AK-47 Rifles and 02 magazines. The terrorists were identified as Bashir Ahmad Wani @ Ukasha and Bashir Lashkar (LeT) District Commander (Category-A++) of Anantnag and Abu Maaz an F/T (Pakistani). Lashkar had a bounty of Rs 10 lakhs on his head and was the most wanted terrorist in South Kashmir.

It was a very well co-ordinated, professionally and gallantly executed successful operation which was winded up timely without any casualty/bullet injury to the troops. The credit for this can be attributed to Shri Mohsen Shahedi, DIG (Ops) CRPF Anantnag, Shri Anil Chaurasia, Asst Comdt. Constable Ingale Lakhan Prakash and Constable Kousik Mondal. Shri Mohsen Shahedi played a crucial role in the release of 17 civilian hostages. He led from the front in the operation and despite grave and continuous threat to his personal life wherein he faced volley of fire from militants from close range on several occasions, he remained undaunted and led the counter-action vehemently, leaving no scope for the militants to escape from the target house or cause casualty of troops. In the process, he made effective fire of 23 rounds from his AK-47 rifle. Shri Anil Kumar Chaurasia, Asst. Comdt., Constable Ingale Lakhan Prakash and Constable Kousik Monal formed a formidable team by remaining in the forefront of action with Shri Mohsen Shahedi, DIG and responded effectively to counter the militants in spite of being gravely exposed to militant fire without any proper cover. They also successfully conducted the house search and eliminated two most wanted militants. In the process, they efficiently fired 52, 14 and 31 rounds respectively from their AK-47 rifle.

In this operation, S/Shri Anil Kumar Chaurasia, AC, Kousik Mondal, Constable and Ingale Lakhan Prakash, Constabe displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/07/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 161-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Jatinder Kumar
Sub-Inspector

02. Satwinder Pal Bhumbla
Constable

03. Abhay Kant
Constable

04. Pawan Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16 Jun 2017, at about 0730 hrs, on receipt of a reliable intelligence input from Special Operations Group (SOG), Jammu and Kashmir Police (JKP), Anantnag that 02-03 militants had taken shelter in Mallik Mohalla in Village-Arwani, under P.S. Bijbehara, Distt-Anantnag (J&K), Quick Action Team (QAT) of G Coy of 90 Bn, CRPF located at Hassanpora and QAT of C Coy of 90 Bn, CRPF located at Sangam, immediately rushed to the site. Troops of 1 Rashtriya Rifles (RR) and SOG, Anantnag also reached the site and it was decided to launch a joint search operation of Mallik Mohalla. Arwani is a thickly populated village and Mallik Mohalla is a small colony within the village housing around 50 dwelling Units. The village is notorious and with some of the youth of the village joining the terrorists, the populace supports the terrorists and any operation launched by the security forces is met with stiff resistance.

On reaching the designated place, it was almost confirmed that the terrorists were hiding in the house of one Mohd Shafi Mallik r/o Mallik Mohalla. Accordingly the QATs of 90 Bn under command of Sub Inspector Jatinder Kumar took position on the left of the target house and the troops of RR took position on the right of the target house; a single storied structure. Once the CRPF troops had taken up their positions, troops of SOG approached the house of Mohd Shafi who confirmed the presence of three militants in his house. The occupants of the house were immediately evacuated to safety. Thereafter, an announcement was made on the public address system asking the terrorists to surrender. It met with no response. Since the target house was now firmly identified, Sub Inspector Jatinder Kumar alongwith his buddy Constable Abhay Kant placed themselves tactically in a two storied house approximately 20 metres from the target house on the left side. From this position, the front entrance as well as one window on the left was clearly visible and any attempt by the terrorists to escape through any of these could be scuttled. As has been the trend, a large mob gathered around the encounter site from the surrounding villages and started heavy stone pelting on the deployed troops, in a bid to help the terrorists to flee. Meanwhile, the CRPF reinforcements had also arrived to tackle any law and order issue. The river Vessu flowed just behind

the target house, which provided the terrorists a good escape route, provided they could eject from the target house and give a slip to the forces. In order to foil any such attempts by the terrorists Constable (Bugler) Satwinder Pal Bhumbla alongwith a few members of the QAT took position at a dominant spot on the right side of the target house so as to block any exit from the right of the target house as well, which would also have led to the river. Another Constable Pawan Kumar alongwith a few jawans took position in the left corner from where he could watch behind the target house. This way all escape routes were sealed. All these personnel were within striking distance and therefore extremely vulnerable.

At around 0815 hrs, the terrorists sensing the movement of security forces around their hideout opened indiscriminate fire, which was effectively retaliated by the SFs. Intermittent firing continued from both the sides. Any attempt to get close to the target house was fiercely resisted with very heavy volume of fire. At about 1400 hrs, the target house was set afire with the help of Molotov cocktails and flame throwers. It hardly made any impact and the terrorists continued to fire by changing positions. Realising that the ploy was not working, the security forces tactfully placed an IED to blow-up the target house, which damaged the left side of the target house. At this point of time, one of the terrorist who was hiding in the bathroom of the target house, tried to escape from the right side by jumping out of the window. Constable (Bug) Satwinder Pal who was keeping a hawk's eye and had positioned himself very tactically opened fire at the fleeing terrorist. He retaliated with a heavy volume of fire in order to pin down the troops. However, Satwinder Pal held his ground and retaliated strongly. He was well supported by Sub Inspector Jatinder Kumar, Constable Abhay Kant and Constable Pawan Kumar, who also simultaneously opened fire. This compelled the terrorist to beat a hasty retreat. An IED was again placed at around 1600 hours to the right side of the target house, as that portion of the building was still intact. The IED blasted partially bringing down the right side as well. However, the firing from the target house continued unabated. As dusk was fast approaching it was jointly decided to bring down the target house with the help of another IED. At around 1845 hrs, another IED was placed by entering the target house from behind which had partially come down. This IED was strong enough to demolish the house. Since there was no more fire from the adversaries, at about 2000 hrs, the combined team of CRPF, SOG and RR which included Sub Inspector Jatinder Kumar, Constables Abhay Kant, Satwinder Pal and Pawan Kumar commenced search of the house. Since there was debris all around, JCB was deployed to clear the debris. Dead body of one slain terrorist was recovered from the debris at about 0030 hrs. At about 0230 hrs on 17 June one of the terrorist who had probably survived the blast and was stuck in the debris, suddenly raised his weapon and opened fired on the search party. Undeterred by this unexpected response and unmindful of their personal safety, exhibiting sharp reflexes the party retaliated eliminating the terrorist. The search resulted in the recovery of dead bodies of three slain terrorists alongwith 02 AK-47 Rifles and 03 magzines. The operation lasted close to 24 hrs. The slain terrorists were identified as Junaid Ahmed Matoo (Category A++) the dreaded LeT District Commander S/o Manjoor Ahmed, r/o Kulgam, Nasir Ahmed Sheikh (Category A+) S/o Hassan, r/o Shopian and Adil Mustaq Mir (Category C) s/o Mustaq Ahmed Mir, r/o Pulwama.

In this operation, S/Shri Jatinder Kumar, Sub-Inspector, Satwinder Pal Bhumbla, Constable, Abhay Kant, Constable and Pawan Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/06/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 162-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry (Postumously) to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Naresh Kumar — (1st Bar to PMG)
Assistant Commandant

02. Ram Kumar — PMG
Sub-Inspector

03. Mohammad Yaseen Tali — PMG (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 07 Dec 2016 commandant 90 Bn received an intelligence input regarding the presence of militants in the village Arwani under P.S. Bijbehara, Dist-tAnantnag (J&K). The information was further corroborated with SP Ops Anantnag, who also confirmed the same. The Arwani village and surrounding-areas are highly radicalized where movement of troops is extremely difficult due to regular movement of terrorists and inclination of locals toward militants.

Taking all the facts into account, Commandant-90 Bn CRPF planned a CASO in the above village. Commandant 90 Bn tasked his QAT commander, F/NO. 830763144 Sub Inspector Ram Kumar to mobilize the Unit QAT immediately towards the target village and cordon the area. SI Ram Kumar without wasting fraction of the moment left for the target village with the Unit QAT of 90 Bn and placed an inner cordon around the suspected house alongwith SOG and local Police in village Arwani, under P.S. Bijbehara, Distt-Anantnag (J&K). Later on,Valley,QAT of Srinagar Sector CRPF also joined the operation. The Army component joined the operation only after the area was secured by the CRPF troops. On getting surrounded by SFs, Militant's made every effort to conceal their presence and did not react to the initial probing fire by SFs. Since it had become dark, it was decided to hold the operation till first light. A tight cordon was also placed by CRPF, RR & Civil police the whole night.

The next day i.e. on 08 Dec 2016, at about 0830 hrs militants finally broke the silence and tried to escape from the site by initiating heavy fire on the troops. Troops also retaliated to the militant's fire and a resultant deadly encounter ensued between militants and security forces. SI Ram Kumar had positioned himself in a house opposite the target house and was in the direct line of fire of the militants. Undeterred by the volley of fire, SI Ram Kumar retaliated ferociously and did not budge from his position. Displaying nerves of steel, grit, and determination of a soldier and sound tactics he kept the militants engaged and managed to keep them pinned down. He did not allow the militants to escape from the site. Meanwhile, civilians from nearby villages, numbering in thousands, gathered and started pelting stones from all sides and raising anti-India slogans. The operation was halted after dusk even though intermittent firing went on all through the night.

On 9th morning, IED was laid around the house by RR but it could blow off only a small portion of the building. In the meantime, the law and order situation on the encounter site and adjoining villages worsened. Keeping in view the sensitivity of the area and deteriorating law and order situation, it was decided to conduct room intervention without any further delay. Due to some previous incidents where SFs had suffered setbacks, there was some hesitation in conducting the room intervention due to inherent threats. At this juncture, SSP Anantnag trusted the capabilities of valley QAT of CRPF and entrusted the responsibility to Sh. Naresh Kumar, Valley QAT commander for room intervention as last resort to finish the operation. Sh Naresh Kumar, AC took the challenge into hand and carried out a final recee before carrying out the room intervention. A team consisting of Valley QAT, CRPF under command Sh. Naresh Kumar, AC & SOG Anantnag was formed to carry out the above task. To give effective cover to the room intervention party, a team led by Sub Inspector Ram Kumar was placed in front of the target house.

As per the plan, SI Ram Kumar with his team took the position in front of the target house and made way for the room intervention party. After that room intervention team, led by Sh. Naresh Kumar, AC, approached the target house, defying all the fatal threats. Taking all precautions, the team reached the ground floor and tactically cleared the room wherein they recovered dead body of a militant. Sh. Naresh Kumar and his buddy CT/GD Md Yaseen Teli giving cover fire to each further moved ahead to clear other rooms. While reaching close to the next room, they sensed some movement inside the room. The duo got alert and took a brave and calculated decision, wherein, they threw two hand grenades simultaneously inside the room and were about to enter the room when the roof of the room got collapsed due to the impact of the blast. The sudden collapse of the upper floor; already damaged, forced Sh. Naresh Kumar and his buddy to shift and move back. After that, the search team cleared the remaining rooms of the building.

The team under command of Sh. Naresh Kumar successfully cleared the hideout, without any collateral damage. During the process of room clearance, CT/GD Md. Yaseen Teli got splinter injuries in his lips from cement splinters which flew from the wall on account of the blast impact of the grenade. (Later, in an attained martyrdom while fighting against the fidayeen).

During the clearing of debris, the dead bodies of 2 dreaded militants namely Majid Ahmed Zargar, Divisional Commander of LeT in Distt-Kulgam and Rahil Amin Dar, Distt Commander of LeT in District –Anantnag were recovered and 02 AK-47 rifles, 01 UBGL attachment, 01 Meg. & Recoiling Rod were recovered.

In the operation, Shri Naresh Kumar, AC, SI/GD Ram Kumar, and Late CT/GD Md. YaseenTeli, displayed astute tactical acumen, exemplary courage, and commitment of the highest order in the face of grave and imminent danger. The neutralization of the two top LeT militants invariably broke the backbone of militancy in the districts of Anantnag and Kulgam.

In this operation, S/Shri Naresh Kumar, AC, Ram Kumar, Sub-Inspector and Late Mohammad Yaseen Tali, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 07/12/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 163-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ashok Jakhar
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Subsequent to the elimination of a top Hizbul Mujahideen Commander in July 2016, the valley of Kashmir in general and South Kashmir in particular witnessed a sudden spurt in militancy. This sudden upsurge sprung new challenges for the security forces engaged in tackling counter-insurgency and law and order issues in South Kashmir particularly in the districts of Shopian and Pulwama. But, over a period of time, the forces with the help of the local police as well as the home grown intelligence network could gather valuable intelligence of the adversaries resulting in well planned and surgical operations against the adversaries. One such intelligence input was received on 3 July 2017 at about 0800 hrs from the State Police about the presence of 5-6 militants in the area of village-Bamnoo, PS-Rajpora, District-Pulwama in Jammu and Kashmir (J&K). Bamnoo is a densely populated village with houses closely located to each other. The inhabitants are particularly hostile towards the security forces and are favorably disposed towards the terrorists.

Accordingly, a special joint Cordon and Search operation (CASO) was planned by Shri Narendra Pal Singh, Commandant 182 Bn and Shri Anand Kumar, Second-in-Command, 183 Bn in consultation with SSP Pulwama. After the initial briefing by Commandant-182 Bn, troops of CRPF and Special Operations Group (SOG), Pulwama tactically moved towards village-Bamnoo. They were joined by troops of 44 RR on the way. After reaching the said village, troops which had already been divided into three parties, began cordoning the village. Since the villagers identified themselves with the cause advocated by terrorists, the security forces faced stiff resistance. Aptly aided by the law and order components, the forces pressed on and a cordon was established to foil the escape of the terrorists. Once the outer cordon was laid and all the escape routes were plugged, SFs started tightening the cordon around the suspected houses, when, the terrorists opened indiscriminate fire on the advancing troops. The militants were suspected to be hiding in three houses. They were shuttling between these houses to confuse the troops. Some civilians who were present in these houses were first evacuated to safety. Thereafter announcements were made on the public address system asking the terrorists to surrender, which was responded with a volley of fire by them.

The troops also responded with a heavy volley of fire with an intention to push them into one of the houses in order to corner them. The terrorists visualizing the tactics of the forces very cleverly avoided getting stuck in one house and continued to move between the houses and engage the troops. From the response of the terrorists it was evident that they were well prepared for an extended gun fight. At the same time the Commanders realized the futility of a long drawn battle. Therefore SSP Pulwama, Comdt 182 Bn CRPF, Second-in-Command 183 Bn, CRPF and Commanding Officer of 44 RR jointly decided to carry out room intervention. Three teams were constituted to carry out room intervention of the three houses simultaneously. First team comprised of Narendra Pal Singh, Commandant 182 Bn, CRPF, his buddy Constable Ujjwal Bhujel and troops of 44 RR, second team comprised of Anand Kumar, Second in Command, 183 Bn, CRPF, his buddy and troops of 44 RR. The third team comprised of Major Shukla of 44 RR, Sub-Inspector Ashok Jakhar and troops of 44 RR. All the three teams exposing themselves to grave risk approached their respective target houses and cordoned them off. Exhibiting a steely resolve and quiet determination Narendra Pal Singh and his team entered the first house lobbing grenades followed by controlled fire. The terrorists continued to fire at the party, but Narendra Pal and his buddy Ujjwal Bhujel, who were leading the charge, kept pushing the militants to a corner. They succeeded in cornering one of them, but then the two militants, who were trapped on the first floor, suddenly opened fire on the party from a very close range. Undaunted by this unexpected attack, Narendra Pal Singh, Commandant and Constable Ujjawal Bhujel exhibiting exemplary valour and raw grit, throwing all caution to wind, launched a ferocious counter attack severely decapitating both the militants. But these few minutes of uninterrupted fire helped the militants to change their positions. In a bid to escape they lobbed successive grenades at the troops deployed behind the target house where the team of Major Shukla alongwith Sub-Inspector Ashok Jakhar was positioned. Simultaneously the two militants jumped from the first floor of the building firing indiscriminately. Displaying sharp reflexes Commandant Narendra Pal Singh, Constable Ujjawal Bhujel and Sub-Inspector Ashok Jakhar came out of their cover and let out a hail of bullets neutralising both of them. In this close combat, Sub-Inspector Ashok Jakhar and three army personnel received splinter injuries. However, the intermittent firing kept continues from the house.

Meanwhile, Sh Anand Kumar, 2IC who was searching the suspected houses, noticed the injured personnel and immediately rushed to evacuate them to a safer place. He, with the help of his fellow troops, evacuated all the injured personnel to a safe zone amid the heavy firing without caring for his Life. After that, Sh Anand Kumar, 21C returned to search the suspected houses when a heavy volley of fire came towards him. The bullets just missed their target, yet suggested

the position of militants. Sh Anand Kumar, 2IC took the opportunity in hand and advanced towards the target house very tactically so that the operation could be concluded before darkness set in. The militants caught the movement of SFs towards him and started lobbing grenades to thwart their advance. Undeterred to the fatal threats and displaying true grit of a commander Sh Anand Kumar, 2IC slowly but firmly led his troops inside the house. The militant however continued to put up stiff resistance and continued to fire. Meanwhile, darkness had set in and search of the rooms was fraught with grave danger. At the same time he also realized the necessity to hold the ground as any unnecessary movement meant exposing his men. Therefore Anand Kumar with his team stayed put inside the house waiting for an opportune moment to strike. However, there was no movement on the part of the terrorist the whole night. At first light Sh Anand Kumar, 2IC and his team resumed the search of the house. As the team approached one of the rooms, the militant who was hiding suddenly opened fire from a very close quarter. Displaying raw guts and exemplary bravery Sh Anand Kumar, 2IC reacted swiftly and fired at the militant. Meanwhile, the house caught the fire. To ensure the safety of his troops, Sh Anand Kumar, 2IC tactically came out of the house but kept firing towards the militant to prevent his escape. Later the fire was extinguished and body of militant recovered from the houses. During post encounter search, total three dead bodies slain militants were recovered from the encounter site, which were later identified as Kifayat Ahmed Khanday (Cat B), Jehangir Ahmed Khanday (Cat C) and Mohd Akhtar alias Taib (Cat C) of HM along with one AK-47 with one magazine, one INSAS rifle with 2 magazines and one SLR with one magazine.

The operation was an example of dynamic leadership, both on the part of Shri Narendra Pal Singh, Comdt 182 Bn, and Shri Anand Kumar, Second-in-Command of 183 Bn CRPF. Displaying astute professional skills and tactical acumen, they led from the front like true leaders. Braving the odds and exposing themselves to imminent threat to life both the officers duly aided by Sub-Inspector Ashok Jakhar and Constable Ujjwal Bhujel, ensured that the terrorists were neutralized. Sub-Inspector Ashok Jakhar and Constable Ujjwal Bhujel endured extreme danger and threat to life, in the course of the operation but remained steadfast and resolute towards the ultimate goal. The operation became a huge success due to the brave, courageous and dynamic leadership provided by the field commanders.

In this operation, Shri Ashok Jakhar, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/07/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 164-Pres/2018—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Rajendra Nath Mallick Assistant Commandant	(1st Bar to PMG)
02.	Mushkoor Ahmad Lone Head Constable	PMG
03.	Bishnoo Singh Head Constable	(1st Bar to PMG)
04.	Bhoi Shaileshkumar Constable	PMG
05.	Ajaz Ahmad Bhat Constable	(1st Bar to PMG)
06.	Manish Verma Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08 Aug 2017 C and G companies of 180 Bn were returning to their camps after completion of law and order duties in connection with visit of Hon'ble Chief Minister of J&K at Wuyan, Pampore. While they were passing through the area near Chak village, at about 1200 hrs, Shri Rajendra Nath Mallick, Assistant Commandant, Coy Commander of C/180 coy received a specific input about the presence of some terrorists in village Gulab Bagh, PS Tral, Dist-Pulwama. Acting promptly on the inputs, he rushed towards the target village after informing Commandant 180 Bn.

Gulab Bagh is a densely populated village situated approx. 5 kms from 180 Bn Hqr in Tral. A 100 Meters wide nallah flows at endways of the southern side of the village. When C coy reached village Gulab Bagh, the party of 42 Rashtriya Rifles (RR) was laying cordon on the southern side of the village. After a brief discussion with the Company Commander of 42 RR, Sh Rajendra Nath Mallick, AC deployed his party towards the north side of the village. At about 1300 hrs while the cordon was being laid, terrorists presuming that they have been encircled by the SFs, opened heavy fire on the troops. In the meantime Shri Rajesh Kumar, Commandant-180 Bn along with his Quick Action Team (QAT) also reached the target village and joined the operation.

Responding to the terrorists firing, SFs also started retaliating with precise and controlled firing to avoid any collateral damages. At about 1345 hrs amidst the heavy firing from both sides, three terrorists emerged out of the village, firing indiscriminately upon the SFs, in an attempt to escape through the nullah. They jumped into the nullahto make their escape good. Since it was summer season the nullah was relatively dry with very little water flowing through it and they could have easily escaped through it. Also, the nullah had natural rocks/uprooted trees etc which provided the terrorists with natural cover. Due to above the firings from SFs were going into vain, meanwhile, using the natural cover terrorists kept firing at the troops to prevent them from pursue.

At this crucial juncture, Commandant-180 Bn directed Sh Rajendra Nath Mallick, AC to take on the terrorists and prevent their escape. Sh Rajendra Nath Mallick, AC with his small team including Head Constable Mushkoor Ahmed Lone, Head Constable Bishnoo Singh, Constable Bhoi Shaileshkumar Babubhai, Constable Ajaz Ahmed Bhat and Constable Manish Verma immediately entered the nullah and advanced towards the terrorists, adopting fire and move tactics and using the natural covers. Meanwhile troops from 42 RR and SOG also joined them and galvanized their attack.

The terrorists were firing intermittently towards the approaching troops. In between, two jawans from Mallick's team managed to cross the nullah ahead of the terrorists and placed themselves tactically in way of the fleeing terrorists, while, Mallick and the remaining members of his team were close behind the terrorists. While chasing from a close distance Sh Rajendra Nath Mallick, AC located two terrorists who had taken cover behind the bark of a fallen tree. One of the terrorists in a desperate bid left his position and ran towards the bank of the nullahto escape. By now, Sh Rajendra Nath Mallick, AC with his remaining three brave hearts has also crossed the nullah.

Shri Rajendra Nath Mallick, AC and his buddy Constable Bhoi Shaileshkumar Babubhai on spotting the terrorist, approaching the bank, threw all caution to wind, charged on the terrorist from close quarters and neutralized him on the spot.

The remaining two terrorists in an attempt to save themselves took cover behind a huge uprooted tree placed diagonally across the nullah. The terrorists continued to fire indiscriminately on the troops while kept moving toward the bank of the nullah. In order to keep the advancing troops at bay, one of the terrorists who had inched closer to the bank, lobbed a grenade and fired at Head Constable Bishnoo Singh and his buddy Constable Ajaz Ahmad Bhat. The grenade exploded at a distance and since both of them had taken cover behind the trees they escaped unharmed. However, they seized the opportunity and regardless of their personal safety, left their respective covers and charged upon the armed terrorist by displaying exceptional valour, raw grit and sharp professional acumen. The duo neutralized the second terrorist through their targeted fire.

The third terrorist continued to fire intermittently from behind the cover of the uprooted tree in the nullah. Since he was surrounded, and realizing that both his accomplices had already fallen, he did not leave his cover. He continued in his position firing at anybody who attempted to advance towards him. At this juncture, Head Constable Mushkoor Ahmad Lone and his buddy Constable Manish Verma decided to take the adversary head on before he could inflict injuries to SFs. The duo advanced towards the third terrorist adopting fire and move tactics. Exposing them to the most imminent threat to their lives, the brave duo reached at the striking distance and fired at the hiding terrorist, neutralizing him on the spot. The brave troopers culminated the encounter in the most audacious way.

During the operation three terrorists were neutralized by the troops, who were later identified as Ishaq Ahmad Bhat, Category 'A', s/o Abdul Salam Bhat r/o Batagund, u/PS-Tral, Distt-Pulwama, Zahid Ahmad, Category 'B', s/o Abdul Rashid Bhat, r/o Village-Nowdal, u/PS-Tral, Distt-Pulwama and Mohd. Ashraf, Category 'C' s/o GulamMohd. Dar r/o Village-Trich, u/PS-Tral, Pulwama of Ansar-Ghajawat-Ul-Hind outfit group. 02 AK 47 Rifles, 04 AK mag, 105 rds of AK ammunition, one Chinese pistol, one pistol mag, 02 rounds of pistol ammunition, 02 ammunition pouches and one black canvas belt were recovered from the slain terrorist.

During the operation, Shri Rajendra Nath Mallick, Assistant Commandant, and his small team displayed exemplary field craft and tactics, astute tactical appreciation, extraordinary valor and nerves of steel during the entire operation. They successfully neutralized three terrorists in a well fought close quarter battle without any collateral damages or loss to own troops, despite exposed to heavy odds.

In this operation, S/Shri Rajendra Nath Mallick, AC, Mushkoor Ahmad Lone, Head Constable, Bishnoo Singh, Head Constable, Bhoi Shaileshkumar, Constable, Ajaz Ahmad Bhat, Constable and Manish Verma, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/08/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 165-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sikander Yadav
Assistant Commandant

02. Surendra Kumar Sharma
Head Constable

03. Naveen Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 01 August 2017, at about 0330 hrs, on a specific input from State Police about the presence of 2-3 militants in the area of Village-Hakripora PS & District-Pulwama, a special joint cordon and search operation (CASO) was planned and subsequently launched by Quick Action Team (QAT) of B coy of 183 Bn u/c Shri. Sikander Yadav, Asst. Comdt, two Combat Action Teams (CAT) of 55 RR u/c Major Akhil and Special Operations Group, and SOG Newa led by Sub-Inspector Noorbo Onpo of Jammu and Kashmir Police (JKP).

Hakripora is a densely clustered and populated village with nearly 160 houses located at a distance of appxtly 5 kms from B Coy Hqrs of 183 Bn of CRPF. The village is surrounded by dense orchards and was often frequented by the dreaded LeT militant Commander Abu Dujana. The villagers are totally pro-militants and are particularly hostile towards the forces. The presence of 2-3 militants were reported from a single storied house in the village. The input also suggested the presence of the most sought after LeT terrorist Abu Dujana who has been very cleverly evading the security forces for a long time. The house was situated in a small compound surrounded by a boundary wall which also housed another dwelling unit and was located opposite the Jama Masjid.

After the joint planning QAT of B/183, SOG Newa, alongwith two Combat Action Teams (CAT) of 55 RR reached Village-Hakripora in about 20 minutes and a tight cordon was placed around 12 houses adjoining the target house The BP Bunker was placed at the entrance of the gali at a distance of approximately 20 metres leading to the suspect house. Sikander Yadav tactically positioned his QAT on the right as well as in front of the target house. He himself alongwith his buddy Constable Naveen Kumar kept moving around and kept a close watch on the target house. Troops of RR led by Major Akhil took position behind the target house and SOG Newa positioned themselves on the right side of the target house. Since the security forces were inadequate in number reinforcements were called for from 182 and 183 Battalions of CRPF, JKP and RR. By first light, reinforcements comprising of Unit QATs of 182 and 183 Bns of CRPF u/c Shri. Kumar Mayank, Second-in-Command 182 Bn, and Shri Anand Kumar, Second-in-Command-183 Bn, additional troops of 55 RR and the civil police arrived and strengthened the cordon. Kumar Mayank and his buddy Asst. Sub-Inspector Ganga Ram and Shri Raj Bardhan, Asst. Comdt, 183 Bn and his buddy Head Constable Surendra Kumar Sharma were also part of the inner cordon. A team of selected officers and jawans of Army, JKP and CRPF, which also included Shri Sikander Yadav and his buddy, were formed to carry out search of the suspected houses. Knowing well, that, there were civilians present in these houses it was decided to evacuate them to safety. Accordingly, the search team tactically approached the suspect house and entered through the window and rescued a civilian who confirmed presence of two terrorists with sophisticated weapons inside the house. Meanwhile, announcements were made repeatedly over the public address system asking the terrorists lay down their arms, but it had no impact. Noticing increased activity of the security forces, the terrorists opened indiscriminate fire which was effectively retaliated by the troops, who had already placed themselves tactically around the target house. Appropriately supported by covering fire, the search team kept moving further unmindful of their personal safety. It was a single storied structure and the terrorists had safely ensconced in the attic and therefore could keep a watch on the activities outside. As the search team reached very close to the target house they were fired upon heavily. Sikander Yadav and his buddy narrowly escaped. Taking appropriate cover the party retaliated with ferocity. Due to the heavy exchange of fire, the attic primarily made of wood caught fire which forced the terrorist to move to down. They continued to fire heavily on the security forces in a desperate attempt to move out. The heavy exchange of fire had halted the progress of the search team. They retreated and

tactically positioned themselves around the house. In a last ditch effort, the terrorists moved out of the house firing indiscriminately. They were heading in the direction of Head Constable Surendra Kumar Sharma who was in the inner cordon alongwith other members of RR and SOG. Surendra Kumar Sharma was keeping a hawk's eye on the movements of the terrorists. Seeing them approaching, he seized the moment and opened fire on the terrorists. Taken aback by the retaliation, they retreated to the safety of the house. This exchange had perhaps resulted in injury to one of the terrorist. The intermittent exchange of fire lasted for approximately 4 hours. Thereafter a lull descended. When there was no more fire from the target house, it was decided to blow up the house with the help of IEDs. Joint parties were formed for placing IEDs which included troops RR and CRPF. Sikander Yadav and his buddy gave covering fire to these parties leading to successful plantation of IEDs and subsequent demolition of the house. After the structure came down and the flames extinguished, room intervention party of CRPF, JKP and RR led by Sikander Yadav entered the house through a window. The house was like a cauldron on account of the burning embers of the charred remains. As the search parties drew close, one of the terrorists who had cleverly hidden himself under the dead body of his compatriot suddenly fired a volley on the search party. Sikander Yadav and his buddy who were in the lead narrowly escaped this unexpected burst. In a flash, uncaring and unmindful of their own safety the joint party of Sikandra Yadav, Naveen Kumar retaliated fiercely and fired a burst on the terrorist neutralizing him.

During the search dead bodies of two terrorists were recovered who were identified as Abu Dujana Category"A++", Divisional Commander, r/o Pakistan and Arif Nabi Dar Category "B" @ Rehan s/o Gh. Nabi Dar r/o Lelhar Kakapora alongwith one AK-56 Rifle, four AK – 56 Magazine, 50 rds of 7.62x39 ammunition, one Chinese Pistol with magazine and matching ammunition.

In this operation, S/Shri Sikander Yadav, AC, Surendra Kumar Sharma, Head Constable and Naveen Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/08/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 166-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Pradeep Kumar Pathak Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30 November 2017 in the wee hours, on a specific input about the movement of terrorists on a hilltop in the area of village Sagipora, under P S-Bomai, P D-Sopore in Dist-Baramulla, a special operation was launched by 9 Para of the Army. During the operation, terrorists opened fire on the troops of 09 Para resulting in bullet injury to a jawan. When the troops of 9 Para retaliated, the terrorists fled downhill in the direction of Kumar Mohalla in Sagipora village. The information was shared by SSP Sopore telephonically with Commandant 92 Bn CRPF at about 1000 hrs, who immediately directed his Quick Action Team (QAT) under the command of Shri. S S Dev, Deputy Commandant to rush to the target area. Acting promptly, the QAT of 92 Bn reached the target area and joined the Special Operations Group of J&K Police and 22 RR in the operation.

After QAT of 92 Bn reached Sagipora village, the joint troops started the search of the village and the adjacent hillocks. In the meantime, additional troops from 92 Bn, 177 Bn & 179 Bn also reached the incident site and laid a tight cordon around the village to prevent the escape of terrorists. While the search was on, terrorist, who had taken the position in a nallah, ran towards the search party of 92 Bn, firing heavily with the intention to intimidate and make good his escape. However, the troops were alert and they retaliated effectively thus foiled his plans. A resultant heavy exchange of fire ensued between the terrorist and the SFs. The terrorist cleverly used the undulating terrain and the natural cover of the nallah to his advantage and kept moving from one point to the other dodging the fire of the SFs.

After a while, during the intermittent exchange of fire, Constable Pradeep Kumar Pathak of QAT 92 Bn noticed that the terrorist was trying to crawl through the nallah to escape from the site. He opened targeted fire towards the terrorist which could not prove effective from his position as the line of sight was not very clear. Gallant men do not allow such opportunities to go in vain. On an impulse, unmindful of his own safety, Constable Pradeep Kumar dashed out of his cover, ran and crawled towards the terrorist and took an appropriate position anticipating the move of the adversary. From this position, he was confident that he would be able to effectively intercept the fleeing terrorist. As anticipated, the terrorist

headed in the direction of Constable Pradeep Kumar firing incessantly. The moment the terrorists came within striking distance, Constable Pradeep Kumar came out of his cover and opened heavy targeted fire with his weapon eliminating the terrorist on the spot.

When everything fell silent and there was no more exchange of fire, a thorough search of the area was carried out, resulting in the recovery of the dead body of one slain terrorist along with one AK-47 rifle, 01 UBGL, 05 magazines, 124 round of ammunition, 03 UBGL rounds and 01 pouch. The slain terrorist was identified as Muzzamil (Category-A++), r/o Pakistan. He was the Divisional Commander of Lashkar-e-Toiba (LeT) in North Kashmir.

In this operation, S/Shri Pradeep Kumar Pathak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/11/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 167-Pres/2018—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry (Postumously)/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Sharief –Ud-Din Ganaie Constable	PPMG (Posthumously)
02.	Mohd Tafail Head Constable	PPMG (Posthumously)
03.	Amar Singh Negi Dupty Inspector General	PMG
04.	Naresh Kumar Assistant Commandant	(2nd Bar to PMG)
05.	S. Prakash Constable	PMG
06.	Jitendra Kumar Constable	PMG
07.	Loukrakpam Ibomcha Singh Assistant Commandant	PMG
08.	Uttam Raj Assistant Sub-Inspector	PMG
09.	Budhi Singh Constable	PMG
10.	Zulfqar Ahmed Constable	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The year 2017 was a landmark in counter-insurgency operations in the Kashmir valley, in that, more than 200 militants were neutralised for the first time in a calendar year in the turbulent history of militancy in the Valley. By the end of the year, the joint operations by the security forces virtually broke the backbone of two major militant organizations namely Lashkar-e-Taiyaba (LeT) and Hizbul Mujahideen (HM). In order to overcome this setback the Jaish-e-Mohammad (JeM) outfit took centre stage towards the last quarter of the year with a large influx of foreign militants (FTs) numbering around 36 mainly tasked to carry out fidayeen attacks on the SF camps with the primary motive of inflicting maximum casualties on the troops.

The Lethpora camp of CRPF near Awantipora in South Kashmir which is a vulnerable camp, is one of the largest Security Force establishments in the area spread over 131 acres. It is located about three kms in the hinterland from the National Highway. Presently, it houses the Unit Hq of 185 Bn CRPF alongwith two service coys. The camp has a number of multi-storeyed structures including Jawans barracks, Mens' Club, SOs Mess, Office complex, Residential quarters, Hospital block etc. The location is being additionally utilised as Training Node for Kashmir Ops Sector CRPF, wherein, pre-induction training and other refresher courses are organized on regular basis for the personnel of the Ops Sector Units. Inkeeping with the threat perception, the work of security infrastructural upgradation including perimeter fencing of 4.5 kms long boundary wall and the perimeter lighting is in process with CPWD. On account of the vulnerability of the camp to attack by militants, a large number troops are engaged on daily basis for camp security.

On 30th December 2017, intelligence input was received from civil police regarding possibility of a fidayeen attack on the camp in the night. Accordingly, security was beefed up and despite the structural inadequacies, the complete camp was put on high alert. Standing Quick Action Teams (QATs) were also additionally employed as a precautionary measure. Despite all the security measures, at around 0200 hrs, three heavily armed terrorists of JeM outfit sneaked into the campus from the hill side on the north east by breaching the perimeter wall between Morcha No 11 and 12 and moved towards the residential quarters taking advantage of the undulating terrain and vegetation. After scaling the boundary, the terrorists opened fire on the sentries and patrolling party which was retaliated immediately. However, taking advantage of the dim lighting inside the camp and large patch of undulating terrain and shrub vegetation inside the perimeter fencing, the terrorists managed to move further inside and after targeting the sentry placed outside the barracks were successful in moving inside the four-storeyed building of Type 2 and Type 4 Quarters. No. 065343211 Constable Sharief Ud-Din Ganaie of 185 Bn CRPF who was on standby due to security alert alongwith his colleagues in Block No 1 of Type 2 Quarter, immediately swung into action on hearing the gun shots. On account of the large campus, it was difficult to identify the exact location from where the fire and sound of blasts sound were originating. However, in a compelling urge to secure the building, Sharief Ud-Din Ganaie without caring for his life moved out tactically from the quarter to take on the terrorists. As he was moving out, the terrorists who were in the Type 4 quarter located opposite fired across on the Type 2 Quarter. Constable Sharief Ud-Din Ganaie immediately crawled to the open area on the staircase and fired back in the direction from where the fire had come. The terrorists were taken aback by the sudden retaliation. Sharief Ud-Din Ganaie did not stop at this. He ensured safety of his colleagues by directing them not to come out of the rooms and courageously moved all alone close to the iron railing on the staircase to clearly identify the location of the terrorists and on sighting them in the opposite barrack, fired several shots from his rifle. However, in the ensuing gun battle, the militant fired a UBGL at the staircase. Resultantly, Sharief Ud-Din Ganaie received grievous splinter injuries but undeterred he continued to fire till he fell unconscious at the staircase. The terrorists fired indiscriminately and moved to the attic on the top floor of the Type 2 and 4 quarters even as the personnel staying in the barracks closed the doors to prevent any forced entry by the terrorists.

No. 903040734 Asst Sub Inspector Uttam Raj of 185 Bn CRPF alongwith seven jawans was tasked with the Bunker for area security in the open area between Morcha No 9 and Butt Range No 1. On hearing sound of fire and blast in Type 2 & 4 Quarter area, Uttam Raj immediately moved to the area and found Constable Malme Samadhan in an injured condition, from the terrorists' fire. Despite the position of the terrorists being not clear, Uttam Raj subjected himself to grave risk by moving out in the open and without loss of time removed the injured jawan to safe position for administering first-aid. Thereafter, he tactically placed the Bunker in between Type 4 & 5 Quarters. The terrorists sighting the vehicle kept firing on the position which was retaliated effectively by Uttam Raj and his team till reinforcements arrived. In this manner, he engaged the militants for a crucial period in the inception stage which gave time to the personnel to take cover and secure themselves in the quarters.

Immediately on receipt of information regarding fidayeen attack on the CRPF Camp, the Valley QAT from Srinagar and Range QAT of South Kashmir Ops Range (SKOR) and Anantnag were requisitioned and they reported at Lethpora around 0400 hrs. After a briefing by the Camp Comdr and a quick appreciation of the ground situation by the QATs, it was decided to first evacuate the trapped personnel from Type 2 and 4 Quarters by tasking the QATs for room intervention and clearance.

Accordingly Range QAT Anantnag was tasked to clear Block 1 & 2 of Type 4 Quarters in which two personnel of 185 Bn were holed up and required to be rescued. The team led by its scout, No.125075282 Constable Zulfqar Ahmad of 163 Bn (attached with Range QAT Anantnag) cautiously searched and cleared eight quarters from ground to top floor and evacuated some personnel to safety. Now it was clear that the terrorist in Type 4 Quarter was in Block 1 only and had not traversed through the attic. Constable Zulfqar Ahmad alongwith his buddy placed himself tactically at the junction of Block 2 & 3, so as to keep watch on movement of the terrorist and to prevent him from traversing from Block 3 to Block 2 and in case of any such eventuality neutralise him on sighting. This was a very sensitive position as it was squarely in the open on the staircase and there was very high chance of militant firing from the attic in order to make way for his escape. However, there was no alternative but to maintain the position and Zulfqar Ahmad stuck to his task.

During this period, the Valley QAT led by Shri Naresh Kumar Asst Comdt and Shri L. Ibomcha Singh Asst Comdt alongwith No.045232487 Constable Budhi Singh of 44 Bn CRPF and No.115031994 Constable S Prakash of 43 Bn CRPF (both attached with Valley QAT) simultaneously moved into the ground floor of the first Block of Type II Quarter to retrieve the body of Constable Sharief Ud-Din Ganaie of 185 Bn who had succumbed to his injuries as he valiantly retaliated the terrorist's fire. This was a difficult task as the personnel had to proceed onto the open staircase area which could be easily targeted by the militant hiding in Block 3 of Type 4 Quarter right opposite the block. It was only after sustained efforts and giving appropriate covering fire could the team finally succeed in recovering the body of martyred Constable Sharief Ud-Din Ganaie. After this difficult retrieval Naresh Kumar AC, L. Ibomcha Singh AC alongwith Constable Budhi Singh and No.115031994 Constable S Prakash proceeded to undertake evacuation of about 5-6 personnel trapped in the first two floors of Block 3 of Type 4 Quarters housing Unit Control Room, Signal Centre, Ops Branch and M I Room. This was a very risky task as the team had to traverse between the two quarters on both sides of which terrorists were placed with clear observation and in dominant positions to attack. It so happened that when the team was closing in on Type 4 Quarter, the terrorist positioned in Type 4 Quarter targeted them by firing UBGL and hurled grenade puncturing the BP gypsy in the process. The team was forced to abandon the vehicle and proceeded in the open without any cover to the Type 4 Quarter despite grave threat to their life. After a tedious process of room intervention and clearance, the rescue of trapped personnel including that of Inspector/Crypto Kuldip Roy who was found in an unconscious state and later died due to cardiac arrest was accomplished successfully in the face of heavy odds. Once the evacuation was complete, the Command Post was established in Type 5 Quarter just opposite Block 3 of Type 4 Quarter where one of the terrorist continued to be holed up on the third floor. Thereafter the troops mounted the counter-offensive by firing CGRL and MGL.

Meanwhile, the Type 2 Quarters situated behind the Type 4 had also some occupants in Block 2 who were required to be evacuated. They had been instructed not to move out as position and number of the militants in the block was not clear. No. 920200102 Head Constable Mohd Tafail Ahmad of 185 Bn CRPF was tasked to guard the third floor of Block 2 to prevent any intrusion by terrorists and ensure safety of all inmates in the rooms. His position was vulnerable as it was without any cover and prone to attacks. He was minutely observing and listening to all movements in the vicinity. Around 1030 hrs he sensed some movement in the attic. Without any fear he boldly proceeded with two of his colleagues to check the attic and clear the same. As he moved in the front position, he sighted one terrorist hiding in the attic and challenged him. It was a rare front to front fight in which Head Constable Md Tafail Ahmad did not blink. Both opened fire on each other. However, the terrorist being in an advantageous position at the top was able to inflict lethal hits on Md Tafail Ahmad who went down fighting gallantly till his last breath. In his valiant act, Md Tafail Ahmad had exposed the position of the hidden terrorist and managed to save many personnel from the stealth attack planned by him.

The immediate neutralization of the militant hiding in the attic in Block 2 of Type 2 Quarter was extremely crucial now, as, he was in a position to target personnel holed up in the rooms on both sides. In order to deal with this situation, around 1045 hrs, it was decided to evacuate the trapped personnel numbering about twenty from Type 2 Quarter by tasking Range QAT SKOR and Anantnag. Accordingly, both the QAT Comdrs were briefed by DIG SKOR and Anantnag near Mens' Club about 100 metres from the target building. Range QAT Anantnag was tasked to clear Block 1 & 2 of the building and Range QAT SKOR was tasked to clear Block 3. After the briefing both the QATs commenced their task u/c of their respective Comdrs. Range QAT of SKOR moved from Block 3 upwards and Range QAT Anantnag moved from Block 1 in similar manner. SKOR QAT Comdr Shri Zile Singh Asst Comdt was in the lead with Constable Rajendra Kumar Nain (carrying a heavy Bullet Proof (BP) shield) and No. 145081561 Constable Jitendra Kumar of 180 Bn. After rescuing about ten personnel from the second and third floor of Block 3 to secured positions, in which Constable Jitendra Kumar played a crucial role, the team decided to traverse to Block 2. As soon as the SKOR QAT reached the door on the third floor leading to the attic, the terrorist hiding inside, fired a burst from his AK-47 rifle. There was exchange of fire from both sides and QAT Comdr and his buddy responded gallantly. However, one bullet fired by the terrorist which happened to be an Armour Piercing Incendiary (API) bullet went through the BP shield of Rajendra Kumar Nain who was leading in the forefront and hit him in the upper part of the chest. The BP shield dropped onto the floor and Constable Nain slumped down on the floor right in front of the attic door. Without wasting any time and without caring for his life, Jitendra Kumar moved close to the door and gave covering fire to prevent the terrorist from causing further injury to Constable Rajendra Nain and in the process enabling QAT Comdr to pull him to safer position on the staircase. Constable Jitendra Kumar did not leave his perilous position and continued to engage the terrorist, due to which he could not fire UBGL or lob grenades at the staircase which could have caused grave damage to troops lined up for action there. Meanwhile, the QAT Comdr sought immediate help on wireless set. There was panic all around. This was an extremely difficult situation as the terrorist had hit twice in a short duration. Everybody was restless and uneasy.

At this point, Shri A S Negi, DIG SKOR and Incharge of Range QAT despite the looming grave threat in the building moved in a flash, took his personal weapon, put on the BP Patka and galloped upstairs in Block 3 to assist the QAT Comdr. Midway he met Zile Singh, boosted his morale and together they moved ahead to the top floor. Firstly, Shri A S Negi, DIG alongwith Constable Jitendra Kumar evacuated the injured Constable Rajendra Nain for urgent medical aid. After

a quick appreciation of the situation, he took the initiative and under covering fire by Jitendra Kumar boldly moved to the very door of the attic along with Shri Zile Singh. It was a dangerous act, as the militant could have thrown a grenade or fired a UBGL. However, there was no option but to move close to identify his exact location and neutralise him as he was hiding behind a cemented barricade in the attic and continuously firing. In a quick synchronised final act Shri A S Negi fired a volley and without caring for his life quickly moved near the water tank inside the attic. This provided a momentary distraction for the injured terrorist and the QAT Comdr seized the opportunity to target him when he moved from his position. In the joint action, he was neutralised within seconds. It was an act of rare gallantry one could have witnessed in such a piquant situation as it changed the very complexion of the tense situation and the troops were upbeat on the neutralization of the terrorist. This paved the way for further counter action. The neutralized terrorist was identified as Manzoor Ahmad Baba r/o Drabgam, Pulwama. The QAT continued its task further and cleared Block 2 after traversing from the attic and moving top down. In the process the team lead by Shri A S Negi alongwith Jitendra Kumar retrieved the body of Head Constable Mohd Tafail Ahmad who had eventually succumbed after fighting gallantly with the terrorist hiding in the attic.

No sooner was this ordeal over that around 1230 hrs, information was received regarding sighting of one militant in the terrain inside the perimeter near Morcha No 12. The valley QAT team was directed to reach the site and engage the terrorist. The team comprising Naresh Kumar AC, L. Ibomcha Singh AC alongwith Constable Budhi Singh, Constable S Prakash and Asst Sub Inspector Uttam Raj immediately responded for the objective. As they closed in on the location, the militant fired a burst on the BP Bunker from his automatic weapon in which one API round pierced through the BP Bunker and hit Constable Malla Ram of 49 Bn positioned inside, causing minor injury to him in the process. The team instantly got down from the vehicle as it could not proceed further due to the undulating terrain. The terrorist was hiding in the uneven open area of the Firing Range and firing continuously. No effective cover was available to approach him without grave risk to life. Unconcerned on the harsh ground realities, Naresh Kumar, L. Ibomcha Singh alongwith Budhi Singh, S Prakash and Uttam Raj proceeded in the open adopting fire and move tactics and using whatever little cover the terrain could afford. As they closed in, the terrorist hurled grenades. Budhi Singh fired MGL at the militant's hiding position due to which he was forced to move out. No sooner was he sighted than Naresh Kumar and S. Prakash with covering fire support from L. Ibomcha Singh, Uttam Raj and Budhi Singh uncaring for their life seized the opportunity, got close and neutralized the terrorist instantaneously. The killed terrorist was identified as Fardeen Ahmad Khandey s/o Ghulam Mohiuddin Khandey r/o Tral, Pulwama.

After attending the task, the Valley QAT fell back to Quarter No 4 where rescue of the trapped personnel had been accomplished, but the terrorist continued to occupy top floor of the third block. Efforts were made to bring down a part of the building with the help of IED, but it did not yield the desired result. Thereafter, flame thrower (Agni Varsha) was also pressed into service but in the absence of any incendiary material in the rooms, it failed to catch fire. Therefore, around 1700 hrs after a conscious decision, the team comprising of Naresh Kumar AC, L. Ibomcha Singh AC alongwith Constables Budhi Singh, S Prakash and P K Panda were assigned the onerous task of room intervention and clearance from ground floor to the top. The team passed through a wearisome process in which the ground and first two floors were cleared. Thereafter Constable P.K. Panda alongwith his buddy Constable S. Prakash audaciously entered the block on the left side of the top floor after hurling a grenade inside the room. However, as they moved into another room, the terrorist hiding in a corner fired upon them primarily targeting Constable P K Panda who fired back immediately. Undeterred by the sudden attack, Shri Naresh Kumar and Constable S. Prakash also retaliated instantaneously by firing a hail of bullets in that direction to pin down the terrorist. Simultaneously, L. Ibomcha Singh and Budhi Singh without caring for their lives made several attempts to get injured P K Panda to safe position. In the end the joint effort by the team helped to restrict the terrorist from moving out to a dominating position from where he could have caused further injuries besides that caused to Constable P K Panda. However, under the circumstances, the team had no option but to make a tactical withdrawal.

Sensing grenade attack by the security forces, the terrorist quickly moved into the toilet block and kept firing from the small vent in the wall. The toilet block wall was breached by firing Rocket Launcher (RL) but the adversary further moved to the rear of the building and remained quiet in order to maintain his safe position. Since the visibility was low by now and night was fast approaching, the operation was suspended after lighting the site and placing BP Bunkers as cut off around the target building with troops in ready position.

At first light, the following morning i.e. 01 Jan 2018, the operation was resumed. Range QAT Comdr Anantnag placed two best shots on the second floor of Block 1 of Type 2 Quarter, which was overlooking the third block of Type 4 Quarter where the militant was holed up. There was a strong possibility of his moving to the rear in order to escape the thrust of RL being fired from Type 5 Quarter in the front. Therefore, QAT Comdr detailed Constable Zulfqar Ahmad with his buddy for the task. Subsequently, directional IED was placed to blow of the third block of Type 4 Quarter in which Zulfqar Ahmad alongwith his buddy provided effective covering fire. However, the IED blast did not have the required effect even though the base was weakened. Thereafter, RL was fired to breach the wall. After some effort the second wall inside the room was also broken. During this intervention UAV was pressed into service and when it closed in on the target house, it

was fired upon by the terrorist revealing and confirming his position. In the process, he was forced to shift to the rear of the building, upon which he sighted the position held by Constable Zulfqar Ahmad hardly 20 metres away. Sensing threat he fired a burst at that position. However, Zulfqar Ahmad who had his eyes firmly fixed on the balcony, ducked in time and saved himself from the volley of fire but with similar alacrity without caring for his life, he immediately retaliated and fired back at the militant. Resultantly, the militant slumped to the ground and tried to fire back but got caught in the twin fire from both sides.

Around 1300 hrs on 1st Jan 2018, dead body of the slain terrorist was confirmed in the building. Valley QAT led by Shri Naresh Kumar, AC thereafter moved inside and tactically retrieved the body of martyred Constable P K Panda and that of the militant, a Foreign Terrorist who remained unidentified. After this, a complete search of all the buildings was organized by assigning tasks to the QATs and the operational site was marked out of bound as there was likely presence of unexploded ordnance which could be cleared only subsequently by the BDD team. The recoveries from the encounter site included 03 AK-47 rifles, 11 AK-47 magazines, UBGL 01, HE Grenade 04, some live amm, pouches and flag of JeM. The operation wound up around 1730 hrs.

Operation Lethpora was one of the most daunting and challenging operations which continued for more than 36 hours and was accomplished successfully by CRPF on its own. The operation was replete with numerous challenges including the logistical constraints, the enormous and knotty terrain area in which the terrorists were required to be dealt with, the tedious and the daunting rescue of scores of trapped Force personnel in the buildings and overcoming of the initial casualties. The achievement of the Force in neutralizing the three dreaded militants can be attributed to the tremendous grit, determination, exemplary valour and never say die spirit of the members of the CRPF Valley QAT and the Range QATs of Awantipora and Anantnag. The primary architects of the momentous operation were Shri Amar Singh Negi, DIG South Kashmir Ops Range (SKOR), Shri Naresh Kumar, Asst Comdt, 79 Bn CRPF, No. 115031994 Constable S. Prakash, 43 Bn CRPF, No. 145081561 Constable Jitendra Kumar, 180 Bn CRPF, No. 065343211 Late Constable Sharief Ud-Din Ganaie, 185 Bn CRPF and No. 920200201 Late Head Constable Mohd Tafail Ahmad, 185 Bn CRPF. The above-mentioned officers/men provided the main thrust in the operation and played a lead role in taking the operation to its conclusive stage. They were truly the vanguards of the operation. Besides, the above, Shri L. Ibomcha Singh, Asst Comdt, 29 Bn CRPF, No.903040734 Asst Sub Inspector Uttam Raj, 185 Bn CRPF, No.045232487 Constable Budhi Singh, 44 Bn CRPF and No.125075282 Constable Zulfqar Ahmad, 163 Bn CRPF also played a very crucial role in providing the necessary support and impetus in defining the situation to the best advantage of the Force. Inspite of the continuing uncertainty in the operation, with regard to the number of the militants and their locations till the very end, the fact that they were heavily armed and continuously firing API rounds, the above-mentioned officers and men remained undeterred in the forefront of action without caring for their lives and personal safety. Their courageous intervention helped in timely evacuation of a large number of personnel from the barracks thereby saving valuable lives.

In this operation, S/Shri Late Sharief –Ud-Din Ganaie, Constable, Late Mohd Tafail, Head Constable, Amar Singh Negi, Dupty Inspector General, Naresh Kumar, Assistant Commandant, S. Prakash, Constable, Jitendra Kumar, Constable, Loukrakpam Ibomcha Singh, Assistant Commandant, Uttam Raj, Assistant Sub-Inspector, Budhi Singh, Constable and Zulfqar Ahmed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/12/2017.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 168-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Prateek Gulia
Assistant Commandant

02. Shivpal Uikey
Constable

03. Tapas Ghosh
Constable

04. Milan Singh Netam
Constable

05. K Bireswor Singha
Constable

06. Sumit Kumar
Sub-Inspector

07. Surender
Head Constable

08. Shyamapada Ray
Constable

09. Saroj Kumar Mohapatra
Constable

10. Santosh Uikey
Constable

11. Neelu Babu
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21/11/2016, based on an information about the presence of senior Maoists leaders of BJSAC including Arvindjee @ Dev Kumar, Sudhakar, Deepak Khairwar, Nakul Yadav A/W 30-35 armed cadres in the adjoining forest area of Vill-Karamdih, Nawarnagu and Khamikhas under PS-Chhipadohar, Distt-Latehar, an operation was planned by the 209 CoBRA and State Police to nab the Maoists. This area has strategic importance due to its locatiori being in the border areas of Chhattisgarh and Jharkhand. The hilly terrain, rough gradients, steep cliffs overlooking distant places, dense vegetation with tracts of broken land, perennial flowing Koyal river makes the area tough and challenging for conducting operations there into. To carry out this daunting & challenging task, the responsibility was assigned to two Strike Groups and one SAT (Special Action Team) of 209 CoBRA under over all supervision of Sh. Kamlesh Singh, Comdt. Strike-I, led by Sh. Rajwinder Singh AC and Strike-II led by Shri Vikash Jakhar, AC was tasked to hit the target area whereas SAT U/C Sh. Avigyan Kumar, Dy. Comdt. with 14 Commandos was deployed at base camp to provide backup support and facilitate communication. Strike I & II consisted 49 commandos including Shri Prateek Gulia, Assistant Commandant.

As per the plan, both the Strikes and SAT left HQ (Khunti) on 21/11/16 at about 1830 hrs and de-bussed at around 2330 hrs at the pre-decided place (Strike — 01 debussed near Morwai Village and Strike-2 debussed near Ladi Village) on 21/11/16. SAT was placed at Labhar CRPF base camp. After de-bussing, the troops advanced towards target area cautiously, to avoid the early warning systems and maze of IEDs planted. On 22/11/16 around 0930 hrs the scout of team no-10, CT/GD Shivpal Uikey observed some suspicious movement (which was almost 700 meters from his position) of around 08-10 people crossing the river North Koel from North to South. Immediately he informed his section commander SI/GD Md. Riyaz Alam Ansari and team commander Sh. Vikash Jakhar, AC who, in turn, confirmed the situation using binocular and spotted few suspects in black uniform with arms. He alerted the troops and formed a small team of selected 12 commandos including Prateek Gulia, AC and SI/GD Sumit Kumar to intercept the Maoists. The small team rushed towards the Maoist's position without caring for impending threats. On reaching the spot, the team tactically covered the area and searched it thoroughly and found tell-tale signs of Maoists presence and traces of momentary halt of 10-15 men. The developments were communicated to Commandant-209 CoBRA.

Teams took a tactical halt for the night in between North Koel River and Viii-Karamdih. The developments were indicative of a possible encounter with the Maoists. To prepare the teams for the emerging situation, Shri Vikas Jakhar, AC made a plan in consultation with his team. He formed 3 teams from the available strength; two teams to search the area between the village and river and one team to cover the rear flank. Accordingly, two teams started searching the area at around 0430 hrs on 23/11/2016 as planned. Team of Shri Vikash Jakhar, AC was searching the area towards eastern side whereas the second team U/C Prateek Gulia at the western side. At around 0730 hrs, the Scout group, comprising SI/GD Md. Riyaz Alam Ansari, CT/GD Shivpal Uikey & CT/GD Tapas Ghosh, slightly veered into the river bed, approx. 30 meter inside from the forest patch, when they came under a heavy volley of fire. As was expected, Maoists probably had noticed the presence of SFs and were prepared to attack them. Maoists, from their well-occupied defense, opened indiscriminate fire upon the troops from across the river. Acting promptly, the scout group responded immediately, maneuvered their position to take cover in sand pits. Meanwhile, Sh. Vikash Jakhar, AC spotted 04 Maoists, who were firing from behind the sand dune in

the midst of the river. He challenged the armed Maoists to surrender, but they increased the volume of fire. Finding no other option troops also retaliate with directional fire in self-defense. Meanwhile, the situation was communicated to base camp.

Shri Vikash Jakhar AC led his team to cover the left flank and directed to Shri Prateek Gulia, AC to cover the right flank. Shri Prateek Gulia, AC, on getting direction from Shri Vikas Jakhar, AC sprang out of his position and led his team valiantly amid raining bullets, to cover the right flank from the western direction. The scout group was under direct and heavy fire from Maoist and needed immediate support. Sensing the urgency, Sh. Vikash Jakhar, AC rose to the occasion and launched the counter attack from the left flank with CT/GD Saroj Kumar Mahapatra, Ct/GD Milan Singh Netam, and CT/GD Shayampada Ray. Simultaneously, he directed HC/GD Surender to augment the scout group in their retaliation. Troops from both the flanks, confronting the impending threats, moving through open patch of the river bed amid firing, slogged towards the Maoists to support their trapped Scout group.

Seeing the troops encircling them, the-Maoists increased the volume of fire on both the flanks. At this juncture, troops were having no cover from bullets, being in open patch. However, Shri Vikas Jakhar, AC and Shri Parteek Gulia, AC with his team, sneering all the risk aside, reached close to the Maoists from the flanks and launched an aggressive onslaught. Around this time, getting support from both the flanks, trapped scout group led by SI/GD Md. Riyaz Alam Ansari charged on the Maoists and advanced towards them using field craft. Soon these Maoists were encircled, with retaliatory fire from the both flanks and front direction as well. This audacious action of the troops forced the Maoists to retreat from their position. Before troops could chase the Maoists, they were awestricken by the sudden attack from the Maoists; positioned behind the boulders and trees across the North Koel river. Using the opportunity, the Maoists, who were behind the sand wall, rushed back to their side. Maoists were firing indiscriminately using sophisticated weapons including LMGs. On the other side, both the flanking troops were having no significant cover against the bullets. Sensing the gravity of the situation, Sh Vikash Jakhar ordered CT/GD Shaympada Ray to launch counter attack through his LMG to suppress the Maoist's fire. The concentrated fire from LMG deadened the Maoist fire for a while. However, both the team commanders were aware that they could not hold the situation for a long due to tactically volatile position of their troops. The prevailing situation had left only two options, either to retreat or to launch a daring counter offensive against the adversaries. Between the two, the troops chose the later; glory and bravery. It was a daunting move to rush across the river, in open patch that too amidst the heavy firing from the Maoists which could have resulted in fatalities. Stepping all threats aside, in a do or die situation, throwing all cautions to air, Sh. Vikash Jakhar, AC, and Sh Prateek Gulia launched a ferocious counter offensive against the Maoists, with their daring commandos. Troops came out of their cover firing on the Maoists and rushed towards the other side of the river employing heavy fire power, supported with UBGL and HE bomb. At the same time, SI/GD Md. Riyaz Alam Ansari, CT/GD Shivpal Uikey, CT/GD Tapas Ghosh and HC/GD Surender continued their frontal attack on the Maoists in front of them. They neutralized one of the Maoists in the mid of the river. Further, one more Maoist got trapped in the firing zone of the left flank u/c Sh. Vikash Jakhar, AC and got neutralized by them. By this time, the other two Maoists; running back sideways while firing at our troops, had almost crossed the river, when they were hit by the troops and fell down on the other side of the bank. One of the injured managed to crawl to a boulder near the bank of the river, positioned himself behind it and started firing back on the advancing troops, who had entered into the current of North Koel river. Injured Maoist's position was exposed to the troops at the right flank. Sensing the opportunity, Sh. Parteek Gulia, AC with SI/GD Sumit Kumar fired upon the injured Maoist and neutralized him.

The fearless move of the troops with heavy fire power, supported by the UBGL and HE bombs, stunned the Maoists. The troops continued targeted directional fire, giving little time/opportunity to the Maoists on the other side to react effectively. Around this time, both the flanks had crossed the river and positioned them behind the available covers. While taking cover, the team of Sh. Parteek Gulia, AC was fired upon by the Maoists, from a forested patch to their right side in which they had a narrow escape. Acting promptly, Sh. Parteek Gulia, AC along with SI/GD Sumit Kumar, CT/GD Santosh Uikey, CT/GD K. Bireswor Singha and CT/GD Neelu Babu fired upon the Maoists, followed by UBGL shells. This counter offensive forced the Maoist to leave their fortified position and also the dead body of one of their cadres. Meanwhile on the other side, finding SFs close to their position, Maoists lobbed a hand grenade towards the team of Sh Vikash Jakhar, AC, which blasted near them, but, due to quick reflexes and prompt action by the troops, could not cause any damage. Without giving any further opportunity to Maoists, Sh. Vikash Jakhar with CT/GD Milan Singh Netam and CT/GD Saroj Kumar Mohapatra charged on the Maoists at close quarter. The ferocious assault devastated the Maoist's defense and silenced their action. They fled away leaving one of their dead cadres behind.

This intense and fierce gun battle continued for around 20 minutes, in which troops braved the bullets while negotiating around 200-Meter-wide patch of the North Koel river ignoring the impending threat to their lives. The troops chased the fleeing Maoists. Intermittent firing continued for around 90 minutes. Finally, sensing the extreme aggression and counter offensive from the SFs, the Maoists fled away taking the cover of the thick forest, leaving behind their dead cadres, a huge cache of explosive/arms/ammunition and their belongings. By this time, Strike-1, consisting team no-1 & 16, had also reached on the northern side of the river. A thorough search of the encounter site led to the recovery of 6 dead bodies, 7 weapons and a lot of assorted ammunition. Interrogation report of surrendered Maoists and interception by lB Ranchi confirmed the killing of one more lady Maoist namely Anup-riya of Vill-Kumari, PS-Bishnupur, DistGumla in this encounter.

During the operation, the troops fought a pitched battle and displayed the conspicuous act of bravery under grave and imminent threat to their lives. This unwavering commitment to mission that too in a hostile environment, is a tale of sheer courage and glory. The thunderous and decisive message delivered through action, by the CoBRA troops, has spirited the morale of the Security Forces operating in Maoist theatre.

In this operation, S/Shri Prateek Gulia, AC, Shivpal Uikey, Constable, Tapas Ghosh, Constable, Milan Singh Netam, Constable, K Bireswor Singha, Constable, Sumit Kumar, Sub-Inspector, Surender, Head Constable, Shyamapada Ray, Constable, Saroj Kumar Mohapatra, Constable, Santosh Uikey, Constable and Neelu Babu, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/11/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 169-Pres/2018—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Mithilesh Kumar
Assistant Commandant

02. Vishwadeep Kapil
Assistant Commandant

03. Kannan K
Constable

04. Mrityunjoy Debnath
Constable

05. Jayanta Sen
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of Intelligence inputs about the presence of dreaded Maoist leader Aashish (BJSAC Member, Rs. 25 Lakhs rewardee) along with 20-25 armed cadres in the dense forest area of Vill-Boradih, under PS-Palkot, Dist Gumla, a surgical operation was planned and launched by Special Action Teams of 209 CoBRA. Striking the Maoist group in their own den, was a challenging task considering the distance that the troops had to negotiate, early warning system of Maoists which had to be outwitted, heavily mined approach routes to be traversed and the tactically placed sentries to be deceived apart from complexity of navigation in peak monsoon season in hilly undulating heavy vegetated terrain. To maintain speed, surprise, and secrecy during the task, it was decided to conduct the surgical operation with small teams and hence 03 Special Action Teams (SAT) of 209 CoBRA were assigned the task to carry out the operation.

Accordingly, two special action teams (SAT-I & SAT-II) of 209 CoBRA under command of Sh. Mithilesh Kumar, AC, and Sh. Vishwadeep Kapil, AC, each with the strength of 08 troops (AC-01,SI/GD-01,CT/GD-06) were tasked to strike at the Maoists, whereas, SAT-III (Comdt-01,SI-01,HC/R0-01,CT/GD06) U/C Sh Kamlesh Singh, Commandant was deployed to provide support during operation. On 11/09/2016, SAT,s moved out for the target area using civil pattern light vehicles and get dropped at a secluded place approx 05 Km north of target area at about 1130 hrs. From there onwards troops moved on foot, stealthily, inside the jungle. The troops had to navigate through the patches covered with thick foliage, water bodies and hilly terrain swiftly to attain the objective of the operation. In such insurmountable terrain, troops were moving parallel in mutual support and meticulously scanning the jungle area to locate the Maoists or their tell-tale signs.

On 11/09/16, at about 1315 hrs, teams reached in the vicinity of the target area and after securing a small hill-lock troops kept the area under observation for apposite appreciation. At about 1445 hrs while troops were scaling down treacherous slopes and further negotiating open marshy land, Maoists, holding defended position behind the boulders & huge trees, resorted to indiscriminate fire on advancing troops. SAT troops got trapped in Maoists killing zone in an open area having fewer covers to occupy. Acting promptly, troops swung into action and retaliated to Maoists fire despite being in less numbers than Maoists. A grueling encounter ensued between the troops and Maoists. To encircle the SAT troops, who were less in numbers, Maoists got divided into small groups and started covering the dominating features around the encounter site. Using pre-occupied covers, Maoists maneuvered to flank the striking troops. In such life threatening situation, with few choices and less time Sh. Mithilesh Kumar, AC, with CT/GD Mrityunjoy Debnath engaged the Maoists in a head-on battle. Meanwhile Sh. Vishwadeep Kapil, AC, with CT Kannan K and CT Jayanta Sen advanced to engage other Maoists group who

were trying to encircle the troops. Amidst raining bullets, Sh. Mithilesh Kumar reached close to Maoists position. Finding troops at such a close distance, Maoist lobbed one hand grenade targeting Sh. Mithilesh Kumar, AC, but he scraped through using his battle acumen. Thwarting Maoists offensive Sh. Mithilesh Kumar, AC, attacked Maoists more fiercely. On the other side, undaunted to the Maoists firing, Sh.Vishwadeep Kapil, AC, and CT Kannan K took Maoists in head-on battle while CT Jayanta Sen scaled the opposite spur and engaged the Maoists at close range. Displaying extraordinary courage and tactical supremacy, Sh. Mithilesh Kumar, AC, and Sh. Vishwadeep Kapil, AC with their brave troopers not only retaliated to Maoists offensive but kept on advancing to capture the Maoists. The valorous act of the troops repelled the Maoists from their fortified positions. Firing continued till 1530 hrs. During post encounter search, troops recovered one Maoist dead body, later identified as Aashish@Bijendra Yadav, BJSAC member (Rs 25 Lakhs rewardee), along with INSAS rifle from the encounter site. Besides, troops also recovered 01 SLR, 01 Springfield (US rifle), assorted ammunition, Hand Grenade and other miscellaneous items from the encounter site.

In the operation, troops have shown unwavering commitment for accomplishing the assigned mission in a hostile environment; a saga of sheer courage and glory. A handful spirited Jungle Warriors stunned and foiled Maoists nefarious design.

1.	Weapons-		
	A) INSAS	:	01
	B) SLR	:	01
	C) Spring field	:	01
	Magazine		
	A) INSAS	:	04
	B) SLR	:	01
2.	Ammunition (live Round)		
	A) INSA	:	186
	B) SLR	:	13
	C) Spring field	:	79
	D) .202	:	01
3.	Empty case		
	A) 7.62x39 mm (AK-47)	:	05
	B) INSAS	:	03
	C) SLR	:	01
	D) Spring field	:	02
4.	Detonator		
	A) Electric	:	05
	B) Non Electric	:	09

In this operation, S/Shri Mithilesh Kumar, AC, Vishwadeep Kapil, AC, Kannan K,Constable, Mrityunjoy Debnath, Constable and Jayanta Sen, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/09/2016.

P PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

महाप्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिंटो रोड, नई दिल्ली–110002 द्वारा अपलोड एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली–110054 द्वारा ई–प्रकाशित
UPLOADED BY THE GENERAL MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, MINTO ROAD, NEW DELHI-110002
AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF THE PUBLICATIONS, DELHI-110054

BANSHI DHAR DUBEY
Digitally signed by BANSHI DHAR DUBEY
Date: 2018.12.22 13:41:47 +05'30'